निर्देशक

[उपन्यास]

श्रीपहाड़ी

प्रकाशगृह : नया कटरा, इलाहाबाद

'निर्देशक' का दूसरा संस्करण पाठकों के हाथ में है, इस उपन्यास की घटनाएँ सन् १९३२-३३ का चित्रण करती हैं।

लेखक का नया उपन्यास 'प्रवासपथ' हम शीघ्र ही पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करेंगे।

प्रकाशक

गरमी की छुट्टियाँ थीं। नवीन गाँव आया हुआ है। घर पर बहिन तारा, विधवा बुआ और उसके बच्चे, मालती और विपिन हैं। तारा का विवाह पिछले जाड़ों में हुआ है। तारा अक्सर सयानी बनकर भाई की गृहस्थी पर सोचती है। बुआ का मोह अपने बच्चों पर अधिक है। बात-बात में भैय्या की अवज्ञा होती देखकर वह बुआ से झगड़ा मोल ले लेती है। तभी नवीन टोक बैठता है, "तारा, यह हमारा घर है। तू तो चार दिन की मेहमान है—पराये घर की लड़की.......।"

"क्या भैय्या ?" आश्चर्य में तारा बात काटती।

"तू बुआ से व्यर्थ लड़ा करती है।"

"वह चांडालिन है।"

"तारा, एक दिन माँ ने हमारा भार उसे सौंपा था न !"

"भैय्या !" कहकर तारा निरुत्तर हो जाती। आगे कुछ नहीं कहती। देखती है कि घर का नौकर तक भैय्या की परवा नहीं करता। वह जानती है कि परिवार की आर्थिक-स्थिति भली नहीं है। बुआ फिर भी कोई न कोई खर्चे की बात जरूर आगे रख देगी। वह अपने भैय्या के लिये बहुत चिन्तित रहती है।

नवीन का इस गृहस्थी के प्रति कोई मोह नहीं है। एक दिन उनका परिवार 'सिविल-लाइन्स' में रहता था। पिता के ओहदे के साथ कोठी, नौकर-चाकर, मोटर आदि सब वैभव था। उस समाज के झूठे बड़प्पन का एकाएक अन्त हो गया। आरामकुर्सी पर लेटे-लेटे पिताजी अखबार पढ़ रहे थे, फिर उठे नहीं। हृदय की गति रुक गई। उनके विशाल शरीर, मुँदी आँखें और माथे पर रोली की लकीर वैसे ही चमक रही थी। शहर के लोग आए। कुछ दिन अपने-परायों से

परिवार घिरा रहा। फिर एक धुँधली संध्या को परिवार अपने गाव के लिये रवाना हो गया था।

गाँव पहुँच कर नवीन की माँ ने पति की विधवा बहिन का आसरा लिया। नवीन की बुआ आज तक घर की मालकिन थी। विधवा होने के बाद वह उस घर में अपने दो बच्चों के साथ एक हैसियत बना चुकी थी। वह न सोचती थी कि एकाएक इस तरह वह परिवार लौट कर अपने अधिकार की मांग करेगा। आगन्तुकों को आया देख वह फूट-फूट कर रोने लगी। बहुत थक जाने के बाद उसे अपनी स्थिति का ध्यान आया। अब बोली, "नवीन की माँ तुम अपना घर संभाल लो।" तालियों का गुच्छा उसे सौंप देना चाहा।

नवीन की माँ को उस व्यवहार पर अचरज हुआ तो बोली वह, "तब क्या जिन्दगी भर मैंने यहीं रहने का ठेका थोड़े ही लिया था। अब वहीं रहूँगी।"

यह सब जानते थे कि वह बुआ एक दिन भी ससुराल में नहीं रह सकती है। बड़ी तेज बोलने वाली, उसका गाँव में हरएक से झगड़ा था। वहाँ पति की साधारण जायदाद थी।

और नवीन की माँ अपने दुःख में ही डूबी रहती। गाँव के उस वातावरण के बीच उसने चुपचाप अपने को समर्पित कर दिया। यदा-कदा बुआ ताना मारती और वह सब सह लेती थी। लेकिन एक दिन साधारण ज्वर उसे आया, फिर वह उठी नहीं। वैद्य और डाक्टर हार गये। इस खेल से नवीन स्तब्ध रह गया। तारा बहुत रोई।

नवीन परिवार का बार-बार ढाँचा बनाता और जल्दी-जल्दी उसे मिटा डालता। मानो कि उसे वह भावुकता पसन्द नहीं थी। और वह निर्माण की किसी भावना के सम्मुख झुकना स्वीकार नहीं करना चाहता हो। वे गाँव आये थे, गांव वालों ने उस दिन बड़े-बड़े

आँसू बहाकर उनका स्वागत किया था। अपने शहरी संस्कारों को गाँव की धरती पर फैलाते हुए एक बड़ा वक्त बीत गया। माँ और तारा की सीमित दुनियाँ अब केवल तारा पर ही केन्द्रित हो गई थी।

तारा कहती, "भैय्या फूल ले आऊँ।"

"क्यों तारा ?"

"पूजा नहीं करोगे आज ?"

माँ की श्रद्धा को बल देने के लिये वह बाहरी उत्साह से घर में एक बड़ी थाली पर जमा किए हुए पचास-साठ देवताओं को रोज गंगा जल से नहला करके, उनकी पूजा किया करता था। तारा फूल, रोली आदि का प्रबन्ध करती थी।

"लेकिन तारा ....।"

"क्या भैय्या ?"

"मैंने माँ के देवताओं का ध्यान माँ को गंगा में बहाते समय ही छोड़ दिया है। हम निर्बल थे तो भगवान का सहारा मांग कर चलते थे। आज अब सबल हो गए हैं, अतएव उस सहायता की आवश्यकता नहीं है।"

"भगवान गुस्सा होंगे।"

"तो तू पूजा कर लिया कर।"

तारा अधिक तकरार न करके अपने भैय्या की बात को स्वीकार कर लेती थी

नवीन कभी समझदार बन कर पाता कि वे लोग दलदल में फंस रहे हैं। परिवार का आर्थिक ढांचा चटख गया है। थोड़ा सा रुपया बैंक में बचा है। तारा की शादी के लिए रुपया चाहिये। उसकी तैयारी के समय जो तारा मांगती वह तुरन्त आने लगा। तारा काफी संकुचित मांग रखना चाहती, पर लड़कियों वाला स्वाभाविक

लोभ नहीं विसार पाती थी। बुआ जब अपने कर्कश स्वर में कोई चेतावनी देती तो वह घबड़ा उठती।

भैय्या कमरे में बैठे लैम्प की रोशनी में कुछ पढ़ रहे थे। तारा चुपके कमरे में आई। आहट पाकर नवीन चौंका। तारा को देखकर सोचा कि वह कहीं भी बड़ी नहीं लगती है। बुआ बेकार हल्ला करती थी। मोटी जिल्द वाली पुस्तक के बीच पेन्सिल रखकर बोला, "बैठ जा तारा।"

तारा बैठ गई। शादी की चर्चा के बाद अब वह कुछ स्वाभाविक लाज अपने में पाती है। धीमे स्वर में बोली, "सुना रुपया कर्जा निकाल रहे हो?"

"किसने कहा?"

"बुआ कहती थी।"

"यह सब तेरे मतलब की बात नहीं है।"

"मैं उतने गहने नहीं लूंगी, तुम कर्ज न निकालो।"

"लेकिन तारा यह जमीन्दारी क्या मेरी ही है? बड़े-बड़े सामन्त लड़कियों की शादियों में कई-कई गाँव बेच डालते थे। आज मुझे तो कुल की मर्यादा भर पूरी करनी है। हाँ, तेरी किसी सहेली का पारसल आया है। वह देख न आलमारी पर धरा हुआ है।"

तारा ने पारसल खोल लिया। सरला की चिट्ठी थी। उसकी माँ ने कपड़े भेजे थे। पुलकित हो बोली "सरला की चिट्ठी है।"

"कौन सरला?"

"हमारे पास जो सिवल-सर्जन साहब रहते थे न, उनकी लड़की।"

अपने वैभव के युग में 'सिविल लाइन्स' के आस-पास कई बंगले थे। वहीं किसी में तारा की सहेली सरला भी रहती होगी। नवीन का किसी से कोई परिचय नहीं था।

बोली तारा, "सरला की माँ ने आशीष भेजी है। सरला ने तो शिकायत लिखी है, कि उसे क्यों नहीं बुलाया गया।"

"तूने याद दिलाई होती।"

"मैं भूल गई, और भैय्या बुआ के बहकाने में आकर तुमने मुझे......।" तारा गदगद हो उठी।

"तारा?"

लेकिन तारा आँसू बहाने लगी। बड़ी देर के बाद सिसकियाँ ले कर बोली "सोचती थी भाभी पहिले घर में आवेगी।"

"ओ, तो फिर अगले साल सही।" नवीन मुस्करा उठता।

तारा इससे अप्रतिभ हो कहती। "क्या सच शादी नहीं करोगे भैय्या?"

"किसने कहा तारा! तू तो अब पुरखिन बन गई है। तब भला मुझे क्या फिक्र है।"

"तुम तो मुझे चिढ़ाने लगे।" तारा रूठ जाती।

नवीन अपनी एम० ए० की अन्तिम परीक्षा देकर गाँव आया है। वह देखता है कि तारा में बहुत अन्तर आ गया है वह ससुराल से मायके आई है। मायके से ससुराल जाने वाली तारा से वह भिन्न सी लगती है। वह स्वयं अपने में बहुत स्वस्थ्य नहीं है। अपने साथ ढेर सारी किताबें पढ़ने को लाया है। तारा भैय्या के उस स्वभाव से चिन्तित है। लेकिन धीरे-धीरे भैय्या की किताबें छूट गईं। वह तारा को कई बातें समझाता है। तारा कुछ न समझ कर भी विश्वास दिलाती है, कि वह सब कुछ समझ रही है। एक दिन हारमोनियम निकाला गया। उसकी धूल पोंछ कर नवीन ने उसे बजाया और तारा ने पुराने गीत सुनाये। फिर बाग की देख-भाल करने का निश्चय हुआ।

नवीन कहता, "तारा देख वह बेल! तेरी वाली में तो एक भी फूल नहीं है।"

"भैय्या वह भी अपने मालिक को पहचानती है।"

"तू क्या कह रही है तारा ?"

तारा चुप।

"क्या वे लोग तुझे अच्छी तरह से नहीं रखते हैं। तो वहाँ मत जाना। अभी कुछ महीने यहीं रह। मैं उनको लिख दूँगा।"

तारा फिर चुप।

"कुछ लिखाई-पढ़ाई भी की।"

तारा कुछ नहीं बोली।

"क्यों क्या बात है ?"

"ससुराल में......।"

"तब तूने मुझे लिखा क्यों नहीं। वहाँ क्या करती रही ? अगली साल बोर्डिङ्ग में चली जाना।"

तारा कैसे समझाती कि वह सब से छोटी बहू है . उसे घर का सारा काम करना पड़ता है।

"तूने चिट्ठी भी तो नहीं भेजी।"

"दो भेजी थीं।"

"दो ! हफ्ते-हफ्ते भेजनी चाहिये।"

पोस्ट-आफिस दूसरे गाँव में है। तारा की ससुराल से पाँच मील दूर। अभी उसे वहाँ बड़ी शर्म लगती है। एक चिट्ठी कई दिनों में पूरी कर पाती है।

"चुप क्यों है ? पढ़ने को किताबें नहीं होंगी। लिखा होता। मुझे तो कोई बात याद ही नहीं रहती है।"

तारा अपने भाई की गृहस्थी को देखती है। दिल में एक हूक उठती है। क्या कभी........! तारा की जिठानियाँ ताना मारती हैं कि बड़े घर की लड़की है—बहुत बड़ा घर। गहने देखो....। वह अब के एक लाकेट बनवाने की सोच रही है। आसपास की औरतें दिन भर तारा को घेरे रहती हैं। नवीन खीज उठता है। अपने कमरे में

भीतर पढ़ता रहता है। बाहर जाना उसे पसन्द नहीं है। तारा ने भैय्या से लाकेट की बात कह दी। तारा के गहने तुड़वाने की बात उसकी समझ में नहीं आई। लाकेट तो आ गया।

लेकिन नवीन के हाथ की अँगूठी कहाँ चली गई। तारा ने भांप लिया। पूछ डाला, "अँगूठी कहाँ चली गई भैय्या?"

"सन्दूक में।"

"लाओ दिखलाओ तो।"

"क्या करेगी देख कर?"

"मैं समझ गई।"

"क्या?"

"तुमने बेच कर लाकेट ले लिया है।"

"वह मेरी अँगूठी कब थी तारा। तेरा सही अधिकार उस पर था। वह धनवान के हाथ पर ठीक लगती। मैं तो गरीब आदमी हूं। बेकार डर लगता था कि कभी कहीं खो न जाय।"

तारा क्या कहे। देख रही है कि भैय्या को अब अपनी जमीन-जायदाद की परवा तक नहीं रह गई है। कुछ उसने भैय्या को समझाना चाहा तो बोला नवीन, "तारा क्या अब मुकदमा लड़ूँ।"

तारा को अप्रतिभ हुई देखकर बोला, "ससुराल कैसी है तारा?"

वह गुलाबी पड़ जाती।

"क्यों, चुप हो गई।"

तारा को कोई उत्तर कहाँ देना है।

"तारा गूंगी हो गई है।" कह कर नवीन खिलखिला उठता था।

भला नवीन क्या जान सकता है कि तारा की ससुराल कैसी होगी। वहां वह अपने भैय्या के बारे में कोई राय देती है, तो सब औरतें हँस पड़ती हैं।

नवीन को एकाएक लगता है कि तारा बहुत सुस्त हो गई है। सावधानी से पूछता है, "क्यों क्या बीमार रहती है? सुना कि वहाँ मलेरिया बहुत होता है।"

"अच्छी रहती हूँ मैं।"

"मन नहीं लगता होगा, भैय्या के साम्राज्य में रहने की आदी हो गई है। अब के मैं किताबें भेज दूँगा। जिस चीज की जरूरत पड़ा करे, लिखा कर।"

तारा की ससुराल, बहुत पुराना घर है। वे धनवान लोग हैं। दो जिठानियाँ हैं, पति नवीं श्रेणी में तीन बार फेल होकर अब घर की देखभाल करते हैं। पिता रिश्ता तय कर गए थे। नवीन ने अपना कर्त्तव्य निभाया वहाँ तारा को देखने में कोई कष्ट नहीं है।

—इस बार गाँव में नवीन आया है। अब उसकी पढ़ाई समाप्त हो जावेगी। आगे शायद गरमियों की छुट्टियाँ इस प्रकार नहीं मिलेंगीं। पहले तारा का भार था अब सारी जमीन्दारी की चिन्ता है। गाँव के भीतर का उसे ज्ञान है। पनपते सामन्तवाद में बसे हुए उस गाँव में पिछली परम्परा वाली संस्कृति नहीं मिलती। अधिकतर लोग शहरों में रहते हैं। उनकी अपनी विचारों की छाँह गाँव पर पड़ती है। तारा भी कुछ दिन बाद ससुराल चली जावेगी।

दिन बीतते जा रहे हैं। नवीन अधिकतर चुप रहा करता है। कई काम हैं; मकान की मरम्मत; खेतों का लगान; बाग का इन्तजाम..! कभी-कभी किताबें भी खोलकर पढ़ लेता है। अब वह उत्साह से सब काम करता है, लेकिन एक अड़चन आ पड़ी है। सरला ने तारा को लिखा है कि वह उसे देखने के लिए गाँव आ रही है। तारा उस दिन से बहुत खुश है। नवीन के आगे बार-बार सरला की चर्चा करती है। नवीन पर उन सब बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वह कस्बे से आवश्यक सामग्री जुटाने में लगा हुआ है। सरला का

कोई ज्ञान उसे नहीं है। वह उससे बिलकुल अपरिचित है। तारा जितना ही समीप का परिचय देती है, उतना ही वह पाता है कि सरला उनके परिवार से बड़ी दूर रहती है। इतनी दूर कि तारा और उसका उस सब से कोई वास्ता न रहेगा।

दोपहर की लारी से सरला आई, नवीन जैसे कि उस तिथि को भूल कर पास के कस्बे में एक काम से चला गया था। बड़ी रात को वह लौट कर आया तो तारा से समाचार पाकर चुप रहा। सरला सो गई थी, नवीन ने अधिक चर्चा उस पर नहीं की। वह अगले दिन बड़ी सुबह को उठ कर घूमने निकल गया। गाँव की बटिया पार की और एक ऊँची जगह में चट्टान पर बैठ गया। दूर नीचे सा उनका गाँव था। मोटर की सड़क उस पहाड़ी को टेढ़ी-मेढ़ी चीरती हुई ऊपर बढ़ रही थी। इधर-उधर पहाड़ों की श्रेणियों में कई गाँव छितरे पड़े हुये थे। उसके मन में कई अज्ञेय भाव उठे। सोचा कि छुट्टियाँ भी कट गई हैं, यह अन्तिम छुट्टियाँ हैं। आगे एक भविष्य है, जिसकी जानकारी वह प्राप्त कर लेगा। एकाएक एक स्थान पर उसकी दृष्टि टिक गई। वहीं उसके कुल के सब पुरुष-स्त्रियाँ, छोटे-छोटे पत्थरों के रूप में 'पित्र' बन कर पड़े हुये हैं। सदियों से वे उसी भाँति पत्थर का अन्तिम विश्राम पाते आये हैं। नीचे गङ्गा बह रही है। जिसका स्वर यदा-कदा कानों में पड़ता रहता है।

अपने गाँव की ओर दृष्टि कर वह पाता है, उन छोटे-छोटे ढलुआ खेतों को, गाय-बैल और बकरी के धन को....। गाँव के मैले कुचैले बच्चों को—बुढ़ियाओं को! उनमें कुछ का तो गाँव की आर्थिक व्यवस्था से कोई सम्बन्ध नहीं है। उनकी आत्मा की शान्ति के लिये गाँव के मध्य में भैरवनाथ जी का मन्दिर है, उसकी मूर्ति लाल सिन्दूर से रंगी रहती है। वे उस गाँव की रक्षा हजारों वर्ष से करते आ रहे हैं। प्रति वर्ष आठ-दस बकरों की बलि भी आज तक उनके भाग्य में लिखी हुई है। उनकी उड़ती हुई ध्वजा पर कभी-कभी कोई पक्षी बैठ कर उन

पर बीट वर्षा कर देता है। लेकिन वे देवता चुपचाप वैसे ही रहते हैं। सारा गांव उनका मौन आशीर्वाद पाता ही रहता है।

उसकी दृष्टि अब अपने मकान पर पड़ी। एक युग का बना हुआ वह विशाल घर, जिसकी दीवारों का चूना छूट गया है; छत की कड़ियों पर झूरियां लग गई है; आज वह भी अपने गृह देवता की आड़ में, बिना किसी जीवन के चुपचाप खड़ा है। तारा की शादी के समय उसका अन्तिम शृङ्गार नवीन ने मन लगा कर किया था। उसके बाद की चिन्ता उसे नहीं है। कहीं से टूट जाय तो उसको बनाकर अपनी झूठी प्रतीष्ठा स्थापित करने की शक्ति उसमें नहीं हैं। वहीं कल रात चुपके तारा की सहेली आई है। नवीन को जैसे कि उस सब से कोई स्वार्थ नहीं है।

अब नवीन घर की ओर रवाना हो गया। दरवाजे पर पहुँच भी नहीं पाया था कि तारा ने पूछा, "कहाँ चले गये थे भैय्या!"

"घूमने।"

"चाय पी कर तो जाते।"

कुछ न कह कर नवीन अपने कमरे के भीतर चला गया। वह तारा के कुतूहल से बाहर है। अब कुछ दिन तक अपने परिवार की घटनाओं से वह कोई सरोकार नहीं रखेगा। तारा भैय्या को पहचानती है, कोई कहता है कि उसका भैय्या झक्की है। उसकी जेठानियाँ ताना मारती हैं, कि उसका भैय्या महात्मा है छोटी जिठानी ने सुझाव दिया था कि उसकी एक बहिन है। सांवले रङ्ग की बात सुन कर तारा ने मन ही मन वह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। वह सुन्दर भाभी चाहती है।

तो नवीन ने अखबारों के कटिंग की फाइल उठाली और पढ़ने लगा। कुछ तसवीरें भी थीं। १९३० के असहयोग आन्दोलन से उसे बड़ी दिलचस्पी थी। उतना बड़ा जनता का साम्राज्यवाद के प्रति विरोध फिर उसने नहीं देखा। उसने सत्याग्रह की तसवीरें काट डाली

थीं। अपने कालेज के 'स्ट्राइक' में वह भी अगुआ था। फिर उसकी दिलचस्पी आन्दोलन की नमी के कारण कम हो गयी। आज वह अपनी दिलचस्पी से पुरानी स्मृति को हरी करने लगा। तीन-चार साल की बीती घटनायें अधिक चमकीली नहीं लगीं। वह उत्साह और जोश उन तसवीरों में नहीं मिला। गाँधीजी ने समझौता किया था। नमक सत्याग्रह से समझौते की दूरी के बीच अब कई खाइयाँ पड़ गई थीं। जिस पर कि नवीन को कोई विश्वास नहीं है।

तारा चाय और पकौड़ियाँ लाई थी। नवीन चुपचाप चाय पीने लग गया। तारा बाहर चली गई। कुछ देर के बाद लौट कर आई तो सरला साथ थी वह सावधानी से बोला, "बैठ जा सरला, कब आई।"

सरला ने हाथ जोड़ कर मूक नमस्कार किया। वह मन में हँसा। यह कैसी पूजा है। वह आशीर्वाद नहीं दे सका। कमरे के चारों ओर दृष्टि फेरी, उसका सन्दूक कोने में धरा है। जिसपर कि छोटा-मोटा दवाखाना है। किताबों से भरी हुई आलमारियाँ हैं। सब चीज इधर-उधर बिखरी पड़ी हुई हैं। कबाड़ी बाजार वाली व्यवस्था है।

सरला खड़ी ही थी कि तारा ने उसे तखत पर बैठाया। पूछा नवीन ने, "रास्ता कैसा लगा।"

सरला ने हँस कर सारी कठिनाइयाँ सुनाईं। किस तरह ड्राइवर रास्ते में अपने गाँव चला गया और उन लोगों को डेढ़ घण्टे लारी में रहना पड़ा। सड़क की बात भी सुनाई कि अच्छी नहीं है। नवीन हँसते हुए बोला, "तो मसूरी, नैनीताल वाला सफर थोड़े ही है। जहाँ कि साहब लोग जाते हैं।"

तारा ने भैय्या की बात का समर्थन किया। "किसी तरह मोटर की सड़क हो गई है। हम लोग जब आए थे तो एक खासा-टट्टुओं और डालियों का काफला साथ था।"

सरला तारा से बोली, "देख न मैंने तो अपना वादा पूरा कर लिया;

अब तुम लोगों की बारी है।"

"तू चली जाना तारा, मैं उन लोगों को चिट्ठी लिख दूँगा।"

तारा भैय्या की सरला बुद्धि पर मन ही मन हँसी कि ससुराल के अनुशासन में अब इनका कोई अधिकार कब है। कहा, फिर भी, "उनसे पूछूँगी।"

'उनसे' सरला मुस्कराई। बोली, "तू किसी से पूछ लेना दुलहिन, हमें उससे कोई सरोकार नहीं है। चाहे इनसे, चाहे अपने उनसे।"

तारा शरमा गई। नवीन उस पर अधिक नहीं सोच सका। वह चाय का प्याला रख कर बोला, "तारा, सरला की मेहमानदारी ठीक तरह से करना।" और बाहर चला गया।

नीचे बुआ रोटियाँ सेंक रही थी। मालती और विपिन सरला के लाए हुये खिलौनों से खेल रहे थे। बुआ को सरला के इस आगमन से प्रसन्नता नहीं हुई। लेकिन सरला ने आते ही विपिन और मालती पर ऐसा स्नेह प्रकट किया कि बुआ पिघल गई। नवीन दरवाजे के बाहर खड़ा हुआ था। भीतर धुँआ भरा हुआ। बुआ तो भारी ममता से बोली, "अभी नहाया नहीं नवीन।"

बुआ के स्वर को पहचान कर नवीन को याद आया, कि नहाने की क्रिया जल्दी-जल्दी समाप्त कर लेनी चाहियें। बुआ तो कह रही थी, कि ऐसी लापरवाही भली थोड़े ही होती है। वह अब सयाना हो गया है। नवीन अपने को सयाना तो मान रहा है। यह नई बात थोड़े ही थी। ऊपर तारा और सरला की हँसी की खिलखिला-हट सुनाई पड़ी। पहले-पहल सालों में माँ की मौत के बाद नवीन ने पाया कि उस विशाल भवन में आज तारा और सरला मिल कर नवीन जीवन उड़ेल रही हैं। शायद उस वातावरण में जो कि मौत की भाँति शान्त सालों से रहा है; अब प्राण आकर, उसमें कोई गति डाल दें। नवीन को प्राणों की चाहना नहीं है। गति पर फिर

भी उसकी आस्था है। सरला के साथ जो बूढ़ा नौकर आया था। उसे वहाँ के जीवन से कोई स्नेह नहीं हुआ। नवीन उस बूढ़े के उत्साह में अपने को पाता है। लेकिन सरला आगयी है, जिसके मनोभावों का वह एक झलक में ही पहचान गया। जिस गति पर वह सोच रहा था, उसके प्रवाह को बूढ़ा नौकर व्यर्थ ही रोक लेने की भावना लिए हुआ था। सरला और तारा, दानों सहेलियाँ आज वर्षों में मिल रही हैं। लड़कियों के इस स्नेह के प्रति सदा वह सोचा करता है। उनका जीवन मोह और ममता की बनी डोरियों से पग-पग पर उलझा रहता है। नवीन तो आज तक न सोच सका था कि वह किसी को अपना सगा दोस्त बना सकता है। कोई ऐसा व्यक्ति अब भी याद नहीं आया। सरला उस परिवार में अपने को परिचित बनाने में ऐसी निपुण होगी, इसका अनुमान नवीन को नहीं था।

दिन को कोई खास घटना नहीं हुई। संध्या को नवीन बड़ी दूर घूमने निकल गया। धीरे-धीरे रात पड़ गई। वह खेतों-खेतों में टहलता रहा। आस पास बैलों की घंटिया बज उठतीं थीं। वह पत्थर के बने छोटे चबूतरे पर बैठ गया। वह चबूतरा सर्वेवालों ने बनाया था। उस पर खुदा हुआ था आर० के० आर० १६२५। वहाँ रेलवे लाइन बनाने के लिए पैमाइश हुई थी। निकट भविष्य में सम्भवतः कभी वह रेलवे लाइन बने। अभी तो उसकी तसवीर पर धूल सी पड़ गई थी। गाँव का सामाजिक-इतिहास सदा उसके लिए कई कुतूहल-पूर्ण घटनाओं का खजाना रहा है। पुराने घरानों का उजड़ जाना, नए परिवार का जन्म, लोगों की आपसी लागडांट-नारियों का आपसी स्नेह रूप। अब चारों ओर घना अन्धकार छा गया। जुगनू बीच-बीच में चमक रहे थे। नीचे दूर सी नदी की घाटी निपट काली पड़ गई थी। उस सुनसान में उसे आनन्द आया। वह उस समय सब से अलग और अकेला था। आज

अपने उस छोटे परिवार की ओर झांकने की प्रवृत्ति एकाएक बढ़ रही थी। वह घर लौट आया।

— कुछ दिन बीते। सच ही सरला ने आकर उसके जीवन में परिवर्तन लाने के लिए अज्ञेय रुकावट सी डाल दी है। वह अपनी स्वाभाविक परिचर्या पर बात-बात में सन्देह करता है। अपनी रोजाना आदतों में उसे कई खामियाँ लगने लगी हैं। अपनी लापरवाही के प्रति वह सतर्क रहता है। आज तक तारा से वह बहुत बातें कर लिया करता था। तारा कोई तर्क नहीं उठाती थी। अब उसे बातें सोच-विचार कर ही करनी पड़ेंगी। तारा और सरला साथ-साथ रहती हैं। दिन भर न जाने क्या-क्या गपशप करती हैं। अब तो तारा उससे बड़ी दूर हट गई है। उनकी इस दोस्ती का हाल देख कर नवीन अधिक प्रसन्न नहीं हो पाता है। कभी तारा चाहती है, कि भैय्या सरला के सम्मुख अपनी निजी बातों की व्याख्या किया करें। नवीन ऐसा अवसर नहीं देता है। उसके पुरुष-व्यवहार को देखकर सरला अचरज में पड़ जाती है। नवीन अधिक एकान्त चाहता है। अब वह थक कर अपनी किताबों की दुनिया में लवलीन रहा करता है। सरला तारा से उसके भैय्या की सारी बातें सुन चुकी है कभी तारा कुछ आगे दिलचस्पी बढ़ा देती है, कि सरला से भैय्या को भयभीत नहीं होना चाहिये। नवीन बात की अवज्ञा कर देता है। तारा नवीन को उदास पाती है। वह अपने भैय्या के इस एकाकीपन से ऊब उठी है। नवीन किसी बात पर दलील नहीं करता है। तारा घर में आए अतिथि के प्रति उपेक्षा वाली भावना सम्मुख रखेगी तो वह तुरन्त उत्तर देगा कि सहेली का उत्तरदाइत्व उसे ही उठाना चाहिए।

एक दिन तारा सरला को भैय्या के कमरे में खींचकर ले आई। सरला ने आई और माथाझुका कर नमस्कार किया। नवीन कुछ नहीं बोला। नवीन, तारा, विपिन और मालती के माथा झुकाने के अधिकारों को मान्य समझता है। सरला क्यों इस पर व्यर्थ झुकती है? वह

खिड़की से लगी कुरसी पर बैठा हुआ था। उसकी समझ में यह बात नहीं आई कि आज सरला, तारा, और मालती का यह दल क्यों इस प्रकार चला आया है?

तारा ने इधर-उधर की बातें पूछीं। नवीन ने खास दिलचस्पी नहीं ली। वह बहुधा खिड़की से बाहर देखने लगता था। वहाँ चिड़ियाँ उड़ रही थीं। खेतों में गाय, बैल, बकरियाँ आदि जानवर चर रहे थे। कभी भीतर दीवालों पर उसकी दृष्टि पड़ जाती थी। दीवाल की सुफेदी पर का एक छोटा सा तिनका भी आज उसकी दृष्टि से बच कर नहीं रह सका। एक ओर कोने पर मकड़ी का एक बड़ा जाला टंगा हुआ था, जिस पर कि कई मक्खियाँ झूल रही थीं। कमरे की सब वस्तुओं को उसने आज तक ध्यानपूर्वक नहीं देखा था। आज वह उन स्थिर वस्तुओं की पूरी छानबीन कर रहा था। कभी वह तारा की ओर देख लेता। सरला की ओर वह अधिक ध्यान न देने की ओर सचेष्ट लगा।

एकाएक विपिन कमरे में आकर बोला, "तारा दीदी, बुआ बुला रही है।" विपिन बचपन से ही माँ को बुआ कह कर पुकारता है। "मैं अभी आई" कह कर तारा बाहर चली गई।

नवीन अब बिलकुल चुपचाप बैठा रह गया। विपिन को इस शान्ति का अर्थ समझ में नहीं आया। चुपके सरला से पूछा, "क्या बात है?"

सरला मुस्करा कर उसके कान में बोली, "तुझे मालूम नहीं है."

विपिन ने गम्भीर होकर नवीन के मुख की ओर देखा और कहा, "नहीं?"

अब सरला बोली, "किसी से नहीं कहेगा तो बता दूँगी।"

विपिन ने सरला के गले पर दोनों हाथ डाल, कसमें खाकर विश्वास दिलाया और सरला ने धीरे से उसके कान में कहा, "झेंपू भूत चढ़ा हुआ है।"

विपिन ने उतावली में आश्चर्य से दुहराया, "झेंपू भूत ?"

कहने का ढङ्ग ऐसा था कि नवीन ने बात सुन ली और वह कुछ देर तक तो उलझन में बैठा ही रहा। फिर वहाँ बैठा रहना व्यर्थ समझ कर बाहर चला आया। अभी तक विपिन हँस रहा था कि तारा लौट आई। विपिन ने प्रतिज्ञा भङ्ग कर उसे भी सुना दिया कि....; और बाहर भाग गया।

तारा ने सरला से कहा, "तू यह क्या खेल खेल रही है।"

"यही सोच रही थी कि तुम भाई-बहिन का दुनिया में कितना सुन्दर जोड़ा था।"

"चुप रह सरला।"

"अरे मैं झूठ थोड़े ही कह रही हूँ।"

"अच्छा रहने दे अपनी ये बातें। बता तो कि अब तक बैरिष्टर साहब को कितने प्रेमपत्र लिख डाले हैं। तेरी शादी में तो मैं ही सब कुछ रहूँगी।"

"तुझे मना किसने किया है। घोंघाबसन्त भाई मिल गया है। हार की तरह कहाँ-कहाँ लटकाए फिरेगी तू।"

"और बैरिष्टर साहब ?"

"उनका फोटो तो तुझे कल दिखला दिया है। लेकिन तेरे नाथ ?"

तारा कुछ नहीं बोली तो छेड़ा सरला ने, "अब तो हमें उनका हाल बता दे।"

तारा फिर भी चुप रही।

नवीन सरला से दूर ही रहता था। इन दो दिनों में सरला बहुत पास सी आ लगी थी। पर अब वह बात नहीं है। सरला अपनी उस करतूत पर खिन्न भी रहती है। सोचती है कि उसे नवीन से माफी माँग लेनी चाहिये। लेकिन उसने कसूर कौन सा किया

है। इसकी व्याख्या कर अपने को निर्दोश साबित कर खुश होती है। उसका बचपन लाड़-प्यार में कटा है। दूसरी शादी की परिवार में सब से बड़ी लड़की है। पढ़ाई-लिखाई ठीक हुई। अब के इन्टर पास किया है। घर की रानी है। परिवार के नौकर-चाकर तथा पालतू चिड़ियाँ व पशु भी सरला को अपना मानते हैं। सब से उसका स्नेह है। नवीन को उसने आज तक नहीं देखा था। तारा की चिट्ठियों में उनकी चर्चा रहती थी कि उसके अच्छे भैय्या, विद्वान भैय्या, कर्मनिष्ठ भैय्या, उसके लाखों में एक भैय्या! उसने तारा को एक बार चिट्ठी में लिखा था—क्या अपने भैय्या के अलावा तुम्हें और कुछ लिखने को नहीं है? तारा ने जवाब दिया था, कि भैय्या लाखों में एक हैं।

सरला के मन में नवीन को देख लेने की उत्कट लालसा थी। वह नवीन के लिए मन में आदर बटोर कर लाई थी। यहाँ आकर नवीन उसे मिला। वह तो उसे पहचानती सी थी। वह जैसे कि उस पहचान के भीतर अपने को छल लेने का निश्चय कर चुकी हो। उसका भी एक भाई है, जो कि तीन साल मैट्रिक में फेल हो गया है। वह नवीन की लाइब्रेरी में बैठ कर उसकी किताबों को पढ़ती है। वहाँ आलमारी में सुन्दर किताबें सजाई धरी हुई हैं। नवीन को अपनी किताबों की दुनिया बहुत प्यारी है। यह वह भलीभाँति जान गई है।

तीन-चार दिन बीत गए। सरला उदास रहने लगी। तारा चुटकी काटती है, कि रानी पहाड़ आकर मुरझा गई है। वह कोई उत्तर न देकर हँसी में बात टाल देती है। वह वहाँ के पहाड़ी जीवन को समझ लेना चाहती है। दिन को उसे गाँव की लड़कियाँ घेर लेती हैं। पहले वे उसे मेम समझती थीं। तारा के समझाने पर वह भाव हट गया है। वे लड़कियाँ हैरत में हैं, कि अभी उसकी शादी नहीं हुई है। सरला मुस्करा कर सबको न्योता देने की बात कहती है। कभी-कभी वह नवीन से उन पहाड़ों का इतिहास जान लेना चाहती

है। वहाँ की सामाजिक व्यवस्था, वहाँ का आर्थिक ढाचा, वहाँ की संस्कृति, पर समय नहीं मिलता है।

—एक दिन सुबह को नवीन अपने कमरे में बैठा हुआ था। सामने कनेर के पेड़ों पर दृष्टि पड़ती है। वहाँ पीले-पीले फूल खिले हुए हैं। उसे अपना यह कमरा बहुत पसन्द है। यह उसकी अपनी दुनिया है, जिसके लिये मन में लोभ भी है। वह चुपचाप बाहर देख रहा था। गङ्गा के किनारे की रेत धूप में चमक रही थी। और बेल के पेड़ों भरे हुए खेत पर कहीं-कहीं लाल-लाल पके बेल लगे हुए थे। जब से गाँव की स्थापना हुई, इन पेड़ों की करोड़ों पत्तियाँ शिवजी के माथे पर चढ़ाई जा चुकी हैं। आज भी गाँव की नारी जाति उस श्रद्धा से उन्मुख नहीं है।

एकाएक सरला भीतर आई। बोली, "चिट्ठी डाक में छुड़वानी थी। घर के लोग परेशान होंगे।"

नवीन ने चिट्ठी ले ली, पूछा, "क्या तार नहीं भिजवाया था।"

"नहीं।"

"आज मैं भिजवा दूँगा।"

सरला कुछ देर खड़ी रही। नवीन ने पूछ डाला, "पहाड़ का तो जङ्गली लोगों वाला जीवन है।"

सरला हँस पड़ी, कहा, "मुझे तो बहुत पसन्द आया है। हाँ, यहाँ के इतिहास की कोई किताब तो आपके पास नहीं होगी?"

नवीन ने आलमारी पर से गजेटियर निकाल कर देते हुए कहा, "पूरी जानकारी इससे हो जायगी।"

सरला ने किताब ले ली। वह बाहर आ गई। उलझन में थी कि नवीन क्या है? वह तो कुछ भी समझ में नहीं आता है। बहुत सरल है—बहुत! यह तारा का झंपू भैय्या जैसे कि सारी दुनिया का मोह लेने की क्षमता रखता हो। अब वह सरला को

भी मोह रहा है। क्या सरला मोह की उस नागफाँस से परिचित है ?

सरला का तारा के प्रति स्नेह है। उस स्नेह के बीच तारा ने अनजान ही उस नवीन को खड़ा कर दिया है। उसके व्यक्तित्व की ओर सरला अटूट श्रद्धा की दृष्टि से देखती है। उससे समझौता करना चाहती है। फिर सोचती है कि नवीन दूर रहने का आकांक्षी है। उसे स्वतन्त्रता पूर्वक ही रहने देना हित कर होगा। वह रुकावट की भावना बन कर आगे खड़ी नहीं होगा। उसके लिए हृदय में एक कोना खाली करके भी, वहाँ नवीन की कोई मूर्ती स्थापित नहीं करेगी। नवीन से उसे कुछ नहीं पूछना है। वह शीघ्र ही लौट कर चली जावेगी। तारा और नवीन से परिचित होने पर भी कल के जीवन में वे कहीं समीप नहीं मिलेंगे। यह बहुत बड़ी दुनिया है। जहाँ अपने-पराये की दुनिया की दूरी बढ़ती-बढ़ती जाती है। कुछ तो बिलकुल याद ही नहीं रहते हैं। तो क्या वह उसी दृष्टि से आज की सम्पूर्ण स्थिति पर विचार कर रही है। वह नवीन को लुभाने सम्भवतः नहीं आई। आज वह यह बात पूरी तरह मान लेती है। तारा जब नवीन भैय्या पुकारती है तो उस ममता के व्यापार से सरला अपने हृदय पर एक चोट सी महसूस करती है। वह तारा का भैय्या आखिर क्या है ?

नवीन खा पीकर पास के कस्बे की ओर बढ़ गया। चुपके सरला उस कमरे में आई, वहाँ की छानबीन करती रही। दीवाल पर कई फोटो टंगे हुए हैं। एक में नवीन माँ की गोदी पर बैठा है। और तारा अपने पिता जी की। फिर एक और फोटो है, नवीन के कालेज का हाकी ग्रुप; किन्तु उस नाटक वाले ग्रुप में नवीन बड़ी-बड़ी मोछें लगाये हुआ था। नवीन के पिता का बड़ा बस्ट वह बड़ी देर तक देखती ही रह गई। तसवीरों द्वारा जीवन की कुछ घड़ियों को एकत्रित कर लेने वाली बात उसे भली लगी। नवीन के मन में इन सबको देखकर क्या कोई प्रश्न नहीं उठते होंगे।

तारा चाहती है कि नवीन के लिए कोई नये डिजाइन की गरम बनिआइन बुन ले। सरला नार के लिये पुरानी बनिआइन ढूँढने लगी। उसने सन्दूक की तालाशी शुरू कर दी। एक पुरानी बनिआइन मिल गई। लेकिन उसी में एक पत्र भी रखा हुआ था। वह किसी लड़की के अक्षर थे। एक स्वाभाविक जिज्ञासा उठी। उसने पत्र निकाल लिया। चिट्ठी पढ़ने लगी :—

नवीनजी,

भैय्या पकड़े गए हैं। रात को तीन बजे वे लोग आये थे। मैं उनकी पैरवी के लिए तैयारी कर रही हूँ। यहाँ मज़दूरों की हालत भी भली नहीं है। स्थिति नाज़ुक है।

भैय्या तुम्हारे लिए कुछ सन्देश छोड़ गये हैं। तुरन्त आने की चेष्टा करना। सुदर्शन को चिट्ठी लेकर भेज रही हूँ। उसी के हाथ उत्तर भेजियेगा। हम लोग आपकी प्रतीक्षा में हैं भविष्य के लिए एक निश्चित कार्यक्रम बनाना है। हमारी सारी शक्तियाँ बिखरती जा रही हैं, उनको नये सिरे से संगठित करना होगा। मैंने भैय्या से मिलने की आज्ञा माँगी है।

—किरण

सरला स्तब्ध रह गई। अब वह उठी, एक बार नवीन के सब फोटो देख डाले। अपनी राय बदलना चाहती थी। नवीन का व्यक्तित्व बहुत बड़ा लगा। मानोंकि वहाँ उसके लिये कोई स्थान नहीं था। नवीन को यह कैसी जिम्मेदारी सौंप दी गई है! किरण का भाई जेल में है, किरण अपना कर्तव्य पहचान कर चल रही है। उन सब की चाहना है कि देश का कल्याण हो। उसने समाचार पत्रों में घोषणाएँ पढ़ी हैं। फरार व्यक्तियों का पूरा परिचय तथा उनका मूल्य अंकित रहता है। नवीन को आज उन लोगों की संस्था का

सम्पूर्ण भार किरण सौंपना चाहती है। क्या नवीन वह सब स्वीकार कर लेगा? शायद आज सुबह वह इसीलिए उदास था कि यहाँ के बन्धन टूट रहे हैं। तारा अपने भाई का यह सम्बन्ध जान जाय तो क्या सोचेगी? वह साधारण दुनिया का एक नाता पाकर भैय्या! भैय्या!! पुकारती फूली नहीं समाती है। यदि वह जान जाय कि नवीन वह नाता तोड़ चुका है, तो क्या होगा? वह चाहती है, कि नवीन गृहस्थ बन जाय। उसकी भाभी सारी व्यवस्था का संचालन करे। भाभी—भैय्या की दुनिया वाले मायके में वह कभी-कभी आकर बसेरा ले ले। मज़दूरों की संस्था और उनके झगड़ों से उसे कोई सरोकार नहीं है। नवीन का इस तरह का नेतृत्व करना उसे नहीं सुहाता है। वह नवीन से कुछ शंकाओं का समाधान चाहती है। क्या उनका समाजवाद सबको बराबर अधिकार दिलाना चाहता है? क्या कार्लमार्क्स के मानव इतिहास के विकास के सिद्धान्त के आविष्कार का फल केवल मज़दूर वर्गों के लिए ही है। वह वर्ग उच्च समाजिक वर्ग को मिटा देगा। मज़दूर एक जागरुक शक्ति बन जायेंगे। समाज में मानव-संस्कृत की रक्षा का भार फिर कौन वहन करेगा? सब का बराबरी वाला दरजा सरला की समझ में नहीं आया। जिस मत पर उसे विश्वास नहीं है, नवीन उसका संचालन करेगा। इस क्रान्ति पर भी वह अधिक नहीं सोच पाती है। समाजिक वर्ग वेदों में लिखे हुए हैं। जातियाँ बनी और वर्ण व्यवस्था आई; आज वह एक नया सबक सा, उस सबको दुहरा कर पढ़ना चाहती है।

सरला ने देखा, कि टेबुल पर एक सुन्दर बस्ट खड़ा था। उस पर हँसिया और हथौड़े के बीच एक व्यक्ति की आकृति थी। वह था 'स्टालिन', रूस का एक महान नेता! वह अपने प्रारम्भिक जीवन में छुपा-छुपा फिरता रहा। जेल की यातनायें सहीं, साइबेरिया में

निर्वासन-काल व्यतीत किया। अन्त में एक दिन लेनिन के सच्चे साथी के रूप में रूस को एक नया जीवन प्रदान करने में सफल रहा है। जीवन में मारे-मारे फिरना, पग-पग पर रुकावटें। आज भी वहाँ के जीवन के बारे में एक सन्देहात्मक प्रश्न लोगों द्वारा उठता है। पुस्तकें उस शासन के पक्ष और विरुद्ध दोनों पर निकल रही हैं। सरला अपने पिताजी के मत से प्रभावित है। आज वे गांधीजी को सबसे बड़ा नेता मानते हैं और बात-बात में रूसी क्रान्ति की मजाक उड़ावेंगे। हिन्दू महासभा के कुछ हिमायती संध्या को पिताजी के दरबार में जुट जाते हैं। खासा तर्क-वितर्क रहता है। यह नवीन वैसी ही कोई क्रान्ति चाहता है। उसकी संभावना के लिये कुछ लोगों ने एक संस्था की नींव डाली है। वह उसी में है। इसीलिये अपने जीवन के प्रति लापरवा रहा करता है। पिता की अपार सारी भूमि और जमीन्दारी के प्रति भी तो उदासीन है।

लेकिन सरला के लिये नवीन ने एक ऐसी पगडंडी का निर्माण अनजाने कर दिया है, जिस ओर जाना आसान नहीं है। उसके पिता की एक बड़ी मिल है। वे उसके मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर हैं। जो मानवीय-भावुकता से नहीं पिघलते हैं। सरला ने पिता का स्वभाव पाया है। पिताजी प्रतिवर्ष कई संस्थाओं को दान देते हैं। तीर्थ स्थानों पर सदावर्त बाँटने की व्यवस्था है। कहते हैं सब एक से नहीं रह सकते हैं। अपने-अपने संस्कार और कर्मफल हैं। मजदूर-सभा की बातों की वे हँसी उड़ाते हैं। उसके नेताओं की बुद्धि पर हँसते हैं। उनकी माँगों पर विचार करते हुए कहेंगे कि वे चाँद पाना चाहते हैं। नेता लोग अपने नाम के लिए हड़ताल कराते हैं। वे नीच व्यक्ति केवल अपने स्वार्थ को देखते हैं। मजदूरों का हौसला भी दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा है। उनको पेशेवाले नेता मिलते अधिक देर नहीं लगती है। उसके पिता की

धारणा है कि नीच-जाति सदा नीच ही रहेगी। वे बराबरी का अधिकार नहीं पा सकते हैं। सरला मिल देखने गई थी। ऊँची चिमनी और मशीन के जाल के अतिरिक्त उसे और कुछ नहीं समझ पड़ा। मैली ऊन की ढेरियाँ और अन्त में सुन्दर वस्त्रों का निर्माण; विज्ञान के इस चमत्कार के आगे उसे अपनी चौकीदारिन का चरखा कातना समझ में नहीं आया। वह बूढ़ी बड़ी मेहनत करके ऊन कातती है और अपने श्रम का मूल्य बहुत कम पाती थीं। गाँधीजी का वह चर्खा विज्ञान की इस बड़ी मशीन के सम्मुख फीका लगा। उस बड़े कारखाने में चींटियों की भाँति मजदूर थे। वह मजदूरों के राज्य की बात सुन चुकी है। पर उसने अपने पिता जी की खरीदी एक किताब पढ़ी थी। उसमें लिखा था कि उस राज्य में वास्तविक सुख नहीं है, रूस पर वह पुस्तक किसी काउन्ट ने लिखी थी, किन्तु समाचार पत्रों में जो चर्चा रहती थी। उससे तो अनुमान लगता था कि वहाँ मजदूरों का राज्य है। उनकी पञ्चायतें हैं। उसने कुछ उपन्यास भी पढ़े हैं। पर उनसे कोई बात साफ नहीं झलकती थी। वह अपने पिता की बात पर कोई दलील नहीं करती है। कभी कुछ पूछती है तो वे कहेंगे, अभी सरला को उन सब विचारों से कोई मतलब नहीं। जो लोग मजहब के शत्रु हैं; हमारी संस्कृति नहीं मानते; जो कर्म और गीता के पुजारी नहीं; जहाँ मन्दिरों में रहने वाले देवताओं के प्रति घृणा का प्रचार किया जाना सिखलाया जाता है; ऐसा देश एक दिन स्वयं ही नष्ट हो जायगा। सरला इससे अधिक जानकारी के लिए उत्सुक कब थी?

फिर भी तारा के आदर्श भैय्या के लिए सरला के दिल में आदर है। वह नवीन से अब सारी बातों की जानकारी पा लेना चाहती है। नवीन झूठ नहीं कहेगा और उसकी बातों पर वह

विश्वास कर लेगी। वह उसके साथ तर्क करेगी, तो वह नवीन से क्या प्रश्न पूछेगी? वह अपना कोई दरजा बनाने नहीं आई है। तब क्यों व्यर्थ ही उसे उलझाना चाहती है? यह व्यवहार अनुचित होगा। नवीन असाधारण होगा, यह वह जानती थी। यहाँ आकर पहली दृष्टि में ही उसे पहचान लिया है। वह चुप रहता है। भले ही उसके भीतर विचारों की आग सुलग रही है। वह तारा से मिलने आई है। उसका तारा तक का सम्बन्ध है। शीघ्र ही उसे यहाँ से चला जाना है। तारा की अपनी ससुराल है। नवीन जहाँ मन में आवेगा रहेगा और यह किरण! नवीन आज सुबह बहुत चिन्तित था। किरण का पत्र कोई साधारण घटना नहीं है। वह तो एक नया संघर्ष है। नवीन अपने ही आप उस पर सोचता रहा होगा। किसी से उस पर राय नहीं माग सकता है—तारा से भी नहीं। नवीन अपने मन के भीतर इस इस प्रकार सुलगता रहता है। इसकी जानकारी उसे आज हुई है। नवीन के विचारों के व्यक्तित्व में सरला एक अच्छी लड़की होगी—एक पूँजीपति की बेटी, जो कि एक भयानक नाग की भाँति मिल के धन की रक्षा करता है। किरण के आगे तो उसका कोई व्यक्तित्व है भी नहीं। सरला अब उस नवीन के पिछले दिनों के व्यवहार पर सोचने लगी। सरला के लिए तो वह बहुत उदार रहा है। कहीं उपेक्षा प्रकट नहीं की। उसकी बातों को चाव से सुनता था। अब सरला अपने और नवीन के बीच विचारों की एक खाई सी पाने लगी, जिसमें कि तारा माफत नहीं बन सकती है। वह चुप चाप उठी और तारा के कमरे में पहुँची। तारा तो बोली, "बड़ी देर लगाई, मालूम होता है कि भैय्या के फोटो देखती रही।"

"तेरे भैय्या मेरे बैरिष्टर साहब की तरह थोड़े ही हैं।"

"मेरे लाखों में एक भैय्या!"

"तभी तो कहती थी······।"

"ओ" चुप रह सरल, निगोडी कहीं की।"

सरला कहती रही, "तारा' तूने तो अपने भैय्या को बिगाड डाला है। तुम भाई-बहिन ने अपनी दुनिया से बाहर की बातों पर कभी सोचा ही नहीं है।"

"क्या सरला?"

"तुम्हारी जोड़ी ......।"

"सरल-सरल चुप रह नहीं तो......।"

"भैय्या से शिकायत करेगी या उनसे!"

"भैय्या की लाइब्रेरी कैसी है सरला?"

"अच्छी।"

"तुझे क्या किताबें पसन्द आई होंगी। भैय्या कहानी-किस्से तो पढ़ते ही नहीं हैं।"

"भई मान लिया कि तेरे भैय्या बहुत बड़े विद्वान हैं?" कह कर सरला 'पुल ओवर' बुनने लगी। सोच रही थी कि यह तारा क्या है? सदा से भैय्या के सरल विश्वास पर मुग्ध रही है। भैय्या जो कहेगा, तुरन्त स्वीकार कर लेगी। रुकावट नहीं डालती है। नवीन यदि कल आकर कहदे कि तारा मुझे फाँसी लगने वाली है; अब मैं मर जाऊँगा, इसे ही मौत कहते हैं। तो वह अवाक् सी बात सुनकर गाँव में घर-घर जाकर कहेगी, कि उसके भैय्या को फाँसी लगने वाली है। वे मर जावेंगे भैय्या कभी झूठ नहीं बोलते हैं। वे दोनों भाई-बहिन ऐसे ही हैं। एक दूसरे से अपने हृदय की बात पूरी पूरी कह देता है। कोई हिचक नहीं बरतता है। सरला इसीलिए नवीन के बारे में कुछ नहीं कहती है।

तारा इस चुप्पी वाले वातावरण को हटा कर बोली, "अब के भैय्या न जाने क्यों बहुत उदास रहते हैं।"

विश्वास कर लेगी। वह उसके साथ तर्क करेगी, तो वह नवीन से क्या प्रश्न पूछेगी? वह अपना कोई दरजा बनाने नहीं आई है। तब क्यों व्यर्थ ही उसे उलझाना चाहती है? यह व्यवहार अनुचित होगा। नवीन असाधारण होगा, यह वह जानती थी। यहाँ आकर पहली दृष्टि में ही उसे पहचान लिया है। वह चुप रहता है। भले ही उसके भीतर विचारों की आग सुलग रही है। वह तारा से मिलने आई है। उसका तारा तक का सम्बन्ध है। शीघ्र ही उसे यहाँ से चला जाना है। तारा की अपनी ससुराल है। नवीन जहाँ मन में आवेगा रहेगा और यह किरण! नवीन आज सुबह बहुत चिन्तित था। किरण का पत्र कोई साधारण घटना नहीं है। वह तो एक नया संघर्ष है। नवीन अपने ही आप उस पर सोचता रहा होगा। किसी से उस पर राय नहीं माँग सकता है—तारा से भी नहीं। नवीन अपने मन के भीतर इस इस प्रकार सुलगता रहता है। इसकी जानकारी उसे आज हुई है। नवीन के विचारों के व्यक्तित्व में सरला एक अच्छी लड़की होगी—एक पूँजीपति की बेटी, जो कि एक भयानक नाग की भाँति मिल के धन की रक्षा करता है। किरण के आगे तो उसका कोई व्यक्तित्व है भी नहीं। सरला अब उस नवीन के पिछले दिनों के व्यवहार पर सोचने लगी। सरला के लिए तो वह बहुत उदार रहा है। कहीं उपेक्षा प्रकट नहीं की। उसकी बातों को चाव से सुनता था। अब सरला अपने और नवीन के बीच विचारों की एक खाई सी पाने लगी, जिसमें कि तारा भी सेतु नहीं बन सकती है। वह चुप चाप उठी और तारा के कमरे में पहुँची। तारा तो बोली, "बड़ी देर लगाई, मालूम होता है कि भैय्या के फोटो देखती रही।"

"तेरे भैय्या मेरे बैरिष्टर साहब की तरह थोड़े ही हैं।"

"मेरे लाखों में एक भैय्या!"

"तभी तो कहती थी······।"

"ओ" चुप रह सरल, निगोडी कहीं की।"

सरला कहती रही, "तारा' तूने तो अपने भैय्या को बिगाड़ डाला है। तुम भाई-बहिन ने अपनी दुनिया से बाहर की बातों पर कभी सोचा ही नहीं है।"

"क्या सरला?"

"तुम्हारी जोड़ी ......।"

"सरला-सरल चुप रह नहीं तो.......।"

"भैय्या से शिकायत करेगी या उनसे!"

"भैय्या की लाइब्रेरी कैसी है सरला?"

"अच्छी।"

"तुझे क्या किताबें पसन्द आई होंगी। भैय्या कहानी-किस्से तो पढ़ते ही नहीं हैं।"

"भई मान लिया कि तेरे भैय्या बहुत बड़े विद्वान हैं?" कह कर सरला 'पुल ओवर' बुनने लगी। सोच रही थी कि यह तारा क्या है? सदा से भैय्या के सरल विश्वास पर मुग्ध रही है। भैय्या जो कहेगा, तुरन्त स्वीकार कर लेगी। रुकावट नहीं डालती है। नवीन यदि कल आकर कहदे कि तारा मुझे फाँसी लगने वाली है; अब मैं मर जाऊँगा, इसे ही मौत कहते हैं। तो वह अवाक् सी बात सुनकर गाँव में घर-घर जाकर कहेगी, कि उसके भैय्या को फाँसी लगने वाली है। वे मर जावेंगे भैय्या कभी झूठ नहीं बोलते हैं। वे दोनों भाई-बहिन ऐसे ही हैं। एक दूसरे से अपने हृदय की बात पूरी पूरी कह देता है। कोई हिचक नहीं बरतता है। सरला इसीलिए नवीन के बारे में कुछ नहीं कहती है।

तारा इस चुप्पी वाले वातावरण को हटा कर बोली, "अब के भैय्या न जाने क्यों बहुत उदास रहते हैं।"

चटपट उत्तर दिया सरला ने, "आज तक तू भैया के लिये खिलौना थी। मदारी ने बन्दरिया की शादी करदी, तब अब अकेले भला कैसे लगेगा ?"

"चुप सरला, मैं भैय्या को बचपन से जानती हूँ। अब तो वे गुमसुम रहते हैं, पहले यह बात न थी। यदि नौकरी लग जाती, तो इस गये घर के फिर अच्छे दिन आ जाते।"

सरला तो परिस्थित समझ कर बोली, "ऐसी घबराने की कोई बात नहीं है तारा। तेरे भैय्या बहुत समझदार हैं। तू व्यर्थ उनकी चिन्ता किया करती है।"

सरला यह क्या कह रही थी। मन में तो एक बवंडर उठा हुआ था। तारा क्या उस सब को सह सकेगी। वह चुपचाप सलाई चलाने लगी। तारा को भी इस बात-चीत से कोई उत्साह नहीं रहा।

तीसरे पहर नवीन चाय पीने नहीं आया। सरला बात समझ गई। तारा जानती है कि भैया लापरवाह एक नम्बर के हैं। आज चाय पीने में सरला का मन नहीं लगा। वह तारा के घर आई थी। वहाँ नवीन ने उसके पिता के आडम्बर की ऊँची दीवार दोनों के बीच चुपचाप खड़ी कर दी है। अनजाने आज यह रुकावट उसे बूझ पड़ी। अन्यथा नवीन तो अति सरल लगता था। तारा से भी बहुत सरल, और सरला भविष्य की ओर दृष्टि करती, तो मिलता कि वह कहीं दूर बंगलों वाली छितरी आबादी के बीच है। उसका मान-सम्मान समाज में है। उसका भावी पति एक उदीयमान बैरिष्टर है। वह परिवार चुपचाप समाज की ऊपरी सतह पर चलता रहेगा। फिर तारा या नवीन कोई देख नहीं पड़ेगा। वह अपने परिवार तथा अपने समाज में व्यस्त रहेगी। और तारा का परिवार,...., वह नवीन तो ......।

तारा ने भैय्या की प्रतीक्षा नहीं की। वह जानती थी कि वे देर से लौट कर आवेंगे। लेकन सरला आज उस नवीन को देख कर पूरा-पूरा पहचान लेना चाहती थी, कि वह क्या है? वह उसे कब पहचान पाई है। आज एक कसौटी परखने के लिए मिल गई है।

—नवीन पहाड़ की चोटी की एक बड़ी चट्टान पर बैठा हुआ है। वह स्थान गाँव से लगभग तीन मील की दूरी पर है। दिन को भी वहाँ की खोहों में बघेरा आदि का भय रहता है। वह आज अपने को एकाएक भारी पा रहा है। उसने यह कब सोचा था, कि उसे इतनी शीघ्रता से नया पथ पकड़ना पड़ेगा। अब उसे शीघ्र ही देश की स्वतन्त्रता के लिए विद्रोह करने वाले दल के पास चला जाना होगा। आज वह अपनी पिस्तौल साथ लाया है। बार-बार उसे चलाना सीखता है। यह उसे पिछले साल मिली थी। एक छोटी देशी रियासत के कर्मचारी ने अच्छे भाव के कारण काफी दाम लेकर दी थी। तारा कुछ नहीं जानती है। उसके लिए यह सब जान लेना आवश्यक नहीं है। तारा का उसके परिवार से उसके अलावा और किसी से सम्बन्ध नहीं है। उसने किरण का नाम सुना था। उसकी कई बातों की जानकारी है। वह लड़की कई राष्ट्रीय अन्दोलन में जेल हो आई है। उसका भाई पकड़ा गया है। वह काम को आगे बढ़ाने में सहयोग दे रही है। सुरेश पकड़ा गया। नवीन जैसे कि सब कुछ जानता था। अब उसका भविष्य 'इण्डियन-पेनल-कोड' की दफाओं पर निर्भर है और स्पेशल-ट्रिब्यूनल उसका भाग्य विधाता है। पिछले महायुद्ध के बाद साम्राज्यवाद ने उपनिवेशों की जनता में अपनी जड़ें मजबूत करने का निश्चय कर लिया है। भारतवर्ष 'रौलट ऐक्ट' को अपनाकर एक असहयोग आन्दोलन के रूप में विद्रोह प्रकट कर चुका है। फिर

गांधीजी ने नमक का दूसरा सत्याग्रह छेड़ा था। वह पुरानी बात हो गई है। वाल्मीकि का सत्याग्रह सतयुग की बात थी। वह भी इसलिये कि विश्वामित्र को 'ब्रह्मऋषि' क्यों माना जाय। गांधीजी कलयुग की शाखाओं के बीच हैं, जब कि विज्ञान एक नये युग का सूत्रपात कर चुका है।

१९२२—१९३० सन् २२ का वह प्रवाह एकाएक रुक गया। पुराने विचारों के हामियों को लेकर सरकार ने अमन सभाएँ बनाईं। खानबहादुर, रायबहादुर के खिताबवाले वर्ग ने उसकी प्रगति को रोक लेने की चेष्टा की। एकाएक एक सुबह गांधीजी खून के लाल धब्बे पाकर चौंक उठे। भला कहाँ उनकी अपनी क्रान्ति की धारणा और फिर वह लाल-लाल धब्बे! आन्दोलन जहाँ का तहाँ खड़ा कर दिया गया। गांधीजी बाल्मीकि का अस्त्र काम में ला रहे थे। जनता ने विश्वामित्र के शस्त्र को अपना लिया था। दोनों के विचारों के बीच सहयोग की भावना नहीं थी। सन् १९३० ....। आठ साल बाद फिर गांधीजी ने देखा कि संसार के कई देशों ने विद्रोह का झण्डा उठाया है। भारत तो चुपचाप तमाशा देख रहा है। फिर एक बार जलूस निकले। गांधीजी का डांडी मार्च हुआ। देश में नई लहर सी आई। जनता उस प्रवाह में ठीक तरह बह भी नहीं पाई थी कि..........., १९३१ में फिर जनता ने ऊपर सिर उठाया।........

किरण ने १९३० के आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया था। सुरेश को तो उसकी असफलता पर विश्वास था। किरण अब आंचल पसार-पसार कर उन सबकी पैरवी के लिये भीख मांगेगा। वह किरण सुना कि एक चिनगारी है उसके व्यक्तित्व की चर्चा वह अपने साथियों से सुन चुका है कि वह बहुत दृढ़ है। सुरेश पर कई-कई आरोप हैं। उसे छुड़ाना आसान सा काम नहीं है। उसका प्रश्न साधारणतः हल तो किया नहीं जा सकता है। नवीन उन सब घटनाओं को अनजाने फैला रहा है,

कि अपनी कोई निश्चित नीति सोच ले। उसे उस काम में सुख मिलता है। तारा की शादी के बाद इस परिवार का अन्तिम मोह-बन्धन वह तोड़ चुका है। अब वह बिलकुल स्वतन्त्र है।

यह ऊँचे पहाड़ों की श्रेणी है। जो दूर दक्षिण की ओर बढ़ गई है। उसके बाद गङ्गा-जमुना का द्वाबा है। जहाँ कि बड़े-बड़े शहर हैं। शहरों के भीतर कई श्रेणी के लोग रहते हैं। वहाँ आर्थिक-अधिकारों के लिए एक वर्ग का दूसरे से संघर्ष भी चलता है। कुछ नये दरजे बन बिगड़ रहे हैं। उनमें एक निकम्मी मध्य श्रेणी है, जिसका रक्षक उनका भगवान ही है। जो चुपचाप छोटे-बड़े परिवारों में फैल कर शहर की आबादी बढ़ाते हैं। सरकारी-गैर सरकारी दफ़्तरों में बाबूगिरी करते हैं। उनका किसी सक्रिय आन्दोलन से संबन्ध नहीं है। उनकी एक बहुत बड़ी संख्या वहाँ सदियों से दिन काट रही है। उसके बाद गाँव हैं, जिनका आर्थिक और सामाजिक ढाँचा चार-पाँच सौ वर्ष पुराना है। उन पर विज्ञान ने कोई प्रकाश नहीं फैलाया है। वे तो उस धरतीमाता में पैदा होकर वहीं चुपचाप मिट जाते हैं। देश के उत्थान से उनका कोई संबन्ध सा नहीं है, फिर भी देश में राष्ट्रीय विचार वाले व्यक्ति हैं। वे अपनी ओर से जागरूकता लाने में संलग्न हैं। गाँवों में बैलगाड़ियों की लीकों में धीरे-धीरे नवजीवन की धारा बहने लगी है। जमींदार, पटवारी, हाकिम जो कि 'हव्वा' से लगते हैं, उनका स्वरूप बदलेगा। वहीं एक भारी आशा से नवीन की आँखें एकाएक रुक कर कुछ ढूँढ़ती लगती हैं, मानों कि सैकड़ों वर्ष पुराना सड़ा-गला ढाँचा बदल देना पड़ेगा। शहर के भीतर वह एक वर्ग को पहचान कर उस पर विश्वास करता है। वह है मजदूर, जो कि खरा और सच्चा इन्सान है। उसमें निकम्मे मध्यवर्ग वाली असहायता नहीं

है, वह हर एक बात पर विचार करने लगा है। उनका स्वार्थ अपने व्यक्ति और परिवार की सीमा से बाहर आता जा रहा है उनमें एक पीड़ा को परखने की क्षमता है। मनुष्य की भावना के लिये वे अपना-पराया भूल जाते हैं। आगे के लिए उसने एक निश्चित राह ढूँढ़ लेने की बात सोची है। शायद वह अपने साथियों के साथ उनके आन्दोलन को नया जीवन दे सकेगा। इसमें कोई उलझन नहीं उठती है। वह जैसे कि चैतन्य हो गया है।

शहरों की जो व्यवस्था है, उनसे ही सम्पूर्ण देश के भविष्य का नवनिर्माण नहीं हो सकता है। नवीन यह भली भाँति जानता है। प्रान्तों की राजधानो की ऐसेम्बली में जिस बात की चर्चा होती है, उसका संबन्ध केवल शहरों की आबादी से है। वे सदस्य सबके प्रतिनिधि सदस्य तो हैं नहीं। शहर के चंद शीक्षित बेकारों की कष्ट निवारण की योजना बना लेने से ही संभवतः राष्ट्र का कल्याण नहीं होगा और ऐसेम्बली की फर्स पर जो व्याख्यान होते हैं, उनका अस्तित्व केवल समाचार पत्रों का कलेवर बढ़ाना भर रह गया है। रोटी सबके लिये चाहिये। यह प्रश्न जन एक-एक व्यक्ति का है, सबको रोटी और रहने का घर मिल जाना चाहिये। सारी जनता को यह चाहिये। बाद में साक्षरता और संस्कृति का प्रश्न उठेगा। शहरों के अपने शासन के लिए म्यूनिसिपेल्टियाँ हैं, वह स्वशासन वाली बात भी सही नहीं है। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की सीमाएँ जितनी बड़ी हैं कार्य शैली उतनी ही गड़बड़ है। उन असहयोग आन्दोलनों ने ऐसेम्बली म्यूनिसिपल बोर्ड और डिस्ट्रिक्टबोर्ड में जाने के लिए प्रवेश पत्र दिये हैं। इससे अधिक हित और नहीं हुआ है! नहीं, हित और हुआ है—आन्दोलनों ने देश के भीतर भी एक आवाज पहुँचाई है। जिसे विद्रोह की चेतना कहना ठीक होगा। वह चेतना अधिक उभर नहीं सकी है।

फिर जो कई एक राजनीतिक दल है, उनका अपना ही स्वरूप है। देश जितना बड़ा है; उतना ही वहाँ उलझनें हैं; प्रत्येक दल की अपनी योजनाएँ और कार्यक्रम हैं।

नवीन ने पिस्टल के लोहे की ओर देखा। कई बातों पर विचार किया। एकाएक तिरंगा झंडा याद आया तब वह मैट्रिक में पढ़ता था। गोहाटी कांग्रेस हुई थी। उसने एक मेले में कुछ विद्यार्थियों को लेकर झंडा गाड़ कर एक राष्ट्रीय दल बनाया था। शहर के बूढ़े दरोगा ने उसे अपने घर बुला कर समझाया था, कि वह यह सब क्या करने लगा है। उसकी गांधी टोपी की हँसी उड़ाई थी। समझाया था कि वह भले घर का लड़का है। उसे उसकी मर्यादा की रक्षा करनी चाहिए। लेकिन नवीन कुपूत जन्मा है। १८५७ में सुना कि उसके पड़-दादा ने किसी अँग्रेज परिवार को आश्रय दिया था। वह उस सम्मान पर आश्रित नहीं है। उस आदर की कड़वी घूंट एक अरसे तक पी चुका है। १९३० में उसने उस तिरंगे झंडे का तूफान देखा। उस शक्ति को देखकर वह गद्‌गद् हो उठा था। एकाएक वह सब एक सीमा पर रुक गया। गांधीजी ने अपना दाँव बदल दिया था।

वह अपने पहाड़ों पर सोचने लगा वहाँ छोटे-छोटे गाँव हैं। वहाँ के लोग काफी परिश्रम करके भी साल भर दो जून खाना नहीं पाते हैं। उनका समाज स्वस्थ नहीं हो पा रहा है। वहाँ की व्यवस्था में कई खामियाँ आ गयी हैं। उजड़े घरानों के लड़के शहरों में भाग कर छोटी-छोटी नौकरियों में लगे हुये हैं। कुछ निकम्में नवयुवक और कुछ न कर अपने बूढ़ों की अलोचना करने में पवीण हो गए हैं। आसपास के कस्बों की थोथी चमक की कृतिमता वहाँ पहुँच गई है। आपसी स्नेह नाता-रिश्ता टूटता जा रहा है। नवीन को जैसे कि उस सब की रत्ती-रत्ती जानकारी है। तारा के लिए जो स्नेह आज तक नवीन संवारे हुए था, उसे भी गाँव को छोड़ने के साथ वह वहीं सा छोड़ देगा। जिस घर पर

अपना वश था, जिस कमरे को तारा और वह चाव से सजाते हैं; और वह कमरा जहाँ माँ बीमारी की हालत में पड़ी-पड़ी दोनों को सीख दिया करती थी। वह गङ्गा की रेत, वह उनका अपना नहाने का घाट, और आलमारी में संवार कर धरे हुये वें सैकड़ों देवता, वह भैरवनाथ की ध्वजा! नवीन के सम्मुख वे सारी बातें एक-एक कर आ, फिर ओझल हो जाती हैं। उसका आज तक केवल एक नाता था, वह थी बहिन तारा। उसकी शादी के बाद उसे विदा कर दिया था। सुरेश ने एक दिन उसका दूसरा नाता देश से जोड़ा था। किरण ने आज उसकी याद दिलाई है।

सुदर्शन संध्या की लौरी से चला गया। वह रुक नहीं सका। नवीन ने उससे कोई खास बात नहीं की। जब सुदर्शन की लौरी आँखों से ओझल हो गई, तो उसे लगा कि वह अब कुछ घन्टों का मेहमान है। अपनी ही धुन में पहाड़ी पगडंडी पर चढ़ने लगा। जब बड़ी दूर चला आया तो लगा कि साँझ हो आई है। कुछ पहेलियों की गणना की, कई समस्याओं को तोला। सुरेश के पकड़े जाने पर दल की शक्ति बहुत कम हो गयी थी। कभी तो लगता था, कि वह जो आज फिर बिखरी शक्तियों को जगा करके एक सशस्त्र क्रान्ति लाना चाहते हैं; वह सफल सा रास्ता नहीं है। उनके कई साथियों का जीवन नष्ट हो चुके हैं। वे साथी बड़े शक्तिशाली व्यक्ति थे। उनका जीवित रहना आवश्यक था। उनके बड़े-बड़े त्याग करने पर भी वह शक्ति आगे नहीं बढ़ी। यह एक शब्द भर रह गई। उसकी कोई व्याख्या वे जनता तक नहीं पहुँचा सके थे। शहरू चेतना बुझ गई। वहाँ का जोश एक क्षणिक सा प्रवाह था। लेकिन देश में विदेशी पूँजी ने शहरों के भीतर एक नया वर्ग ला दिया था। जो कि खेतों से आए हैं। जिनका नाता अधिकतर किसानों से ही है, उनके संस्कारों पर किसानों की पड़ी छाप अभी नहीं हटी है। वे खेतिहर मजदूर थे, लेकिन यहाँ वे सब अपने को एक-एक करके, अपनी संख्या का

गर्व करने लगे हैं। उसे उन मज़दूरों की जिन्दादिली पसन्द है। वे किसान की भाँति भावुक नहीं रह गए हैं। किसान की तरह उनका जमीन की मंहक से कोई सम्बन्ध नहीं है। उनका आदान-प्रदान का प्रश्न उनका श्रम का मूल्य हल करता है; जिसे वे तनखा कहते हैं। इस तनखा का उनको बड़ा गर्व है। वे अब अपने को किसान नहीं मानते, जैसे कि उनके वर्ग का सवाल एक अलग सवाल है, जिससे किसान का कोई सम्बन्ध नहीं है।

उन स्थितियों पर नवीन विचार करता है। उसने मज़दूरों की सभाएँ देखी है। उनके प्रति बौद्धिक सहानुभूति रखती है। संघ की शक्ति पर उसकी सदा से आस्था रही है। पहले वह कभी कभी उनके परिवारों को झाँक-झाँक कर देखा करता था। अब वह उनकी भावना को समझ गया है, कि उनका भविष्य की सामाजिक व्यवस्था में एक विशिष्ट स्थान होगा। गरीबी में पले वे बच्चे क्रान्ति में अग्रगणी रहेंगे। कई हड़तालों में वह शामिल हुआ है। उसने वहीं अनुभव से सीखा है कि उनकी ताकत एक जागरूक शक्ति है। जिसे कि आसानी से नहीं भुलाया जा सकता है। वह नवीन अपने जीवन में उठते उद्‌गारों से दूर भाग जाना नहीं चाहता है। तारा को किसी दिन वह सारी स्थिति सुलझा कर, पत्र लिखेगा। तारा भैय्या के उस कर्त्तव्य को समझ लेगी। वह उस पिस्टल को देखने लगा। फिर उसने उससे निशाना लगाना आरंभ किया।

सोचा फिर, कि किरण को परसों पत्र मिल जायगा और वह अब यहाँ अधिक दिन तक नहीं रह सकता है। यह पहाड़ छूट रहा है। आगे अब गरमी की छुट्टी नहीं होगी। उसका यहाँ आना निश्चित नहीं है। वह उठ खड़ा हुआ। एक बार दूर-दूर तक नजर डाली। वहाँ पहाड़ों की ऊँची-नीची श्रेणियाँ फैली हुई थीं। नीचे गंगा की घाटी थी। जहाँ काफी अंधेरा-अंधेरा छा रहा था। वह बहुत भावुक बन गया। नीचे फिर उसकी नजर एक चिट्टी रोशनी पर पड़ी। कोई लारी नागिन सी मुड़ी सड़क पर

ऊपर आ रही थी। वह स्तब्ध सा खड़ा-का-खड़ा रह गया। पास किसी चिड़िया के पंख फड़फड़ाए। वह उसी तरह बड़ी देर तक खड़ा ही रहा।

एकाएक उसे लगा कि धुँधला अँधियारा हो आया है। वह जल्दी-जल्दी बटिया-बटिया पर चलने लगा। उसने पीछे मुड़ कर नहीं देखा। वह तेजी से कदम बढ़ाने लगा। वह उस स्थान के साथ अपना सम्बन्ध तोड़ चुका है। उसे इसके लिए जरा भी दुःख नहीं था। यह तो केवल नवीन का प्रातःकाल था। वह अब जीवन में प्रवेश कर चुका था। गाँव की रोशनियाँ झिलमिलाने लगीं। वह गाँव के उस आमंत्रण पर भी कुछ नहीं सोच सका। धीरे धीरे वह गाँव के बीच पहुँच गया। भैरव-नाथ के चौक में कुछ छोटे लड़के लड़कियाँ खेल-खेल रहे थे। वह वहाँ से भी बढ़ गया। वह किसी पुराने बन्धन से अपने को फिर नहीं जकड़ना चाहता था।

अब नवीन अपने मकान पर पहुँच गया था।

अनमने मन से नवीन ने खाना खाया और जल्दी-जल्दी अपने कमरे में पहुँच गया। वहाँ इजीचियर पर लघर कर चुपचाप न जाने क्या गुनगुनाता रहा। मन स्थिर नहीं था। हृदय में काफी उथल पुथल मची हुई थी। वह कुछ निर्धारित न कर सका कि यह सब तारा से कहना उचित होगा या नहीं। दिन को जो नए डिजाइन की स्लिप ओवर तैयार की जा रही थी, तारा उसे भैय्या को दिखलाने ले आई। सरला दरवाजे पर ठिठक कर खड़ी रह गई। तारा पास की कुरसी पर बैठी और अब बोला नवीन, "तारा मैं परसों सुबह की लारी से देश जा रहा हूँ।"

"परसों, अभी से ...।" तारा ने भैय्या की ओर अवाक होकर देखा।

"तू नहीं जानती तारा कि लॉ लेना है। अभी चले जाने से ट्यूशन मिल जावेगा।"

बात समझ कर तारा चुप हो गई। कुछ कह नहीं सकी। उसका दिल उमड़ रहा था। तभी कहा नवीन ने, "अभी तू कुछ महीने यहीं रहना। मैं उन लोगों को चिट्ठी लिख दूँगा।"

सरला सारी बात समझ कर बाहर खड़ी न रह सकी। चुपके से भीतर पहुँच कर कुरसी पर बैठ गई। अब उसे नवीन सेकोई झिचक नहीं। तारा को उदास देख कर पूछा, "क्या बात है तारा?"

"भैया परसों जा रहे हैं।"

"परसों!" नवीन की ओर सरला ने देखा। वह बात सुन चुकी है। सारी स्थिति को समझती है।

"आप तो यहाँ कुछ दिन रहेंगी।"

"मैं खुद जाने की सोच रही थी।"

"उसकी माँ की तबीयत ठीक नहीं है।" तारा बोली,

नवीन चुप रह गया। बोली सरला, "यदि तारा छुट्टी दे दे तो मैं आपके साथ चली चलती।"

तारा ने स्वीकृति देदी। नवीन को कोई उलझन नहीं थी। सरला के यहाँ उसे नहीं जाना है। तारा और सरला चली गई थीं। नवीन बिलकुल अकेला कुरसी पर लेटा हुआ रह गया। उसने आँखे मूँद लीं। वह डिज़ लालटेन की रोशनी से दूर रहना चाहता था। अपने स्कूल वाले जमाने में इस लालटेन की कई चिमनियाँ चटखी थीं। वे तुरन्त बदल दी जाती थीं। एक बड़ा अरसा उसने इस लालटेन की रोशनी में व्यतीत किया था। वक्त बीत रहा था, पर आँखों में नींद नहीं थी। हृदय हलका था फिर भी वहाँ वह साँस का कम्पन सुन रहा था। उसकी आँखें खुलीं और दृष्टि सामने टंगी हुई बड़ी रंगीन तसवीर पर पड़ी। मल्का विक्टोरिया अपने परिवार के साथ थी। उसका बड़ा शीशा चटखा हुआ था। उस पर धूल पड़ गई थी, एक ओर कुछ देवताओं की तसवीरें थी। उनमें से गणेश पर दृष्टि पड़ गई। परम्परा से अन्धविश्वास चला आता है कि

वे जनता के सही देवता हैं। अब वह खिड़की के पास खड़ा हो गया। सामने पहाड़ी की चोटी पर चीड़ के घने बन से चाँद उदित हो रहा था। धीरे-धीरे वह चाँद ऊपर उठ गया और साफ-साफ चमकने लगा। वह टकटकी लगा कर उसे देखता रहा। चाँद और सितारों की दुनिया उसे भली नहीं लगती है। वह कभी उनको देख कर गीत नहीं गुनगुना सका है। प्रकृति का सौन्दर्य जीवन के लिए अपेक्षित मान कर भी वह उससे किसी तरह का मोह नहीं बढ़ा सका। आज एकाएक भावना उठी। माँ बचपन में उन सितारों की ओर उंगली करके कहती थी, कि यदि उसे अधिक परेशान करेंगे तो वह वहाँ भाग कर चली जावेगी। आज माँ तो उनके बीच नहीं है। शायद उस चाँद-सितारों की दुनिया में नहीं गई होगी। इस पृथ्वी में रहने वालों से उसे तो स्नेह था! चाँद ऊपर-ऊपर उठता रहा। पिछली स्मृतियों की गठड़ी जिसे वह व्यर्थ अब तक ढोता रहा, अब उसने खोल ली। उनको बाँट कर जैसे कि वह स्वतत्र हो जावेगा। अब केवल तारा बच गई है। लेकिन वह स्मृति नहीं है। नवीन का हृदय उसी भाँति गद-गद हो उठा, जैसे कि तारा का इस घर को छोड़ते हुए हुआ था। लेकिन नवीन अपने भविष्य में आगे संभवतः इस घर में लौट आवेगा। तारा तो इससे अलग हो गई है।

नवीन लौट आया। उसने लालटेन की बत्ती मन्दी की। वह धुप-धुप-धुप करके बुझ गई। कमरे में अँधेरा छा गया। नवीन आज बहुत थक गया था। वह लेट गया।

× × × सच ही नवीन और सरला एक दिन लारी से रवाना हो गए। तारा स्थिति को जानकर भी हृदय के प्रवाह को नहीं रोक सकी। उसकी आँखों में आँसू छलछलाए। सरला ने तारा को बहुत समझाया। नवीन कुछ नहीं कह सका। सरला से अधिक कहने की शब्दावली उसके

पास नहीं थी। तारा पीछे छूट गई। नवीन और सरला दोनो एक दूसरे के समीप नहीं पहुँच सके। लारी ऊँचाई वाली मोड़ों को पार करती, तो फिर नीचे नदी की घाटी की ओर बढ़ जाती थी। फिर नदी के किनारे-किनारे चलने लगती थी। आज नवीन की आंखें उस सब दृश्य को नहीं देख पा रही थी। मानों कि उसे इस साधारण सफर की दूरी से ऊपर रहना है। और वह प्रति दिवस के धन्धों के प्रवाह से प्रभावित नहीं होता है। सरला ऐसी यात्रा में थक गई थी। उसका मुँह कुम्हला और चेहरा फीका पड़ गया था। जब उस बूढ़े नौकर ने पूछा—बीबी भूख तो नहीं लग रही है। तब नवीन एकाएक चेतन्य हुआ। सुबह वे केवल चाय पीकर चले थे। अब एक बज गया है। वह तो साधारण शिष्टाचार तक नहीं जानता है। अतएव पूछा, "सरला तूने कहा क्यों नहीं। अब आगे नदी के किनारे खाना खा लेना।

सरला ने कोई उत्तर नहीं दिया वह चुपचाप तकिए के सहारे लेटी सी थी। आँखें अधमुँदी थी। नवीन एकटक उसे देखता ही रह गया। चुपके किसी ने उसके कान में सुझाया कि सरला सुन्दर है। आज तक कोई यह बात कहता, तो शायद वह उस पर कोई विचार नहीं करता। आज वह सरला को देखकर स्वयं सोचने लगा कि वह सरला बहुत सुन्दर है। तारा ने कभी उससे यह बात क्यों नहीं कही थी। सरला ने पूरी आँखें मूँद लीं थी। वह उसके चेहरे को सरलता से पहचानने लगा। बड़ी देर उस सरला की हल्की-हल्की साँसों के कंपन का अनुभव किया। नवीन ने आज तक इस ओर कभी नहीं सोचा था। माँ संभवतः जीवित होती, तो आज वह इस भाँति चुपके भाग कर नहीं निकल जाता। माँ एक बहू लाती। वह नौकरी करता। माँ, बहू और नवीन की दुनिया में सुख से रहती। माँ का वह सन्तोष नदी किनारे की राख की ढेरी में रह गया था। जिस मरघट पर पीढ़ी दर-पीढ़ी मुरदे जलाए जाते हैं, वहां उसने अपनी मां की कपाल क्रिया भी की थी। राख और बुझे कोयले

सब ने मिल कर बहा दिए। बाकी बचे लोथड़े को वह गंगा की धारा में छोड़ आया था। वह सब आज नवीन नहीं सोचना चाहता है। और वे मोड़ से बढ़ गए। नीचे नदी का पानी मटमैला था। बरसात का पहला मेंह बरस चुका था। नदी की धारा तेज थी। वह उस ओर देखने लगा। न जाने कब तक देखता ही रह गया। एकाएक लारी एक झोंका देकर रुक पड़ी। सरला ने आँखें खोल लीं। लारी रुक पड़ी। नवीन उतर गया। सरला ने आंखें मलीं। वह भी उतर पड़ी। नवीन ने 'टिफिन केरियर' उठा लिया। सरला और वे नदी के किनारे फैली चट्टानों पर बैठ गए। अब नवीन ने पत्तों में खाना संजोज कर रख दिया। भूखी सरला खाना खाने लगी। साधारण शिष्टाचार भूल गई, कि नवीन ने खाना शुरू नहीं किया था।

नवीन को भूख नहीं थी। वह एक चट्टान पर बैठ गया। इधर-उधर चारों ओर मछुए मछलियां पकड़ रहे थे। नवीन को वह खेल बहुत पसन्द आया। वह उत्सुकता से उस सारे व्यापार को देखने लग गया। सरला कब पास आकर खड़ी हो गई, उसकी समझ में नहीं आया। सरला तो बोली ही, "आप नहीं खावेंगे।"

"नहीं" कह कर वह उसी प्रकार बैठा रह गया। सरलातो खड़ी ही थी।

"सुबह भी आपने ....।"

"मुझे भूख नहीं है सरला.........।" इससे पहले कि वह कुछ कहे, सरला के नौकर ने उनसे कह दिया कि देर हो रही है। वह सरला के साथ साथ लारी की ओर बढ़ गया।

फिर लारी चलने लगी। पहाड़ी के ऊपर कई मोड़ पार करके बढ़ गई। सरला ऊँघ रही थी। नवीन देख रहा था कि वह नदी नीचे रह गई है। अब तो वह बहुत दूर एक धुँधली रेखा भर में सीमित रह गई है। कुछ देर के बाद उसका कोई चिन्ह नहीं दीख पड़ा। सरला तो सो गई थी। नवीन ने उस ओर ध्यान नहीं दिया। पहाड़ी के ढाल पर उसे

हुए कई गाँव छूट रहे थे। आज उसे उन सबको छोड़ते हुए न जाने क्यों एक अज्ञेय पीड़ा हो रही थी। सरला की तरह उसे क्यों नहीं नींद आ जाती है। उसे तो सो जाना चाहिए। मध्याह्न का सूर्य ढल गया है। तीसरा पहर गुजरता जा रहा है। कभी-कभी मील के पत्थरों पर आँखें अटक जाती है। साठ मील से अधिक सफर तय हो चुका है। लारी एकाएक देवदारु के घने जंगल को पार करने लगी। उस दृश्य को देखकर वह सरला को जगाने का लोभ नहीं संवार सका। धूप घने जंगल से छन-छन कर आ रही थी। स्वयं सरला को वह दृश्य बहुत सुन्दर लगा। वह नवीन के इस व्यवहार पर मुग्ध हो गई। नवीन को देवदारु के ये पेड़ पसन्द हैं। उनका विशाल रूप, सीधा स्वस्थ तना, उनकी ऊँचाई उसके मन में एक नई भावना लाती है। लेकिन धीरे-धीरे वह बन पिछड़ गया। अब चीड़ के पेड़ इधर-उधर बिखरे हुए मिले। नवीन को लगा कि ये लड़कियाँ सब एक सी होती हैं। तारा और सरला में केवल नाम और रिश्ते का अन्तर है। वह भली लड़की है। तारा शायद उस समय चुपचाप दालान में खड़ी होगी, विपिन और मालती सरला की दी हुई रेलगाड़ी को पटरी पर चाभी दे देकर चला रहे होंगे।

कि पूछा सरला ने, "यहाँ तो जाड़ों में बरफ पड़ती होगी।"

"हाँ, कई दिनों तक तीन-चार फुट रहती है। उन दिनों तुम आओ तो यहाँ और सुन्दर लगता है।"

"तारा कहती थी कि उनके गाँव में बरफ पड़ती है। वहाँ जाऊँगी।"

"वह तो देहाती है।"

"तारा को वहाँ भला नहीं लगता है।"

"भला—नहीं लगता!"

"कहती थी भैय्या की नौकरी लग जाय तो फिर एक बार देश देख

आऊँगी' नहीं तो उन पहाड़ों के बीच दम घुटता है।"

"तभी तारा इतना उदास रहती थी, और अब......"

"आप उनके घर वालों को लिख दें, कि हमारे बुलाने पर वे लोग एक महीने के लिए जाड़ों में भेज दें।"

इस आमन्त्रण पर नवीन कुछ एकाएक नहीं बोला। अब लारी रेलवे-स्टेशन के समीप पहुँच गई थी। सरला भी अधिक नहीं बोली। स्टैंड आगया था। लारी खड़ी हो गई। नवीन ने सामान उतार लिया। सरला बड़े फैले हुए इमली के पेड़ के नीचे खड़ी थी। उसने समीप पहुँच कर चुपके कहा, "वे लोग तारा को नहीं भेजेंगे।"

सरला यह बात जानती है। वह चुप रह गई। तारा का प्रदेश छूट गया है। चार दिन वह वहाँ रही है। नवीन स्टेशन के भीतर चला गया था। सरला चुपचाप खड़ी-खड़ी अपने चारों ओर कुतूहल से देख रही थी। कई लारियाँ बारी-बारी से आई थीं। उनसे मुसाफिर उतर रहे थे। भीड़ बढ़ती चली जा रही थी। लेकिन तारा तो पहाड़ों की कई श्रेणियों के भीतर होगी। उसका मायका का दायरा एक पहेली सा है। ससुराल है, जहाँ कि वह संभवतः अपने को भी ठीक संवार नहीं पाती है। तारा की उन सारी सीमाओं के लिए स्वयं नवीन आज अपने जिम्मेदार नहीं मानता है।

नवीन आया। सरला 'वेटिंग रूम' में चली गई। वह बहुत थक गई थी। कुरसी पर लेटते ही आँखें मुँद गईं। नौकरानी चाय लाई थी। सरला ने एक प्याला चुपचाप पी लिया। अब एकाएक एक नई चेतना आई। नवीन कहाँ जावेगा? क्या वह उससे इस प्रश्न को पूछ लेने का अधिकार रखती है? वह अपने को इतनी सबल कब पाती है! नवीन के व्यक्तित्व की परिधि से वह बड़ी दूर है। वह अपने में कई बातें सोच रही थी। नवीन बहुत कम बोलता है। उसे उसने कभी हँसते हुए नहीं पाया। चेहरा सदा खिला रहता है। कहीं किसी बात में

उलझा नहीं है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर आसानी से दे दिया करता है। सरला को कहीं ऐसा नहीं लगा कि नवीन उसके समीप पहुँचा हो। सरला की दृष्टि उस कमरे पर पड़ी। वह आज मुसाफिर है कल सुबह अपने घर पहुँच जावेगी। यह नवीन अब क्या करेगा?

गाड़ी आ गई थी। सरला का बिस्तर नवीन ने लगा लिया, सरला लेट गई। पूछा नवीन ने, "भूख तो नहीं लगी है।"

सरला उस सफर से थक गई थी। सिर हिला कर मना कर दिया। धुँधली संध्या थी। गाड़ी घने जङ्गलों को पार करने लगी। अब चाँद निकल आया था। वह भी गाड़ी की गति के साथ ही बढ़ रहा था। नवीन बाहर से दृश्य देखने लगा। रेल की यात्रा में उसे नींद नहीं आती है। उस खुली दुनिया को देख कर उसके मन में विचारों का स्रोत सदा बहने लगता है कई बातें सुलझ जाती हैं। वह स्वस्थ मन से सब कुछ समझता-बूझता है। यह चाँद सदा उसके मन की गति के साथ रहा है। वहाँ भी जैसे कि प्रकाश फैलाने मे सफल हुआ हो। आज नवीन अपने पुराने संस्कारों की ओर दृष्टि फेरने लगा। उनका परिवार और उसका विस्तार बहुत बड़ा नहीं है। चार बुआएँ थीं और उसके पिता। अब तारा और वे हैं। परिवार अधिक फैला हुआ नहीं था, इसीलिए उसे समेट लेने में कोई कठिनाई नहीं पड़ी बचपन में चपरासी आपस में फुस-फुस करते थे, कि वह बड़े ओहदे वाला साहब बनेगा। वह सारी बात झूठी निकली। अँग्रेजी स्कूल की पढ़ाई से वह "रूल ब्रतानिया' का सबक सीख कर निकला था। उस पढ़ाई को भूल सा गया है।

एकाएक सरला की नींद टूट गई। गाड़ी किसी जंक्शन पर खड़ी हो गई थी। खिड़कियों से फेरीवाले अपने-अपने सामान का गुणगान करने लगे। पूछा सरला ने "क्या बज गया है?"

"साढ़े-नौ।"

सरला जम्हाई लेने लगी। नवीन ने उस अस्तव्यस्त सरला को देख

भर लिया। सरला चुप थी। पूछा नवीन ने, "कुछ खाओगी। यहाँ तो गाड़ी देर तक रुकती है।"

सरला ने मना कर दिया तो फिर पूछा, "चाय मंगवाए लेता हूँ।"

सरला ने चाय के लिए भी अपनी अनिच्छा प्रकट करदी।

नवीन ने तो चाय मंगवाली, सरला आँखें मल रही थी। वह चुपचाप गूँगी सी बैठी हुई थी। इसीलिए नवीन ने पूछ डाला, "क्या तबीयत खराब है?"

"नहीं तो।"

यह नवीन अब परिचित सा सवाल पूछ रहा था। क्यों पूछ रहा था। सरला का मन अब स्वस्थ हो आया। नवीन भी मनुष्य है। उसके हृदय की सहृदयता पर वह मुग्ध हो गई। चाय आ गई। नवीन ने एक प्याला बनाकर उसे दे दिया तो उसने चुपचाप ले लिया। सरला चाय पी रही थी। नवीन तारा की सहेली को निहार रहा था। तारा के मार्फत उसे पाया है। लेकिन नवीन ने एक बार फिर पूछा, "कुछ खायेगी सरला।"

सरला ने एक घूँट चाय की पी और नवीन पर आँखें फैलादी कि उसकी जैसी इच्छा हो। नवीन ने टोस्ट और आलू की टिकियाँ मंगवाली। सरला ने सब स्वीकार कर लिया। नवीन का आज का आतिथ्य उसे भला लगा। तारा का भाई बहुत बड़ा व्यक्ति नहीं है, मन में अनायास यह भाव उठा। लेकिन यह नवीन तो......! वह तारा को और उस घर को भी छोड़ कर भाग रहा है। कल न जाने कहाँ चला जावेगा। यदि पकड़ा गया तो जेल होगी। मन में एक तीव्र कम्पन हुआ फिर वह सम्भली, नवीन तो चाय पी रहा था। उसके व्यवहार में कोई अन्तर नहीं मिला।

चाय पी लेने के बाद नवीन ने पान ले लिए। सरला पान नहीं खाती है। पर आज खाना स्वीकार कर लिया। नवीन उसे देख रहा था, जिससे कि भविष्य में उसका कोई सम्बन्ध नहीं रहेगा। नवीन खिड़की से

बाहर खुली चाँदनी में देख रहा था। गाड़ी आगे बढ़ रही थी। गाँव, कस्बे, पेड़-पौधे सब पीछे छूटते जाते थे। वह नवीन अपनी अगली मञ्जिल की ओर रवाना हुआ है। भविष्य की चिन्ता उसे नहीं है। उसके वर्तमान की सीमा है, कि वह अपक साथियों से मिलेगा। सरला फिर सो गई थी यह बड़ी देर के बाद उसे मालूम हुआ। डिब्बे में नजर डाली। एक परिवार बैठा हुआ था। तीन लड़के, चार लड़कियाँ और माता-पिता। कई बर्थों को वह अपने परिवार की फजल से घेरे हुए थे। दो बाबू लोग भी अपनी टाइयाँ लगाए बैठे बैठे ऊँघ रहे थे। उसके बाद सरला और नवीन, जिनका कि कोई आपसी रिश्ता नहीं है।

नवीन सरला का भविष्य चित्रित पाता है—वह साफ है। सरला का परिवार......नवीन फिर बाहर चाँदनी में कुछ ढूँढ़ रहा था। सरला पर वह जितना ही सोचता है, वह उतना ही उलझा देती है। उस उलझन से नवीन छुटकारा नहीं पाता है। वह चाहे तो सरला को बहका सकता है। अपने व्यक्तित्व से शायद सरला को अपनी सम्पत्ति बनाने में भी सफल हो जाय। नेक छोटे परिवार का निर्माण, नौकरी, बच्चों-कच्चों की तादाद। यदि वह सरला के सम्मुख यह प्रश्न रख दे, तो क्या सरला इस सब को आसानी से स्वीकार कर लेगी? मनुष्य का चरित्र जितनी ऊँचाई तक उठ सकता है, उतना ही नीचे गिरते हुए अधिक देर भी नहीं लगती है। मनुष्य के चरित्र की कोई थाह नहीं है। साधारण अवसर ही कभी-कभी उस पर प्रभाव डाल देता है।

लेकिन सरला सो रही है। वह उसे नहीं जगायेगा। आज यह एक प्रश्न पूछ कर व्यर्थ ही उसे नहीं उलझावेगा। आज नवीन का मन बार-बार भावुकता की लहरों में उतराने लगता है। पहले कभी वह इतना भावुक नहीं था। वह सरला की ओर देखने लगा। वह सो रही थी। उसका स्वरूप विचित्र लगा। अब उसे ज्ञान हुआ कि सरला बहुत सुन्दर है। यह जैसे कि पहला सबक हो। इतना ज्ञान आज तक

उसे नहीं हुआ था। अब वह उसे पूरा-पूरा जान लेना चाहता था, कि सरला किस धातु की बनी हुई है। लेकिन वह चुपचाप सोई हुई थी। उसकी हल्की हल्की उसासों के अतिरिक्त और कुछ भास नहीं हुआ। वह उसे जगाकर व्यर्थ अपना स्वार्थ व्यक्त नहीं करना चाहता था, कि वह उसके परिवार में रह सकेगी या नहीं। शायद इस प्रश्न को पूछने का कोई अधिकार उसे नहीं है। न सरला को अपनी भावुकता में उसका उत्तर देना ही हितकर होगा। नवीन अब ऊँघने लग गया! उसे नींद आ गई। बार-बार नींद उचट जाती थी और फिर आखें मुंद जातीं।

एकाएक नवीन उठा। उसने सरला को जगाया। उसकी घड़ी में पाँच बज गए थे। सरला का शहर पास आ रहा था। वहाँ साढ़े पाँच बजे गाड़ी पहुँचती है। सरला का सब सामान उसने ठीक कर लिया। सरला ने सावधानी से सारी चीजें संभाल लीं। अपने बाल काढ़े, जैसे कि नवीन से उसे कोई हिचक नहीं हो। नवीन सोच रहा था, कि सरला को भी अब वह विदा कर देगा। मोह की नागफांस से उसे जल्दी ही छुटकारा मिल जायगा। जीवन के एक पिछले अध्याय में तारा और सरला रह जावेंगीं। तारा से आगे वास्ता रहेगा, इस सरला से संभवतः नहीं। चाँद की रोशनी फीकी लग रही थी। गाड़ी तेज गति से बढ़ रही थी। सरला अपना सारा सामान समेट कर बोली, "आप भी यहीं उतरेंगे न!"

उसने सरला की ओर देख कर कहा, "नहीं। मेरी ओर से अपनी माँ जी के चरण छू लेना।"

"अभी तो कालेज खुलने में डेढ़ हफ़्ता है?"

"मुझे और कई काम हैं।"

"माँ बुरा मानेगी। मेरा यह अनुरोध आपको स्वीकार करना

पड़ेगा।"

"फिर किसी दिन आऊँगा।"

"जब आप आज ही नहीं आरहे हैं तो आगे आने की आशा व्यर्थ क्यों की जाय।"

"मैं वादा करता हूं।"

"मुझे विश्वास नहीं आता है। आप दो-चार दिन रह कर चले जाइयेगा। माँजी और पिताजी आपको देखने को लालायित हैं।"

कह कर सरला ने सामान बटोरन शुरू कर दिया। वह नवीन कब जानता था, कि कुछ लड़कियाँ हठ करती हैं। तारा तो उसकी बातें आसानी से स्वीकार कर लिया करती है। कोई तर्क कभी नहीं उठता है। अब उसे झुकना पड़ रहा है। वह अपनी पिछली भावुकता के कारण निर्बल पड़ता गया। अधिक झगड़ा करना हितकर नहीं था। सरला तारा से भिन्न है; अधिक सुलझी और होशियार है। वह उसे रोक लेने की क्षमता रखती है। वह अनुनय-विनय करने में प्रवीण है। तारा बहुत सीधी है। किसी बात पर अधिक प्रश्न नहीं उठाती है। सरला शासन करनेकी प्रणाली में चतुर है। उसकी बात की अवज्ञा नहीं हो सकती है। यह स्वीकार करना ही पड़ेगा। सरला खड़ी हो गई थी। अपना बटुआ उसने ले लिया। सब सामान ठीक हो जाने पर बैठकर बाहर देखने लगी। अब वह अपने शहर की सीमाएँ बताने लगी। नवीन चुपचाप सब कुछ सुन रहा था।

धीरे-धीरे सिगनल पार कर लाइनों का विस्तार होने लगा। 'लोको' के आसपास कई इञ्जन खड़े थे। गाड़ी में एक कम्पन हुई। उसका अनुभव नवीन को हुआ। अब गाड़ी प्लेटफार्म पर खड़ी हो गई थी। सरला का नौकर दरवाजे के बाहर खड़ा होकर पूछ रहा था, "बीबी रानी तार तो भेज दिया था।"

सरला को तार भेजने की याद थी; पर वह न जानती थी कि

नवीन उसके साथ वहाँ उतरेगा। इस अपनी सफलता पर उसे कोई विश्वास नहीं था। अन्यथा वह इस महत्वपूर्ण समाचार की सूचना अवश्य देती। नवीन सामान उतरवा रहा था। सरला ने नौकर बाहर भेजा और दो तांगे ठीक कर लेने को कहा। नवीन सरला के व्यवहार पर मुग्ध था सामान कुलियों ने उठा लिया। सरला ने सारा सामान गिनकर लगवाया। जब वे सरला के घर पहुँचे तो सूर्योदय हो रहा था। पूर्व में लाली फूट रही थी।

नवीन ने उनकी बड़ी कोठी देखी नौकरों ने सरला का स्वागत किया नवीन उनके लिये एक साधारण व्यक्ति था। घर के लोग सोए ही हुए थे। सरला भीतर चली गई। कुछ देर बाद लौट कर आई और बोली "वह आपका कमरा है।"

नवीन को उसका कमरा दिखा कर चली गई। नवीन ने हाथ-मुँह धो लिया, कपड़े बदले और बाहर निकला। बहुत बड़ा बाग था। दूर कहीं पर चर्च का एक हिस्सा दीख रहा था। बाहर एक बड़ा फाटक था, जिस पर कि दो नैपाली पहरेदार मुस्तैदी से खड़े हुए पहरा दे रहे थे। उनके हाथ पर बन्दूकें थीं। उसे देखकर वे छाती तान कर खड़े हो गए। नवीन अपने को देखने लगा कि उसे बाँध कर यह सरला कहाँ ले आई है। क्या यह उसकी कमजोरी थी कि वह चुपचाप चला आया है? सरला तो ऐसी बलवान नहीं है। वह आसानी से उसे समझा कर टाल सकता था। लेकिन उसने अपने को धोखा दिया है। सरला उसे निर्बल पाकर यहाँ ले आई है। इस परिवार से तारा का नाता कोई हो, उसका कोई नहीं है। सरला को ऐसा कोई अधिकार है कि उस पर हुकुमत करे। वह बाग में टहलने लगा। इस एकान्त से उसे बड़ी खुशी हुई। सामने सुन्दर चबूतरा था। उस पर पेरिस की अनूठी चित्रकलापूर्ण मूर्तियाँ हाथों में फुहारा लिये पानी छिड़क रही थीं। एक तालाब में रङ्गीन मछलियाँ थीं। वह उन छोटी लाल लाल मछलियों

को देखने लगा। फिर वह फलों की क्यारियों की ओर बढ़ गया। अमरूद के पेड़ों पर नजर पड़ी आम के पेड़ फलों से लदे हुए थे वह उनकी ओर देख रहा था। सामने ऊँचे सेमल के पेड़ पर उसकी दृष्टि गई। वहाँ शहद की मक्खियों का एक बड़ा छत्ता लगा हुआ था। वह उस ओर बड़ी देर तक देखता रह गया। बाग का कोना कोना उसने छान डाला। जब वह थक गया तो लौट आया। सरला के भाई बाहर बरांडे में पढ़ रहे थे। वह उनके पास बैठ गया और उनसे सवाल पूछने लगा। वह जानता है कि ये बालक कल राष्ट्र के सबल स्तंभ बनेंगे। उसके लिये उनको तैयार होना है। इनके मस्तिष्क का विकास ही परम आवश्यक है। जिस शिक्षा का प्रसार है, वह गलत है। तभी सरला के पिताजी आ गए थे। नवीन ने झुककर प्रणाम किया। वे बोले, "सरला से मालूम हुआ कि तू आया है। एम० ए० पास कर लिया।"

"हाँ।"

"अब क्या विचार है, कम्पिटिशन............।"

"अभी तो लॉ करूँगा। इनकी पढ़ाई का क्या प्रबन्ध है।" नवीन ने बात पलट दी।

"केम्ब्रिज में पढ़ते हैं।"

"और कोई अच्छा स्कूल नहीं है?"

"हैं, पर कहीं ठीक इन्तजाम नहीं, न वहां अच्छे मास्टर ही हैं। यहाँ तो कोई भी ऐसा पब्लिक स्कूल नहीं है कि जहां बच्चों को भेज कर निश्चित हो जांय।"

नवीन शायद कुछ कह देता; पर देखा कि सरला आ गई है। आते ही बोली, "मैं तो ढूँढ़ते-ढूँढ़ते थक गई। कहां गए थे?"

"बाग देखने गया था और अब इनका इम्तहान ले रहा था। इनकी हिन्दी, हिस्ट्री और मैथमेटिक्स सब कमजोर हैं।"

"साहब लोगों का स्कूल ठहरा, रहन-सहन का स्टैन्डर्ड तो काफी ऊँचा है। डैमफूल कहना तो जाते ही सीख गये थे।" सरला हँस पड़ी।

नवीन चुप था। जहाँ झिझक होती है, वहीं का परदा बार-बार सरला चीर-फाड़ रही थी। स्वयं छुप कर रहने की जैसे आदी नहीं हो। वह उन लड़कों को पढ़ाता रहा। सरला उस नवीन को पहचान लेना चाहती थी। वह क्या है। वह चिट्ठी उसे याद है। उसकी लाइनें बार-बार चमक उठती थीं। सरला के मन में किरण का पत्र बार-बार फैल कर, एक भारीपन ला देता था। नवीन ने ऐटलस उठा ली। उसकी आँखों के आगे हिन्दुस्तान का बड़ा नकशा फैला हुआ था। वह उसमें पहाड़ों, नदियों और शहरों को देख रहा था। पहाड़ों की चोटियों के नाम लिखे हुए थे। उनकी ऊँचाई भी अंकित थी। जंगल, मैदान, झीलें, नदी, शहर, गाँव, रेगिस्तान, टापू.........। उसने पन्ना पलटा; वह रंगों का नया खेल.......दक्षिण का पठार......सर्दी-गर्मी तापक्रम की रेखाएँ; रेलों का जाल और राजनैतिक सूबे, जो कि शासन करने की दृष्टि से निर्माणित किए गए हैं। फिर पैदावार का नकशा; गेहूँ, जौ, जूट, चावल..........लोहा, कोयला, तांबा,..........रुई काफी.........व्यवसाय का मानचित्र, कारखानों का स्वरूप ....! चालीस करोड़ की जनता इसी देश में रहती है। उसने ऐटलस बन्द करके, सिर ऊपर उठाया। दोनों बच्चे उसे कुतूहल से देख रहे थे। सरला की आँखें उसे देख रही थीं। वे उसका विद्रोह-जानती हैं; उस संघर्ष से उसका पूरा परिचय है, जिससे नवीन खेल रहा है। नवीन के फीके पड़ते हुए चेहरे को देख कर सरला अपने भीतर बहुत भयभीत हुई। वह नवीन उस ऐटलस को उसी भाँति थामे हुए, अपने में न जाने क्या-क्या सोच रहा था।

नवीन ने सरला को आँखों में देखा, कोई प्रभाव नहीं पड़ा तो उसने ऐटलस रख दिया। बच्चे अपनी-अपनी किताबों को उठा रहे थे। वह एकाएक उठा और बरांडे के कोने पर खड़ा हो गया। बाग की ओर एक टक देख रहा था; मानो कि किसी खोई हुई वस्तु को ढूँढ़ रहा हो। सरला कुछ देर अवाक उसे देखती रही। फिर चुपचाप भीतर चली गई। नवीन बड़ी देर तक उसी भाँति खड़ा रहा। पेड़ों पर धूप फैल रही थी। वह बिल्कुल खाली सा था। सरला की आहट मिली। वह पास आकर बोली "आपको पिताजी बुला रहे हैं।"

"कहाँ।"

"वे भीतर गोल कमरे में हैं।"

वह सरला के साथ भीतर पहुँचा। देखा कि वे बहुत उत्तेजित हो रहे थे। उससे पूछा "आपने आज का अखबार पढ़ा?" आज फिर कुछ क्रान्तिकारी पकड़े गए हैं। उनके पास बम बनाने का सामान, बन्दूकें, पिस्तोल बरामद हुए। एक दरोगा और चार सिपाही मारे गए कुछ जख्मी हुए हैं।"

"यह कब की बात है?" पूछा नवीन ने उनके हाथ से अखबार ले लिया। सरला अपने में बहुत घबराई। नवीन के मन का हाल जानकर बहुत चिन्तित हुई; किन्तु उसे कोई ऐसा उपाय नहीं सूझता था कि उसको सुलझा सके। वह समर्थ नहीं है।

नवीन सावधानी से अखबार पढ़ने लगा। उसके चेहरे का रङ्ग फीका पड़ता जा रहा था। सरला सब कुछ भाँप रही थी। कभी वह आँखें मूँद कर कुछ सोचने लगता था। पुलीस ने पहले हमला किया। मजबूरी में आत्मरक्षा के लिए उन लड़कों ने गोलियाँ चलाई थी। किस देश में ऐसी संस्थाएँ नहीं हैं। हरएक राष्ट्र के इतिहास के निर्माण में ऐसी संस्थाओं का बहुत बड़ा हाथ रहा है। सरकार अपने में सचेत

रहती है। विचारों में कुछ मत-भेद तो रहेगा ही। हाँ, पुराने और नए विचारों के बीचका संघर्ष आज कोई नवीन घटना नहीं है। बौद्ध धर्म एक क्रान्ति का अग्रदूत था। ग्रीस वालों के खिलाफ दासों ने बगावत की थी। रोम का साम्राज्य एक दिन चकनाचूर हो गया! इस्लाम, क्राइस्ट ......! आज दुनिया बहुत आगे बढ़ गई है। पुराने सड़े-गले विचारों को नई विचारधारा मिटाने तुल गई है। जो स्वस्थ और कल्याणकारी है; वह सब के लिये हितकर भी है। सिद्धान्त एक स्थायी विचार नहीं है। समय के साथ उसका स्वरूप बदलता जाता है। भूत, वर्त्तमान और भविष्य का एक दूसरे से घनिष्ट सम्बन्ध है। नए विचारों की सदा नुक्ताचीनी होती है। और वह संस्था जो अंत तक लाकर, पुरानी विचारधारा को नष्ट कर डालने पर तुल गई है; नवीन को उसके अस्तित्व पर पूर्ण विश्वास है. उसकी नीत से वह सहमत है। वही मात्र सही रास्ता है। उसको कोई उलझन नहीं है। साधारण उफानो से वह विचलित नहीं होता है। वर्तमान शासन-प्रणाली के प्रति उसकी कोई आस्था नहीं है। उसे नष्ट होना ही है। यही सबके लिए हितकर भी है। सरकार एक विभाग द्वारा उनकी संस्था की जानकारी प्राप्त करके, उनको नष्ट कर डालना चाहती है। लेकिन नवीन जानता है कि वे सफल होंगे। उनका अपना रास्ता ही एक सही रास्ता है।

सरला के पिताजी बोले, "यह आतंकवाद एक क्षणिक जोश है। यह हिंसा समाज के लिए हितकर नहीं है। हमारे चंद नवयुवक पथ-भ्रष्ट हो गए हैं। यदि इसी प्रकार हत्याएं होती रहेंगी तब तो नागरिक जीवन मिट जायेगा। ये लोग न जाने क्यों इतने उच्छृङ्खल हो गए हैं। यह शुभ चिन्ह नहीं है। मैं अपने अनुभव से यह बात कह रहा हूं। बचपन में हम लोगों में भी जोश था। हम भी आज आजादी चाहते हैं। मैं तो लगभग बीस सार्वजनिक सस्थायों में काम करता हूं। राष्ट्रीय स्वतंत्रता का यह नारा तो मेरी बिल्कुल समझ में नहीं आता

है। मेरी धारणा तो यह है कि ये नवयुवक पागल हो गए हैं। वे हत्याएँ करके व्यर्थ ही शासन को भयभीत करने का ढोंग रचते हैं। उनका यह प्रयास व्यर्थ है। कुछ मजदूरों को भड़काना ही उनका पेशा है।"

नवीन चुप नहीं रह सका और बोला, "पुलीस ने पहले हमला किया है। अपनी रक्षा का मोह तो सबको ही होता है। क्या आप भी चाहते हैं कि हिन्दुस्तान अपाहिज रहे। सब अपना स्वार्थ सीधा करने की धुन में हैं। लोग पहले रुपया जमीन में गाड़ देते थे। साहूकारा आज भी चलता है। अब रुपयों का नियंत्रण बैंक करते हैं। बड़े-बड़े कारखाने और मिलों का खुलना एक नई घटना नहीं है, मिलों से बहुत नफा होता है। मजदूर उस नफे में हिस्सा नहीं पाता है। उनकी आर्थिक हालत भली नहीं है। उनका कोई सामाजिक जीवन नहीं है। पचास साठ लाख परिवारों को वर्षों में जाकर कभी एक जून पूरा खाना मिलता है। आप सार्वजनिक संस्थाओं में रहकर प्रस्ताव पास करके अपना कर्तव्य निभा लेते हैं। सरकार कमीटियाँ बैठा कर छानबीन करती है और नए नए बिल ऐसेम्बली में पास हो जाते हैं। जनता का उससे कोई सम्पर्क नहीं है। कम से कम अच्छा खाना, ठीक सा रहन-सहन तो हर एक को हासिल हो जाना चाहिए। वह बहुत कठिन बात नहीं है। आप तो उस पर कुछ सोच सकते हैं, लेकिन आप के पास इस सब के लिए वक्त नहीं है। आप लोग चैन से रहते हैं.......।"

"आप क्या कह रहे हैं नवीन जी; बाबू जी तो..........!" सरल ने बात काटी।

डाक्टर साहब जरा चैतन्य होकर बोले, "आप उन लोगों से सहमत हों, मुझे उनकी कार्य शैली से सन्देह है..........। आज के नए लड़के तो.......।"

"नहीं, नहीं डाक्टर साहिब, आप के पेशे से मुझे सहानुभूति

है। आप चाहते तो मनुष्य की भलाई कर सकते थे। आपने यह नहीं किया। आप अच्छी फीस देने वाले मरीजों की ओर अधिक उदार रहे हैं। गरीबों को देखने के लिए न आप के पास समय है, न दवा। मैं ऐसे डाक्टरों को जानता हूं, जो 'आपरेशन' टेबुल पर मरीज का 'आपरेशन' करते समय उसके अभिभावक को बुलाकर पैसा ठहरावेंगे। पूरा पैसा न देने पर मरीज के जीवन के बारे में सन्देह प्रकट करेंगे। तब बतलाइए ऐसे डाक्टरों को कानून गिरफ़ार क्यों नहीं करता है? क्योंकि उनके पास पैसा है, जिससे कि वे कानून पर भी प्रभाव डाल सकते हैं। एक धनी परिवार अपने नालायक लड़कों पर लाखों रुपये खर्च कर देगा, किन्तु दूसरा गरीब परिवार अपने होनहार बच्चों की परवरिश तक नहीं कर सकता है। यदि भगवान ने यह श्रेणी विभाजन किया है, तो उस भगवान को भी मिटा देना होगा। वह भगवान, धर्म, विधान, समाज के ऊँचे वर्ग ने अपने स्वार्थों के हित के लिए ही बनाए हैं, इसी लिए तो साधारण लोगों को पग-पग पर रुकावट पड़ती है"

एकाएक नवीन की दृष्टि सरला पर पड़ी। उसने उसके चेहरे पर फैली हुई घबड़ाहट पढ़ी। डाक्टर साहब तो चुपचाप सुन रहे थे। नवीन संभल गया। व्यर्थ ही वह इतनी कड़ी बातें कह बैठा था। डाक्टर साहब के विचार उन्नीसवीं शताब्दि के हैं। उनका जन्म गदर के बाद हुआ था। संभवतः बचपन में कई बार उन्होंने गदर की कहानियाँ सुनी होंगी। वह चंद सामन्तों द्वारा संचालित विद्रोह असफल रहा था। सरला पिता जी से बोली, "आप आज घूमने नहीं जायँगे।"

वे जैसे कि यह भूल गए थे। चुपचाप उठे। कोने में रखी हुई छड़ी ले ली। नवीन से बोले, "तेरे विचारों पर एक बार जरूर

सोचूंगा नवीन। हम पुराने जमाने के लोग तो पुराने ढङ्ग से ही सोचते हैं। पैंतिस-चालीस साल का अन्तर हमारी अवस्था में है। इसीलिए शायद यह मतभेद होगा।"

वे बाहर चले गए। नवीन उठकर कमरे में टंगी हुई तसवीरों को देखने लगा। मेज पर एक कीमती अलबम था, उसकी तस-वीरों को देखने लग गया। सरला कब पास आ गई उसे भास नहीं हुआ। वह चुपके से बोली "आपने पिता जी को नाखुश कर दिया है।"

"लेकिन मैं उनसे कोई जायदाद मांगने तो नहीं आया हूं।" नवीन मुस्करा कर बोला।

"आपतो ......आप नहावें, गोसलखाने में सब चीजें रख दी हैं।"

फिर वही शासन। नवीन उससे छुटकारा पाने के लिए बोला, "मैं कुँए पर नहा लूँगा, आपको कोई एतराज तो नहीं है?"

इस परिवार के मेहमान कुएँ पर नहीं नहाते हैं, आप उस शिष्टा-चार को तोड़ना चाहें तो ......।"

"आज नहीं तोड़ूँगा! तुम लोगों की मर्यादा के लिए सब स्वीकार है।" कह कर नवीन गोसलखाने में चला गया। नहा धो कर कपड़े बदल, अपने कमरे में जा रहा था कि सरला दरवाजे पर खड़ी मिली। वह पूछ बैठी, "आप भगवान पर विश्वास नहीं करते है?"

"नहीं, मैं नास्तिक हूं। तारा ने नहीं बतलाया।"

"वह उतनी पूजा करती है?"

"तुम लोग उस पूजा का अधिकार पाकर प्रसन्न रहती हो। तारा को इसीलिए मैंने मना नहीं किया।"

"मैं तो पूजा नहीं करती हूं।"

"यह अच्छी बात है। एक से दो नास्तिक भले होते हैं। कह कर वह अपने कमरे के भीतर चला गया। भीतर कुरसी पर बैठ कर कुछ

सोचने लगा। सरला खड़ी ही थी। वह सरला का अतिथि है। तारा का वह भाई है और सरला का अतिथि; दोनों का दरजा अलग-अलग हैं। सरला ने पूछा, "नाश्ता यहीं ले आऊँ।"

"अभी नहीं।"

"देखिये पिताजी और आपके विचारों में बहुत मत-भेद है। फिर भी उनको अपनी बातों पर बहुत विश्वास है। आप व्यर्थ उनसे दलील न किया करें। उनको बड़ा दुःख होगा।"

"आप के पास राइटिङ्ग पैड होगा!"

"हाँ।"

"और पोस्ट-आफिस यहाँ से कितनी दूर है?"

"यही एक फर्लाङ्ग होगा।"

"आप पैड ले आवें। मुझे कुछ जरूरी चिट्ठियाँ लिखनी है"

सरला पैड ले आई। वह चिट्ठियाँ लिखने लग गया। चार-पाँच चिट्ठियाँ लिख कर उठा। बाहर जाने को था सरला कि मिल गई। पूछा सरला ने, "नौकर के हाथ छुड़वा दूँगी।"

"नहीं मैं अभी छोड़ कर आता हूं।"

"और नाश्ता?"

"लौट कर खा लूँगा।" नवीन नीचे उतरा। फाटक से बाहर हो गया। सरला उस नवीन को देखती रही। वह उसके परिवार की मर्यादा से ऊपर है। सम्मान की भूख उसे नहीं है। वह जिस जीवन की आदी है, नवीन को उस सबसे मोह नहीं है। सरला स्वयं पाती है कि नवीन ने उसे निर्जीव बना दिया है। उसकी चेष्टाओं के प्रति उदासीन है। उससे कोई सरोकार नहीं है। यदि सरला चाहे तो.........

नवीन चुपचाप बढ़ गया। वह बहुत चिन्तित था। उसके और देश के बीच एक परदा पड़ा हुआ था। यह इतनी हत्याएँ! अकारण उतने लड़के पकड़े गये हैं। जो फाँसी के तख्ते पर मस्ती से झूल जावेंगे।

उनका मर जाना आसान है, पर उनके दल की शक्ति कम होती जा रही है। विश्वसनीय साथी पकड़े गए हैं। वह किरण की प्रतीक्षा में है। वह अपने साथियों के आने तक चुप है। यह शहर ठीक हैं। यहाँ उसे कोई नहीं जानता है। सरला के पिता का घर है। लेकिन जिस संगठन की बात वह सोच रहा है। इन सारी हत्याओं से कोई सफलता नहीं मिल रही है, जिसकी पहले उनको आशा थी। वह चाहता है कि अब इस संगठन का स्वरूप बदल दे। वे सब तो साधारण जनता से बड़ी दूर हैं। शहरों में रह कर व्यर्थ में वहाँ के लोगों के बीच एक भ्रम फैला रहे हैं। यह सफल सा प्रयास नहीं है। जहाँ ये पाँच वर्ष पूर्व थे, उससे अधिक कोई भी प्रगति वे नहीं कर पाए हैं। चंद बुद्धिवादियों के मस्तिष्क पर छा जाने से ही सफलता नहीं मिल सकती हैं।

उसने लेटर बक्स में चिठ्ठियाँ छोड़ दी। सरला के पिता के साथ वह व्यर्थ ही उलझ गया। वे अपनी सीमाओं से बाहर नहीं आयेंगे। लेकिन प्रति दिन नई-नई घटनाएँ घटती जा रही हैं। जो कि विश्वास से परे की हैं। वे शहर के जीवन में एक प्रवाह ला रही हैं। उनका असर साधारण कुछ विद्यार्थियों से अधिक लोगों पर नहीं पड़ रहा है। राष्ट्रीय संस्थाएं उस सब को बच्चों की 'आतसबाजी' कह कर टाल देती हैं। पोस्ट ऑफिस की ऊँची इमारत पर 'यूनियन-जैक' फहरा रहा था और पास ही 'म्युनिसिपल-आफिस' पर तिरंगा झंडा। वह उन दोनों झंडों की ओर देखने लगा। उसे एकाएक 'रूल वृत्तानया' वाला सबक याद आया। जिसे कि उसने बचपन में स्कूल में सीखा था। फिर १९३० के तेज आन्दोलन में बहता हुआ तिरंगा झंडा उसकी कई स्मृतियाँ हरी कर गया। वह कुछ देर वहीं खड़ा रहा। डाक की लारियाँ बढ़ रही थीं। 'पोस्ट मैन' अपने थैलों को कंधे से लटकाये हुए शहर के भीतर प्रवेश कर रहे थे। यह बड़ी इमारत सम्पूर्ण शहर का नियन्त्रण करती है।

वह कुछ आगे बढ़ गया। सिविल-लाइन्स में दूकानें खुल रही थीं। दूकानों पर बड़े-बड़े 'साइन-बोर्ड' टंगे हुए थे। कई स्थानों पर बड़े-बड़े विज्ञापनों का प्रदर्शन था। अब वह पास की बड़ी दुकान में घुस गया। उसने दैनिक-पत्रों पर दृष्टि डाली। दो के मोटे शीर्षकों को पढ़ कर चौंका। उनको उसने खरीद लिया और लौट आया। धूप बढ़ रही थी। वह जल्दी-जल्दी चलने लगा। कमरे में पहुँच कर बहुत थक गया था। चुपचाप पलंग पर लेट गया।

खटका हुआ। सरला आई थी। पूछा, "नाश्ता ले आऊँ।" देखा कि नवीन का चेहरा उतरा हुआ था। वह अपने भीतर कांप उठी कि क्या बात होगी?

बोला नवीन, "मुझे भूख नहीं है।" उठ बैठा। अखबार पलंग पर ही खुले पड़े थे! वह बच्चे की भाँति सरला को देखने लगा।

'कुछ थोड़ा सा....।"

"खाना खाऊंगा बस नास्ते की आदत नहीं है।"

"क्या तबीयत खराब है?"

"ऐसी बात नहीं है। ठीक हूं। अभी भूख नहीं है।"

"कुछ देर बाद सही।" कह कर सरला चुप हो गई। तारा तो कभी इस भांति सवाल नहीं पूछा करती थी। सरला गिलहरी की तरह मन को कुतरना चाहती है, कि सब मामला साफ हो जाय। वह उसके सवालों का उत्तर क्या-क्या देगा? वह इन लड़कियों को कुछ भी नहीं पहचानता है। कभी जान लेने की चेष्टा नहीं की। सरला तो सुलझी सी बातें पूछा करती है। इतना ज्ञान स्वयं नवीन को नहीं है। लड़कियों की परछांई और आहट से वह सदैव दूर रहा है। सरला समुचित बर्ताव बरतना जानती है। वह उस नवीन में क्या छानबीन कर रही है? वह अब तक तो चुप था। अब बोल बैठा, "बैठ जाओ सरला।"

सरला बैठी नहीं। खड़ी की खड़ी थी। वह नवीन के भीतर पैंठ

कर उसे परख लेना चाहती थी, वह उसे पूरा-पूरा पहचान लेगी। इस दुनिया में लोगों की बड़ी भीड़ है। यह नवीन उसके लिए एक पहेली सदा से रहा है। तारा अपने भाई के बारे में जो कहती थी, सरला को वह सब याद है। यह नवीन जीवन मुक्त है। उसको अपनी कोई चिन्ता नहीं है। कल उसे पुलिस पकड़ लेगी तो क्या होगा? वह किरण बहुत भाग्यवान है। क्या सरला किरण की भाँति नवीन का विश्वास नहीं पा सकती है? अब बोली, "पिता जी तो सब को शिक्षा दिया करते हैं। आप को बुरा तो नहीं लगा है।" कह कर कुरसी खींचली और बैठ गई।

"नहीं नहीं! उनका अपना दृष्टिकोण है। मैं व्यर्थ ही उनसे जलील कर बैठा। हाँ अब आप घर पहुँच गई हैं। मैं अपनी जिम्मेवारी से बरी हो जाता हूँ।

'आपने मेरी जिम्मेवारी कब ली। मैं तो खुद ही चली आई।" सरला हंस पड़ी। कहा फिर "पिताजी माँजी से आपकी बड़ी तरीफ कर रहे थे। माँजी कई बार पुछवा चुकी हैं कि वह कब आवेगा। वह बीमार हैं आपने भी तो मेरी माँ को देखने की कोई इच्छा प्रकट नहीं की।"

"मैं भूल गया था सरला।"

"और तारा को एक चिट्ठी लिखनी है। आप लिखकर रखदें। मैं भिजवा दूँगी?"

"मैं लिख लूँगा।"

"उसके लिये कुछ सामान भेजना है।"

"मुझसे तो उसने कुछ नहीं कहा है।"

"आज दिन को बाजार से खरीद लावेंगे। वहाँ देहात में चीजें कहाँ मिलती है। ससुराल में किसी से नहीं कह सकती है। आपने उसे अच्छी जगह फेंक दिया है।"

"पिताजी......।"

"पिताजी आज उसे वहाँ नहीं देते। वहाँ उसे बहुत दुख है। अच्छा अब नाश्ता ले आऊँ। फिर माँजी के पास चलना होगा। माँजी से खूब बातें करना घोंघाबसन्त की तरह चुपचाप खड़े मत रह जाना।" सरला बाहर चली गई।

तारा को ससुराल में दुःख है। यह बात नवीन को पहले ज्ञात नहीं थी। तो तारा की शादी कर देना एक अपराध था। उन लोगों ने कहा था कि वह रिश्ता बहुत पहले तय हो चुका है। माँ यही कहती थी। फिर भी उसे बुद्धि से काम लेना चाहिये था। उसने यह नहीं किया। अब तारा की अपनी सीमाएँ हैं। वह कुछ नहीं कर सकता है

वह अखबार पढ़ने लगा। दल का एक लड़का अस्पताल में मर गया। उसे नवीन जानता था। पिछले वर्ष बी० एस०सी० में सर्व प्रथम निकलने पर उसे सोने का पदक उपहार में मिला था। वह बहुत जीवट लड़का था। जब तक गोलियाँ पिस्टल में रही वह चलाता रहा। एक गोली ने उसके प्राण ले लिए। मौत बहुत भारी नहीं होती है। वह एक शक्ति भी चुपचाप मिट गई। उसकी बूढ़ी माँ है। नवीन उनके घर गया था। उसकी माँ ने नया कच्चा बाजरा भून कर दोनों को खिलाया था। उसकी सारी आशा वही बच्चा था। जब वह सुनेगी तो......। लेकिन वे एक क्रान्ति लाने वाले हैं। उसमें मृत्यु भारी दण्ड नहीं है। नवीन कभी कभी इस क्रान्ति से सन्देह करने लगता है। वे कुछ लोग हैं—गिने हुए कुछ व्यक्ति। उनके पीछे जनता नहीं है। क्या वे सफल हो सकेंगे? चालिस करोड़ की आबादी में वे गिनती के कुछ लोग कहीं ठीक तरह दीख नहीं पड़ते हैं। वे इन वर्षों में अपनी सीमाएँ नहीं बढ़ा सके हैं। वह इस प्रश्न पर विचार कर लेना चाहता है कि क्या वे चंद व्यक्ति इस सम्पूर्ण देश में क्रान्ति ला सकते हैं? जिन शहरों के जीवन में वे रहते हैं, वहाँ बिल्कुल निकम्मी सड़ी गली

मध्यवर्ग रहता है। और वह दूर दूर गाँवों की आबादी, जिससे उनका कोई जीवित सम्पर्क नहीं है। वे उनकी ठीक ठीक कल्पना तक नहीं कर पाते हैं।

वह तकिए के सहारे लथरा। आँखे मुँद गईं। जब सरला आई वह उसी भाँति लेटा हुआ था। क्या सरला उसे जगावेगी? उसे ऐसा कोई अधिकार नहीं है उसने तस्तरी मेज पर रखदी। नवीन खटका सुनकर चौंका। उसकी नींद खुल गई। सरला बोली, "आपकी सेहत भली नहीं लगती है। क्या बात है?"

"कुछ भी नहीं।" लेकिन सरला सब बातें जानती है। वह स्वयं उद्विग्न है। बार-बार डरती है कि उसने यह क्या खेल शुरू किया है? वह अपने में कई बार आँसू बहा चुकी है। सोचती है कि नवीन से उसका विश्वास छीन लेगी हठ ठान कर उसे परास्त कर देगी। कई बार स्वयं वह गद्गद् हो उठती है। आँखों में आँसू भर आते हैं।

नवीन कुरसी पर बैठ गया। सरला खड़ी ही थी। उसने सरला से बैठने का अनुरोध नहीं किया। आज उसे किसी तरह का उत्सव नहीं है। तारा का जीवन असफल रहेगा, यह ज्ञान उसे कब था। आज उसका मन भला नहीं; वह एकान्त चाहता है।

"खाइये।" सरला का आदेश था।

"तुम......।" सरला तारा की तरह खड़ी नहीं है। वह एक गृहस्वामिनी की भाँति वहाँ पर थी। तारा तो अभी तक खाना शुरू करके कहती—भैय्या ठंढा होरहा है।

'मैं खा चुकी हूँ। आप शरबत पियेंगे या सादा बरफ का पानी।"

"जो ठीक समझो।"

"शरबत ले आती हूँ।" कह कर सरला चली गई। यह सरला वह नहीं है, जिससे तारा ने परिचय कराया था। वहाँ तो वह उसी गाँव की सी लगती थी। अब वह शहर की सुघड़ लड़की की भाँति

है। उसका सुन्दर रूप, रुचि का पहनावा........वह कितनी स्वस्थ है। लड़कियाँ ऐसी स्वस्थ ही होनी चाहिए। तारा तो गऊ है। जहाँ चाहो हाँक लो। सरला और तारा को वह न जाने क्यों बार बार तोल रहा है। तारा ने यह कभी नहीं कहा कि उसे वह गाँव भला नहीं लगता है। अब तो वह लचार है। कभी न कभी वह गृहस्थ बनेगा। तब तारा को बुलावेगा। वह आशावादी है। तारा तब तक आसानी से ससुराल में रह सकती है। आठ दस साल केवल आठ दस कैलेंडर बदल लेने ही होते हैं। तब तक यह दुनिया बहुत बदल जायगी।

वह अब आलू की टिकिया खाने लग गया। सोहन हलुवा का टुकड़ा बहुत कड़ा था। दाँतों से कठनाई से टूटा और अनन्नास के टुकड़े उसे अच्छे लगे। लेकिन फिर खून हत्या और मौत की तसवीरें सामने आई। वह अखबार चारपाई पर फैला हुआ था। मानो कि हॉकर की भाँति पुकार रहा हो, आज की ताज़ी खबरें:—क्रान्तिकारियों और पुलिस में मुठभेड़! गोलियों की बौछार!! पुलीस की सफलता!!! लेकिन यह क्रान्तिवाद व्यर्थ लगा। मौत के बाद व्यक्ति मिट जाता है। उसका कोई अस्तित्व नहीं रह जाता। कल लोग इस घटना को भूल जावेंगे फिर भी इतिहास इन साधारण घटनाओं से बल पाकर आगे बढ़ता है।

सरला कमरे में आई तो देखा कि वह कुरसी पर सिर धरे आँखे मूँद कर कुछ सोच रहा था। उसकी आहट से चौंका। एकाएक मेज पर हलका धक्का लगा। एक प्लेट नीचे गिर कर चूर चूर हो गई। सरला खिलखिला कर हँस पड़ी, बोली, "आप तो 'साइकालाजी' के प्रोफेसर होने के योग्य थे।"

नवीन सिकुच उठा। वह साइकालाजी का प्रोफेसर क्यों कर बन सकता है। यह बात मन में उठी। आखिर सरला ने यह बात क्यों कह डाली थी। उसने प्लेट की ओर देखा और फिर सरला के चेहरे की

सरला ने उसे गिलास सौंप दिया। पूछा, "एक और टिकिया ले आऊँ।"

"नहीं।" कह कर वह शरबत घूँट-घूँट करके पीने लगा। सरला ने देखा कि नवीन का चेहरा पीला पड़ गया है। वह बहुत डरी।

नवीन सोचने लगा कि वह अच्छा अतिथि है। सरला के उन विशेषणों की उदारता पर विचार किया। क्या वह सच ही बीमार है? नहीं, वह स्वस्थ है। सरला व्यर्थ उसे बीमार बना-बना कर, रोकने का बहाना ढूँढ रही है। वह संभल गया और अब बोला, "मांजी के पास चलें।"

वह उठा। उसने तौलिये से हाथ पोंछ लिए। चुपचाप सरला के साथ हो लिया। भीतर पहुँच कर उसने सरला की माँ के चरण छू लिए और पास की कुरसी पर बैठ गया। माँजी तो बोलीं, "नवीन इतना बड़ा हो गया है रे?"

पूछा नवीन ने, "तबीयत कैसी रहती है माँजी।"

"तीन-चार साल से बीमार हूं। डाक्टरों के भरोसे जी रही हूँ, तारा भली है?"

"हाँ माँजी।"

"सुना एम० ए० पास कर लिया। अब नौकरी कर ले"।

नवीन सब कुछ सुनता रहा उसकी माँ के साथ का सहेली भाव! नवीन का जन्म; अपने बचपन का हाल। अपनी पुरनी चर्चा। जिसका कि ज्ञान उसे अब तक नहीं था। माँजी बात-बात में उसकी माँ का नाम लेती थीं। कभी सजल नेत्रों से वर्णन आरम्भ करतीं। सरला नवीन के सब पर सोच रही थी। नवीन घंटे भर वहाँ रहा। सरला अपनी माँ के लिए फल और दूध लाई थी। नवीन को उबार लिया। वह चुपचाप अपने कमरे में लौट आया। सरला की शादी, तारा को बुलाने की बात; मांजी ने कही थी। सरला का रिश्ता तय हो चुका है। तारा ही की भाँति उसे एक दिन परिवार विदा कर देगा।

वह अपने कमरे में लौट आया। उसे आश्चर्य हुआ कि सरला उसका वास्तविक संचालन करती है। नोकर, नौकरानियाँ बात-बात में उसके काम पूछते हैं। वह आदेश देती है। वह यही सब सोच रहा था। सरला परिवार की सबसे बड़ी लड़की है। उसके बाद चार बच्चे हुये, वे सब मर गए। उसके दो छोटे भाई हैं; एक अठारह का और दूसरा चार का। पिताजी की तीसरी शादी के बच्चे हैं। सरला की पहली दो माँ तो मर गई थीं। सरला ने उसे 'साइकालाजी' का प्रोफेसर घोषित कर दिया है। वह उसकी सारी बातें भाँपा करती है। वह अनमना सा अखबार उठा कर विज्ञापन पढ़ने लग गया।

नौकर आकर बोला, "कार खड़ी है। बीवीजी ने कहा है कि बाजार चलना है। जल्दी तैयार हो जाइए।"

नौकर बाहर गया था, कि सरला आ पहुँची। बोली, "बाजार चल रहे हैं न।"

"बाजार! क्यों क्या काम है?"

"मुझे कुछ चीजें लानी हैं। आप भी यहाँ का शहर देख लें।"

नवीन ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह तैयार हो गया। सरला को अपनी विजय पर गर्व हो रहा था। कभी वह पाती कि नवीन जान बूझ कर यह खेल खेल रहा है। कभी वह सोचती कि वह बिलकुल निर्बल हो गई है। नवीन ने उससे सारी शक्ति छीन ली है। नवीन, नवीन और नवीन; जैसे कि उसके बाद वह अपना रोजाना जीवन भूलती जा रही है। नवीन ने तो अपनी सदरी निकाली, धुला पायजामा और कुरता पहन लिया। चप्पल पहन कर तैयार हो गया था। सरला के साथ 'कार' में बैठते हुए उसे कोई झिचक नहीं हुई। इस अपरचित शहर में उसके तीन-चार साथी हैं। उनके अतिरिक्त उसे कोई नहीं पहचानता है। 'कार' आगे बढ़ रही थी। सरला बीच-बीच में कई स्थानों को बतला

रही थी। एक दूकान के पास 'कार' खड़ी हो गई। दूकानदार ने अभिवादन किया सरला भीतर पड़ी 'कुरसी पर बैठ गई। नवीन भी एक कुरसी पर बैठ गया। सरला कई चीजें देखने लगी, उसने बहुत सा सामान ले लिया। चतुरता से वह सब चीज़ें परख रही थी। तारा के लिए उसने सुन्दर ऊनी साड़ी खरीद ली, उसी से मिलता-जुलता ब्लाउज, कुछ जंपरों के कपड़े, डी० एम० सी० साबुन ऊन, सलाइयाँ, कुछ ठंडी धोतियाँ; बार-बार वह नवीन से पूछती थी, कि तारा के लिए और क्या लिया जाय? तारा की इस प्रकार की माँग से वह अप्रतिभ हो उठा। तारा ने उससे तो कुछ नहीं कहा है। सरला को इतना बड़ा आर्डर देने की आवश्यकता कैसे पड़ गई। वहाँ पर वह क्या कहे; इसीलिए चुप था। एक कपड़े को देख कर सरला नवीन से बोली, "सूटिंग" का कितना अच्छा डिजाइन है।"

दूकानदार ग्राहक पाकर तुरंत बोला, सात थान आए थे। यही एक टुकड़ा बचा हुआ है।"

नवीन ने मना कर दिया। दूकानदार ने तो सूटिंग के कई थान फैला दिया। सरला की इस बुद्धि पर वह हँस पड़ा। सरला ऐसे कौतुक करने में बहुत प्रवीण है। वह शहर की लड़की है न!

अब सरला ने एक सुन्दर चप्पल का जोड़ा, चोटी आदि भी खरीद लीं। इस सबसे तो नवीन को खास उत्साह नहीं था। ड्राइवर ने सारी चीज 'कार' पर रख दी। सरला ने उससे बिल ले लिया। घर से 'चेक' भेज देने को कहा। नवीन ने उससे बिल ले लिया। जेब से एक बड़ा लिफाफा निकाल कर सौ-सौ के दो नोट दे दिए। सरला पहले तो अवाक रह गई। फिर उसने नोट ले लिए। धन्यवाद दे, उनको लेकर कार पर बैठ गई। नवीन को कुछ कहने का साहस नहीं हुआ। 'कार' चलने लगी तो बोली वह "आप को

किसी का लिहाज नहीं है।"

"क्यों क्या बात हो गई।"

"आपने दूकानदार के आगे मेरी तौहीनी कर दी।"

"ऐसी भावना मेरी नहीं थी।"

"तो क्या मैं आप के इन नोटों की भूखी हूं?"

"यदि मैं ही उनको दे देता, वह आप का ही तो था।"

"तारा को क्या मैं कुछ देने का अधिकार नही रखती हूं? वह ससुराल जावेगी। उसे कुछ चीजें चाहियें ही, नहीं व्यर्थ मायके में हँसी उड़ती। यह व्यंग लड़कियों के लिए असह्य होता है। आपने व्यर्थ भेदभाव रखना चाहा था। मैं सब जानती हूं।"

"तारा ने मुझसे तो कुछ नहीं कहा।"

"कहा तो मुझ से भी नहीं है। पर यह साधारण व्यवहार की बात है। वह स्वयं शिष्टाचार नहीं जानती है।"

"बीबीजी फल लेगीं न।"

सरला ने सिर हिलाया। 'कार' फल वाले की दूकान पर खड़ी हो गई। सरला ने उतर कर फल खरीद लिए। नवीन चुपचाप सब कुछ देखता ही रह गया।

अब वे घर पहुँच गए। नवीन बहुत थक गया था। वह कमरे में पहुँच कर बिस्तर पर लेट गया। तारा क्यों ठीक बातें नहीं कहा करती है। कम से कम उसे अपनी जरूरतों की जानकारी तो होनी ही चाहिये। वह कब तक तारा की देखभाल कर सकता है। आते समय वह उसे रुपया देना भी भूल गया। वह तारा को जल्दी ही एक चिठ्ठी लिखकर सब बातें समझा देगा। अभी तो स्वयं वह अनिश्चित सा है। वह लेटा रहा। दीवाल पर छिपकली दीख पड़ी। वह जानता है कि छिपकली पतिंगों का शिकार किया करती हैं। यह हिंसा आदि काल से दुनिया में चली

आई है। साँप, मेढक और चूहों को निगल जाता है। बाज छोटी-छोटी चिड़िया का शिकार करता है। शेर हिरनों को मार डालेगा। बड़ी मछलियाँ छोटी मछलियों को निगल डालती हैं। तब यह सब स्वाभाविक हिंसा है। साँप कभी-कभी औरों को डस लेता है। शायद वह उसका अपनी रक्षा का सवाल होगा। मौत आदम इनसान के लिए भय की बात थी। आज वह बात नहीं है। वह लड़का अस्पताल में मर गया। उसका कोई सगा स्नेही वहाँ नहीं था। यह मौत एक अनुभव मात्र रह गई है। जिससे कि किसी को छुटकारा नहीं मिल सकता है। माँ ने अपना एक मात्र लड़का खो दिया है। लड़का एक संस्था के लिये अपने को निछावर कर बैठा है। पतिंगे चिराग से स्नेह करते हैं। कुछ उसी में जल कर मर जाते हैं। कुछ को छिपकली खा डालती है। उनको फिर भी जीवन का मोह नहीं होता है। संस्था पर जीवन को उत्सर्ग करने वाले ये युवक अपने नशे को कभी नहीं भूलते हैं। मौत का भय उनको कदापि नहीं घेरता है।

"बाबू जी!"

घर की नौकरानी खड़ी थी।

"आप खाना यहीं खावेंगे।"

"सब ने खाना खा लिया है?"

"बच्चे खा कर स्कूल चले गए हैं।"

"और डाक्टर साहब?"

"वे नीचे शतरंज खेल रहे हैं। बाजी न जाने कब तक पूरी होगी। यही हाल है। कभी तो तीन-चार बजे तक रसोई नहीं उतरती है।"

शतरंज के खेल के लिए उसके मन में सद्भावना उदित हुई। जहाँ कि बाजी जीत लेना मानों कि एक बहुत बड़ा महायुद्ध

फतह कर लेना समझा जाता है। बादशाह, वजीर, प्यादे, ऊँट, हाथी.........। लेकिन आज महायुद्ध के लिए विज्ञान ने नये-नये साधन निकाले हैं। उन अविष्कारों के आगे यह शतरंज का खेल फीका लगता है। यह तो 'साँप और सीढ़ी' वाले खेल की तरह ही पुराना पड़ गया है। नवीन को कभी 'कैरम' खेलना बहुत पसन्द था। आज अब किसी खेल से खास रुचि नहीं है। लेकिन नौकरानी को उत्तर देना है। पूछा फिर, "सरला कहाँ है?"

"बीबी नहा रही हैं।"

"खाना यहीं ले आना। रोटियाँ बिना चुपड़ी हों।"

नौकरानी चली गई। उसने सरला के डर से जल्दी-जल्दी खा लिया। भीतर सरला का स्वर सुनाई पड़ा। वह नौकरों पर बिगड़ रही थी, कि पहली बाजी के खत्म होते ही बाबू जी को खाना क्यों नहीं खिलाया गया है। एकाएक कमरे के भीतर आई, बोली "आप तो हाथ धो रहे हैं। लगता है कि कुछ भी नहीं खाया।"

"अभी नाश्ता किया था। भूख नहीं थी।"

"यहां तो नौकर-चाकर ठीक खाना नहीं बनाते हैं। कितनी देख-भाल किया करूँ।"

नवीन चुपचाप हाथ धोता ही रहा। अब वह कुरसी पर बैठा था कि सरला ने पूछा, "उस लड़के का क्या हुआ?"

"कौन सा?"

"जो सुबह घायल हुआ था। पिताजी कह रहे थे कि मर गया है।"

"वह सच बात है। उसे जीवित या मरा हुआ पकड़ने के लिए सरकार ने आठ हजार की बोली बोली थी। अब उसका कोई मूल्य नहीं रह गया है। उसकी एक बूढ़ी माँ है।"

कहां रहती है वह ?"

"देहात में। हम दोनों साथ-साथ कालेज में पढ़ते थे। वह अपनी मां की अक्सर जिक्र किया करता था। वह अन्धी है। आँखों पर बादल पड़ गया है। कस्बे के डाक्टर ने अधिक फीस की माँग की थी। वे असमर्थ थे। वह बहुत धुंधला देखने लगी थी। वह बुढ़िया उसको टटोल-टटोल कर एक दिन पहचानने लगी। वह उसी भाँति अनुमान लगा लेती थी कि वह बड़ा हो रहा है। उसकी नौ सन्तानें हुईं। चार बचपन में ही मर गए। एक लड़का साम्राज्यवाद के खिलाफ लेक्चर देता हुआ पकड़ा गया। एक दिन सुना कि जेल में हैजे से मृत्यु हो गई है। एक लड़की अच्छा घर न पाने के कारण साड़ी को तेल में डुबो, जल कर मर गई। दूसरा लड़का एक गली में मरा हुआ पाया गया। उसकी मुट्ठी में मजदूर सभा का परचा था और छाती पर गोली का घाव। पुलीस का बयान था कि डकैतों ने वह हत्या की। एक लड़के का आज तक कहीं कोई पता नहीं है और यह आखिरी बच्चा था........! बुढ़िया ने सदा आँसू बहाए हैं।"

नवीन चुप हो गया एकाएक चेतना आई कि क्या सरला कोवह सब सुनाना आवश्यक है। वह अपना उत्तरदाइत्व भूल कर बहुत भावुक बन रहा है। यह भावुकता उसकी बड़ी कमजोरी है। माँ ठीक कहा करती थी कि उसे लड़की होना चाहिए था और तारा को लड़का। तारा बहुत गंभीर है। उसकी भाँति उच्छृङ्खल नहीं है।

"आप तो पान खाते हैं न।" सरला बाहर गई। नौकरानी से कह कर लौट आई। नवीन दीवार पर टंगे हुए तेलचित्र को देख रहा था। वह शायद सरला के दादा का था। उनका नाम लिखा हुआ था। सरला के आने का ज्ञान नहीं हुआ। उस चित्र को वह एक टक देख रहा था। क्यों उस भाँति देख रहा था, इसका उसे ज्ञान

का शौक हो गया है।''

"मुझे!"

"अन्यथा तारा और मुझ पर उदार होने के बाद आप उस गरीब माँ की इतना चिन्ता न करतीं। यह इतनी दया……।"

सरला का चेहरा सुफेद पड़ गया। क्या यह नवीन मनुष्य है?

"नवीन ने फिर पूछा, "तारा को पारसल कब जावेगा?"

"भिजवा दिया है।"

"आप उसे चिट्ठी लिखदें, कि उसे जो आवश्यकता पड़े मुझे लिख दिया करे।"

"आप उसे चिट्ठी नहीं लिख रहे हैं।"

"परसों……पहुँच कर भेज दूँगा।"

"तारा को आप चिट्ठी अवश्य लिखा करें। आपका ही एक सहारा वह मानती हैं। मुझसे वह सब बातें नहीं कहा करती हैं। हम सहेलियाँ जरूर हैं, पर वह मुझे अपने निकट का नहीं मानती हैं। आपने जो अभी दया की बात कही है! क्या मैं इतनी बड़ी हूँ कि……।"

नौकरानी ने आकर दोनों को उबार लिया। "बीबी खाना ठंडा हो रहा है।"

सरला उठी और चली गई। नवीन उस छुटकारे पर बहुत खुश था। उसे भय था कि सरला कहीं फूट न जाय। ये लड़कियाँ असानी से आँसू बहा दिया करती हैं। स्वयं सरला बहुत सतर्क हो गई। नवीन से उस प्रकार नए-नए सवाल पूछना उचित नहीं था। अब वह सावधान रहा करेगी। सरला तारा को आगे रख कर, नवीन के मन का ताला तोड़ कर, स्वयं अपने प्रश्नों का उत्तर चाहती है। नवीन तारा की बातों से स्वभावतः समीर पहुँच जाता है। सरला कभी कभी अपनी सीमा से आगे बढ़ कर प्रश्न पूछ लेती है। अपनी उदारता और दया का आंचल सब के लिए फैलाए रहने के लिये उत्सुक मिलेगी।

वह सुख भोगने के लिए पैदा हुई है। उसी का उपयोग किया करे। व्यर्थ इधर-उधर फैल कर क्यों अपना मन बढ़ा रही है। सरला चुपचाप चली गई थी। उसने नवीन से आज्ञा नहीं माँगी। नवीन ने उसे चुपचाप जाते हुए देखा। सरला अपना मान वहीं छोड़ गई थी। नवीन उस मान पर व्यर्थ ही सोच रहा था। वह तारा की सहेली है। अकारण नवीन उससे झगड़ा बढ़ाता है। वह सरला व्यर्थ अपनी दया का प्रदर्शन करती है। वह भीख देकर जैसे कि तारा और उसे उबार रही हो। सरला के समीप रहना हितकर नहीं है। न वह किसी अधिकार से उसे अपनाना चाहता है। माया, मोह और मौत; वह सबको पहचानता है। और जो सरला के सम्मुख कई छोटी-छोटी बातें विस्तार पा जाती हैं; क्या वह नवीन अपने को ठग रहा है या फिर सरला को छल लेना चाहता है। कुछ भी हो यह सारा व्यापार घातक है। उसे अपने से निश्चित रहना होगा।

उसने सन्दूक पर से एक मोटी किताब निकाल ली और पढ़ने लग गया। वैयक्तिक महत्वकांक्षा ने महायुद्ध के बाद कई अजीब व्यक्तियों को आगे कर दिया था। धनी वर्ग तथा धर्म वाले पादरियों ने इटली के समाजवाद को नष्ट कर दिया और एक नई अंधी शक्ति वहाँ पनप उठी थी। आर्य जाति का प्रश्न उठा कर जर्मनी में नात्सी नेता सबल बन गए। दुनिया के प्रत्येक राष्ट्र के सम्मुख जो जो समस्याएं रहीं, भारत से वे भिन्न थीं। यह एक उपनिवेश है जहाँ हूण, मुगल, अरब, तुर्क आदि कई जातियाँ आईं और यहां शासन कर, यहीं बस गईं। यहाँ अंत में ब्रूटेन ने अपना शासन जमा लिया। सन् १६२०-२२ में एक आन्दोलन महायुद्ध के बाद उठा। जनता अलग रही। आन्दोलन असफल हो गया। आज नवीन फिर उस दल पर विचार करने लगा, जो वहां भी क्रान्ति का अग्रदूत बनना चाहता है। कई राष्ट्रों की क्रान्ति की कहानी उसने पढ़ी है। सनयातसेन, कमाल, मेजनी और कार्ल मार्क्स···सब

देशों में एक विरोधी दल रहता है। वह वहाँ के नेताओं को चेतवानी देता है। वह दल अपना कोई स्वार्थ नहीं रखता है। समाज बना धर्म बना, राजा भी बना, देवता भी बने, युद्ध हुए और दुनिया का भुगोलिक रूप बदलता चला गया। इतिहास का वैज्ञानिक आधार सदा फिर भी एक सच्चा और खरी कसौटी रहा है।

नवीन अपने देश पर सोचने लगा। महायुद्ध के बाद की घटनाएँ साधारण सी लगीं। गांधीजी और उनके साथी नेता लोग एक सीमा से बाहर नहीं बढ़े। गांधीजी का अहिंसा और चरखा असफल रहा तो गांधीजी ने आत्म शुद्धि करने के लिये राजनैतिक उपवास शुरू कर दिए। जवाहर लाल नेहरू एक स्वस्थ्य समाजवादी दृष्टिकोण लेकर आए किन्तु वह भी गांधीजी की छाया के भीतर रह गए। काल्पनिक स्वप्नों में अपनी आशा का सन्तोष गांधीजी तथा उनके साथियों ने कर लिया, आत्मा और ईश्वर को लेकर वे आगे नहीं बढ़ सके। जहाँ कहीं एक कदम आगे बढ़ने का प्रश्न सम्मुख आया, आत्मा और ईश्वर ने कोई रोशनी नहीं दिखलाई। १६२२ का आन्दोलन अपनी कमजोरियों के कारण असफल रहा। चौरीचौरा का बहाना करके गांधीजी ने अपनी रक्षा कर ली, १९३० के लाठी चार्ज, तथा यातनाएं, जेल यात्रा के बाद एक सुबह समाचार पत्रों में 'गांधी इरविन पैक्ट' हो गया था। गोलमेज कान्फरेन्स के बाद गांधी जी ने हरिजन समस्या को लेकर आमरण अनशन व्रत ले लिया।

लेकिन सामाजिक जीवन आकस्मिक घटनाओं का समूह नहीं है। समाज का विकास निश्चित नियमों के अनुसार ही होता है। राष्ट्रों के इतिहास में कई क्रान्तियां हुई हैं। उनसे समाज में नूतन परिवर्तन आए हैं। सन् १६१७ की रूसी अक्टूबर क्रान्ति ने तो मानवता के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ दिया था। एक नये समाज का स्थापना करने में वे लोग सफल हुए थे। सन् १८४८ के फ्रान्सिसी विप्लव से यह क्रान्ति

आगे बढ़ कर सफल हुई थी। १८४८ से १६१७ तक विश्व समाज के विकाश में परिवर्तन हो चुका था। १८५७ की गदर के बाद १९२१ का आन्दोलन, फिर १६३०...... !

नवीन, इतिहास की इन तारीखों से उलझ गया। उसके सम्मुख जो भारतीय क्रान्ति की तसवीर है वह बहुत साफ नहीं है। सशस्त्र क्रान्ति कई बार असफल हो चुकी है। कई बार युवकों के दल को पकड़ कर फाँसी पर लटका दिए गए। बंगभंग, अलीपुर का षड़यंत्र......फाँसी की सजाएं, अंडमान की यात्रा.... ...काकोरी.......उन सब पर उसने विचार किया है। लाहौर षड्यत्र की प्रति-छायाएँ अभी तेजी से फैलती जा रही थीं! लेकिन यह सिर्फ चंद व्यक्तियों का दल है अपनी इस कमजोरी को वह बार-बार महसूस करता है। वह चाहता है कि इस बार सब से मिल कर इस प्रश्न को सुलझा दे। लोगों में शक्ति नहीं है। जिस देश की संस्कृति को भगवान, धर्म, कर्म वर्षों से ढके हुए हैं। वे अपना संस्कृत बल खो चुके हैं। उन पंगु व्यक्तियों में नवजीवन लाना आसान काम नहीं होगा। उसके साथियों की चंद पिस्तोलें संभवतः सफल नहीं हो सकती हैं। इस बड़ी जिम्मेवारी को निभाने के लिए वह अपने को सर्वथा असमर्थ पाता है। क्या वह सचमुच बहुत निर्बल है? वह सरला के साथ नहीं तो क्यों आता। जान-बूझ कर उसे साथ ले आई है। वह भी आनाकानी नहीं करना चाहता था। यहीं वह सारी बातों पर स्वस्थता से विचार कर सकता है। कुछ दिन वहाँ रह कर बल जमा करेगा। वह किरण और सब साथियों को सूचना दे चुका। वह भीतरी स्वस्थता चाहता है—मन की। वह अपने हृदय को फौलाद का बना लेना चाहता है कि सरला या तारा उसे न पिघला सकें।

संसार का नक्शा जैसे कि बहुत बड़ा हो। पाँच महाद्वीप हैं। एशिया के पूर्व का जापान शक्तिशाली बना और चीन पर हमला करके

उसने कोरिया ले लिया। फिर फार्मोसा और अन्य द्वीपों को उसने अपने साम्राज्य में मिला लिया। आगे एक दिन आसानी से मंचूरिया मिल गया। धीरे-धीरे वह चीन में फैलता चला गया। यह साम्राज्य-वाद का नशा एक खतरनाक नशा है। जिससे कि कमजोर राष्ट्र सदा भय खाते रहते हैं। उपनिवेश वाले उसका अनुभव कर रहे हैं। वही अनुभव नवीन का भी है। राउंड टेबुल कान्फरेंस के बाद जब कुछ प्राप्त नहीं हुआ तो देश के नेता बौखला उठे थे। नवीन ने दिलचस्पी से उसका पूरा हाल पढ़ा है। लेकिन उसकी भूगोलिक सीमाएँ भी सीमित थीं। मानो कि उनका उसके विचारों तक का ही सम्बन्ध हो। नवीन अधिक सोचना नहीं चाहता है। इस प्रकार उलझन बढ़ानी हितकर नहीं लगती है।

किरण की याद आई। वह इस भार को उठाने की क्षमता रखती है। दल के लिए उसका जीवन अपेक्षित है। वह आसानी से सही रास्ता सुझा देगी। वह तो निडर लड़की है। घर के कोने में बैठ कर आँसू बहाना उसने नहीं सीखा है। वह सदा आगे खड़ी हो जाती है। उसे वह जानता है कि लाठी चार्ज हुआ था। किरण बेहोश होकर गिर पड़ी थी; किन्तु झंडा उसकी मुट्ठी पर ही था। बड़ी देर बाद उसे होश आया था। वह पिछले आन्दोलन में सबसे आगे रहती थी। सुख दुःख की परवा नहीं करती है। एक तारा है। वह गृहस्थी के योग्य थी। वह गृहस्थी के काम-काज में बहुत निपुण है। वही उसकी सही जगह थी। नए राष्ट्र के लिए स्वस्थ्य गृहस्थी की नितान्त आवश्यकता है। वहाँ बच्चों का यथोचित पालन होना चाहिए। वहाँ एक नई रोशनी उनको चाहिए, एक नई संस्कृति! नारी पत्थर और उनके देवताओं को क्यों पूजा करे। पति को देवता मान कर उसके चरणों की धूल न लगा दरजा पा लेगी। वह बच्चों को सिखलावें कि एक हमारा राष्ट्र है। एक हमारा देश है, जिसके हित के लिए हमें जीना और मरना है। धर्म के

पुरोहितों ने नारी को दासी मान लिया। नारी अस्वस्थ न रहे यही हितकर है। उसे स्वस्थ बच्चे देश को प्रदान करने हैं। वही उसका अभिमान और गौरव है। भाग्य और भगवान के सहारे गृहस्थी की चहारदिवारी के भीतर घुट कर मर जाना उनका धंधा नहीं है। देश को स्वस्थ माताओं की आवश्यकता है। उनके लिए सबल गृहस्थ चाहिएँ सामन्तयुग में नारी का स्थान बहुत गिर गया। उच्च वर्ग तो वस्तुतः स्त्री को विलास की सामग्री से अधिक नहीं समझता था। आगे बढ़ कर पति के साथ उसे सती हो जाना पड़ा। विधवा का सामाजिक बन्धन भी एक कठोर दण्ड ही तो है। पूँजीवाद नारी की रक्षा नहीं कर सका। आज तक नारी उस श्राप को असहाय सी सह रही है। मनु की जंजीरें जैसे कि आज भी उस पर पहले की भाँति लागू हैं। समाज में कई क्रान्तियाँ हुईं, लेकिन दासता की बेड़ियाँ रूस की अक्टूबर क्रान्ति ने ही सर्व प्रथम तोड़ी थीं। किरण उस बात को जानती है। क्या सरला उसका ज्ञान रखती होगी कि एक नया समाज का जन्म हुआ है। जहाँ की स्त्रियाँ समाज के निर्माण में पूर पूरा भाग लेती हैं।

तारा की गृहस्थी एक असफल बुनियाद पर बनी है। सरला को शायद यही कहना था। तारा अभी नासमझ है। सरला ने बात कही है। नवीन सरला से कहेगा कि वह तारा को पत्र लिखा करे। पत्रों से उसे बल मिलेगा वह भी उसे कभी लिखेगा कि यह देश एक गुलाम देश है। उनके समाज और परिवारों पर गुलामी की घनी छाया फैली हुई है। गुलाम जाति का कोई भविष्य नहीं होता है। कभी वे स्वतन्त्र हो जवेंगे तो स्थिति सुधर जायगी। तारा अपने सुख-दुःख की कल्पना को भूल जावेगी। लेकिन जो बाबूगीर दरजा है, वह गुलामी में सुख से फल फूल कर बेकारी बढ़ा रहा है। साहूकार हैं, बनिया हैं, कमकर हैं, किसान हैं, विद्यार्थी हैं... । कई-कई वर्ग के लोग हैं। प्रकृति ने संघर्ष करना सिखलाया था। वे अपनी उस शक्ति को भूल गए हैं।

विज्ञान के युग का इतिहास, जैसे कि नवीन विचार धाराएं उनके लिए नहीं लाया हो। दफ़्तर, अदालत आदि शासन के सूत्र जैसे कि उनके अपने नहीं हैं। तारा यह सब नहीं जानती है। सरला चतुर है। किरण अनुभव से सब कुछ सीखती जा रही है।

शासन करने की शक्ति! नवीन का मस्तिक विचारों के उथल-पुथल से घिरा हुआ था। इतना सब कुछ आज तक उसने नहीं सोचा था। वह पुस्तकें पढ़-पढ़ कर बहुत बातों की जानकारी रखता है। देश में जो उसके साथियों ने एक दल की स्थापना की थी, उससे उसकी पूर्ण बौद्धिक सहनुभूति थी। उसके साथी कहा करते थे कि क्रान्ति शीघ्र सफल होगी। फिर नवीन को नई-नई योजना बनाने में सहयोग देना होगा। नवीन फ्रान्स की क्रान्ति के इतिहास की पूरी जानकारी रखता है। अक्टूबर क्रान्ति के पन्ने-पन्ने उसने दीमक की तरह चाटे हैं। आज वह अपनी नई स्थिति से इसीलिए समझौता नहीं कर पाता है। यहाँ तो न फ्रान्स का वातावरण है और न उसकी पठित रूस की क्रान्ति का। उनकी शक्तियाँ बहुत सीमित हैं। सरला ने जो उसे 'साइकालौजी' का प्रोफेसर कहा है, वह सच बात है। वह विश्वविद्यालय में सफलता पूर्वक क्रान्ति पर व्याख्यान दे सकता है। वहाँ सब छात्रों में एक जोश उठेगा। यह क्रान्ति की चिनगारी उसकी वाणी से निकल कर उन सबके हृदय में बैठ जावेगी। वह आज मध्यवर्ग की हताश तसवीर देखता है। उसके बाद उनकी सीमा का विस्तार कुछ मिलों में रहने वाले कमकारों तक है। आगे जो ग्रामों का समूह है, उसका इतिहास उसे भी भली भाँति ज्ञान नहीं है। वहाँ जागीदार हैं, जमीदार हैं, साहूकार हैं, सूदखोर है, हैजा है; निर्धनता है, कारिन्दे हैं, बनिया है, पटवारी है, दरोगा है, इससे अधिक वे लोग नहीं जानते हैं।

शहर के मजदूर वर्ग का साधारण ज्ञान उसे है। उसका स्वरूप पुस्तकों के कुछ वादों के ज्ञान से उसे मिला है। खाना, कपड़ा और

मकान तक ही मनुष्य की सीमित आवश्यकता नहीं है। इनके बाद समाज, ज्ञान, संस्कृति आदि का प्रश्न आसानी से उठता है। उत्पादक-शक्तियों और अर्थ नीति के पुराने ढाँचे के बीच का संघर्ष क्रान्ति का सूत्रपात सदा से करता आया है। नवीन इसे जानकर भी फिर क्यों व्यक्ति द्वारा उठाई हत्या की प्रणाली से बन्ध रहा है। वह मजदूर को क्रान्ति का अगुआ मानता है। यही वर्ग पूँजीवादी समाज को उलट सकेगा। यह उसका विश्वास है। वह फिर सोचता है, कि दल के आगे खड़े होकर दलील करेगा और किरण के आगे हार जायगा। वह उनके विचारों से परिचित है। इसीलिए उनसे अलग नहीं रह सकेगा। वह अपने यहाँ देखता है। एकाएक पिछले आठ वर्षों में बड़ी-बड़ी पूँजियों के बल पर फैक्टरी और मिलें बनती जा रही हैं। उद्योगीकरण का अभी केवल सुबह है? मजदूर कोई नया वर्ग नहीं है। वह किसानों के समूह से छँट-छँट कर देहात से शहर की ओर आ रहा है। वह अपनी धरती माता से नाता तोड़ कर, अपने ग्राम देवता से अन्तिम बिदा ले, शहर की ओर एक नई आशा में बढ़ रहा है। अभी उसके देहाती संस्कार नहीं छूटे हैं। उसे गाँव की मौसमों, खेतों बागों और वहाँ के वातावरण की याद अक्सर हो आती है। उसके प्राण आज भी उसी धरती पर है। अभी कभी-कभी वह वहाँ लौट जाने की कल्पना करता है। उसके अधिककतर सम्बन्धी वहाँ है। जिनके पास से महीनों में मैली सी टेढ़ी-मेढ़ी चिट्ठी उसे मिलती है। वह उनको लगान के लिए मनिआर्डर से रुपए भेजता है। उनसे उसका सम्बन्ध एक तरह बना हुआ है। अपने में वह धीरे-धीरे स्वतंत्र वर्ग बनता जा रहा है। अब कुछ बन सा भी गया है।

नवीन उठ कर मेज से लगी कुरसी पर बैठ गया। उसकी नजर आतशखाने पर पड़ी। वहाँ हाथी दाँत का सिगरेट का डिब्बा रखा हुआ था। वह उठा और एक सिगरेट सुलगाली। वहाँ

मिट्टी के तरह-तरह के फल और तरकारियाँ रखी हुई थीं उसने उनको देखा, वे सच्चे से लगते थे। अब तो उसने सिगरेट सुलगाली। उसी तरह कुछ देर तक उन सबों को देखता रह गया। वहाँ चन्दन के बने कुछ खिलौने थे, कुछ शंख थे और भी कई अजनबी कारीगरी वाली चीजें थीं। कुछ देर खड़ा रह कर वह मेज पर बैठ गया। वहाँ रखी किताबें देखने लगा। सरला की पुस्तकें थीं। उसके कापियों पर नोट्स लिखे हुये थे। वह उनको पढ़ने लगा। ऐशट्रे पर सिगरेट रख दी। पढ़ते- पढ़ते थक सा गया। वह अब उठ कर चारपाई पर लेटा। उसने चादर ओढ़ ली और चुपचाप पड़ा रहा। वह आराम चाहता था। वह शान्ति पूर्वक सो जाने की धुन में पड़ा रहा।

सरला खाना खाने चली गई थी। वह अब मां के कमरे में चली गई। आलमारी से अँगूर निकाल धो कर तश्तरी पर रखे। फिर बेदाना अनार छील लिया। माँ को खिलाने लगी। नवीन के पास वह नहीं जाना चाहती थी। उसे डर था कि कहीं वह ऐसी कड़ी बात सुन लेने की आदी नहीं है। नवीन, उसके पिता के बैंक एकाउन्ट से उसे तोल रहा था। वह अधिक नवीन से बातें नहीं करेगी। ऐसा निश्चय कर लिया था। माँ ने पूछा, नवीन कहाँ है?"

"अपने कमरे में हैं।"

"उसने खाना खा लिया।"

"मैं तो नहीं रही। वे थोड़ा खा कर उठ गये।"

तबियत तो खराब नहीं है।"

"नहीं माँ जी।"

"संध्या को तू उसके खाने का ठीक इन्तजाम कर देना। मैं क्या कहूँ।"

सरला चुप रही

"तुझे पहाड़ कैसा लगा?"

"यह तो अजीब जगह है। न जाने तारा वहाँ कैसे रहती होगी। माँजी वहाँ तो मुझे डर लगता था। तारा तो उन लोगों के साथ रहने की आदि हो गई है। फिर भी कहती थी कि देश कभी नहीं देख पाऊँगी अब।"

"नवीन की सगाई हो गई है?"

"नहीं तो।"

"आज उसकी माँ जीवित होती तो कितनी खुश होती। बेचारी ने बड़ा कष्ट सहा था।"

माँजी की आँखों की पलकें भीग गई थीं। सरला उस ममता को जानती है। तारा भी माँ की याद करके गद्‌गद्‌ हो कहती थी कि माँ होता है तो मायका भी होता है। भैया की गृहस्थी नहीं है। उसे कौन बुलावेगा। आज इस सूने के घर का यह क्या हाल हो गया है।

नवीन को जितना सरला जान रही है, उससे वह अनुमान लगा लेती है कि तारा भाई की गृहस्थी की कल्पना लेकर ही रह जायगी। शायद किसी दिन सुनेगी कि..............

"तारा की ससुराल कैसी है?"

"माँजी तारा बहुत दुःखी है। परसों रक्षाबन्धन है। मैंने तारा को न्यौं भेजदी हैं। देहात का जीवन उसे कैसे भला लग सकता है।"

माँजी फिर बोलीं, आखिर नवीन ने पिता का स्थान ले लिया है। ऐसा लायक लड़का भगवान सब को दे। इतनी छोटी उम्र में एम० ए० पास कर लेना आसान बात नहीं है।"

सरला चुपचाप दूध गिलास पर औटा रही थी। माँजी को दे दिया दूध पीकर माँजी लेट गईं। तभी डाक्टर साहब ने कमरे में प्रवेश किया पूछा, "आज तो अब भली हो।"

"बाबूजी आज कौन जीता?" सरला ने पूछा।

"फिर हारे होंगे। इस शतरंज की चौकड़ी के पीछे तो सब काम-

काज छोड़ दिया है।" माँजी ने ताना मारा। सरला चुपचाप बाहर खिसक गई।

सरला अपने कमरे में न जाकर नवीन के कमरे के दरवाजे पर ठिठक कर खड़ी हुई। नवीन सो रहा था। उसने बाहर से ही चुपके दरवाजा ढक लिया और अपने कमरे में लौट आई। उसने ऊन ड्रावर से निकाली और नवीन की 'स्लिप ओवर' बुनने लग गई। वह इसे जल्दी ही समाप्त कर देना चाहती थी। उसने नवीन को जितना देखा है, उसी से वह सन्तुष्ट है। वह कोई खेल खेल ले, सरला उन सब समाचारों को सुनने के लिए तैयार है। नवीन चिन्तित है। उसे वह नहीं हटा सकती है। नवीन के विश्वास की सीमा से वह बिलकुल बाहर है। तारा अज्ञानता के कारण भाई का सही रूप नहीं पहचान पाती है। वह सोचती है कि उसका भैय्या जो कि लाखों में एक है बड़ा आदमी बनेगा। अपनी भाभी की कल्पना वह करती है। भाई की गृहस्थी के लिए मन में भारी लोभ छुपा हुआ है। सरला के मन में भ प्रश्न उठता है कि क्या कभी नवीन गृहस्थ बनेगा? वह सलाई चलाती रही। तन्मय हो बुनने में लवलीन थी। वह नवीन को उसे देगी तो नवीन क्या कहेगा? वह नवीन आज उसके लिए एक बहुत बड़ी पहेली बन गया है। वह उसे नहीं सुलझा पाती है। नवीन के लिए वह बहुत लोभ बढ़ा रही है। क्या यह कोई सफल प्रयास है?

सरला अपने में ही एक गीत गुनगुनाने लगी। वह किसी सिनेमा का गीत था। वह धीरे-धीरे उसे गुनगुनाती-गुनगुनाती ही रही। उंगलियाँ तेजी से चल रही थीं। ऊन का गोला फर्श पर इधर-उधर खेल रहा था। वह अपने होश में नहीं थी। जैसे कि उन्मत्त होकर वह नवीन के आगे मस्तक झुका देने का निश्चय कर चुकी हो। नौकरानी आकर बोली, "बीबी।"

सरला ने अपनी भीजी पलकें पोंछ लीं। 'ओ' वह कितनी भावुक

बन गई है। हृदय का वह प्रवाह तो एक भूल है। नौकरानी ने उसे एक चिट्ठी दी। उसने पता पढ़ा। सुन्दर अक्षरों में नवीन का पता लिखा हुआ था। आखिर इस नगर में नवीन का कौन परिचित हो सकता है? उसने चिट्ठी लेली। चुपचाप रखदी। नौकरानी से पीने को पानी मंगवा लिया। पीकर कुछ चैतन्य हुई। वह चिट्ठी नवीन के लिए थी। उसके भीतर न जाने क्या लिखा हुआ हो। नौकरानी चली गई। उसने कमरे का दरवाजा ढक लिया। पलंग पर लेट गई। एकाएक सिरहाने वाले आइने पर उसकी दृष्टि पड़ी। वह कांप उठी। उसकी आँखें लाल थीं। सोचा कि क्या वह पागल हो गई है। फिर उसका दिल भर आया। वह सिसक-सिसक कर रोने लगी। वह न जाने क्यों इस भांति आंसू बहा रही थी। उसका मन फिर भी हल्का नहीं हुआ। वह चिट्ठी उसी प्रकार मेज पर पड़ी हुई थी। वह चुपचाप छत की ओर देख रही थी। ऊपर रोशनदान पर दृष्टि पड़ी। वहाँ से एक तितली अभी-अभी बाहर उड़ कर गई थी। वह जैसे कि अब बाग में मुक्त हो कर विचरण करेगी। सरला तो परतंत्र है। वह इसी भाँति आजीवन रहेगी।

तभी नवीन दरवाजा खोल कर भीतर आना चाहता था, कि सरला को सोया हुआ समझ कर लौट पड़ा। सरला तो उठी और बोली, "क्या है। आप आवें।"

नवीन लौट आया। बोला, "पानी को कहना था।"

सरला तेजी से बाहर निकली। मेहरी को चाय बनाने के लिए कह कर लौट आई। नवीन को चिट्ठी दे दी। नवीन ने पता देखा और चिट्ठी जेब पर बन्द की बन्द रखदी। वह उसी भाँति खड़ा था कि सरला बोली, "आप बैठ जावें। चाय आ रही है."

नवीन चुपचाप कुरसी पर बैठ गया। दोनों बड़ी देर तक चुप रहे। सरला अब बाहर चली गई। नवीन ने सावधानी से चिट्ठी पढ़ ली। उसे पढ़ कर फिर लिफाफे में बन्द कर दिया और चिट्ठी जेब पर रखदी।

वह मन में खिन्न था, कि व्यर्थ सरला को सोने से जगाया है। लेकिन सरला ने उसे यह सब अधिकार सौंपा है। उसे हिचक नहीं होती है। वह उसी भाँति चुपचाप बैठा रहा। कमरे की सजावट देखी। सरला की सारियाँ, सामने धोबी के धुले हुए कपड़ों में नजर आईं। उसकी रुचि देखकर वह खुश हुआ।

नौकरानी चाय ले आई थी। फिर वह मिठाई, मेवे, फल और नमकीन ले आई। नवीन ने एक प्याला चाय बना लिया। पीने को था कि पूछा फिर, 'सरला कहाँ हैं?"

"माँजी के पास।"

"कहना चाय नहीं पीवेंगी।"

नौकरानी ने आ कर कह दिया कि वे चाय नहीं पीवेंगी। नौकरानी चली गई। नवीन चाय के प्याले को हाथ में लिए कुछ सोचता रह गया। कुछ देर के बाद एक घूंट पी तो चीनी नहीं थी। उसने चीनी डाल ली। अब एक घूंट पी डाली। आधा प्याला पीकर प्याली रख दी। चुपचाप बैठा रहा। एक-दो बार चाय की प्याली पर नजर डाली, पर फिर नहीं पी। वह उसी भाँति बड़ी देर तक बैठा रह गया। घड़ी ने चार बजाए तो वह चौंक उठा। खड़ा होकर बाहर जाना चाहता था, कि सरला आती दीख पड़ी। सरला ने समीप पहुँच कर कहा, "आपने तो अभी तक चाय नहीं पी है।"

"पी है।"

"कुछ खाया तक नहीं है।"

उसने एक समोसा उठा लिया और खाने लगा। सरला ने ठंडी चाय फेंक दी। नई चाय बना ली। नवीन ने प्याला ले लिया। स्वयं सरला ने अपने लिए भी चाय बनाई पीते हुये बोली, मुझे तो चाय पीने की आदत कम है। सुबह पिताजी के साथ एक प्याली पी लेती हूँ, बस।"

नवीन चुपचाप सेव काट रहा था। एक टुकड़ा उसने मुँह में डाल लिया। प्याला फिर उठाया और एक घूँट पी तो लगा कि चीनी बहुत हो गई। उसने थोड़ी चाय और उड़ेल ली। सरला तो चुपचाप चाय पी रही थी। पूछा नवीन ने, "डाक्टर साहब क्या कर रहे हैं।

"बाबूजी तो बाहर चले गये हैं। आप साँझ को कहीं तो नहीं जावेंगे। नहीं तो शाँफर को रोक लेती हूं। बाबूजी उसे छोड़ गए हैं।"

नवीन ने इन्कार कर दिया। प्याला समाप्त कर उठा और बोला, "धन्यवाद!" चुपचाप बाहर चला गया।

सरला को नवीन का यह व्यवहार भला नहीं लगा। वह इस भाँति क्यों चला गया। क्या वे उससे अधिक बातें नहीं करना चाहते हैं। ऐसी बात क्या है फिर! नवीन उससे बहुत कम बातें करता है। वह काजू लेकर खा रही थी। फिर एक प्याली चाय बनाई और पीने लगी। नवीन को इस समय उसने देखा तो लगा कि वह उसके समीप से भाग जाना चाहता था। वह भी उसके पास नहीं जावेगी। यह तो उसका अपमान है।

नवीन ने कमरे में पहुँच कर फिर एक बार पत्र निकाला और पढ़ने लग गया। उसके साथी ने सुबह उसे पहचान लिया था और टोह लगाता हुआ वह वहाँ पहुँचा। उस लड़के ने फिर सात बजे शाम को फाटक पर मिलने के लिये लिखा था। नवीन ने अपना सन्दूक खोल लिया। कुछ आवश्यक कागज निकाले, 'पिस्टल' एक ओर ढक कर रख दी। अब वह कपड़े बदलने लग गया। पूरी तैयारी करके कुर्सी पर बैठा। कुछ देर बैठा ही रहा कि मेहरी ने आकर पूछा, "आप खाना कै बजे खावेंगे।"

"मैं सांझ को खाना नहीं खाऊँगा। कह कर वह उठा। मेहरी चली गई थी। वह पलंग पर लेट गया। एक बार उसने फिर पूरी चिट्ठी पढ़ली। अभी उसका सन्दूक खुला ही हुआ था। कपड़े अस्त-व्यस्त

बिखरे हुये थे। वह चिट्ठी को लिफाफे पर रख रहा था कि सरला आ गई।

आप खाना नहीं खावेंगे,'' पूछा सरला ने।

"नहीं।"

"क्या बाहर जाने की तैयारी है?"

"हाँ रात यहाँ नहीं आऊँगा। कल भी नहीं। परसों सुबह तक लौट आने का कोशिश करूँगा। एक जरूरी काम आ पड़ा है।"

सरला चुप थी उसकी निगाह सन्दूक पर पड़ी। उसने वे बिखरे हुए कपड़े देखे। ढकी हुई 'पिस्टल' पर दृष्टि गढ़ गई। उसकी नली खुली दीख पड़ रही था। उसे देखकर उसके सम्मुख उन हत्याओं की तसवीर खड़ी हो गई, जिनका जिक्र कि उसके पिताजी किया करते हैं। क्या नवीन भी वैसी हत्याएं कर सकता है। उसे अपनी रक्षा के लिए इसे काम में लाना ही पड़ेगा। पुलीस उस पर हमला करेगी, तो वह अपनी रक्षा इसी से करेगा। वहीं संभवतः वह हार कर एक दिन......। और सरला सुबह के समाचार पत्रों में पढ़ेगी कि.......

"मैं जल्दी कुछ खाना बनवाए लेती हूँ।" कहकर वह बाहर चली गई। नवीन हतबुद्धि उसे देखता रह गया। उसने उठकर कपड़े सभाल लए। सावधानी से सन्दूक बन्द कर लिया। चुपचाप कमरे में इधर-उधर टहलता रहा। अब खिड़की के पास खड़ा हो कर बाहर देखने लगा। वहाँ चिड़ियाँ उड़ रही थीं। माली की छोटी लड़की कुए के पास खड़ी होकर अपने भैया को खिला रही थी। वह उस कोठी की विशालता को देखने लग गया। नई आस्ट्रेलियन डिजाइन की इमारत थी। पास एक ट्यूब-वेल था। उसकी आवाज कानों में पड़ने लगी। नवीन का आतिथ्य भी समाप्त हो गया है। सरला उसे यहां लाई थी। कमरे म भीतर टिक-टिक-टिक घड़ी चल रही थी। उसने एक-एक घन्टे बजाने शुरू कर दिए। वह भीतर लौट आया। फिर कमरे में

टहलने लग गया। फर्श पर सुन्दर दरी बिछी हुई थी। वह गोसलखाने में पहुँच गया। हाथ-मुँह धो लिया। बाल संवार लिये। ठीक तरह स्वस्थ हो कर कमरे में कुरसी पर बैठ गया।

नौकरानी पानी ले आई थी। अब थाली पर खाना ले आई। सरला पास की कुरसी पर बैठ गई। नवीन चुपचाप खाना खा रहा था। उसे भले ही भूख न हो, पर सरला का मन रखना जरूरी था। सरला उदास बैठी हुई थी। सरला को चुप देख कर वह बोला, "परसों लौट आऊँगा। जरूरी काम आ पड़ा है। आज रुक नहीं सकता हूँ। ऐसी कोई खास बात नहीं है। आप निश्चिन्त रहें।"

"यह झूठ बात है। आप व्यर्थ यह बहाना बना रहे हैं।"

"सब सामान यहीं छोड़ रहा हूं। आप तो बेकार ही परेशान हो रही हैं। इसमें उदास होने की कोई बात नहीं है। तारा को देखिये....।"

"तारा तो बहुत सीधी लड़की है। आपने उसे वैसा बना कर अच्छा नहीं किया है। वह सोचती है कि आप.......।"

सरला अधिक न बोल कर चुप हो गई। नवीन की ओर देखा और कहने लगी, "आपकी तबीयत ठीक नहीं है। सोचा था कि कल सुबह पिताजी से कहूंगी कि आप के लिये कोई दवा बनवा दें।"

"लेकिन मुझे मरीज बनने की इच्छा नहीं है।"

"कौन आपको मरीज बना रही है।"

"आप चाहती हैं कि.......।"

"नहीं, नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। हरएक को अपनी परवा करनी चाहिये।"

नवीन चुपचाप खाना खाने लगा। वह मना करता तो सरला महरी से जबरदस्ती पराठा डलवा देती भूख न होने पर भी वह बहुत खाना खा गया। अब कहा सरला ने, "क्या कल सुबह नहीं जा सकते हैं। रात भर सफर किया है।"

नवीन चुप रहा। महरी थाली उठा कर ले गई थी। उसने हाथ धो लिये। अब चुपचाप खिड़की के पास खड़ा हो गया। सोचा कि उसका लौटना निश्चित नहीं है। कौन जाने कि न लौट सके। वह साफ साफ सरला से क्यों नहीं कह देता है। उस से झूठ बोलने से क्या लाभ है। सब कह कर ही ऐसा क्या लाभ है। न सरला को उसकी इतनी चिन्ता ही बढ़ानी चाहिए।

सरला पान लाई थी। नवीन ने पान ले लिया। सरला सिगरेट उठा कर ले आई। वह चुपचाप सिगरेट सुलगा कर फूँकने लग गया। सरला उसी भाँति खड़ी थी। नवीन सरला के चेहरे को पढ़ कर उसे सही-सही पहचान लेना चाहता था। सांझ हो आई थी। नवीन संभल गया। बोला, "आप अधिक चिन्तित न रहा करें।"

"मैं"

"तारा वहाँ अच्छी तरह से है।"

नवीन जाने को तैयार हो गया, तो सरला ने पूछा, "यहाँ कोई आवश्यक चीज तो नहीं छूट रही है। परसों आप लौट कर नहीं आवेंगे, तो मैं तारा को क्या उत्तर दूँगी। मैं न जाने क्यों बार-बार इस भार से मुक्त नहीं होती हूँ।"

"तारा कुछ नहीं पूछेगी।"

"आप क्या कह रहे हैं? मैंने सुबह सब समाचार पढ़े हैं। पहाड़ वाली चिट्ठी भी पढ़ चुकी हूँ। यह जानती हूँ कि आज जो चिट्ठी आई है, उसमें कोई भेद वाली बात जरूर है। आप बहुत परेशान हैं। बड़ी उतावली में यहां से जा रहे हैं।"

नवीन तो हँस पड़ा। सरला स्तब्ध रह गई। कहा, "तभी शायद आप मुझे यहां ले आई हैं।"

"यह बात नहीं थी।"

"अब जान गया हूँ सरला, कि सच ही तारा से तुम भिन्न हो। वह

चिट्ठियाँ चोरी करके नहीं पढ़ती है। मेरे जीवन की गति में रुकावट डालने की चेष्टा नहीं करती। मेरी रक्षा के लिए कोई खास चिन्ता भी उसे नहीं है।"

"आप तो मुझे लाचार करने तुल गए हैं।"

ऐसी बात नहीं है। अब तुम सारी स्थिति को स्वयं जानती हो, यह जानकर मैं घबराया नहीं हूँ। शायद यदि परसों लौटकर नहीं आऊँ तो वादा टूट गया समझ लेना।

"आप परसों नहीं आवेंगे?"

"मैं चेष्टा अवश्य करूँगा।" कह कर नवीन बाहर जाने को था कि कहा सरला ने, "आप पिस्तौल नहीं ले जा रहे हैं।"

"पिस्तौल! क्या क्या उसकी आवश्यकता पड़ेगी?" वह लौट आया और सन्दूक में से उसे निकाल, एक बार खोल कर देख लिया कि वह खाली तो नहीं है। फिर सावधानी से वह जेब में डाल ली।

सरला हत-बुद्धि, अवाक नवीन को देखती रह गई। अब नवीन ने नमस्ते किया। इससे पहले कि सरला कुछ कहे, वह चुपचाप बाहर चला गया। सरला पुकारना चाहती थी; पर उसका गला भर आया। वह खिड़की के पास खड़ी हो गई। नवीन सिर नीचा किये हुए चला जा रहा था। उसके उस रूप में सरला को लगा कि वह सच ही पूरा नास्तिक है।

नवीन ने जब सरला से विदा ली तो उसे लगा कि अब वह एक आश्रय से छुटकारा पा गया है। वह जल्दी-जल्दी चलने लगा। उसे डर लग रहा था कि सरला पुकार कर कहीं उसे रोक लेने की चेष्टा न कर बैठे। उसने पीछे मुड़ कर नहीं देखा। फाटक पर पहुँच कर वह रुका। उसके हृदय में एक भूचाल उठा हुआ था। उसकी आत्मा में एक अजीब अनुभूति उठ कर, उसे बेचैन कर रही थी। उसके सारे शरीर पर कई तेज लहरें दौड़ रही थीं। सरला का वह खिलवाड़। वह

कैसा खेल खेल रही थी ? वह इन लड़कियों से अपरिचित ही है। सरला के वह बहुत समीप पहुँच गया था। उसने तो उसके प्राणों में एक गति ला दी थी। वह उस गति की अज्ञेय परिभाषा पर सोचने लगा। सरला ने उसकी भरी हुई पिस्तौल देख ली थी। उसकी एक गोली प्राणों की बाजी जीत सकती हैं। सरला ने एक नया जीवन उसे दिया है। सरला का बोलना, हँसना, चुटकी लेना तथा गंभीर होकर उसकी बातें सुनना। सरला का रिश्ता तय हो चुका है। वह सरला अपनी गृहस्थी में खुशी रहेगी। पिता ने सरला से स्वीकृत ली थी। अपने जीवन निर्माण में उसे सारी बातों पर मत देने का अधिकार रहा है। पिता ने रुढ़िवाद को भुला दिया। सरला उसके लिये बहुत चिन्तित थी। उसने अपने हृदय में एक नया प्राण पाया है। सरला उसकी रक्षा करना चाहती थी। क्या वह सरला से ?

वह चुपचाप जा रहा था। तांगे की आहट पाकर चौंक उठा। उसका साथी आ पहुँचा था। वह चुपचाप तांगे पर बैठ गया। तांगा सरपट भाग रहा था। उस नये शहर की सड़कों के घने जाल के बीच वह बढ़ रहा था। नवीन चुपचाप ही बैठा रहा। सड़कों पर रोशनी जगमगाने लगी। वह एक भारी मोड़ पर था। कई चौराहे छूट गए। नवीन केवल एक दर्शक की भांति सब कुछ देख रहा था। तांगा रुक गया। वे दोनों उतर पड़े। तांगा वाला चला गया। उसे अब किरण का ख्याल आया। पूछा, "किरण कब आ रही है ?"

"कल सुबह।"

"गाड़ी से···!"

"कहलाया है कि लारी से आवेगी। मैं उसी का इन्तजार कर रहा था। हमें तो आशा थी, कि आप परसों तक पहुँच सकेंगे।"

नवीन ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह उसके साथ-साथ चलने लगा। आगे बढ़ कर रेलवे लाइन पार की। सामने मिल की चिमनी

दीख पड़ी। वे अब मिल की ओर वाली लाइन पर बढ़ गये। दोनों ओर गड्ढों में गंदला पानी भरा हुआ था। जिससे सड़ी बदबू चल रही थी। धीरे-धीरे एक नई बस्ती आ गई। मूंगफली और लाईदाने वालों के खोंचों पर बत्तियां जल रही थीं। लड़के उनको घेरे हुये थे। तेल की पकोड़ियां बनाने वाला अपने काम में मशगूल था। दहीबड़े और चाटवाले के पास दो एक लड़के पत्ते लिए खड़े थे। पास ही कुत्ते उन जूठे पत्तों को चाट रहे थे। वह सारी तसवीर उसके हृदय पर खिंच गई। वे गंदे बच्चे, औरतें और मर्द; सब को वह पहचान रहा था, कि क्या वे सब भी उनके ही समाज के जीव हैं। या वे लोग उनसे अलग हैं, जिनसे कोई वास्ता उसे नहीं है।

एक क्वाटर के दरवाजे को उसके साथी ने खटखटाया। वह खुल गया। चिप्पे लगी धोती पहने कोई औरत दरवाजा खोलने आई। चारपाई पर मैला गुदड़ा बिछा हुआ था। उस पर एक बच्चा सो रहा था। छोटे दालान में धुआं फैलता जा रहा था। एक ओर टाट का परदा बनाकर टट्टी बनाई गई थी। उसकी बदबू दालान के भीतर महक रही थी। एक कमरा और बाहर बरांडा, जिसमें एक ओर रसोई घर था और दूसरी ओर भंडार जो मिट्टी के घड़ों और हंडियाओं से भरा हुआ था। वह चुपचाप खड़ा था कि एक टूटा मोढ़ा उसका साथी ले आया। यहीं क्या उसका क्वाटर था, जिसके बारे में राह भर वह कहता रहा है। उसने अपनी गृहणी से कहा, "इनको यहीं खाना है!"

नवीन ने मना किया पर वह माना नहीं। नवीन चुप हो गया। अब गृहलक्ष्मी तुनक कर बोलीं, "घर में कुछ है भी कि खाना ही बनाऊंगी। घर में नाज तो पैदा होता नहीं है। रोज कहा करतीं हूँ, पर कौन सुने।'

"अभी सब सामान ले आता हूँ।"

"दूधवाला आया था। कई बातें सुना कर चला गया। आज दूध

नहीं दे गया है। बड़ी देर तक वह चिल्लाता रहा। अब जाकर वह सोया है। मुझे आज फिर बुखार चढ़ गया है।"

"क्या तबियत खराब है?" नवीन ने पूछा।

"मलेरिया बिगड़ गया और अब पाली से बुखार आता है।"

नवीन सुन कर चुप रहा। वह बोला, "मैं औरों को बुला लाता हूँ। सौदा-पत्ता भी ले आऊँगा। वैसे सबको मालूम है हीं।" वह चला गया। नवीन उस परिवार पर सोचने लग गया। बीस रुपया माहवारी वेतन मिलता है। पति, बच्चा और बीमार पत्नी। मां युवती है, पर रोग के कारण मुर्दा सी लगती है। कहीं खुशी और जीवन उत्साह नहीं है। परिवार आबादी बढ़ाता हुआ जी रहा है कि उनकी गिनती मर्दुमशुमारी में हो जाय। कमरे में भीतर तेल की डिबिया जल रही थी। उसका मैला और धुंधला प्रकाश था। तेल की महक बाहर तक फैल रही थी। वह उठ कर भीतर चला गया। देखा कि दीवाल पर बनी आलमारी के एक खाने में कुछ किताबें हैं। पास पहुँच कर जांच की तो मिला कि सूचीपत्र, पुरानी किताबें और अखबार थे। एक किताब उठाई। पुराने जमाने का लीथो के अक्षरों में छपा हुआ 'किस्सा सवा यार' था उसके पीछे कई चटकीली दिल धड़काने वाली पुस्तकों का विज्ञापन छपा हुआ था। खाली जगहों पर पेन्सिल से कई रोगों के नुस्खे लिखे हुए थे। डाबर का पंचांग, बर्मन की जंत्री भी थीं। वे सब बड़े यत्न से रखी हुई थीं। एक मिस्मरेजियम की किताब थी। उसने वह किताब उठा ली। ऊपर खाने में कई खाली शीशियाँ थी। कुछ पर दवाखानों की स्लिपें लगी हुई थी। वह मिस्मरेजियम की पुस्तक पलटने लगा। 'वशीकरण शक्ति' के ज्ञान पर उसकी आँखें अटकीं। एक चोटी को वश में करने की तदबीर बताई गई थी कि किसी अँधेरे कमरे में एक घेरा बनाकर कोई चीज रख दी जाय और मनोविज्ञान से अनुमान लगाया जाय कि वह चीज दीख पड़ रही है। जब

ऐसा अभ्यास आठ दस घंटे बैठने का हो जाय तो वशीकरण मंत्र आ गया। उसका प्रयोग एक चीटीं पर किया जाना चाहिये। उसी कमरे में दिया जला कर एक चीटीं उसी घेरे में डाली जाय। वह चलती रहेगी। पर वही दिग्बल वाली दृष्टि जब उस पर पड़ेगी तो वह स्थिर खड़ी रह जायगी। इसकी सफलता मिलजाने पर मंत्र सफल हो गया। जब आप चाहें उसी कमरे में अँधेरे में बैठ कर अपनी दृष्टि द्वारा अपने किसी स्नेही को वश में कर सकते हैं। उसका आवाहन मात्र करना पड़ेगा।

बच्चा, बाहर रो रहा था। कमरे में सीलन की महक चलने लगी। माँ ने बच्चे को पहले मनाया बुझाया और आखिर झुँझला कर मारने लगी। बच्चा चीखने लगा। नवीन उस कर्तव्य पर आश्चर्य में पड़ गया। वह माता का कैसा गुस्सा और झुँझलाहट थी। वह गृहस्थी उसे अजीब सी लगी। माँ शायद बच्चे होने के बाद रोगी हो गई होगी। केदार बाबू की पोशाकें डोरी में टंगी हुई थीं। एक ओर बड़ी चौड़ी चारपाई बिछी हुई थी। वह इतनी ढीली थी कि जमीन को चूम रही थी। उसे कसने की आवश्यकता नहीं समझी जाती है। एक ओर खपरेलों से पानी टपकता होगा। वहाँ पर पानी जमा करने के लिये लोहे का तसला रखा हुआ था। दीवालें लाल धब्बों से भरी हुई थीं। वह खटमलों के साथ वाले युद्ध का अवशेष है। चारों ओर एक ऐसा वातावरण था जो कि आशा पूर्ण नहीं लगा। परिवार का खाका बहुत भद्दा था। उसका अपना कोई स्वतन्त्र स्वरूप नहीं था। वह उस सबसे अप्रतिभ नहीं हुआ। यह हाल तो लाखों परिवारों का है। कुछ का तो इससे भी बुरा है। सरला के परिवार की याद आई। उसके अपमान को बटोर कर जैसे कि यह गृहस्थी बनाई गई हो? सोचा फिर कि इन अस्वस्थ परिवारों की क्या आवश्यकता है? बीमार पत्नी, जिसके चेहरे पर मृत्यु झाँक रही है' वह कमजोर बच्चा क्या राष्ट्र की निधि है? और केदार

अपने को असफल मानता है। बार-बार परिवार की झंझट का उल्लेख करेगा। कहता है कि यदि वह इस लोभ में न पड़ता तो सफल रहता। अब तो एक जंजाल में फंस गया है; जिससे आसानी से छुटकारा नहीं मिल सकता है। उसकी सारी शक्ति निचुड़ती जा रही है। वह अपने को अशान्त पाता है। अब आशावादी नहीं बन सकता है। एक बड़ा बोझा उसके ऊपर लाद दिया है जिसे संभालना उसकी शक्ति से बाहर है। बात सच है। इसका समाज अपने में नहीं गिनता है। वे भी उससे वास्ता नहीं रखते हैं। इनका जो अपना समाज है, वहाँ कभी बसन्त नहीं आता है। सदा पतझड़ की मायूसी छाई रहती है। फिर भी उनको रोजाना जीवन से मतलब है, उतना ही जितना कि हरएक सभ्य व्यक्ति को है। वे शहर की आबादी से बाहर अपने को नहीं मानते हैं। जनगणना में उनकी भी गिनती है। वे अपने को पशु न समझ कर इन्सान मानते हैं। वे आदम मानव की आज की सन्तानें हैं, जो कि एक बिगड़े हुये समाज के अभिशाप का दन्ड भोग रहे हैं। पुरोहित इनको भाग्य और भगवान सौंप गये हैं, कि वे उसी के सहारे सन्तोष कर लिया करें। यह अपेक्षित सन्तोष जैसे कि हो।

चौके से उपले का धुआँ उठ कर फैल रहा था। लगता कि वह सब कुछ ढक लेगा। वह उस परिवार की मनुष्यता को ढक लेने की धुन में भी था। अब वह ऊपर उठ कर बस्ती में फैलने लगा। नवीन जानता है, कि इसी भाँति ये बस्तियाँ रात्रि को धुएँ के बीच चुपचाप पड़ी रहती हैं। जो लोग यहां गुजारा कर रहे हैं, उनको इसी भांति जीना है। उनकी जिन्दगी कोई प्रगति नहीं ला पाती है। वे उसी भांति एक सीमा के भीतर पड़े घुट रहे हैं। उसके बाहर नहीं निकल पाते। उनके परिवार के बन्धन, स्नेह, मोह आदि टूटते जाते हैं। वे आपसी व्यवहार सहृदयता नहीं बरतते हैं, जो वास्तविक है। मनुष्य का नाता फिर भी आपसी है, जिससे वे कदापि भाग नहीं सकते हैं। यही उनको जीवित रखता

है। और जीवन तो केवल मैली काई ही नहीं है। उसकी जो चमक है, उसे अपना लेना हर एक चाहता है। कल वह चमक इन परिवारों में भी आवेगी। इनका यह संघर्ष व्यर्थ नहीं जायगा। हरएक मनुष्य शक्तिशाली है। फिर ये तो एक बड़ी तादाद में हैं। सरला के पिता नगर में कई मिलों के संचालक हैं। चीनी, साबुन, बनस्पति घी, केमिकिल्स की दूकानें हरएक मिल में उनके आधे से अधिक शेयर हैं। सम्मिलित व्यवसाय द्वारा वे सफलता पूर्वक इस व्यवस्था को चला लेते हैं। यहाँ शतरंज की गोटियां और काठ के हाथी, घोड़े, वजीर नहीं चलते हैं। वहां शेयर और नफे की गोटियां खेली जाती हैं।

वह गोटियाँ, शेयर और नफे तक सीमित नहीं हैं। उससे हजारों व्यक्तियों को उनके काम का सौवां हिस्सा भी नहीं मिलता है। फिर दलाल और छोटा व्यापारी आता है। इसके बाद रुपया ठीक तरह फैल जाने पर धर्म का पुराणपंथी रूप चलता है। उनका स्वरूप धर्मशालाएँ और मन्दिर हैं। सरला का परिवार और केदार का; ये दोनों उस श्रम विभाजन के दो रूप हैं। समाज के हित के लिये कानून बनाते समय सरला के पिता व्यवस्था सभा में अपने हित के सुझाव देंगे। केदार का वहां कोई प्रतिनिधि नहीं होगा। सरला के पिता शहर के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। उनके यहां कमिश्नर, पुलीस कप्तान, कलक्टर आदि सदा दावत पर आते हैं। वे क्लब में भी संध्या को मिलते हैं। केदार की सीमाएँ इस बस्ती से बाहर नहीं है। यहां के लोगों के श्रम के धन को चुरा कर पूँजी जमा हुई है। उससे बैंक चल रहे हैं। सट्टे का बाजार चलता है। परिवार के परिवार मखमल के गद्दों पर लेटे-लेटे आठ बजे सुबह आँख खोलते हैं। बड़ी-बड़ी एण्ड कम्पनी की दूकानें सजी रहती हैं। न्याय और शासन भी उनके पावों में लक्ष्मी की भांति माथा झुकाता है। मगर और छोटी मछलियों के इस युद्ध को कौन नहीं जानता है। नवीन ने सिविल लाइन्स में बचपन व्यतीत किया है। वहाँ के लोग तो

एक अजायब घर के जन्तु हैं। सिटी मजिस्ट्रेट, जज साहब, मुन्सिफ साहब खफीफा जज........। उनके बड़े अजीब से परिवार हैं। वे अधिकतर साधारण मध्यवर्ग से आए हैं। पहिली तारीख को 'ट्रेजरी' अपना बिल भेज कर वे महीने भर की चिन्ता से मुक्त हो जाते हैं कचेहरी के आसपास उनके बंगले होते हैं। वे जैसे कि एक नये शासन करने वाले वर्ग की नींव डाल रहे हों। जो उनके परिवार के बच्चे हैं, वे उस वर्ग की कमजोरी के कारण नहीं पनप पाते हैं। परिवार आगे टूट कर धीरे धीरे बाबूगीर वर्ग में समा जाता है। वह वर्ग सदा से निकम्मे और अकर्मण्य लोगों से चलता आया है। जिनमें अपनी सही शक्ति को पहचान लेने की सामर्थ्य नहीं रह जाती है। इस बाबूगीर वाली दुनिया से कोई सहानभूति नहीं है।

केदार के परिवार की रूप रेखा के साथ वह इन्सोरेन्स कम्पनी के विज्ञापनों को तोलने लग गया। वे एक सुन्दर तसवीर आगे रखते हैं—परिवार का स्वामी पचपन साल की अवस्था में पहुँच गया है। लड़का कालेज में पड़ता है। परिवार का अपना मकान है। सामने बैंक की किताब खुली पड़ी है। जिसमें इन्सोरेन्स कम्पनी द्वारा बीस हजार रुपया जमा किया गया है। उसके बाद लिखा है कि थोड़ी माहवारी किश्तें देकर इसी प्रकार हरएक परिवार सफल हो सकता है। इस सफलता की सीमा बहुत बड़ी शायद नहीं है केदार को वहाँ से कोई लाभ नहीं हो सकता है। वह किसी दिन बहुत बड़ी तनखा पाएगा जो कि शायद पचास रुपल्ली होगी। यदि बीबी मर नहीं गई तो कुछ पाँच सात लूले लंगड़े बच्चे कच्चे दे देगी। यह सारा आँगन भरा हुआ देख पड़ेगा। वे सब किसी अच्छी हालत में नहीं होंगे। उनका आर्थिक स्वरूप कोई उज्वल नहीं होगा। वे सब शतरंज की गोटियों की भाँति अपना श्रम दूसरों की बुद्धि के सन्तोष के लिए दे देंगे। अपने आप पंगु रह कर नौकरी की मैली चादर ओढ़ कर समाज से अलग रहेंगें।

नवीन ने आते हुए देखा था कि मिल की आमदनी से बड़े-बड़े मकानों के सेट किराए के लिए खड़े किए गए थे। उनमें से कई एक से उसने गाने की ध्वनि सुनी थी। उनमें सुन्दर-सुन्दर फुलवाड़ियाँ थी केदार पांच साल से यहां नौकरी कर रहा है। उसका यह 'क्वाटर' अतीत युग की याद दिलाता है, जब कि मानव खोहों में रहते थे। तब से आज तक लाखों वर्ष गुजर चुके हैं। दुनिया बहुत बदल गई है। एक साम्राज्यवादी युद्ध समाप्त हो चुका है। स्पेन और अबीसीनिया के ऊपर फैली हुई घटना देख कर अनायास दूसरे युद्ध की आशंका जैसे की हो रही थी। लीग ऑफ नेशन्स फाइलों में रह गई। चीन के ऊपर जापान अपना प्रभुत्व जमा चुका है। वह अब वहां और फैलना चाहता है। अमेरिका और बृटेन अपने उस अर्द्ध-उपनिवेश की ओर देखकर दांव पेच सोच रहे हैं कि क्या करें? भारतवर्ष में एक नई शक्ति नवयुवकों के बीच आई है। वह क्रान्तिकारी पार्टियां भारत में पूँजीवादी का श्रीगणेश नहीं होने देना चाहती हैं। वे साम्राज्यवाद की मजबूत कीली को भी चंद व्यक्तियों के द्वारा तोड़ देना चाहती हैं। वे उसे जड़ से ही नष्ट कर देने की धुन में हैं।

बाहर कुछ लोगों के पांवों की आवाज सुनाई पड़ी। वह चौकन्ना हो गया। उस युवती ने उठ कर दवाजा खोल लिया। पांच आदमी आए थे। केदार चूल्हे पर चढ़ा पानी देखने लगा। सब भीतर कमरे में चटाई पर बैठ गए।

पूछा नवीन ने "किरण कब तक आ जायगी।"

"वह कल नहीं आ रही है। वह नहीं चाहती है कि व्यर्थ ही पुलीस का सन्देह बढ़ जाय। यही सूचना उसने भिजवाई है। संभवतः परसों तक पहुँच जायगी।"

नवीन चुपचाप सब बातें सुनने लगा। अपने इन साथियों के बीच वह सुलझ गया। सब स्थिति पर गंभीरता पूर्वक विचार करना

चाहते थे। तभी बोला अविनाश, "नवीनजी अब हम चाहते हैं कि आप हमें पूर्ण स्वतंत्रा देदें ताकि हम इन धनियों को ढूँढ ढूँढ कर नष्ट करदें। सब लोगों का यही निश्चित मत है कि इनको मिटा डालना चाहिये। हमें सफलता मिल जाने की पूर्ण आशा है आखिर ये लोग धनी कैसे बने ? हम लोगों का खून चूस-चूस करके ही "

हँस पड़ा नवीन, उनको समझाने लगा, "अविनाश, यह तुम्हारा भ्रम है। एक, दो, तीन या चार व्यक्तियों को मिटा कर काम में सफलता नहीं मिल सकती है। न उस धन को लूटकर बाँट देने से ही समस्या हल होगी। उस सम्पूर्ण वर्ग को नष्ट करने की शक्ति अभी हम लोग एकत्रित नहीं कर सके हैं। दो व्यक्तियों को मार कर आतंक फैल सकता है। इस तरह की सनसनी पैदा करने वाली बातों का असर क्षणिक होता है। यह क्रान्ति की सफल प्रगति नहीं है। अभी हमें अपनी शक्ति को संगठित करना चाहिए। अभी हम बहुत बिखरे हुए हैं। हमारी कुछ पिछली भूलें हैं। जिनका निवारण हमें करना ही पड़ेगा। इसी लिए मैं चाहता हूं, सब लोग मिल कर कोई नया रास्ता निकालें। हमारे पिछले अनुभव काफी हैं। एक-एक नवयुवक की बहादुरी पर विश्वास करने से ही तो सफलता नहीं मिलेगी। हमें लाखों बहादुर लोगों को तैयार करना चाहिये। उसके लिए व्यर्थ के आतंक की भावना भुला देनी होगी। यह हमारी प्रगति में रुकावट डाल रहा है।"

"आप क्या कह रहे हैं नवीनजी!" अविनाश उत्तेजित होकर बोला। "क्या इसी तरह आप संचालन करेंगे ? इस केदार की गृहस्थी को देखो। मुझे वह दिन याद है जब कि उसकी शादी हुई थी। उस दिन केदार और भाभी में नई उमगे थीं। आज यह परिवार बिलकुल कमजोर पड़ता जा रहा है। किसी दिन भाभी मर जावेगी, तो क्या केदार भैय्या बच्चे का गला घोंट कर फकीर बन जावेंगे। आज भाभी मुरझा गई। उसकी वह हालत कब तक रहेगी। केदार भैय्या

मैट्रिक पास हैं। आप क्या सोच रहे हैं । मेरी राय तो यह है कि हमें अब और आगे बढ़ना चाहिए। चुन-चुन कर सब लोगों को मार डालना पड़ेगा। जो हमारे शत्रु हैं या तो वे ही मिट जावेंगे या हम। मैं तो चाहता हूं कि एक- ईंट इन मिलों की बिछादी जाय फिर...।"

"अविनाश तेरे जोश की मैं सराहना करता हूं। लेकिन हमें सम्पूर्ण परिस्थितियों पर विचार करना है। मैं तो यही सोच रहा हूं कि अभी हमें कोई निर्णय नहीं करना चाहिए। जिन बातों को सुन कर आप लोगों में चेतना आ रही है, वह सब क्षणिक प्रवाह है। केदार से मैंने सारी बातें सुनी हैं। यहाँ का हाल भली भाँति जान गया हूं। आप लोग सोचते हैं कि आप लोग हड़ताल करेंगे। कुछ साथी हत्याएँ करके आतंक फैला देंगे। क्या उससे लाभ होगा? क्या वह सफलता का सही रास्ता है? आप लोग चाहते हैं कि तमाम मिलों के डाइरेक्टर मिल कर आपको आश्वासन द दें कि वे आपकी सब माँगों को स्वीकार करते हैं। आप लोगों की शक्ति के आगे क्या वे झुकेंगे? और जिस तरह झूठा आश्वासन देकर आप लोगो ने यहाँ के मजदूरों को संगठित किया है, वह बिल्कुल गलत है। आप लोगों को साधारण सगठन तक का ज्ञान नहीं है। आपकी सम्पूर्ण कमजोरियाँ मालिक जानते हैं। आप लोगों में कई बातों को लेकर काफी मतभेद है। मेरा सुझाव यह है कि अभी आप लोग चुपचाप काम करें। शीघ्र ही यहाँ की स्थिति के बारे में हम लोग अपना निर्णय बता देंगे।"

अविनाश तो बोला, "नवीनजी केदार की बातों से हम लोग सहमत नहीं है। वह बहुत डरपोक आदमी है। आज सुबह जब से उसने अखबार में पढ़ा है कि पुलिस षड़यंत्र का पता लगा रही है, वह कहता है कि फिलहाल सब काम स्थगित रखा जाय। यदि यही बात तो मैं समझता हूं कि हम लोग कुछ काम नहीं कर सकेंगे।

नवीन ने अविनाश तथा और लोगों की ओर देखा। कुछ देर

तक न जाने क्या सोचता रहा। अब बोला, "मैं अभी किरण से मिल कर कई बातें जान लेना चाहता हूँ। उसके बाद चेष्टा करूँगा कि और साथियों से मिल लूं। तभी कोई नया कार्यक्रम बना सकेंगे। आज मैं अपना कोई निर्णय नहीं दूंगा। अभी मुझे और जगहों के बारे में जानकारी नहीं है। गांवों में काम करने वाले साथी देखें क्या विचार प्रकट करते हैं। असहयोग आन्दोलन की सफलता के बाद कांग्रेस अपनी थकान मिटा रही है। उस आन्दोलन की सफलता के कारण लोगों के विचारों में काफी उलझन का अनुमान लगता है। गांधीजी ने कदम पीछे हटा लिया है। हम लोगों को इसीलिए काफी कठिनाई पड़ेगी। जनता स्वयं इस व्यवहार से क्षुब्ध है। ये जो हत्याएं इधर हुई हैं उससे हम और कमजोर पड़ रहे हैं।"

"तब तो हमें भी हाथ पर हाथ रख कर बैठ जाना चाहिये। मुझे तो ऐसा लग रहा है, कि यह सरला का जादू है। आज केदार आपको बुलाने न जाता तो शायद आप यहां नहीं आते। वहीं चैन से पड़ा रहना सुखकर है। क्या मैं जान सकता हूं कि आपने वहां कौन सा समझौता किया है?"

"अविनाश यह बात ठीक है, कि मैं वहां रहा हूं। केदार को मैंने सूचना देनी चाही थी, पर यहां का कोई ज्ञान मुझे नहीं था कि तुम लोग कहां रहते हो। सरला हमारे गांव गई थी। मैं शायद अभी इस शहर में न आता। सरला का अनुरोध नहीं टाल सका। आज ही केदार से ज्ञात हुआ कि किरण पहले यहीं आवेगी। तभी मैंने सोचा था, कि यहां अभी कुछ दिन और टिक जाऊंगा। मेरा दृष्टिकोण अभी साफ नहीं है। मैं इसीलिए चाहता हूं, कि अपनी सारी शक्तियों पर विचार करके भावी कार्यक्रम बनाया जाय। वह तुम, मैं केदार या यहाँ के चन्द साथी मिल कर नहीं बना सकते हैं। तुमको अभी इस भांति बातें नहीं सोचनी चाहियें। तुम्हारे विचारों से मैं सहमत

नहीं हूँ।"

केदार डेगची पर चाय बना कर ले आया था। एक-एक कुल्हड़ भर कर उनको दी। नवीन उस समय अविनाश की बातों पर सोच रहा था। वह जानता है कि अविनाश के आने के बाद, उसकी कई भूलों के कारण इस शहर की हालत अच्छी नहीं है। वह हर एक मजदूर से मिल कर उसे विश्वास दिला चुका है कि उनका राज जल्दी ही स्थापित हो जायगा। फिर वे मिल के भाग्य विधाता बन जावेंगे। मिलों के मालिक उनकी सारी बातों को आसानी से स्वीकार कर लेंगे। इस तरह वह उनको संगठित करके चाहता है, कि अब वह अपनी बातों को निभाले।

सब चुपचाप चाय पी रहे थे। केदार अब तक सारी बातें सुन रहा था। अब वह बोला, 'अविनाश तुम सदा ऐसे ही काम करते हो। पिछले साल तुम्हारे कारण हमारे कई साथी पकड़े गए थे। पिछले महीने तुम पुलिस के चंगुल में फंस ही गये। किरण ने तो कहा था, कि तुमको यह शहर छोड़ देना चाहिये। फिर भी तुम अपने मन से यहां पड़े हुए हो। मैं यहां जो काम कर रहा था। उसमें तुमने रुकावट डालदी है। अभी यहां मजदूरों में भली भांति संगठन नहीं हो पाया है, कि तुमने हड़ताल का नारा लगा दिया। तुम बहुत भावुक व्यक्ति हो। तुम्हारी ईमानदारी पर किसी को सन्देह नहीं लेकिन तुम समय के साथ नहीं चल रहे हो। तुम्हारे विचारों की आलोचना कोई करे' यह तुमको असह्य लगता है। मैं नवीनजी से सहमत हूं।"

अविनाश ने दूसरा कुल्हड़ चाय से भर लिया। बीड़ी निकाली और सुलगाने लगा। वह चाह रहा था. कि कोई उसका समर्थन करदे। जो बात वह तय कर चुका है, उससे अब पीछे नहीं हटेगा। इस तरह वह अपनी बात को चुपचाप इन लोगों के कहने भर

से वापस नहीं लेगा। नवीन इस अविनाश को जानता है। किरण के मामा का लड़का है। वह उससे बहुत स्नेह करती है। पिछले साल अंतरंग सभा में एक साथी ने प्रश्न उठाया था, कि क्या अविनाश की उच्छृङ्खलता पर कोई निर्णय लिया जाय। किरण सहमत थी। किन्तु और लोगों के विपक्ष में होने के कारण बात टल गई। वह जानता है कि अब इसे साथ रखना अनुचित है। वह हरएक गैर जिम्मेदार व्यक्ति को अपने संस्मरण सुना कर चाहता है, कि वे उसका साथ दें। कई बातें उसके कारण फैल जाती हैं। उसका खास चरित्र नहीं है। उससे कहा गया था कि यहाँ का काम केदार करेगा, वह फिर भी अपने को यहां का नेता घोषित करता है। नवीन जानता है कि उसे अब सारी स्थिति संभाल लेनी है। अविनाश के सम्बन्ध में किरण से बातें करेगा। अविनाश आज तक उन सबके विश्वास में रहा है। वह बहुत कमजोर है। वह बहुत महत्व का भी है। प्रत्येक अवसर पर अपने से अधिक औरों के हित का प्रश्न उसके सम्मुख उठता है। उस स्थिति पर वह सोचने लगा। नवीन उसी भांति न जाने क्या सोच रहा था। पूछा केदार ने, "चाय तो नहीं पिओगे।"

"नहीं।"

"आप को अब क्या कहना है" पूछा अविनाश ने।

बोला नवीन, "मुझ से अधिक सारी बातों की जानकारी तुम लोगों को है। मैं यहां के वातावरण से अधिक परिचित नहीं हूं। मै आज किसी नीति का स्पष्टीकरण नहीं करना चाहता हूं। हां अविनाश, मैं यह जरूर चाहूंगा कि तुम कल तक यह शहर छोड़ दो। यह सबके हित की बात होगी। मैं जल्दी ही शहर और गांव के सब साथियों से मिलकर उनकी बातें सुनना चाहता हूं। जनता की बहुत बहुत तादाद गांवों में रहती है। उनमें असहयोग आन्दोलनों के बाद चेतना आई है। वह कहीं नष्ट न हो जाय। कुछ लोग उनको गलत रास्ता दिखला रहे हैं।

बुद्धिवादी नेता चाहे एक कदम पीछे हट जांय, जनता का एक कदम पीछे हटना हमारे लिये बहुत बड़ी असफलता होगी। गांव वालों के बीच जो सदियों से बना बनाया समाज और विधान चल रहा था, वह टूट रहा है। उस शक्ति को एकत्रित करके नया समाज बनाया जा सकता है। उसके लिये उनको सही आश्वासन दिलाना होगा। उनकी छोटी-छोटी मांगों को उठाकर, उनका विश्वासपात्र बना जा सकता है। केदार यही यहां तुमको करना होगा। शहर के भीतर जिस वर्ग को तैयार करना है, उसका पूरा ज्ञान प्राप्त करके उनके रोजाना-जीवन की छोटी-छोटी बातों को सफलता पूर्वक निभा कर विश्वास पाना होगा। उस वर्ग को सत्याग्रह से लड़ाकू बनाना आवश्यक है।"

"क्या आप अब गांवों में चले जाना चाहते हैं?" आश्चर्य से अविनाश ने प्रश्न उठाया।

"मैं यह भी सोच रहा हूँ। कि वहां के खेतिहर मजूर के बारे में सही बातें जान लूँ।"

"मैं समझता हूं कि वह हमारी शक्ति का दुरुपयोग होगा। यहां शहरों में धनी हैं। उनसे रुपया ऐंठा जा सकता है। हमें संगठन करने के लिये रुपया चाहिये। गांवों में जाकर किसानों की पंचायतों में माथा-पच्ची करने से कोई लाभ नहीं होगा। शहरों में व्यवसाय बढ़ रहे हैं। हमें अपना सम्पूर्ण समय यहां संगठन करने में लगा देना चाहिये। इस शहर की जितनी जानकारी तथा अनुभव मुझे है, उसी के बल पर कह सकता हूं, कि हरएक शहर में मजदूर अपनी स्वाधीनता आसानी से ले सकते हैं। इसीलिये मैं तो चाहता हूं कि यह शहर अगुआ बन जाय।"

"अविनाश तेरे सुझावों पर फिर सोचेंगे। अभी कुछ देर रुकना पड़ेगा। जल्दी कर लेने से संभवतः सफलता नहीं मिलेगी। काम की बातें पहले करलें।"

"लेकिन मैं तो समझता हूँ, कि यह सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है।"

"क्या अविनाश महत्वपूर्ण तुम समझते हो न ?" टोका केदार ने।

"हाँ केदार मुझे मौत का डर नहीं है। न मैं उन डरपोकों में हूँ, कि जो प्रतिदिन पग-पग पर अपने सिद्धान्तों की हत्या करते हैं। अच्छा नवीनजी आपका क्या आदेश है?"

"यहाँ का सम्पूर्ण भार केदार को सौंपा गया है। वह जो कहेगा, मैं उससे अधिक कहने का अधिकारी नहीं।"

"क्या मजदूर क्रान्ति की भावना को भुलादें। यह असंभव होगा।"

"अविनाश ! अधिक मुझे कुछ नहीं कहना है।" नवीन बोला। और वह चुपचाप केदार से और बातें पूछने लगा।

"तो मेरा केदार के कार्यक्रम मे मतभेद है।" कहकर इससे पहले कि कोई उसे रोक ले, अविनाश चला गया।

अब केदार बोला, "यह हाल है अविनाश का मैं सदा इससे घबरा जता हूं। बात-बात में अपना अलग दल संगठित करने की चेष्टा करेगा कि उसकी जीत हो जाय। इस के लिए वह छोटी से छोटी बात आसानी से कर सकता है।"

बड़ी देर तक नवीन उन लोगों के साथ बातें करता रहा उसने सबकी बातें सुनीं और उन पर विचार करता रहा। अविनास जिस भाँति चला गया, उससे सब चिन्तित थे। पूछा नीवन ने, "अविनाश के पास पिस्तौल है?"

"हाँ, मुझसे ले गाया था।"

"तुमने जानकर भी यह असावधानी क्यों की केदार।"

"मैं चाहता था कि किसी भांति उसे मनालूं। वह एक दिन उसे ले गया और आज तक नहीं लौटाई है। कहता था कि शहर के बाहर

कुछ मकानों के खंडहर हैं, वह वहां चलाना सीख रहा है।"

नवीन चुपचाप और बातें करता रहा। केदार खाना खा रहा था। नवीन और लोगों से बातचीत करता रहा, कुछ देर के बाद वे लोग चले गये। केदार हुक्का भर कर ले आया था। नवीन हुक्का पीने लग गया। कहा नवीन ने, "तुम्हारी गृहस्थी का हाल तो बहुत गड़बड़ है।"

"तब क्या करूँ।"

"तुमारी हिम्मत को देख कर दङ्ग हूं। केदार तुम्हारा जेल जाना उचित नहीं होगा। इसीलिये बच-बच कर काम करना चाहिए।" जेल सत्याग्रहियों के लिए होती है, क्रान्तिकारियों के लिए नहीं"

"क्यों नवीन ?"

"इस कची गृहस्थी के कारण नहीं। हमारा काम तो मजदूरों की क्रान्ति लानेका है। वह जेल जाने वाले कार्यक्रम से नहीं आवेगी हमें जानता को लड़ाकू बनाना है।"

"गृहस्थी पर तो मैं भी नहीं सोचता हूं। लेकिन क्या करूँ। यदि मैं कल मर जाऊँ, फिर भी तो इस गृहस्थी को चलना ही है। किसी न किसी तरह वे अपना गुजारा कर लेंगी। मजूरी कर सकती हैं। इन्सान की जिन्दगी का कोई भरोसा कब है ? मैं आशावादी हूं नवीन। कभी परेशानियां इसीलिए नहीं घेरती हैं।"

"गांव में तुम्हारा घर तो होगा।"

"उसे जमीदार पहले ही लगान न देने के कारण बेदखल करवा चुका है। वहां जाकर क्या होगा ?"

यह सरला केदार कई गृहस्थों की रक्षा कर सकती है, ऐसा मेरा अनुमान है। वैसे दो-चार दिन में किसी को पहचान लेना आसान नहीं है।"

"सरला ?"

"क्यों इसमें आश्चर्य की क्या बात है ?"

"पिछले साल यहां मजदूरों ने हड़ताल की थी। अविनाश ने यह सब कराया था। सरला वहाँ तमाशा देखने आया करती थी।"

"तब और बात थी। मेरा अपना अनुमान है, कि यदि उसे सही बातें समझाई जांय तो वह हमारे लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। अभी मैं स्वयं नहीं समझ पाया हूं, कि उससे किस रूप में हम अपना सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं।"

"मुझे इसमें सन्देह है। क्या हम अपनी स्वतंत्रता देख सकेंगे ?" अनायास केदार ने यह प्रश्न पूछ डाला। नवीन उससे अप्रतिभ नहीं हुआ। यह नई आशा इन लोगों में आई है।

वह मुस्कराया, "स्वतंत्रता ! जब तक जीवन में सिद्धान्त के लिये मर जाना हम न सीख लेंगे तब तक कुछ नहीं होगा। आज हम कम से कम यह सोच तो लेते हैं, कि हम लोगों को अपना स्वतंत्रता हासिल करनी है। यह भावना जनता के लिये हितकर होगी। तुम क्या इस परिवर्तन को नहीं भाँप रहे हो ?"

बड़ी रात बीत चुकी थी। नवीन भीतर चारपाई पर लेट गया। उसे नींद नहीं आई। खटमलों के एक बड़े दल ने उस पर हमला कर दिया था। एक छी-छी मन में उठने लगी। वह फिर भी पड़ा ही रहा। केदार की गृहस्थी कोई नई बात नहीं थी। अविनाश सरीखे लोग दुनिया में हैं। कभी वह लेटता, तो फिर उठ बैठता; इसी भांति उसने बाकी रात काट दी। उसकी आंखों में पीड़ा थी, वह चुपचाप सो जाना चाहता था। एकाएक उसकी आंख आखिर लग ही गई।

—केदार ने नवीन को जगाया। वह गिलास में बिना दूध की चाय लाया था। नवीन ने चुपचाप चाय पी ली। अभी बड़ी सुबह थी, वह उठ बैठा। बोला, "केदार अब मैं जाऊँगा।"

"कहां ?

"सरला के यहां।"

"वहां जाओगे ?"

"वहां मैं सुरक्षित हूँ। सबसे कह देना कि मैं बाहर चला गया हूँ। किरण आवे तो मुझे तुरंत सूचना देना।"

नवीन और केदार बाहर निकले। नवीन ने एक बार बार वहां का दृश्य देखा। अभी उन क्वाटरों की दुनिया में हलचल थी। सब लोग अपनी-अपनी तैयारी में थे। बोला नवीन, "केदार, अविनाश के कारण शहर जल्दी छोड़ देना चाहता हूँ। समझदारी से काम लेना। किरण को सावधान कर देना। अविनाश से न मिला कर, उसे यहीं ले आना। चाहो तो सरला के यहां ला सकते हो। लोगों से कह देना कि किरण नहीं आ रही है।"

राह में एक खाली एक्का जाता हुआ दिख पड़ा। नवीन ने उसे पुकारा। केदार ने पोस्ट ऑफिस के लिए उसे तय कर दिया। केदार तो लौट गया था। एक्का तेजी से आगे बढ़ने लगा। नवीन चारों ओर देख रहा था। शहर रात खुमारी के बाद जाग रहा था। उसे न जाने क्यों बहुत भला लगा। आँखों में नींद थी। एक्का वाले ने एक्का रोक कर बीड़ी सुलगा ली। नवीन ने एक बीड़ी ले ली। वह धुँआ उगलता रहा। एक्का सड़कें पार कर रहा था। बार-बार आंख खुल जाती थीं। वह सोचने लगता था, कि अविनाश ने सरला को उठाकर जो बात कही वह सच थी। सब के हित में उसे जल्दी छुटकारा पा लेना चाहिये। स्वयं केदार को सरला पर सन्देह था। नवीन के कथन पर उसे विश्वास नहीं हुआ था।

नवीन ने चुपचाप फाटक के भीतर प्रवेश किया। धूप निकल आई थी। कहीं किसी घन्टे ने आठ बजाए। वह नहीं चाहता था कि डाक्टर साहब से भेंट हो जाय। वह चुपचाप भीतर पहुँच कर सो जाना चाहता था। आज उसे अब सब रास्ते याद हैं। वह आसानी से अपने कमरे में पहुँच जायगा। वह आगे बढ़ रहा था, कि देखा सरला फूलों की क्यारियों के पास खड़ी है। इस प्रकार सरला के मिल जाने से उसे बड़ी खुशी हुई। वह चुपके सरला के पास पहुँच गया। सरला को कुछ भी भास नहीं हुआ। देखा नवीन ने कि वह एक परचा पढ़ रही थी। नवीन सांस रोक कर कर कुछ देर खड़ा रहा, फिर पुकारा, "सरला ?"

"सरला चोंकती हुई बोली, "ओ' आपने तो मुझे डरा दिया था। कब आए ?"

"अभी आ ही रहा हूं। कुछ खास बात नहीं थी।"

सरला सोच रही थी कि नवीन लौट आया है। उसे यह आशा नहीं थी। नवीन के हाथ पर कागज का बंडल था। नवीन के जाने के बाद, बड़ी देर तक तो वह उस पर सोचती रही। वह उसे भली भांति पहचान गई थी। इन दिनों जितनी घटनाएँ घटी उन पर वह अधिक विचार नहीं करना चाहती है नवीन का जीवन सार्थक है। वह भी तारा की तरह उसकी बातों पर विश्वास कर लेगी। वह उसके बारे में चिन्तत नहीं रहेगी। तारा की धरोहर सही है। भैय्या जो कहते हैं और करते हैं, वह सब कुछ ठीक है। नवीन ने एक रास्ता अपना लिया है। वह उसी में आगे बढ़ जायगा। वह बलवान है और सरला बहुत निर्बल। सरला का समाज में झूठा मान है। नवीन मान मर्यादा की सीमाएँ अस्वीकार करता है।

उसे चुप देख कर पूछा नवीन ने, "क्या सोच रही हो।"

वह जैसे चौंक उठी। पूछा, "मीटिंग हुई थी।"

उससे वह मजदूरों का अधिक विश्वासपात्र बन गया है। वह जब बोलता है तो सब अवाक रह जाते हैं। स्वयं नवीन उसकी उस शक्ति को जानता है। एक कठनाई अविनाश के साथ है। वह किसी प्रकार का समझौता स्वीकार नहीं करता है उसे अपने नेतृत्व में अधिक विश्वास है। साथ काम कर सकने में वह असमर्थ है।

सरला चुपचाप नवीन के चेहरे से भावों को पढ़ती रही। फिर उसकी दृष्टि सामने बिजुली के तार पर पड़ी। वहाँ एक कबूतर का जोड़ा बैठा हुआ था। वह बहुत दिनों से देखती है कि वे वहीं बैठे रहते हैं। उसने पलातू कबूतर उड़ते हुए देखे हैं। जब वह छत पर खड़ी होकर शहर की ओर दृष्टि करती है, तो वहाँ बड़ी ऊँचाई पर उसे उनका उड़ना भला लगता है। पालतू कबूतर को जंगली कबूतरों के साथ भाग जाने वाले प्रश्न का ज्ञान नहीं रहता है। वे दोनों उसी भाँति वहाँ बसेरा ले लेते हैं। सरला फिर नवीन की ओर देखने लगती है। वह इस नवीन से क्या चाहती है? नवीन आसानी से उसकी बात स्वीकार कर लेता है। वह लौट आया है। फिर भी तो नवीन को चला जाना है। सरला और उसकी दो अलग-अलग दुनिया हैं। वे समानान्तर रेखाओं की भाँति पास होने पर भी आपस में कभी नहीं मिलेंगी। अभी इस पर कुछ कहना संभव नहीं है। सरला झिझक उठी। नवीन उस सरला पर दृष्टि लगाए उसे देख रहा था। वह शरमा गई। नवीन का चेहरा बहुत सुस्त लगा। उसने वह परचा सरला को चुपचाप दे दिया। सरला उस परचे पर लिखे अक्षरों को देखने लगी। कुछ देर के बाद बोली, "मालूम पड़ता है कि कल रात आप यही सब करतूत करने के लिये गए थे। यह अविनाश कौन है। आपने ही यह परचा बंटवाया है न?"

"मैंने! नहीं तो।"

"तब यह सब कौन कर रहा है। इसमें तो ऐसी बातें लिखी हुई हैं

जो वास्तव में सच है। लेकिन एक दिन में क्या 'अलादीन के चिराग' वाले जिन आकार इसे बदल देंगे।"

"अलादीन का लैम्प और चीन का जादू?"

"आपको इस पर क्या कहना है?"

"सरला, कुछ लड़के अपनी स्वार्थ सिद्ध के लिए यह सब कर रहे हैं। हरएक संस्था बलवान और कमजोर शक्तियाँ होती हैं। अनुशासन की दृष्टि से कमजोर शक्तियों को नष्ट कर देना ही हितकर होगा। मानव स्वभाव फिर भी आज इतना सबल नहीं हो पाया है। इसीलिए यह सब हो जाता है। अभी इन लोगों को देख रहे हैं। भविष्य में इनको अलग हटा देना पड़ेगा।"

"अविनाश को! वे कहाँ रहते हैं।"

"यहीं इस शहर में। कल रात वह मेरे साथ था।"

सरला अधिक प्रश्न नहीं पूछ सकी। एकाएक मन में भावना उठी कि उसे कौन सा अधिकार यह सब प्रश्न करने का है। नवीन की ओर देखा। वह केवल सवाल का उत्तर देता है, अधिक बातें नहीं किया करता। वह बार-बार प्रश्न पूछ-पूछ कर उससे बहुत बातें जान लेती है। वे बातें उसकी समझ में नहीं आती हैं। वह इसीलिए फिर चुप रह जाती है। वह अपने सवालों का विस्तार यदि बढ़ाना चाहे तो क्या नवीन सब बातों का उत्तर दे देगा?

सरला को चुपदेख कर बोला नवीन, "क्या सोच रही हो?"

"कुछ नहीं। आप लगता है कि रात भर सोए नहीं है। चलिए.......।"

सरला आगे बढ़ गई। नवीन ने उसका साथ नहीं दिया। वह कुछ देर तक उसी भाँति खड़ा रहा। सरला रुकी नहीं। वह ओझल हो गई थी। नवीन एकाएक चौंक उठा। अविनाश अब आगे क्या करेगा। कल रात की एक-एक बात याद आने लगी। किरण आकर

स्थिति संभाल लेगी। केदार ने अविनाश की जितनी बातें कही थीं, उससे लगता है, कि अविनाश को संभाल लेना आसान बात नहीं है। वह आवारों के साथ घूमता है। उसका चरित्र भी ......! अब उसकी आँखें दुख रही थीं। वह सोना चाहता था। वह चुपचाप आगे बढ़ गया। चोर की तरह सबकी आँखें बचा कर अपने कमरे में पहुँचा। बिस्तर सावधानी से संवार कर लगाया गया था। वह कपड़े खोज रहा था कि आकर पूछा सरला ने, "चाय तो नहीं पिओगे। एक प्याली बना लाऊँ।"

"हाँ........" कह कर उसने अपनी स्वीकृति दे दी।

सरला चली गई। वह चुपचाप पलंग पर लेट गया। उसने चादर ओढ़ली। उसी भाँति पड़ा रहा। सरला प्याला ले आई थी। उसकी आहट पाकर वह बैठ गया। प्याला ले लिया। चुपचाप पीने लगा। सरला पास की कुरसी पर बैठ गई थी। वह चाय पीता रहा। बहुत गरम थी। उसने जल्दी-जल्दी नश्तरी पर उड़ेल कर, चाय पीली। अब वह फिर लेट गया।

पूछा सरला ने, "आपने दल का भार स्वीकार कर लिया है?"

"दल का भार!"

"क्या आप अब पढ़ने नहीं जावेंगे? यह इस तरह......।"

"पढ़ने तो अब नहीं जा सकूँगा। यह भार जब आ गया है तो इससे भाग नहीं सकता हूँ। चेष्टा करूँगा कि अपने कर्त्तव्य को पूरा-पूरा निभालूँ। मुझे इन लोगों से सदा ही सहानुभूति रही है। जब आज वे अपना विश्वासपात्र समझ कर मुझसे सहयोग चाहते हैं, तो मुझे सुख मिला है।"

"आपके जीवन का मूल्य बहुत बढ़ गया है।"

"ऐसी बातें आप क्यों कर रहीं हैं।" नवीन ने सोचा कि सरला व्यंग कर रही थी।

"मैं सच बात कह रही हूँ। मैंने षड्यंत्रों के हाल पढ़े हैं। पिछले साल 'बन्दी-जीवन' मैंने खरीदा था। अलीपुर षड्यंत्र केस, खुदीराम, कनाईदत्त तथा और सब लोगों का हाल पढ़ा था। नवीनजी मैं आपको वह सब सुनाकर आपका विश्वास नहीं पाना चाहती हूँ।"

"लेकिन मैं तो तुम्हारा विश्वास करता हूँ। सरला, तुम सारा भेद जानती हो, इससे मुझे सन्तोष है। मैं जान कर ही तारा का भार तुमको सौंप रहा हूँ। तुम उसे समय-समय पर पत्र लिख कर समझाती रहोगी। वह अभी दुनियादारी नहीं जानती है।"

"नवीनजी!"

"अधिक मुझे तुमसे कुछ नहीं कहना है।"

"नवीनजी, क्या आप सच ही मेरा विश्वास करते हैं। यदि यह बात सच है तो पूछ सकती हूँ, कि क्या मैं आप लोगों की संस्था के कुछ काम आ सकती हूँ। आप मुझे बता दें।"

"क्या कहा सरला? तू बहुत भावुक हो गई है। तुम्हारी जो सीमा है, वहीं रहकर तुम अधिक सेवा कर सकती हो। तुम व्यर्थ और बातें न सोचा करो।"

"मैं आपको संगठन करने के लिए रुपया दे सकती हूँ।"

"रुपया, कभी उसकी आवश्यकता पड़ेगी तो माँग लूँगा। आज कुछ नहीं चाहिए।"

"यह दस हजार का 'चेक' है।" कहकर सरला ने एक 'चेक' दे दिया।

"आज मुझे इस दान की जरूरत नहीं है। तुम व्यर्थ इस संस्था की बात न सोचा करो। शायद और.........।"

"वे सब शायद मुझ से दूर रहना चाहेंगे।"

"क्या कहा सरला ?"

"अन्यथा आप बातें ऐसी कह कर चुप न हो जाते। मैं एक धनी व्यक्ति की बेटी हूँ। मैं जानती हूँ कि पिताजी ने वह सब कितनी मेहनत से कमाया है। सुबह से रात-रात तक मरीजों को देखना, उस मेहनत की कमाई को आज खा रहे हैं तो आप लोग उसे 'लूटा हुआ धन' कहकर मजाक उड़ाते हैं।"

"सरला !"

"मैं पिताजी की बातें सुना करती हूँ। मुझसे वे कभी झूठ नहीं कहते हैं। उनका कहना है कि छोटी जात वाले सदा से ही छोटे रहे हैं। बिना इसके काम नहीं चल सकता है। जिस प्रकार शरीर में हाथ और पाँव काम करते हैं, उसी भाँति ये लोग हैं। पिताजी कभी झूठ क्यों कहने लगे। मैं नवीन, अपना सब रुपया तुम लोगों को दे देना चाहती हूँ। क्या तब भी तुम लोग मुझे अपने में नहीं लोगे। पिताजी की बातें सच हैं, लेकिन तुम क्यों नहीं मुझे अपने विचारों से परिचित कराते हो मैं चाहती हूँ, कि तुम मुझे सारी स्थिति बतलादो तुम कोई बात ऐसी नहीं कर सकते हो जिससे अहित हो, ऐसी मैं मान लेती हूँ........।"

नवीन ने सरला को देखा, जो कि अनायास आसानी से फूट बैठी है। वह बोली, "सरला किसी दिन सब बातें बतला दूँगा, आज नहीं। तेरी उत्सुकता सही है। हम लोग क्या करेंगे, किस भाँति सारा संगठन चलेगा, यह सब कहने की बात भी नहीं है। सब कुछ परिस्थितियों पर निर्भर है। मेरे ऊपर यह जो तेरा अनुग्रह है, उससे उद्विग्न हो जाना अनुचित होगा। अधिक कोई भार तुझे आज नहीं सौंपना चाहता हूँ। शायद कभी.......।"

"मैंतो.......।"

"वहाँ क्या करोगी ?"

"जो आप कहेंगे।"

"मैं अकेला वहाँ कोई नहीं हूँ।"

"आप!"

"न तुमको कोई काम दिया जा सकता है। यह भावुकता हित कर नहीं है, सरला। तुझे अब विवेक से काम लेना चाहिए। तू सयानी हो गई है। हर एक बात समझ-बूझ कर करनी चाहिये। उसमें तोल होना चाहिए। नवीन एक व्यक्ति है। करोड़ों की तादाद का एक व्यक्ति! अब तुम सारी बात समझ गई होगी।"

"मैं उस व्यक्ति को भली भाँति पहिचान गई हूँ।"

"यह ठीक है। तारा मुझसे दूर नहीं है। वह गृहस्थी के भीतर रहकर अपना कर्त्तव्य निभा रही है। तुम शीघ्र ही एक स्वस्थ परिवार में प्रवेश करने वाली हो। तुम दोनों पति-पत्नी चाहोगे तो समाज की सेवा कर सकोगे। परिवारों की संस्था की स्वस्थता बहुत आवश्यक है! वह समाज का सबसे मजबूत अंग बन जाना चाहिए।"

"नवीनजी आप मुझे बहका रहे हैं, किरण........।"

"किरण के और तुम्हारे संस्कारों में अन्तर है। तारा से भी वह भिन्न है। वह सारी बातों से परिचित है। बचपन से उसे अपने भैय्या के कारण सब लोगों के बहुत समीप आने का अवसर मिला है। वह बहुत सुलझी हुई है। तुम हर एक जीवन को आसान क्यों समझ लेती हो सरला? मैं सवाल नहीं पूछ रहा हूँ। हाँ, यह अवश्य चाहता हूँ, कि तुम सब बातों पर सोचा करो। दुनिया के बीच निभ जाना सरल नहीं है। सिनेमा की फिल्मों का प्रदर्शन जितना सुखद होता है, उस कथा को खेलने वाले पात्रों का वास्तविक जीवन उतना ही दुःखद। किरण को लेता हूँ। उसका कोई जीवन नहीं है। कोई आशा और उमंगें नहीं हैं। वह स्वयं अपना भविष्य नहीं जनती है। न उस ओर सचेष्ट ही है। वह

जीवन……।"

"लेकिन मुझे भी गृहस्थी में प्रवेश करने का लोभ नहीं है।"

"अपने पिताजी के विचार जानती हो? क्या तुम उनकी बातों की अवज्ञा कर सकती हो?"

"पिताजी की बात! उनका स्नेह सचमुच नहीं भूल सकती हूँ।"

"इसी प्रकार तुम्हारे और संस्कार भी हैं।"

"मेरे न! मैं अपनी हार स्वीकार कर लेती हूं। तारा जानते हो क्या चाहती है। वह तारा रोज सपना देखती है, कि उसकी भाभी आवेगी……।"

"तो मैंने मना कब किया है।" नवीन हंस पड़ा। बोला फिर, "तुम लोगों को अपनी दुलहिन किसी दिन दिखला दूँगा। अभी तो काफी समय है। तुम लोगों को घबराना नहीं चाहिए। मुझे उम्मेद है कि कम से कम अस्सी साल जीवित रहूँगा। अभी बाईसवाँ ही चल रहा है। तीन चौथाई जीवन बाकी है।"

नवीन को नींद आ रही थी। वह बार-बार जमहाई ले रहा था। सरला उठी और बोली, "आप सो जाँय।" चली गई।

नवीन ने चादर ओढ़ ली। बड़ी थकान लगी हुई थी। वह उसी तरह सो गया। सरला बीच में कमरे में दो बार आई। उसे जगाने का साहस नहीं हुआ। जब ग्यारह बज गए, तो वह उलझन में पड़ गई कि क्या करे। वह बिस्तर के पास आकर खड़ी हुई। हल्के पुकारा, "नवीनजी।"

नवीन तो सोया ही हुआ था। अब उसने फिर पुकारा, नवीन जी।" वह उठा नहीं, सरला कुछ देर चुपचाप खड़ी रह गई। एकाएक उसे एक बात सूझी, उसने ग्रामोफोन का 'प्लक' लगाया और बैंड का रिकार्ड चढ़ा कर चली गई।

कमरे में बैण्ड बजने लगा। उसे सुनकर कुछ देर में नवीन आँखे

मलता हुआ उठ बैठा। वह चुपचाप बैण्ड सुनता रहा। अब रिकार्ड बजना बन्द हो गया था। नवीन बैठा-बैठा जमहाई लेने लगा। सरला तो आकर बोली, "आप उठ गए। क्या नहाना, खाना कुछ नहीं होगा?"

वह चुपचाप उठा। उसने सन्दूक से धुले कपड़े निकाल लिए। सेविंग का समान तथा कपड़े लेकर वह, गोसलखाने में चला गया। चुपचाप 'शेव' करने लगा। बारबार वह अपना चेहरा देखता था। आँखे गुलाबी हो रही थीं। आलस्य आ रहा था। अब वह टब पर बैठ कर नहाने लगा। ऊपर से फुहारा पानी बरसा रहा था। वह बड़ी देर तक नहाता रहा। उसे नहाने में बहुत आनन्द आता है। याद आया कि सरला प्रतीक्षा में होगी। वह बेकार उन लोगों के लिए भार बना हुआ है। उसे वहाँ से चला जाना चाहिए। सरला जिस प्रकार उसकी रक्षा किया करती है, वह सब अनुचित है।

सरला उसी भाँति खड़ी-खड़ी खिड़की से बाहर देख रही थी। नवीन की आहट पाकर बोली, "खाना ले आती हूँ।" और बाहर चली गई।

महरी खाना लाई थी। नवीन को न जाने क्यों भूख नहीं थी। वह फिर भी खाना खा रहा था। थोड़ा खाकर वह उठ रहा था, कि सरला आ गई। वह चुपचाप बैठ कर फिर खाने की चेष्टा करने लगा। जब असफल रहा तो उठ गया। सरला ने कहा, "क्यों, आप तो उठ गए। क्या बात है?"

"भूख नहीं थी।"

"क्या तबीयत खराब है?"

"नहीं तो......।"

"फल ले आती हूँ।"

नहीं.......।"

हाथ धोकर नवीन बैठ गया। महरी पान ले आई। वह बैठी रही

तो पूछा नवीन ने, "तुमने खाना खा लिया ?"

"आज व्रत है।"

"मंगल के दिन !"

"मांजी के बदले ले लेती हूँ।"

"बदले का पुण्य, धन्य है इस धर्म को !"

"तारा भी तो......।"

"बाबा, तारा, महीने में पच्चीस व्रत रखे, मैं मना कब करता हूँ।"

"पुराने लोगों की बातें......।"

"मैं यह कह रहा था, कि तारा को चिट्ठी लिख देना कि वह मेरे लिए तुम्हारे पते से चिट्ठी भेजा करे। मैं कालेज नहीं जा रहा हूँ। कहीं नौकरी मिल गई तो कर लूँगा।"

"क्या आप सचमुच नौकरी करेंगे। मैं पिताजी से कहूँगी। वे आपकी बड़ी तारीफ कर रहे थे। वे जल्दी......।"

"अभी नौकरी के विज्ञापन देख कर अरजी नहीं दिया करता हूँ। जब आवश्यकता पड़ेगी तब देख ली जायगी। तुम तारा की चिट्ठी को पढ़ कर उचित उत्तर दे देना।"

"मैं......।"

"हाँ, उसे समझते रहना। वह मुझसे कम विश्वास तुम पर नहीं करती है। और तुम उसे देखने पहाड़ जरूर गई थी। साथ ही उसके भैय्या को पहचान लेने क्या पहाड़ नहीं पहुँची थी ? तुम्हारे उस साहस पर पहले तो मैं दंग रह गया था। हाँ, तारा को चिट्ठियों में समझाते रहना। उसके भाई की पूरी जानकारी तुमको है। उसका अपना भविष्य, उस संस्था के साथ है। हमारी संस्था को मिटाने के लिए कई विरोधी हैं। तुम डर क्यों जाती हो ?"

"किरण के भाई......।"

"ट्रिब्यूनल उसे फाँसी दे सकता है। 'कालापानी' तो साधारण बात है। उस पर कई खून के अपराध लगाये गए हैं। वे कानून के तर्क से साबित किए जावेंगे। सेठों का बनाया हुआ कानून अपने वर्ग की रक्षा करता है।"

"तब आप... ..।"

"फांसी लगाने के लायक गला मेरा नहीं है। 'शेव' करते-करते आज यही सोच रहा था।"

"काश कि, तारा सारी बातें जानती होती।"

"वह मुझे भली-भाँति जानती है। सुविधा मिलते ही मैं उसे पत्र लिख दूंगा। संसार के सारे नाते और सब बंधन झूठे हैं। सब कुछ उसे सुझा दूंगा। वह कर्तव्य भूला नहीं हूँ।"

सरला चुप हो गई। अब वह क्या दलील करे। नवीन आँखे मूंदे हुए न जाने क्या सोच रहा था? जब उसने आँखें खोलीं तो देखा, कि सरला उसी भाँति बैठी हुई थी। कहा नवीन ने, "आज का अखबार होगा।"

वह उठ कर चली गई। कुछ देर बाद 'स्टेट्समैन' ले आई थी। नवीन उसे पढ़ने लग गया। सरला चुपचाप उसे देख रही थी। एक बार सब पन्ने टटोल कर उसने अखबार मेंज पर रख दिया। सरला ने कुछ नहीं कहा। कुछ देर बाद उसने अखबार उठाया था, कि सरला बोली, "मैं शादी नहीं करूंगी।"

अखबार को उसी भाँति थामे हुए अचरज में उसके मुंह से छूटा, "क्या सरला?

"मैं पिताजी से कह दूगी।"

"पिताजी से कह देना क्या आसान बात है? मैं तो सोच रहा था, कि एक दिन इस कन्यादान का पुण्य संचय करना होगा।"

"मुझे दान कर देना!"

"क्यों, मुझे तारा की शादी याद है। उसके दूल्हे की पूजा करते-करते मैं तो थक गया था। पाँवों से सिर तक उसकी पूजा की। उसका वह देवताओं वाला पहनावा देख कर मुझे तो बड़ी हँसी आई थी।"

"आपने पूजा की थी........।"

"मैं तो तेरी शादी की सारी रीति-रस्म पूरी करने को तैयार हूँ। कहीं तेरे देवता भी कार्टून बन कर आयेंगे, तो एक बार फिर मन ही मन हँस लूँगा। क्यों तू मुरझा क्यों गई है सरला?"

"मैं शादी नहीं करूँगी, कह दिया है आपसे.......।"

"यह हठ तो सब करती हैं।" कह कर नवीन ने अखबार उठा लिया। वह फिर एक बार उसे पढ़ने लग गया। तभी महरी आई थी। बोली, "माँजी का दूध तैयार है।"

सरला उठ कर चली गई। वह स्वयं भाग जाना चाहती थी। महरी ने उसे उबार लिया। जब सरला चली गई तो नवीन इतमीनान से उठा और पलङ्ग पर लेट गया। उसने अखबार का अक्षर-अक्षर पढ़ने का निश्चय किया। वह चुपचाप पड़ा रहा। नींद आ रही थी। वह अखबार पढ़ने का मोह छोड़ कर सो गया। आशा थी, कि अब सरला फिर बैण्ड नहीं बजावेगी?

जब नवीन की नींद टूटी तो चार बज चुके थे। वह उठा नहीं। उसी भाँति लेटा रहा, महरी आई थी। उसने पूछा, "चाय आप अभी पीवेंगे?"

"हाँ"

महरी चली गई। वह चुपचाप कुछ देर बैठा रहा। अब उसने अखबार उठा लिया और पढ़ने लग गया। चाय आ गई। उसने एक प्याला बना कर पी लिया। अकेले-अकेले बैठा हुआ था। दूसरा प्याला पीकर उठा और कमरे में टहलने लग गया। उसने पुस्तकों की आलमारी खोल ली, ऊपर वाले खाने में 'इन्साइक्लो पीडिया' के कई

भाग संभाल कर धरे हुए थे। कई और भी सुन्दर-सुन्दर पुस्तकें थीं। उसने एक-एक करके देखनी आरम्भ कर दीं। सरला की बहुत सुन्दर लाइब्रेरी थी। उसने चार-छै किताबें निकाल लीं और बिस्तर पर बैठ कर टटोलनी शुरू कर दीं। पढ़ने पर उसका मन नहीं लग रहा था। वह लैण्ड-एण्ड-इट्स प्यूपल्स् की तसवीरों को देखने लग गया। वह उसी भाँति तसवीरें देख रहा था। महरी बरतन लेने के लिए आई, तो उसने पूछा, "सरला कहाँ है?"

"बीबी तो बाहर घूमने गई है?"

"घूमने।"

"सरकार साहब की लड़की ने फोन किया था। कह गई हैं, कि आप पूछें तो पन्द्रह नम्बर को फोन करदें।"

नवीन चुप रहा। जैसे कि उसे उस सब से वास्ता नहीं है। वह 'बाथ रूम' में गया। हाथ-मुँह धोकर बाहर निकला। चुपचाप कमरे से बाहर हुआ और मांजी के कमरे में पहुँच गया। माँजी लेटी हुई थीं। उसने प्रणाम किया और पूछा, "अब तबीयत कैसी है माँजी। आप पहाड़ जातीं तो चन्द महीनों में ही भली हो जातीं।"

माँजी ने नवीन को देखा। वह उसे देखती रह गईं। कुछ देर बाद बोलीं, "नवीन अब तू नौकरी क्यों नहीं कर लेता है।"

"नौकरी माँजी?"

"सरला के पिताजी कह रहे थे, कि यहीं वकालत पढ़ें और नौकरी भी करलें।"

"नौकरी फिर करलूँगा माँजी।"

"यहीं रहना, हम पराए थोड़े ही हैं।"

नवीन चुपचाप बैठा रहा। अब माँजी भी कुछ नहीं बोलीं। नवीन कब समझता है, कि वह पराया है। वह उसी भाँति बैठा रहा। पाँच बज गए थे। उसने बाहर कई लड़कियों का स्वर सुना। तीन-चार

लड़कियाँ एक बारगी भीतर आईं और नवीन को देख कर ठिठक गईं। उनमें सरला भी थी। माँजी बोलीं, "बैठ जाओ न। नवीन को देखकर झिझक क्यों गई हो। मसूरी से कब आई हो।"

वे संभवतः सरकार साहब की लड़कियाँ होंगी। नवीन ने यही अनुमान लगाया। वे लड़कियाँ कुछ कुरसियों और कुछ माँजी के पलंग पर बैठ गईं थीं। माँजी तो एक से पूछ बैठी, "नीमू ससुराल से कब आई तू।"

"डेढ़ महीना हुआ है।"

"अब सरला की शादी तक यहीं रहना। दो साल में आई है। हम लोग भी दो साल से पहिले अब विदा नहीं करेंगे"

वे लड़कियाँ तो गुमसुम सी थीं। नवीन जान गया, कि वह वहीं व्यर्थ बैठा हुआ है। चुपचाप उठकर बाहर आया और अपने कमरे में पहुँच गया। एक बार किताबें पढ़ने की चेष्टा की, असफल रहा। कुछ देर तक खिड़की के पास खड़ा रहा। अब कुरसी पर बैठ गया। वह महसूस करने लगा कि वह स्वतंत्र नहीं है। वह वहाँ कैद है। उसे शीघ्र ही वहाँ से चला जाना चाहिए।

महरी आकर बोली, "आपको सरला बीबी नीचे बुला रही है।"

वह कुछ ठीक बात नहीं समझ सका। लेकिन महरी तो चली गई थी। वह चुपचाप कुछ फिर भी सोचता रहा। आखिर बाहर निकला और नीचे पहुँचा। सरला अपनी सहेलियों के साथ खिलखिला कर हँस रही थी। सामने मेज पर चाय का सामान फैला हुआ था। सरला सोफा पर से उठती हुई बोली, "हम सब आपका इन्तजार करते-करते थक गई हैं।"

नवीन चुपचाप सोफा पर बैठ गया। सरला ने चाय बनाली। नवीन उन तीनों बहिनों और सरला को देखता रहा। चाय का प्याला सबको सौंप कर कहना शुरू किया सरला ने, "इन लोगों को बतला

रही थी, कि हमारे यहाँ एक साइकालौजी के प्रोसेसर टिके हुए हैं।"

नवीन चुपचाप चाय पीता रहा। बीच बीच में मिठाई ले लेता था। फिर पूछा सरला ने, "आप तो चार बजे सोकर उठे न। मैं घड़ी पर ५ बजे का एलर्म लगा कर गई थी। मेरा अनुमान था, कि आप कम से कम साढ़े-पांच बजे तक सोवेंगे।"

"तो यह दयालुता आपकी भावुकता के कारण थी।"

"देख सरला, मैंने कहा था न कि तू बहुत भावुक है। लेकिन तू कहेगी कि मैं 'सेन्टिमेंटल फूल' नहीं हूं।"

सरला हँस पड़ी। कहा, "तुझे आज गुरू मिल गए वीणा अब तुझे 'एल-टी०' में जरूर 'फर्स्ट डिवीजन' मिल जायगा।"

"क्या आपने साइकालौजी' ली है।" पूछा नवीन ने।

"हाँ।" उत्तर मिल गया।

आपस में मसूरी की बात छिड़ गई थी। 'हैकमैन,' कुलड़ी बाजार, लंढ़ोरा, स्केटिंग.........। नवीन दिलचस्पी के साथ उनकी बातें सुनता रहा। वे सब बातें करती हुई यदा-कदा आपस में चुटकियाँ ले लेती थीं। चाय समाप्त हो गई। नवीन से सब ने विदा ली। सरला उनको पहुँचाने बाहर गई थी। नवीन चुपचाप बैठा रहा। एकाएक पास आफिस से टेलीफोन की घंटी की आवाज आई। वह उठ रहा था, कि सरला भीतर चली गई। नवीन ने सुना, सरला कह रही थी—बाबूजी तो दस बजे तक आवेंगे......जी......मैं कह दूँगी......बहुत 'सीरियस केस' है......मुझे याद रहेगा.......देखिए शायद क्लब होंगे....इगेजमेंट बुक में तो कुछ नहीं लिखा हुआ है.....निमोनिया है।........धन्यवाद मिसेज पाठक......

कमरे में अंधियारा छा रहा था। सरला आकर बैठ गई। अब बोली, "मुझे दिन को सोने की आदत नहीं है। हर साल मसूरी जाती हूँ, इस साल नहीं जा सकी। अगले साल आप भी जरूर चलें।

बहुत अच्छी जगह है। वैसे नीमू ने दार्जिलिंग का न्योता दिया है।"

"अगले साल की बात.......!"

'मेरा मन तो खूब घूमने को करता है। हिल स्टेशनों का जीवन मन को मोह लेता है। आपको तो कुछ भला ही लगता है।"

"मुझे.........।"

"आप हमारी तरह पागल नहीं हैं। लड़कियाँ तो सदा से पागल होती आई हैं। तारा अपने भाई की बातें चिट्ठियों में मुझे लिखती थी। मैं उस अनजान व्यक्ति को न जाने क्यों अपने बहुत समीप पाने लगी। जब उस भाई को देखा तो असमंजस में पड़ गई। सोचती रही कि मन में जो उसकी तसवीर बनाई है, वह मिट न जाय। आप तो इसे पागलपन ही कहेंगे न?"

"सरला!"

"यह मेरे मन का पाप है। आप मुझे ओछी समझेंगे। मैंने झूठ बोलना नहीं सीखा है। आज दिन भर मैं इन अपनी सहेलियों के साथ रही, मन फिर भी वहाँ नहीं था। कोई चुपके कान में कह देता था—नवीन घर पर सो रहा है।"

"और मैं बैण्ड बजाने की प्रतीक्षा में था।" कह कर नवीन हँस पड़ा। जब प्रतिध्वनि मिट गई तो कहता रहा, "सरला इस प्रकार इन्सान की पूजा करनी उचित बात नहीं है। यह पूजा करनी एक ऐसे दर्जे ने सिखलाई, जो समाज में अपना प्रभुत्व रखना चाहता था। शासक वर्ग ने बहुत पहले पुरोहित वर्ग से समझौता कर शोषण के द्वारा प्राप्त अपने अधिकारों का कुछ भाग उनको दान-दक्षिणा की तौर पर दे दिया। पुरोहितों ने धर्म की नजीरें बनाईं। लोग अन्धविश्वास के कारण उनका पालन करने लग गए। आज वह प्रथा मिटी नहीं है। मैंने स्वयं देखा है कि दशहरा के त्योहार पर, जमींदार ऊँचे आसन पर बैठा रहता है। गरीब किसान उसकी प्रतीक्षा में भेंट चढ़ाते हैं। राजा में जिस प्रकार

भगवान् का अंश आया है, उसी भांति उसका कोई न कोई अंश जागीरदार और जमींदार के हिस्से भी पड़ा है। फिर उस हिस्से में आगे चल करके सेठों को भी हिस्सा मिल गया। आज विज्ञान के इस युग में, जब कि इतने नए-नए आविष्कार हो गये हैं, वे गरीब लोग अपने सदियों पुराने 'पुराण-पंथी' विचारों से आगे नहीं बढ़ पाए हैं ”

“मैं आप की बात नहीं मान सकती हूँ। पिताजी कहते हैं कि यह सब संस्कार पर निर्भर है। हमारे संस्कार अच्छे थे.........।”

“मैं उस बात को नहीं मानता हूं। इसीलिए तो कहता हूँ। कि तुम अपनी उन संस्कारों वाली दुनिया में रहो। कभी कोई संभव परिवर्तन आयगा, तो वह लहर उन सबको ढक कर नए विचार ला देगी।”

“आप समझते हैं कि एक असफल जीवन के लिए, मृगतृष्णा करती हूँ।”

“यह तो तुमारा भ्रम होगा।”

“तो आप बाब-बार.......।”

“इसमें नाखुश होने की कौन सी बात है सरला। तुम सोचती हो कि मुझे उबार लोगी और मैं चाहता हूँ कि तुम स्वतन्त्रता पूर्वक जीवन में प्रगति करो। मैं तुम्हारे जी में रुकावट नहीं डालना चाहता हूँ। बदले में यही आशा तुम से भी है। तुम क्यों सोच लेती हो कि बिना किसी सहारे के तुम नहीं चल सकोगी। मुझे उबार लेना तुम्हारा काम नहीं है। मैं अपने समाज को पहचानता हूँ। नवराष्ट्र के निर्माण में तुम और तारा एक दिन सफल माताएं बन कर, उसे बल प्रदान करोगी। वह कितना शुभ अवसर होगा। इस पहलू को तुम अनायस भूल क्यों जाती हो?”

सरला ने बात स्वीकार भले ही न की हो, पर वह चुप रह गई। वह नवीन का चेहरा पढ़ने लगी। वह कोई व्यंग नहीं था। अब

उसकी भावुकता निचुड़ गई थी। पूछा फिर, "कल रात आप कहाँ रहे?"

"यहाँ की मजदूर-सभा के सेक्रेटरी के घर चला गया था। किरण आने वाली है। शायद वह आज आ जाय। उसी की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

"किरण आने वाली है। क्या वह यहाँ……।"

"यहाँ, इस घर में वह नहीं आवेगी। वह सावधानी से छुप कर आ रही है, अकारण किसी का सन्देह बढ़ा कर लाभ नहीं है। जरा सी असावधानी से……।"

"मैं उससे मिलना चाहती हूँ।"

"किरण से?"

"क्यों इसमें ऐसी क्या बात है?"

"उससे पूछूँगा, वैसे सुना है कि वह बड़ी जिद्दी लड़की है। अपने ही भाई वाला स्वभाव पाया है। वह सब साथियों को एक सूत्र में बाँध लेने की क्षमता रखती है। उसकी कई बातें सुन कर मैं तो दङ्ग रह गया था।"

"कौन सी बातें?"

"पुलीस और सी० आई० डी० वालों को वह ऐसा चकमा देती है कि उनको छट्ठी का दूध याद हो जाता है।"

"इसीलिए तो उससे मिलना चाहती थी। उसकी चर्चा अखबारों में पढ़ी है। आपने भी उसकी बातें कही हैं।"

"मैं किरण से कहूँगा और कभी एक दिन अवसर मिलते ही उसे तुम्हारे पास ले आऊंगा। तुम उस से मिलकर क्या करोगी?"

"कई बातें पूछनी हैं?

"क्या सरला?"

"आपसे छुपाने की बात नहीं है। यही कहना चाहती थी कि आप

का स्वभाव लड़कियों की ही भाँति है। आपको किसी गृहस्थी में डाल देना हितकर होता।"

"सरला!"

"मेरा दावा बिलकुल ठीक है नवीनजी! आपको तारा और मेरे बारे में कुछ कहने का अधिकार है तो क्या मैं कुछ नहीं कह सकती हूं? हम लड़कियाँ हैं, इसलिए सब बातें सह लेने के लिए नहीं बनाई गई हैं।"

नवीन ने सुन कर कोई उत्तर नहीं दिया। वह उस लम्बे चेहरे वाली लड़की की ओर देख रहा था। धुंधले अंधियारे में वह 'स्टेचू' की भाँति लगती थी। सरला असाधारण सुन्दरी है। सरकार-बहिनों के बीच वह बहुत खिली लग रही थी। उसकी सब बातों से वह दंग रह जाता है। सरला जिस समाज में रहती है, वहाँ उसे कहीं कृतिमता नहीं लगती है। वह वहाँ रह कर ऊब नहीं सकता है। सरला कहीं अलग खड़ी नहीं मिलती है। उसमें उसने कोई स्वाभिमान नहीं पाया है। वह अपने पिता के कारण इसनगर के अच्छे घरानोंसे परिचित है। संध्या को वह सरकार बहनों के साथ बातें कर अपनी असाधारण बुद्धि का बार-बार परिचय देती थी।

फिर टेलीफोन की घंटी बज उठी। सरला उठी। उसने स्विच दबाया। कमरा बिजुली की रोशनी से जगमगा उठा। उसका स्वर साफ-साफ सुनाई पड़ रहा था......पिताजी देर से आवेंगे...क्या... ...सिविल-हास्पिटल......वे चले गये हैं......आप आदमी भेज दें......कम्पांउडर आठ बजे तक रहेगा......धन्यवाद......।

सरला लौट आई। आकर बोली, टेलीफोन लगा कर मुसीबत मोल ले लेना है। कोई न कोई......तो फिर......।"

वह उठी नहीं। बड़ी देर तक घंटी बजती रही तो नवीन उठा। उसने 'रिसीवर' ले लिया। बोला, "वीणाजी पूछ रही हैं, कि आप

उनके घर होकर थियेटर जावेंगी या वे लोग इधर से आवें।"

"ठहरिए मैं आ गई।" सरला ने उठ कर रिसीवर ले लिया। बातें करने लगी। बड़ी देर तक न जाने क्या-क्या बातें करती रही। नवीन की समझ में कुछ नहीं आया। अब सरला लौट आई। बोली, मैं आपसे कहना भूल गई थी, कि 'न्यू ऐलफ्रेड' आई हुई है। दिन को हम लोगों ने 'सीटें' रिजर्व करवाली हैं।"

नवीन ने कोई उत्साह नहीं दिखलाया। सरला ने उलझन में पूछ डाला, "आप चलेंगे न?"

"मैं, शायद नहीं।"

"क्या कह रहे हैं आप।"

"यह बात सच है सरला। मैं नहीं जाऊँगा। तुम चली जाना।"

"मैं, वे क्या कहेंगी……।"

"कौन, वे तीनों बहनें। भला उनको कुछ क्या कहना होगा? कह देना, तबीयत खराब हो गई। इस पर उनको तसल्ली न हो, तो यह भी कह सकती हो कि मैं गंवार व्यक्ति हूं। थियेटर-सिनेमा से दिल-चस्पी नहीं रखता।"

"यह आप क्या कह रहे हैं?"

"क्या बात हो गई सरला।"

"मैं उनसे कह चुकी हूं, कि आप ड्रामा के बड़े अच्छे आलोचक हैं। इतना झूट तो हम लोग कहा ही करती हैं। बस फिर क्या था। सब पर मेरा रोब पड़ गया है। अब आप नहीं जावेंगे तो……।"

"तुम्हारी तौहीनी नहीं होगी। तुम कुछ और बहाना बना सकती हो।"

"मैं झूठ क्या कहूंगी!"

"कुछ कह देना। यह आसान बात है।"

सरला का चेहरा मुरझा गया। वह फिर बोली, "आप अजीब व्यक्ति हैं।"

नवीन तो इस बात का उत्तर न दे, कह बैठा, "शायद आज रात मैं चला जाऊंगा।"

"आप चले जावेंगे।"

"मैं तो यही सोच रहा हूं।"

"कल रक्षा-बन्धन है—त्योहार का दिन। तारा की राखी जरूर आवेगी।"

"राखी से मुझे खास स्नेह नहीं है। वह भी एक व्यर्थ का झूठा बन्धन लगता है। मैं अपना कर्त्तव्य जानता हूँ। तारा की राखी से नई समझ नहीं आ जायगी।"

"आपकी यह विमुखता.......................। सबके प्रति यह उदासीनता......।"

"यह झूठ है। मैं तारा से उतना ही स्नेह करता हूँ, जितना आपसे। आप तो व्यर्थ ही में न जाने क्यों कुछ सोच लेती हैं।"

"माँ, क्या कहेंगी?"

"मैं कुछ दिन रुक जाता। विपिन के कारण अब यहां से शीघ्र ही चला जाना उचित है। इस 'शहर' में क्षण-क्षण भर में खतरा बढ़ता जा रहा है।"

"नवीन जी दिल चाहता है, कि यह सब छोड़ कर आप लोगों के साथ रहूँ। आपको वह मान्य नहीं है। इसी लिए उस बात को भूल जाना चाहती हूँ। आपकी आज्ञा को स्वीकार करने की सामर्थ मुझमें नहीं है। यह मेरी अपने जीवन की एक बड़ी हार है। फिर भी इसे सह लूंगी। आपने जिस पौधे को जड़ से नष्ट करने का आदेश दिया है, उसे फिर भी पनपना ही है। मैं उसे नष्ट न कर सकूंगी। कभी शायद

अवसर मिलेगा, जब कि आकर आप मुझसे अधिक विश्वास करें। आज अपनी हार स्वीकार कर लेती हूँ।"

सरला की उस भावुकता पर नवीन चुप रह गया। सरला हर एक बात पर अनुरोध करती है। वह तो चाह कर उसकी बात की अवज्ञा कर देता है। वह मजबूर है। सरला उन चोटों से तिलमिला उठती है। अधिक तकरार बढ़ाने की आदी फिर भी नहीं है। वह स्वयं जानती है कि यह बिल्ली और चूहे वाला खेल है। नवीन के रूखे स्वभाव में हिंसा से। सरला स्वयं उसके चंगुल में फंस कर छटपटाने में जैसे कि आनन्द पाती हो। तो वह नवीन से दूर रहने का निश्चय कर चुकी है। वह भावुक लड़की है, कह कर नवीन आसानी से सारी बात उड़ा देगा। वहां बैठ-बैठ कर वह पा रही थी, कि नवीन अपने व्य-क्तित्व से उसको अनजाने ढक लेना चाहता है। वह सावधान होकर उठी और चुपचाप भीतर चली गई। अपने कमरे में पहुँची। यह निश्चय किया कि वह थियेटर देखने जायगी। नवीन जहां चाहे चला जाय। उससे उसे कोई वास्ता नहीं है। वह कपड़े बदलने लगी। वह खूब सजना चाहती थी। एक-एक कर उसने कई साड़ियां निकाल कर देखीं। कोई पसन्द नहीं आई। अब उसने अपना सलवार और कुरता निकाल लिया। उसे पहन कर वह बहुत खुश हुई। चादर ओढ़ली। पुकारा "महरी।"

"क्या बीबी?"

"साहब से पूछना कि खाना कब खायेंगे।"

महरी चली गई। वह चुपचाप आइने के आगे खड़ी हो गई। उसके मन में नई-नई उमंगे उठ रही थीं वह स्वयं न जान सकी, कि आज वह क्यों इस प्रकार पगली बन रही है। वह आइने के आगे खड़ी-की-खड़ी थी।

महरी तो आकर बोली, 'वे' कहीं नहीं हैं। नीचे कमरे में भी

नहीं।"

"क्या?" मानो किसी ने उसके डंक मारा हो। वह तिलमिला उठी। नीचे उतरी। वहां कोई नहीं था। बाहर आई। बाग की ओर तेजी से बढ़ गई। चारों ओर घूम कर देखा कि नवीन जामुन के पेड़ की टहनी पकड़े हुए खड़ा था। वह पास पहुँची। नवीन चौंका। बोला, "कौन, सरला?"

"ओ, मैं तो डर गई थी कि आप सचमुच चले गए हैं।"

"क्या सरला?"

"खाना तैयार हो गया है, चलिए।"

नवीन चुपचाप सरला के साथ हो लिया। सरला तो उसे बैठक में छोड़ गई थी। कुछ देर तक वह वहाँ बैठा रहा। फिर बाहर आ गया था। बाग में उसे बहुत भला लगा। वहाँ चारों ओर शान्ति थी। तभी सरला आई।

"आपको मेरी बात बुरी तो नहीं लगी है।"

" कौन सी।"

"मैं व्यर्थ आपसे झगड़ा किया करती हूं। आप मुझे माफ कर दिया करें। आप चुप क्यों हैं?"

"मैं सरला आज सुबह तेरी माँ का स्नेह देख कर मुझे अपनी माँ की याद आई थी। पिताजी की मौत के बाद दुनिया-दारी सीखने का बड़ा अवसर मिला। किसी अपने नातेदार ने सहायता नहीं दी। आदिकाल में मानव इतना स्वार्थी नहीं था। वैसे तू ही बता इन्सान की जिन्दगी बहुत ज्यादा नहीं होती है। एक कौव्वा जब कि हजार साल से अधिक जीवित रहता है, इन्सान तो चालीस-पचास में ही नष्ट हो जाता है। फिर यह स्वार्थ, लालच और अपना-पराया; सब पर सोचना बेकार बात है न! मैं वह सब छोड़ चुका हूँ। तारा के विवाह के लिए काफी कर्ज़ा लेकर,

जायदाद अपने रिश्तेदारों के नाम रेहन रख आया हूं। गाँव से सम्बन्ध टूट गया है।"

"तारा ने यह बात कही थी। उसे बाप-दादा की जायदाद पर कर्जा देख कर दुःख होता है। आपके इस व्यवहार से वह असन्तुष्ट है। मैंने तो लिख दिया है, कि वह उन लोगों से बातचीत करले। माँजी ने सब रुपया देने को कहा है।"

"माँजी ने।"

"शायद आप नहीं जानते होंगे, कि माँजी का आपकी माँ से कैसा घनिष्ट सम्बन्ध था। आपकी माँ की मृत्यु का समाचार सुन कर वह महीने भर तक शोक में पड़ी रहीं। हम सब परेशान हो गए थे। उस दिन से फिर माँ की तन्दुरुस्ती संभली नहीं।"

"अच्छा सरला अपने घर का इन्तजाम कब मैंने तुम लोगों को सौंपा है। न वहाँ के मामलों में पड़ने के लिए कोई वकालतनामा मैंने तेरे नाम लिखा है। तारा तो उस घर की लड़की नहीं है। अपने घर की रक्षा मैं स्वयं कर लूँगा।"

वे दोनों बैठक में पहुँच गए थे। अब नवीन जल्दी-जल्दी ऊपर अपने कमरे में पहुँच गया। सरला तो थकी सी वहीं सोफा पर बैठ गई।

नवीन ऊपर पहुँचा। वह अपना सामान ठीक करने लगा। उसने अपना 'हॉलडाल' ठीक कर लिया। सूटकेश पर सब सामान संवार कर रख लिया। केदार की बात वह सोच रहा था। कम वेतन, पाँती वाले मलेरिया से पीड़ित पत्नी और छोटी बच्ची। रहने के लिए ठीक सा ठिकाना नहीं है। यहाँ यह सरला के पिता की कोठी है। जहाँ कि वह सरला से आँख-मिचौनी का खेल खेल रहा है। यह एकांकी नाटक भी समाप्त होने वाला है। इसे वह समस्या-नाटक मान लेगा। सरला के इस परिवार का शायद वह

आसानी से न भूल सकेगा। वह चुपचाप बैठा हुआ था, कि सरला के साथ एक और लड़की चली आई। वह खड़ा हो गया। सरला तो बोली, "किरण आई है"

किरण आ गई थी। "बैठ जा किरण।" नवीन के मुह से छूट गया! किरण बैठ गई। नवीन ने पूछा, "गाड़ी से आई हो?"

बैलगाड़ी करनी पड़ी। बड़ा खराब रास्ता है। कल दिन और रात चलना पड़ा है। रास्ते में बरसाती नाले को पार करने में काफी कठिनाई हुई।"

"गाँव से आ रही हो?"

"चिट्ठी वहीं पहुँची थी।"

"यहाँ कब पहुँची?"

"दिन को आ गई थी। एक घटना हो गई।"

किरण ने सरला की ओर देखा जो चुपचाप खड़ी ही थी। नवीन स्थिति समझ कर बोला, "बैठ जा सरला। किरण क्या बात है? सरल तो अपनी है।"

"मैं यह कहना चाहती थी कि हमें यहाँ से तुरन्त चला जाना चाहिये। आपके बारे में पुलीस को मालूम हो गया है। कुछ ऐसी बातें अनायास हो गई कि........।"

"क्या?"

"अविनाश की हत्या........।"

"किसने की?"

"मैं उसे डरा रही थी कि पिस्टल छूट गई।"

"ऐसी क्या बात थी।"

"मैं अविनाश के घर पहुँची तो बहुत थक गई थी। वहाँ जा कर पाया कि वह 'रम' पीकर पड़ा हुआ है। उसने सुबह वाला परचा मुझे दिखलाया। वह तुम्हारे बारे में कई बातें कह रहा था। मैंने आपत्ति

की तो वह अनर्गल बकने लगा। मुझे डर लगा, कि कहीं अधिक गड़बड़ न हो जाय। उसे डराने के लिए पिस्तौल निकाली कि वह छूट गई। उसके माथे पर गोली लगी और वह गिर पड़ा। मैं पिछली खिड़की से भाग कर आ रही हूँ।"

"अपने भाई की हत्या कर डाली है। अविनाश......!"

"मुझे यहाँ कोई नहीं पहचानता है, यही अच्छी बात है। आप तैयार हो जाइए, जल्दी चल देना चाहिए।"

"कहाँ?" पूछ बैठी सरला।

"मैं स्वयं नहीं जानती हूँ"

"तो आप लोग जा रहे हैं।" एक बार सरला काँप उठी।

"तुम तो सारी बातें जानती हो सरला।" बोला नवीन।

"खाना नहीं खाओगे?"

किरण तभी बोली, "तुम्हारा कमरा कहाँ है सरला। मुझे बदलने को अपने कपड़े दे सकोगी।"

किरण सरला के साथ चली गई। कुछ देर बाद वह सरला की साड़ी और ब्लाउज पहन कर लौट आई। सरला तो असमंजस में में चुपचाप खड़ी थी। उसने साहस बटोर कर पूछा, "मेरे लिए क्या आज्ञा है?"

"वह मैं किरण से पूछूँगा। अभी कुछ नहीं कह सकता हूँ।"

"और तारा के लिए?"

"कौन तारा?" पूछा किरण ने।

"मेरी बहन है।"

"कहाँ है।"

"पहाड़, सरला उसे ससुराल जाने के लिए लिख देना। हाँ तुम्हारी 'कार' तो खाली होगी। तुम ड्राइव करना जानती हो तो हमें स्टेशन तक छोड़ आओ।"

सरला ने स्वीकार कर लिया। सरला, नवीन और किरण को स्टेशन छोड़ आई।

जब वह घर लौटी तो लगा कि उसकी सारी शक्ति चूक गई है। किरण और नवीन सच ही चले गये थे। नवीन के लिए वह चिन्तित हुई। उसका कमरा बिलकुल सूना था। वह चारों ओर घूमने लगी। मन भारी था। बार-बार आँखों की पलकें भीज जाती थीं। वह नीचे बैठक में पहुँची और सोफा पर बैठ गई। सामने नया 'एलिस्ट्रेटेड वीकली' पड़ा हुआ था। उसके पन्ने पलट कर तसवीर देखने लगी।

चौकीदार आकर बोला, "बीबी आपसे कोई मिलना चाहता है।"

उसने स्वीकृति दे दी, आगन्तुक ने भीतर आकर पूछा, "आप के यहाँ एक लड़की आई है।"

"कब?"

"अभी तांगे से।"

"नहीं।"

"तब शायद वह तांगे वाले को धोखा देने के लिए सड़क पर उतरी थी; धन्यवाद।"

जब वह चला गया तो वह चैतन्य हुई। किरण ने अविनाश का खून कर डाला है। उसे कालेपानी से कम सजा नहीं हो सकती है। उसके लिए एक आदमी का कुछ भी मूल्य नहीं है। विचित्र लड़की है। क्या अविनाश उसका भाई था? किरण का पत्र सरला ने एक दिन पढ़ा था। वह आई और नवीन को लेकर चली गई। नवीन स्वयं उसकी प्रतीक्षा में था। सरला कोई अड़चन डालती तो क्या किरण उसकी हत्या कर सकती थी? किरण के लिए कोई बात असंभव नहीं है। वह सामर्थ्यवान है। आज नवीन एक विद्रोह उसे सौंप गया है। नवीन ने उसे बार-बार ठुकराया है। वह उससे किसी रूप में कोई समझौता कर लेने के लिए तैयार नहीं था। क्या वह नवीन

से प्रेमकरने लगी है ? लेकिन नवीन बार-बार उसे सावधान करता था, कि वे अलग-अलग दुनिया के हैं, जो कभी मिल नहीं सकेंगे। क्या यह किरण किसी दिन इस नवीन पर विजय पालेगी। नवीन शायद किरण के आगे पिघल जायगा। किरण ने आकर उसके हृदय में एक कांटा चुभा दिया था। वहाँ अब पीड़ा होने लगी। वह उस पीड़ा से छटपटा रही थी। अब उसे अपनी असफलता पर दुःख होने लगा। वह चाहती तो अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा कर उसे जीत सकती थी। नवीन कदापि भाग कर नहीं जाता। वह व्याकुल हो उठी। उसका माथा दुःखने लगा। नवीन उसके प्राण साथ ले गया था। वह वहाँ निर्जीव सी बैठी हुई थी। नवीन बन्धन तोड़ कर भाग गया। सरला के हाथ में टूटी डोरियाँ बच रही थीं। कहा तो था नवीन ने, कि वह कभी किसी प्रकार का बन्धन स्वीकार नहीं कर सकता है। सरला चाहती कह देती, मैं तुझको नहीं बांधना चाहती हूँ नवीन। तुम फिर भी क्यों सोचते हो कि तुम बहुत बड़े हो। क्यों तुम अपने को महान् बनाना चाहते हो। उसी देवता का स्वरूप बन जाना चाहते हो, जिसकी पूजा कर लेने की प्रथा आगे बन जाती है।

महरी आकर बोली, "बीबी खाना तैयार हो गया है। नीचे लगा दूँ।"

"मेरी तबीयत ठीक नहीं है। दूध पी लूँगी।"

"और छोटे साहब।"

"वे चले गए हैं। खाना नहीं खावेंगे।"

महरी चली गयी। वह उसी भांति बैठी रही। नवीन न जाने कहाँ चला जावेगा। तारा भाई के बारे में कुछ नहीं जानती है। किरण है जो कि इन लड़कों के साथ रहती है। उसे अपने जीवन का कोई मोह नहीं है। तारा को भाई की बातें मालूम हो जाँय तो वह..........; अपने आदर्श और लाखों में एक भाई की कारतूतों का

कोई ज्ञान उसे नहीं है। वह चुपचाप न जाने क्या सोच रही थी। अब वह वहीं आँखें मूंदे लेट गई।

'कार' की आवाज कानों में पड़ी। उसकी नींद उचट गई। सरकार बहनें आ पहुँची थीं। एक ने पूछा, "मेरी तारामती तेरा बाज-बहादुर कहाँ है?"

सरला ने उत्तर नहीं दिया तो बोली, "अरी रोमियों सही।"

"वे तो चले गए हैं। संध्या की गाड़ी से।"

"कहाँ?"

"कह गए हैं कि वीणा को चिट्ठी भेज कर बता देंगे।"

वीणा चुप हो गई। सरला अनमनी सी उठी। वह उनके साथ थियेटर देखने चली गई। उसका मन भारी था। जो नाटक स्टेज पर होने वाला था, उससे सफल नाटक वह खेल चुकी है। नाटक शुरू हुआ। वह उस दुनिया से बाहर रह कर कुछ और ही सोच रही थी। कभी कोई सुन्दर गीत कानों में पड़ता तो वह चौंक उठती थी। यह नाटक चार घन्टे का था। जीवन का नाटक कई घन्टों क्या बरसों में समाप्त होता है। नाटक की मुख्य भूमिका के साथ एक प्रहसन था। उसके साथ सारा हाल हँसी से गूँज उठता था। वह हँसी उसे डस लेती थी। वह नाटक कब समाप्त हो गया, वह न जान सकी। जब सब उठ गए तो वह संभल कर उनके साथ हो ली। अपने बँगले पर पहुँच कर कुछ चैतन्य हुई। लगा कि वह खाली हो गई है। नवीन वहाँ के वातावरण से सब कुछ लूट कर ले गया है।

अब अपने कमरे में पहुँच गई। कपड़े बदल लिए। नींद आ रही थी। वह सो गई।

—अगले दिन सुबह को उसकी नींद देर से टूटी। नौकरानी से उसने चाय और अखबार मँगवा लिया। चाय पीते-पीते वह अखबार पढ़ने लगी।

उस लड़की के सम्बन्ध में बहुत सारी बातें छपी हुई थीं। माथे पर गोली का घाव लाश पर पाया गया। उसे पकड़ने के लिए दो हजार का इनाम था। पुलीस उलझन में थी कि यह रहस्यमय मौत कैसे हुई है। अविनाश के परचे तथा मजदूर सभा के बारे में बहुत कुछ लिखा हुआ था। दिन को डाक से बारा की रोली और राखी चिट्ठी से आई थी। नवीन को लिखा था कि घर की स्थिति ठीक नहीं है। कर्ज का हवाला भी था। कुछ लड़कियों के नाम लिखे थे, जिनके घरवाले उसे परेशान कर रहे हैं। अंत में भैय्या को सीखें देकर लिखा था, कि उनको अपने स्वास्थ्य की परवा रखनी चाहिए। सब कुछ पढ़ कर सरला की पलकें भीज गईं। उसका दिल भर आया। वह फूट-फूट कर रोना चाहती थी। उसने राखी मेज पर रख दी। पुल-ओभर का ऊन का गोला फर्श पर पड़ा हुआ था। उसने उसे नहीं उठाया। वह उठी और अपनी माँ के पास चली गई।

माँजी बोलीं, "नवीन कहाँ है?"

"कल रात चले गए।"

"लौट कर कब आवेगा?"

"कुछ नहीं कह गए हैं।"

माँजी नवीन के बारे में कई बातें पूछती रहीं। सरला साधारण उत्तर अनमने भाव से देती। उसका चेहरा उतरा हुआ था।

उसके पिताजी आए और पलङ्ग पर एक किनारे बैठ गए। पूछा "कल थियेटर कैसा रहा?"

"अच्छा, बाबू जी।"

"नवीन भी गया था।"

"वे कल शाम की गाड़ी से चले गए। आपकी बड़ी देर तक प्रतीक्षा की।"

"ऐसा क्या काम आ पड़ा था। कल रात क्लब में रामेश्वर बाबू

से बातचीत हुई थी। वे उसे 'केमिकल वर्क्स' में फिलहाल तीन सौ देने के लिए कह रहे थे। तू उस से चिट्ठी लिख कर पूछ लेना।"

"वे नौकरी नहीं करेंगे बाबूजी। यही कह गए हैं।"

"तब क्या करेगा?"

"मुझे मालूम नहीं है।"

"कुछ नहीं, आज के सब लड़कों का यही हाल है। इस पढ़ाई ने तो हमारी सारी संस्कृति चौपट करदी है। पुराने लोगों की बातों और विचारों को तो वे यों ही उड़ा देना चाहते हैं।"

"पिताजी, आपके और हमारे जमाने में तीस साल का अन्तर है न।"

"तू उसी का पक्ष लेगी।"

सरला उस चर्चा को टालने के लिए बोली, "तारा की चिट्ठी आई है।"

"क्या लिखा है?" माँजी ने पूछा।

"अगले महीने ससुराल जावेगी। भाई की शादी के लिए लड़कियों की एक बड़ी सूची बना कर भेजी है।"

माँजी ने बात सुन कर कहा, "तुम से एक बात कहनी है। पगले नवीन ने सुना अपनी सारी जायदाद रेहन में रख कर तारा की शादी की थी। तुरंत रुपया भेज देना चाहिए। आज गायत्री जीजी मर गईं तो क्या हम अपने कर्त्तव्य को भूल जायं।"

"कुल कितना रुपया चाहिए।"

"चौदह-पन्द्रह हजार।"

"सरला, तू चिट्ठी लिख कर पूछ लेना कि रुपया किसे भेजा जाय?"

सरला ने हाँ भरी। नवीन ने तो कहा था कि उसे उस सबकी आवश्यकता नहीं है। कुल की मर्यादा बिगड़ रही है; तो वही उसे

क्यों सुधार ले। वह तारा को पत्र लिख कर पूछेगी। तारा पर वह बहुत सोचती है। वह उठकर चली आई।

नवीन ने जिस गति से उसके जीवन में प्रवेश किया था, उसी गति से वह हट भी गया। सरला अपनी सीमाओं में उसे अब नहीं पाती है। वह जान-बूझ कर उसे यहां लाई थी कि पहचान लेगी। वह तो अब नई पहेली गढ़ कर चला गया। वह उस थोड़े से समय में बहुधा भावुक बन जाती थी। नवीन में उसने कोई अन्तर नहीं पाया। उस पर किसी का प्रभाव नहीं पड़ता है। वह उसे उलझाने में असफल रही। चाहती तो क्या नवीन इस प्रकार भाग जाता? उसने स्थिति पर विचार किया। यह उसकी एक बड़ी हार थी। नवीन को समय आने पर वह बतला देगी कि सरला इस हार का बदला लेना जानती है। वह जो अपने को बड़ा समझता है। यह एक थोथा व्यापार है।

किरण आगे आकर सुझाती लगती थी—तू उदास क्यों है सरला! अरी नादान लड़की, तू समाज के उस वर्ग में पैदा हुई है, जिसे सब पाना चाहते हैं। व्यर्थ एक मृगतृष्णा के पीछे भाग कर कोई लाभ नहीं होगा। नवीन हमरा साथी है। हमारा अधिकार है कि वह हमारे साथ रहे। तू उसे नष्ट नहीं कर सकती है। वह बलवान है। हम सब उसकी रक्षा करना भली भाँति जानते हैं। तू व्यर्थ मायाजाल के सुनहले सुपने न देखा कर।

नवीन कभी कुछ नहीं बोला था। उसके उस पागलपन की बात को उसने आसानी से सुलझा देने की चेष्टा की थी। उसकी भावुकता की वह मखौल उड़ाता था। वह उससे क्या चाहती है? कहता था, कि सरला और तारा को गृहस्थी की सीमाओं तक कैद रहना पड़ेगा। वह उन दोनों को अच्छा भार सौंप गया है। वह उसकी आज्ञा नहीं मानेगी। नवीन उसका कोई नहीं है। किरण उस पर दावा कर सकती है। वह हत्यारी लड़की जो आसानी से खून कर सकती है। वह

नवीन हिंसा का एक विचित्र खेल खेलने तुल गया है। क्रान्ति का नाम वे उसे देते हैं। वही क्रान्ति......। टाल्सटाय की पोती की लिखी पुस्तक उसने पढ़ी है। वह क्रान्ति जो कि आज के समस्त सामाजिक बन्धनों को नष्ट कर देना चाहती है। किरण और नवीन का वह झूठा घमंड है।

अब वे दोनों कहाँ रहेंगे? वह नवीन से पूछना चाहती थी, पर किरण के सम्मुख कुछ नहीं बोल सकी। किरण से सरला कुछ पूछती, तो वह उत्तर नहीं देती। किरण के व्यवहार से उसे सन्तोष नहीं है। वह नवीन को किरण के हाथ सौंप देना उचित नहीं हुआ है। उसका किरण से कौन सा सम्बन्ध है? सच बात तो यह है कि सरला का नवीन से क्या नाता है?

मजदूर जीवन को सुलझाने का प्रश्न आसानी से हल किया जा सकता है, यदि उसकी वास्तविक भीतरी स्थित का ज्ञान प्राप्त हो जाय। बड़े-बड़े व्यापारियों द्वारा मिल, फैक्टरी आदि की स्थापना हो जाने के कारण, देहाती किसानों का एक वर्ग जो कि गाँव की धरती से ऊब कर वहां से छुटकारा पाना चाहता है, शहर की ओर आकर्षित होता है। वह धरती-माता जिसने कि उसकी कई पीढ़ियो की रक्षा कर उसे अन्न दिया है आज उसका पेट नहीं भरती है। लगान, महाजन का कर्जा...पहले गांव के नौजवान लड़के शहरों की ओर बढ़ते रहे फिर और लोग आए। धीरे-धीरे गांवों की धरती का मोह छोड़ कर एक बड़ा वर्ग शहरों में आकर मजदूरी करने लगा। यहां उस वर्ग का अपना समाज नहीं बन सका। उनका सम्बन्ध देहात से ही है, जहां उनके और नाते-रश्ते के लोग रहते हैं। पहले उनको शहर का ज्ञान नहीं था। वहां की एक बाहरी चमक और अपनी सदियों की गरीबी जिससे वे संघर्ष करते रहे, उनको यहां खींच लाई थी। गांव के समाज में उनका

आदर था। वहां उनकी गिनती अपने लोगों में थी। वहां वे अपने लोगों के बीच रह कर हरएक से सुख दुःख की बातें बूझ लेते थे। शहर आकर देखा कि वे अकेले खड़े हैं। उनको कोई पहचानने वाला नहीं है। लाखों की अबादी के बीच उनकी अपनी कोई खास जगह नहीं है। वहाँ सब कुछ मोल मिलता है। साधारण सहानुभूति वहाँ नहीं है वहाँ तो मानव के आपसी रिश्ते भी टूट गए हैं। प्रत्येक वस्तु के लिए पैसा चुकाना पड़ता है। मिट्टी का मोल है, लकड़ी टालों पर बिकती है। सड़ी तरकारियां ढेर लगाकर गलियों में बेची जाती हैं। गांवों में जो बातें सुनी थीं वह स्वप्न ओझल हो जाता है।

व्यापारी अपनी पूंजियां नए नए कारोबार में लगा चुके हैं। उनको अपने मिलों को चलाने के लिए मनुष्य का श्रम चाहिये। उनके दलाल लोगों को फँसाकर ले आते हैं। श्रम का भाव-तोल होता है। अन्त में उनको श्रम का साधारण मोल तनखा के रूप में मिल जाता है। उस श्रम का मूल्य अलग अलग ग्रेडों में विभाजित है। व्यापारी उसके लाभ से फलता-फूलता जाता है। जब कि मजदूर वर्ग अपने समाज की नई सीमाएँ बनाने में समर्थ नहीं हो पाता। उत्पादन के नए साधनों के साथ वह वर्ग बेकारी के झोंके सहता है। व्यापार की नींव जितनी दृढ़ बनती जाती है उतनी ही इस वर्ग की शक्ति का ह्रास होता जाता है। और जो मानव समाज है, जिसके कि टुकड़े-टुकड़े करके उसे विभिन्न वर्गों में बांटा गया है, वहीं यह वर्ग भी चुपचाप पड़ा रहता है। अपने चारों ओर घबराहट पाता है। अन्ध विश्वासों पर जीवित रहता है। भाग्य की कसौटी पर परिवार अपना माथा घिसते-घिसते मर जाते हैं। वह फिर भी समाज की किसी आर्थिक व्यवस्था में सही निर्माण की माँग नहीं कर सकता है। कभी कुछ कहता है तो आसपास के शक्तिशाली वर्ग उसकी मखौल उड़ाकर उसे चुप कर देते हैं। वह कुछ शक्ति जमा कर पाता है तो उसकी उस शक्ति को नष्ट करने का बात

दूसरे वर्ग सोचते हैं। वह अपने को असहाय सा पाकर आगे निर्जीव चुपचाप पड़ा रहता है कि कभी भाग्य की पुरानी कसोटी टूट जावेगी, तो शायद परिवर्तन हो जायगा। अन्यथा आज जो समाज की व्यवस्था है, उसी में उसे रहना है। इसको अधिक की माँग व्यर्थ लगती है।

मिलों का एक बड़ा ढाँचा है। उसके भीतर चींटियों की भाँति मजदूर काम करते हैं। प्रकृति का साधारण नियम है, कि अपने काम का उपयोग स्वयं करना। चीटियाँ या मधुमक्खियाँ अपना काम अपने परिवार की रक्षा के हेतु लगाते हैं; किन्तु नाग-वंश के व्यापारी अपनी वंश रक्षा में चतुर हैं। दीमक अपने काम से रहने के स्थान का निर्माण करती हैं। वे काम का मूल्य पाने के अधिकारी हैं, लेकिन एक दिन चुपचाप साँप वहाँ अपना अधिकार जमा लेता है। वह मिट्टी चाटता है और दीमकों का वह निर्माण नाग वंश के अधिकार में आ जाता है। नागराज की पूजा वर्षों से चली आई है। आज विज्ञान के इस युग में पूजा के उस स्वरूप में थोड़ा सा परिवर्तन हो आया है। साँप उस बीबी पर अधिकार जमा कर चुप नहीं रहता है। वह आस-पास के पेड़ों पर चढ़, चिड़िया के घोंसलों में घुस कर उनके बच्चों को खा जावेगा। उनके अण्डों के प्रति उसका लोभ उमड़ पड़ता है। वह नाग सच ही एक दिन नागराज बन कर रहता है। वह अपने साम्राज्य का पूरा स्वामी है। यह सोच कर ही शायद मिलों के रचने वालों ने अपने वंश की मर्यादा का पूरा पूरा ध्यान रखा है। वे मानव हैं, अतएव हिंसा के नग्न रूप पर विश्वास नहीं करते। वे एक वर्ग को अपने अधिकार में कर लेते हैं। उस वर्ग की भावुकता को उभार कर उनको अपने वश में करते हैं। उनको सुझाते हैं कि वे ही सही शक्ति हैं। जिनके बिना काम किये बड़ी-बड़ी मिलें; ईंट, चूने, सिमेंट और लोहे के ढांचे के अतिरिक्त कुछ नहीं है। वह शरीर तो-

निर्जीव है। उसमें प्राण डालता है मजदूर वर्ग। उसके बाद चिड़िया के बच्चों को खाने वाला वह स्वभाव, जो बाहर नहीं चमकता, पर भीतर-भीतर हिंसा की वह प्रवृति बलदायक होती जाती है। शोषण की तीव्र धारा से वे उनका चूसते-चूसते रहते हैं। देश में मिलों का जाल फैलता ही तो जा रहा था।

१९१४-१८ का वह महायुद्ध जब कि साम्राज्यवाद ने एक करवट बदल कर संसार को अपने चंगुल में पूर्णतया फँसाने की चेष्टा की थी। पूँजीवादी राष्ट्रों का संघर्ष तेल, लोहे और उपनिवेशों के लिए था। भोली जनता को सैनिक बना कर अपने स्वार्थों के लिए लड़ाया था। उसके बाद अपनी क्षणिक विजय के साथ उसने दूसरी करवट उद्योगीकरण के रूप में अपने उपनिवेशों में की। पूँजीवाद मजदूरों के मस्तिष्क का विकास उसी सीमा तक होने देता है, जहाँ तक कि उसे अपने व्यापार और कारखानों के लिए आवश्यक होता है। वह मनुष्य को केवल अपने स्वार्थों के हित के लिए शक्ति के रूप में उपयोग में लाता है, कि उसका पुराना ढाँचा समाप्त न हो जाय। वह महायुद्ध राजनीतिक जुए वाला युद्ध था। प्राचीन वर्ग-युद्धों से वह भिन्न था। वह क्रान्ति नहीं थी कि मानव समाज को आगे बढ़ा कर ले जाय। वह तो प्रगति के रास्ते में रुकावट डालने का चेष्टा भर थी। फिर भी उससे एक नया वर्ग उठता। दुनिया भर में मजदूरों ने पहले-पहल अपनी शक्ति की चर्चा सुनी थी। उनके लिए तो वह एक आश्चर्य जनक घटना थी। पुराने अन्ध विश्वासों की लड़ी, जैसे कि टूट कर बिखर रही थी। ये अन्ध विश्वास! जब लोग निराश हो जाते हैं और किसी बात को समझने की शक्ति नहीं रह जाती, तो अन्धविश्वासों की छांह बहुत प्यारी लगती है। अन्ध-विश्वास स्वप्न में नहीं, देखे जाते हैं वे तो बनाये जाते हैं। विश्वास तो दर्दनाक घटनाओं के संघर्ष से बनते हैं। फिर यह तेल, लोहे तांबे के लिए संसार की सभ्य जातियों

का संघर्ष क्यों युद्ध का भीषण रूप ले लेता है? मानव स्वभाव की यह कमजोरी हित कर नहीं है।

मिलों की भीतरी व्यवस्था के प्रति मजदूरों की कोई निष्ठा नहीं है। वे जानवरों की भाँति गन्दे मुहल्लों में रहते हैं। उनके परिवार अस्वस्थ हैं। विधाता की माथे वाली रेखाओं से उनका विश्वास हटता जा रहा है। धर्म की मान्यता आज उसको थोथी लगती है। गरमी, बरसात, सरदी आदि मौसमें आती हैं। कई सुबह-शाम बीत जाती हैं। उनकी सीमाओं में कोई परिवतन नहीं आता है। इतनी चेतना आती जा रही है कि उनका वर्ग बढ़ रहा है। शहर के वातावरण की बुराइयाँ वे अपना रहे हैं, पर वहाँ के बुद्धिवादी समाज का असर भी उन पर पड़ता जा रहा है। वे अपने वर्ग और दूसरे वर्गों की दूरी को भांपने के ज्ञान रखने लगे हैं। अब साधारण-साधारण सवाल उठा कर वे प्रश्न पूछते हैं और उसका सही उत्तर चाहते हैं। जीवन और समाज के प्रति उनकी स्वाभाविक जिज्ञासा बढ़ रही है। बात कुछ सही है। मनुष्य तभी सही मानव बन सकता है, जब कि उसके ऊपर जो सामाजिक बन्धन शोषण करने के लिए लागू हुए हैं, उनका अन्त करके, उसे स्वयं पनपने का अवसर दिया जाय आर्थिक साम्राज्यवाद के युग में यह आसान नहीं है। युग का संचालन पूंजीपति समुदाय के हाथ में है। मशीनों की उन्नति हुई। माल जमा हो गया। जिनको आवश्यकता है उन तक वह नहीं पहुँच पाता है। उस माल के लिए नए बाजार चाहिए। उस बाजार के बटवारे के लिए ही महायुद्ध हुआ था। बाजार का अंटकाल! काफी, आटा और तारकोल की ईटें बनाना उचित लगा, लेकिन मनुष्य इनका उपयोग करें, यह पूंजीपतियों के लिए असह्य बात थी। यदि मजदूरी को बाजार में क्रय-विक्रय की वस्तु माना जाय, तो मजदूर को उसके काम का पूरा-पूरा मूल्य चुकाना ही पड़ेगा।

अन्यथा यह वर्ग पनप नहीं सकता है।

मिलों की सीमा के समीप ही मजदूरों की छोटी छोटी बस्तियाँ हैं। उनके छोटे-छोटे घर, वहाँ की गंदगी और अस्वस्थ वातावरण! उस वर्ग की गरीबी वहाँ हर वक्त उपहास उड़ाती मिलेगी। अन्ध-विश्वास जैसे कि प्रतिदिन संध्या को चमगादड़ों के रूप में चुपके अँधियारे में परिवार के भीतर छत के चारों ओर उड़ते रहते हैं। उनके आपसी मानवी रिश्ते टूटते जा रहे हैं। वे आपस में एक-दूसरे को पहचान लेने की चेष्टा करके भी असफल रहते हैं। परिवारों के अन्य परिवारों से सम्बन्ध, परिवार के लोगों के आपसी नाते और मनुष्यता के पुराने बन्धन वे भूल गये हैं। मिल की दुनिया के बाद बस्ती की दुनिया के प्रति वे उदासीन रहते हैं। उससे नया नाता जोड़ लेना नहीं चाहते हैं। उनका स्वाभाविक विकास रुक गया है। अपनी किसी प्रकार की प्रगति पर उनको विश्वास नहीं रह गया है। मनुष्य की शक्ति का इस भांति नष्ट हो जाना, समाज के लिए कदापि हित कर नहीं है। समाज के प्रत्येक वर्ग को स्वस्थ रह कर पनपना चाहिए। दूसरे वर्गों का मिल कर किसी वर्ग का शोषण करना, यह प्रवृति कभी सफल नहीं हो सकती है। मनुष्य इतिहास के भारी संघर्षों से नए-नए सबक सीखा है। उन क्रान्तियों ने उसे आगे बढ़ाया। आज एक वर्ग एक नई क्रान्ति लाने में सफल हुआ है। वह क्रान्ति महायुद्ध के साथ उदय हुई थी और सफल हो गई। उसकी चिंगारी दूर-दूर प्रदेशों में फैली थी। उपनिवेशों में वह मजदूर वर्ग को नया सबक पढ़ाने में नहीं चूकी। आगे यही वर्ग कल एक नई क्रान्ति का सफल अगुआ भी बनेगा।

—किरण और नवीन स्टेशन पहुँच गए थे। सरला चली गई। नवीन ने सरला से कुछ नहीं कहा था। वह चुपचाप उनको मूक नमस्ते

सावधानी के साथ देख रहा था। सरला जीवन में बहुत पीछे खड़ी लगी। वहाँ जहाँ कि वह कभी शायद ही लौट सकेगा। किरण ने आकर उसे उबार लिया। अन्यथा वह सरला के समीप रह कर अपने को एक नया 'जन्तु' पा रहा था। उसे अपनी इस मुक्ति पर बहुत खुशी थी। सरला कई छोटे-छोटे प्रश्न व्यर्थ में उठाकर समस्या गढ़ती लगती थी। वह बात-बात में इच्छा प्रकट करती थी कि नवीन उसका मार्ग प्रदर्शन करे। अपने परिवार को सीमा के दरवाजे खोल कर, उसने तो नवीन से एक घनिष्ट नाता जोड़ दिया था। परिवार को उसके भविष्य की चिन्ता हो आई थी, जैसे कि वह कोई निकम्मा व्यक्ति हो और उसे किसी के सहारे खड़ा होना है। इस सब से अपूर्व था, सरला का स्नेह भाव। वह उसके बहुत समीप पहुँच, उसके गद्‌गद्‌ स्वर से डर जाता था। उसे बार-बार यह आशंका लगी रहती थी कि कहीं यह लड़की आँसू बहाने लगेगी तो! नवीन उदार था और सरला उसके प्राणों को अपनी भावुकता की महीन डोरियों से तेजी से बाँध रही थी। उसने सरला को कोई अधिकार नहीं सौंपा था। न उसने कोई रुकावट ही डाली। यदि वह वहाँ अधिक रहता और सरला कुछ और प्रश्न पूछती तो क्या वह सब प्रश्नों का उत्तर आसानी से दे सकता था। शायद वह इतना सबल नहीं है।

वह फिर रुक गया। खिलौने वाले की दूकान पर खड़ा हुआ। जापानी डॉल वहाँ थे। कई बच्चों के खिलौने थे। बच्चों को खिलौने देकर बहकाना नवीन ने नहीं सीखा है। सरला को भी उसने नहीं बहकाया था। सरला सवाल पूछती थी, वह उसके प्रश्नों का उत्तर भर देता था। वह सरला से कुछ झूठ नहीं बोलना चाहता था। और खिलौनों के लिए बच्चों का स्वाभाविक मोह! सरला आज क्यों खिलौने वाले खेल खेला करती थी। तारा ने कभी गुड़िया की शादी की थी। उन दिनों उसका तारा से झगड़ा था। वह उस शादी की दावत में

शौक नहीं हुआ था। तारा अपने रस अभिमान की बात आगे भूल गई थी। लेकिन सरला और तारा में अन्तर है। वह उन दोनों को व्यर्थ साथ-साथ रख कर तौला करता है खिलौनों को उस दूकान पर सबसे अधिक चमक मिली। जैसे कि उस वातावरण का वही सबसे अधिक उजला अंग हो। वह आगे बढ़ गया। एक बड़ा परिवार बैठा हुआ था। पाँच लड़के-लड़कियाँ, माता और पिता। कुछ देहाती परिवार भी बैठे थे। उनकी औरतें वही रंगीन पीला लंहगा, जिस पर की काली गोट लगी थी, पहने हुई थीं। शहरालू जीवन की रहन-सहन की नकल जैसे कि वे नहीं अपनाना चाहती हों। वह पान की बड़ी दूकान के आगे खड़ा हो गया। वहां जो बड़ा आइना टंगा हुआ था, उस पर उसकी प्रतिछवि दीख पड़ी। उसने उसमें अपने को पहचान लेना चाहा। आइना अच्छा नहीं था। चेहरा कुछ अजीब सा लगा। उसने बटुआ निकाला। सिगरेट और दियासलाई ले ली। पान खाया और आगे बढ़ गया। वहां वह लोगों को देख रहा था। एकाएक टिकट घर की खिड़की खुल गई। लोग उस ओर झपटे। नवीन को वह तमाशा विचित्र सा लगा।

किरण ने खाना खा लिया था। वह सूट केस पर बैठी हुई थी। नवीन पास आया। पूछा किरण ने, "क्या बज गया होगा।"

"साढ़े नौ।"

'तो अब चलना चाहिये।"

नवीन ने एक तांगा ठीक कर लिया। सोचा मन में कि सरला उसे शहर से विदा कर चुकी है। लेकिन वह शहर के भीतर फिर स्वयं ही जा रहा है। किरण ने, सामान चढ़ा कर कहा, कुछ मिठाई-नमकीन ले लीजिए।"

"किसके लिए?"

"भाभी और बच्चों के लिए।"

क्या केदार के यहां जाना है?"

"क्या आप सरला के यहां की बातें सोच थे?" सरलता से किरण ने कहा और हँस दी। साँवले रङ्ग की उस युवती के चेहरे पर दाँतों की पांती छितरी दीख पड़ी। नवीन चुपचाप दूकान पर पहुँचा और मिटाई खरीद लाया। तांगे में डलिया रख दी। तांगा चुपचाप चलने लगा। पूछा किरण ने, "आप तो केदार का घर जानते होंगे न।"

"हाँ," कहकर नवीन ने तांगे वाले को समझा दिया। वह किरण चुपचाप बैठ गई थी। वह ऊँघ रही थी। नवीन जीवन की उस गति पर सोच रहा था, जिसका कि वह परम्परा के साथ अनुमान लगाना चाहता है।

कि किरण ने पूछा, "सरला को आप कब से जानते हैं?"

नवीन ने इस प्रश्न को समझाने की अधिक चेष्टा नहीं की। बतला दिया कि वह पहाड़ गई थी, तारा के पास। वह तारा की सहेली है। लेकिन लगता था कि नवीन अपने को ठग रहा है। तारा के मार्फत सरला को पाकर आज तारा को वह व्यर्थ बीच में लाता है। वह उसकी सहेली भी तो है। वह तारा से अधिक सरला को पहचानता है।

किरण चुप हो गई थी। नवीन तारा को भूल गया। सरला को वह पीछे छोड़ आया। किरण ऊँघ रही थी। भविष्य की ओर वह देखने की चेष्टा करने लगा। फोटोग्राफ के 'एलबम' की भाँति चन्द तसवीरें आगे आईं। वह चुपचाप उन पर सोचने लग गया।

बिच्छू और चींटियों का संघर्ष उसने एक बार देखा था। चींटियों के एक दल ने बिच्छू को घेर लिया। वह हमला अचानक हुआ था। बिच्छू डंक मारती-मारती थक गई। चींटियाँ अंत में उसे मार कर ले जा रही थीं। उसने देखा है कि मिलों की ओर बड़ी सुबह मजदूर जाते हैं। वहां वे चींटियों की भांति समा जाते हैं। जो वस्तुएं वे बनाते हैं,

उसका उपयोग वे नहीं करते। मिल का बना माल खरीदने की शक्ति उनमें नहीं है। वे थोड़ा दाम पाकर अपनी बस्तियों की ओर बढ़ जाते हैं। वे बस्तियां शहर के बाहर बन रही हैं। वहां का जीवन पशुओं का सा है। वह चींटियों की बात पर सोचता है। जानता है कि मजदूर और व्यापारी-वर्ग के बीच एक बहुत बड़ी खाई है। एक वर्ग उनको उठने नहीं देना चाहता है, दूसरा वर्ग अब तक सब कुछ सह कर अपने सही अधिकारों की माँग करता है। आज वह वर्ग अपनी शक्ति को पहचान गया है। चींटियों का वह युद्ध नवीन नहीं समझ सका था। उसे उनकी शक्ति पर कोई भरोसा नहीं था। उसने छोटी कहानी पढ़ी थी, कि सूत टुकड़े-टुकड़े रहने पर टूट जाता है और जब उसे बट दिया जाता है तो उसे तोड़ डालना मुमकिन नहीं है। फिर उसने चींटियों की शक्ति देखी थी। तब उसने नहीं सोचा था, कि आदि काल में युद्ध का आरम्भ इसी प्रकार हुआ था। आज तो अब विचारों का युद्ध होने लगा है। जिसमें कि हरएक वर्ग अपनी मांग रख रहा है, कि समाज में उसका बराबरी का अधिकार है। उसे रहने के लिए मकान, खाना तथा कपड़ा चाहिए। वह समाज से फिर अपनी संस्कृति की मांग करता है। यह भावना आज फैल गई है। इसे रोक लेने की चेष्टा करना आसान नहीं सा है।

सामाजिक जीवन का एक पहलू उसकी आँखों के आगे आता है। छोटी-छोटी कोठरियां, चारों ओर गंदगी, नंगे धूल से सने बच्चे, खाने का ठीक ठिकाना नहीं। अस्वस्थ परिवारों का समूह जहां कि यदा-कदा मिल का धुँआ छाया रहता है। मानो कि मनुष्यता से वह उस व को छुपाकर रखना चाहता है, जो वहाँ रहता है। फिर उस की बुराइयाँ पुरुषों का बेहयापन, खीसें निकाल कर हँसना........। एक विकृत सा समाज जहां का जीवन बिलकुल अस्वस्थ है। जहां परिवारों के भीतर बीमारियां फैल कर वहां की रमणियों को रोगणी बना देती हैं। जहां बच्चें

पैदा हो कर नहीं जानते हैं, कि उनको यह मनुष्य जीवन क्यों मिला है। जहां युवकों को पनपने के कोई साधन नहीं मिलते हैं। वहां लोगों का जीवन बस्ती से मिल तक समाप्त हो जाता है। विज्ञान के इस युग में उनको समाज के ज्ञान तथा आपसी व्यवहार से कोई संबन्ध नहीं रहता है।

एक दूसरा सा रूप वह पहचान लेना चाहता है। सुन्दर बंगले, मुर्गी के बच्चों का शोरवा, ह्वाइट हार्स और 'एटलस टानिक' की शीशी, जिसके बाहर एक विज्ञापन रहता है, कि उसे पीकर व्यक्ति में इतनी ताकत आ जाती है कि वह 'हरकिर्लीज' की भांति सारी दुनिया को उठा सकता है। वह वर्ग मानव के स्वाभाविक व्यवहारों के विपरीत ईर्षा, लोभ, और घृणा पर जीवित है। नैतिक चोरी, डकैती से उनका कोई घबराहट नहीं होती है। इसके अतिरिक्त सामाजिक व्यभिचार को आश्रय पाने का अवसर भी यहीं मिलता है। वे पैसे से धर्म, कर्म, राजनीति, व्यक्ति और विचारो तक को खरीद लेते हैं। वे केवल उसी साहित्य का प्रचार करते हैं, जिससे उनके स्वार्थ की सिद्धि होती है। वे कानून की आड़ में जनता पर भेड़िए की भाँति हमला करते हैं। कानून की दफाएँ तो सेठों की तिजोरियों की रक्षा करते हैं। यह वर्ग भी शासक है। प्रत्येक सामाजिक संस्था का संचालन करता है। अपने विरोधियों को नष्ट करने के दांव-पेच में प्रवीण हैं। इनका कहना है कि बुद्धिवादियों की संख्या समाज में सदा से न्यूनतम रही है और वे सदा से समाज के कर्णधार रहे हैं। यह झूठ है। यदि जनता अधिक संख्या में शिक्षित होती तो यह संख्या कम न होती। यह किसी जाति या वर्ग की बपौती सम्पत्ति नहीं है।

वह पूँजीपतियों को डाकुओं के गिरोह से कम नहीं पाता है, जो कि दिन-दहाड़े डाका डालते हैं। शासन और कानून उनका कुछ नहीं कर सकता है। १८५७ का विद्रोह भारतीय इतिहास का एक बड़ा सबक

था। वहीं पर मध्यकालीन भारत का आर्थिक जीवन समाप्त हो गया और नए रूप से साम्राज्यवाद ने ऐसे समाज का निर्माण किया, जहां वह पनप सके। जिसमें आज भारतीय परिवार की औसत सालाना आय ५०) मात्र रह गई है। कलकारखानों में सेठों की थैलियाँ भरने वाला मजदूर-सब से अधिक गरीब और कर्जे के भार से लदे हुए हैं। उनको बहुत अधिक घंटे काम करना पड़ता है। वह सीमिति दायरे के भीतर अपना जीवन व्यतीत करते हैं। सांस्कृतिक हीनता के तो वे बलवान स्तम्भ हैं।

तभी किरण ने नवीन के कान में कुछ कहा। नवीन चैतन्य हो गया। ताँगे वाले से पूछा कि शहर में कोई अच्छा होटल तो नहीं होगा। ताँगे वाला बोला कि स्टेशन के पास ही कई होटल हैं। किरण ने सावधानी से कहा, "इतनी रात किसी का घर खटखटाना भी उचित नहीं लगता है; नहीं तो होटल ही में चला जाय।"

बोला नवीन, "जैसा ठीक समझें।"

ताँगे वाला जैसे कि उनकी बात पर कुछ ध्यान न देकर चुपचाप ताँगा हाँक रहा था। कभी-कभी वह बीच,बीच में सिनेमा का कोई गीत गा लेता था। नवीन उस गीत को सुन कर बोला किरण से, "अब तो जमाना बहुत बदल रहा है। गजलों की दुनिया से सिनेमा वाले गीतों की दुनिया में आ गए हैं। पुराण पंथी इससे जरूर घबरा रहे होंगे। शहर के जीवन कीसस्कृति पर आज सिनेमा का भरी प्रभाव पड़ रहा है। मैं उसका पूरा-पूरा अनुभव कर रहा हूँ। मुझे याद है कि जब मैं पहले पहल इन्टर में आया था, तब शहर में कोई कम्पनी चार महीने से रोज 'शीरी-फरहाद' नाटक दिखला रही थी। वहाँ खचाखच भीड़ रहती थी।"

किरण ने कोई उत्तर नहीं दिया। ताँगे वाले ने बीड़ी का कश खींचते हुए कहा, "बाबूजी अब क्या सिनेमा आते हैं। न वह भगदौड़

होती है, न लड़ाई और न वह बहादुरी। मैंने हातिमताई देखा था..........।"

किरण तो हँस पड़ी। पूछा नवीन से, "आपने हातिमताई पढ़ा है?"
"कम से कम आठ बार।"

"मैंने तो एक टुकड़ा सिनेमा में देखा था। किताब तलाश की, कहीं नहीं मिली। वे लोग भी कैसी-कैसी बातें सोच लेते थे।"

नवीन चुपचाप सिगरेट फूँक रहा था। आज की दुनिया तो हर एक बात का समाधान चाहती है। वह हातिमताई के निर्माण पर सोचता है। अंगूठे वाले आदमियों की ढूँढ़ करती है। देवता और परियों को उसने ढूँढ़ निकाला है। इस विज्ञान के युग में वह बिना सही समाधान के कोई बात स्वीकार नहीं करता है। लेकिन मौत पर विज्ञान कुछ अधिक नहीं कह सकता है। आखिर पाँच साल का स्वस्थ बच्चा एकाएक क्यों मर जाता है, जब कि साठ साल का बूढ़ा कई रोगों को हरा कर आगे जी सकता है? यह उसकी पहेली रही है, लेकिन विज्ञान उसकी परिभाषा भी ढूँढ निकालने में संलग्न है।

नवीन ने किरण की ओर देखा। वह उससे कई बातें पूछ लेना चाहता है। वह न जाने क्या-क्या बतावेगी। किरण चाहती थी कि वहीं स्टेशन के पास होटल में टिका जाता। नवीन फिर केदार को बुला कर ला सकता है। वह शहर के भीतर नहीं आना चाहती थी। अब कोई उपाय नहीं था। शहर का वातावरण शान्त था। वे दोनों मुसाफिर चुपचाप वहाँ प्रवेश कर रहे थे। उनकी चिन्ता किसी को नहीं थी। स्टेशन वाले इस रास्ते से रोज हो मुसाफिर आते-जाते हैं। ताँगे वा [illegible] ने फिर वही सावनी झूले का गीत गा रहा था—सावन के काले-काले पानी बादल आकाश पर उमड़-घुमड़ पड़े। पृथ्वी चैतन्य हुई ...मकई के खेतों में नवीन जीवन आया......गाँव के तालाब के मटमैले में मेढ़क टरटराने लगे.........आम की डाल पर बैठी हुई कोयल पंचम में गाने

लगी.......मछुआ नदी के मैले बरसाती पानी में मछली पकड़ने के लिए बढ़ गए......।

नवीन अपने पहाड़ की बरसात से इसकी तुलना करने लगा। वह अपनी स्मृति में कोई ऐसी सजीव घटना नहीं जगा पाया। किरण चाव से उस देहाती गीत को सुन रही थी। कुछ देर बाद पूछा, "आपके नए कवि ऐसी कविता बना पाते हैं।"

किरण का वह कैसा प्रश्न था। नवीन कवि नहीं है। वह क्या उत्तर दे। सोच रहा था कि किरण ने उलझन हटा दी, "मुझ गाँवों में रहते-रहते इन गीतों के प्रति मोह हो आया है।"

कोई और वक्त होता तो नवीन ग्राम गीतों पर एक अच्छा व्याख्यान दे देता। पर वह चुप रह गया। तभी कहा किरण ने, "भैय्या कहते थे कि आप कवि हैं। इसीलिए पूछा था।"

नवीन स्तब्ध रह गया। बहुत पहले कभी हॉस्टल में एक कवि-सम्मेलन हुआ था। नवीन ने उसमें एक कविता सुनाई थी। विपिन उस बात को जानता था। उसके बाद उसने कोई कविता नहीं पढ़ी। पहले कुछ दिन तक उसे कविता लिखने का शौक रहा है, आगे वह छूट गया। विपिन उसे फिर भी कविजी ही कहता था। आज उस विशेषण पर वह विचार करने लगा, कि क्या वह सचमुच कवि बन सकता है। उसका कवि बन जाना आसान बात नहीं है। वह कभी भावुक था। वक्त के साथ वह भावुकता सूख गई। उस सूखी धरती पर एक बार सरला ने अपने आँसू बहाए। उस गीली धरती पर किरण का सवाल बीज बोता लगा। वह ताँगे वाला चुपचाप ताँगा हाँक रहा था।

अब वह उन तसवीरों पर फिर झाँकने सा लगा। गांवों में झुँड के झुँड भिखारी रहते हैं। वे पागलपन में साधुओं की तरह रहते हैं। उनका देश की आर्थिक शक्ति से कोई सरोकार नहीं है। आबादी का सत्तरहवाँ भाग खेती करता है। औसद किसान के पास पांच एकड़

भूमि भी नहीं है। लकड़ी के मामूली हल, अधमरे से बैल और इसके अतिरिक्त कोई ठीक साधन नहीं हैं। वह मिट्टी की गन्दी झोपड़ी में रहता है रूखा-सूखा आधा पेट खाना खाता है। बिलकुल अशिक्षित है। एक और शिक्षित वर्ग शहरों में रहता है। पढ़-लिख कर भी जो बेकार हैं। वे साहसहीन हैं और निराश रहते हैं। आर्थिक शक्ति का यह रूप है, गरीबी तेजी से बढ़ रही है। लोगों की शारीरिक शक्ति कम होती जा रही है। हर एक समाज की सांस्कृतिक प्रगति रुकी हुई है, समाज की सभी श्रेणियां अस्वस्थ हैं। समाज के सब व्यक्ति परेशान हैं और किसी भी कच्ची चोट से चकनाचूर हो जाते हैं।

अब वह मजदूर वर्ग के साथ रहेगा। सब साथी चाहते हैं कि उनका संगठन किया जाय। किरण का सुझाव अभी मालूम नहीं हुआ है। शहर का वातावरण और वहां की सारी बुराइयां आसानी से उस वर्ग ने अपना ली हैं। शराब पीने का रोग, जुआ, चोरी और आपसी लाग-डाँट वहां फैली हुई है। किसानों वाली नैतिक ताकत और पुरखों के खान्दान की मर्यादा की रक्षा की भावना वहां नहीं है। दूसरा वर्ग इनका अन्धविश्वासों और नशों का शिकार बनाए रखना चाहता है कि वे पतित बन जांय और कभी उठ न सकें। वह नहीं चाहता है, कि यह शोषित वर्ग उठ कर प्रश्न पूछे और कह बैठे कि यह उनका गलत शोषण हो रहा है। वह वर्ग गले-गले तक दलदल में फँस जाने पर अपने को असहाय पाता है। इसीलिए आगे कोई मांग नहीं रखता है। वह अपने भीतर सन्तोष कर लेता है कि यही उनको इस जन्म में पाना था। वे पिछले कर्मों का फल भुगत रहे हैं। अगले जन्म में शायद वे सुख पावेंगे। यह जन्म तो अब नरक में ही काटना बदा हुआ है।

किरण फिर बोली, "सरला न चाहती होगी कि तुमको इस प्रकार ले आऊँ। मैं सरला की जगह होती तो स्वयं मुझे अखरता। उसे अपना शक्ति का विश्वास था। वह मेरे पहुँचने पर नष्ट हो

गई। सरला अपनी इस हार को शायद आसानी से न भुला सकेगी।"

'सरला की हार........।"

"आपको वहाँ नहीं जाना चाहिए था। उस दरजे की लड़कियों की दुनिया बहुत सीमित होती है। वे किताबी कहानियों से जीवन को तोला करती हैं। अपनी साधारण असफलता पर ही मुरझा जाना उनके लिए आसान बात है। मैंने सरला को समझा दिया है, कि आपका हित हम सब चाहते हैं। सरला जिस दिन आपको वापस माँगना चाहे, मुझसे कह कर आपको अपने परिवार में ले जा सकती है। मैं उसके इस अनुरोध को अस्वीकार न करूँगी।"

"किरण जी..... ?"

"आपकी भूल सुधारना मेरा कर्त्तव्य था। आपने अपने व्यवहार में बहुत असावधानी बरती है। उसकी भावुकता पर आपने उसे बल न देकर, उसे नष्ट कर देना चाहा। आपने अपनी पुरुष वाली दृढ़ता ही सोची। आपको कुछ सावधानी से काम लेना चाहिए था। मैं न आ जाती तो अनर्थ हो जाता। आज सरला अब अपने को नष्ट नहीं करेगी। मुझ पर उसका बहुत विश्वास है। आप तो उसे बहुत डरा आए थे। आपने तो अपनी पिस्तौल दिखला कर उसकी हृदय की कोमलता पर कड़ी चोट मारी है।"

नवीन चुप हो गया। किरण ने उस बात की अधिक चर्चा नहीं की। नवीन सोचने लगा कि सरला की माँग का कैसा प्रश्न किरण ने रख दिया है। सरला उसे माँगेगी तो किरण उसे लौटाल देगी। एक व्यापारी की भाँति यह सौदा किया गया है सरला ने किरण के आगे सचमुच क्या प्रश्न रखा होगा। सच ही सरला बावली है।

किरण का कहना सही है, कि नवीन ने उसे पागल बनाने में सहयोग दिया है। वह बार-बार उसके हृदय पर चोटें करता रहा। वह असहाय नारी की भांति, चुपचाप उन प्रहारों को सहती रही है। किरण से संभवतः उसने सारा भेद खोल दिया होगा। इस किरण ने संभवतः उसके बारे में एक गलत धारणा बना ली होगी। वह जान बूझ कर ही केदार के घर से लौट कर सरला के पास गया था। आज वह पाप प्रकट हो गया। किरण कल सब के आगे उसे अपराधी साबित करके प्रश्न पूछ सकती है कि वह अब क्या दंड चाहता है। तो वह क्या उत्तर देगा?

उसके दिमाग में कई बातें तेजी से रेंगने लगीं। लगता था कि वहां बहुत छोटे-छोटे केचलू-फिर रहे हैं। लेकिन वे रेलवे क्रासिंग पर पहुँच गए थे। सामने अन्धकार था। वहीं धुएँ में वह बड़ी फ़ैली हुई बस्ती छुपी पड़ी थी। नवीन ने तांगा रुकवा लिया और तांगे वाले को विदा कर दिया। तांगे वाला चला गया। नवीन ने छोटा सूटकेस उठा लिया। हॉलडॉल कन्धे में डाला। किरण तो हँस पड़ी, कहा "आपको रेलवे स्टेशन पर कुली गिरी करनी चाहिये थी।" उससे सूटकेश ले लिया।

वे दोनों चुपचाप रेलवे लाइन से लगी पगडंडी पर चलने लग गए। उसे बार-बार मन में हँसी आ रही थी। वह सोच रहा था कि वह एक नई दुनिया की ओर बढ़ रहा है। अब पीछे नहीं लौटेगा। आज देश का करोड़ों जनता भूखी है। उनको खाने के लिए रोटियां चाहिएँ, मनुष्य की संस्कृति नष्ट हो गई है कि एक वर्ग दूसरे को भरपेट रोटी तक देने का पक्षपाती नहीं है। समाज की नींव पर उसकी संस्कृति का बहुत बड़ा असर पड़ता है। आज की मानव-संस्कृति पर एक वर्ग का अधिकार हो गया है, जो कि सर्वथा अनुचित है। हरएक व्यक्ति के संस्कार सड़ गए हैं। पुरानी मान्यताएँ गल गई हैं। व्यक्ति

के विचार परिवर्तन चाहते हैं। वह साफ-साफ देख रहा था कि शहर और गावों के लोगों के बीच एक सबल चेतना का प्रभाव फैल रहा है। गांधी-वाद ने एक झोंका लगाया था। फिर वह उस बीज को उपजा नहीं सका। अब वह बीज उग गया है। उस पौधे की रक्षा करनी होगी।

किरण कुछ दूर चल कर थक गई। पूछा, "अब कितनी दूर और है।"

"यही तीन-चार फर्लाङ्ग।"

"मैं तो बहुत थक गई हूँ।"

"सामान यहीं छोड़ दें।" नवीन ने सलाह दी और सूटकेश खोल कर जरूरी चीजें निकाल लीं। वहीं सामान छोड़ कर वे आगे बढ़ गए। रुक कर पूछा किरण ने, "कोई जरूरी चीजें तो नहीं छूट गई हैं।"

"नहीं, और केदार अभी आदमी भेज देगा।" यह कह तेजी से बढ़ गया।

एकाएक रेल के इञ्जन की रोशनी सामने दीखी। वे जल्दी-जल्दी आगे बढ़ गए। गाड़ी पास आई। वह फिर उनके पास से सीटी बजाती हुई निकल गई। किरण नवीन के पीछे-पीछे तेजी से बढ़ रही थी। पटरी के किनारे बरसाती घास उगी हुई थी। जहाँ कहीं पानी के तालाब थे, मेंढकों की टर्राहट सुनाई पड़ती थी। कभी वे उछल कर उनको चौंका देते थे। वे दोनों चुपचाप आगे-आगे बढ़ते रहे।

केदार साधारण मजदूरों से अलग नहीं है। पहले वह मसीन पर कमा करता था। कुछ पढ़ा था, अतएव अब मजदूरों के ऊपर उनकी हाजरी लेता है, तथा उनका काम देखता है। जब वह गाँव में था तभी उसकी शादी हुई थी। तब वह मैट्रिक में पढ़ता था। लड़का पढ़-लिख कर अफसर बनेगा, माता-पिता यही सोचते थे। एक

साहूकार से वे उदारता पूर्वक कर्ज़ा लेते रहे। शादी में भी धूमधाम रही। जिस दिन बहू आई, गाँव भर को भोज दिया गया। बहू को देख कर हर एक ने केदार के भाग्य की सराहना की। बहू को बहुत आशीर्वाद मिले। तब वह बहू तेरह साल की थी और केदार अठारह का। मैट्रिक पास कर लेने के बाद उसे नौकरी नहीं मिली। आज केदार को वह सब याद है। जिस उत्साह से पढ़ाई शुरू की थी, वह फीका पड़ गया। वह बेकार घर बैठा रहता था। लगान नहीं चुकाया जा सका। गाँव वाले उस पढ़े-लिखे केदार की हँसी उड़ाते थे। केदार अपनी बहू की दुनिया में मस्त था। उसे अपने जीवन की योजनाएँ सुनाया करता था। उसके पिताजी को साहूकारों ने परेशान करना आरम्भ किया। पिता एक जमींदार की कचहेरी से संध्या को लौटकर आए। घर पहुँच कर खाट पकड़ ली। एक सप्ताह बाद उनकी मृत्यु हो गई थी। लगान न चुकाने के अपराध में सुना, कि जमीदार के कारिन्दों ने कुछ सख्ती की थी। वह पिता का दाह संस्कार करके लौटा था कि सुना साहूकार गाय खोलकर ले गया है। केदार के आत्मसम्मान को इससे बड़ी चोट पहुँची। बहू के गहने बेचकर उसने थोड़ा कर्जा चुकाया। वह वहाँ की स्थिति से घबरा गया था। घर का अजीब हाल था। कच्ची झोपड़ी और वह भी टूटी-सी। गाँव के बीच वह अपने को व्यर्थ पाने लगा। जमींदार ने कचेहरी में बुलाकर उससे कहा था कि वहाँ नौकरी करना चाहे तो कर सकता है। केदार के मन में उसके प्रति अश्रद्धा थी वह उसकी करतूतें सुन चुका था, कि वह चरित्रहीन और पतित व्यक्ति है। वह गाँव की हालत देखता। वहाँ के आचरण पर विचार करता। पाता कि सदियों से जो परम्परागत संस्कार वहाँ फैले हुए हैं, उनमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। आबादी बढ़ गई है; पर पैदावार को बढ़ाने का कोई साधन नहीं है। लोगों को पूरा पेट खाना तक नहीं मिलता है। वह धरतीमाता आज उनको जीवित रखने में असमर्थ है।

सब वहाँ के जीवन से ऊबकर छुटकारा चाहते है। वह उन लोगों की बातचीत सुनता और पाता कि वे आगे ग्राम देवता के सहारे नहीं जी सकते हैं। धरती की सुगन्ध उनको नहीं मोह पाती है। वह कभी कुछ बातें सुनाता तो वे अवाक् रह जाते थे।

आखिर केदार ने एक दिन गाँव छोड़ दिया। अपनी बुद्धि पर भरोसा रख कर वह शहर चला आया। इधर-उधर शहर में नौकरी कर जो कुछ कमाता वह उनको भेज देता था। उसे लगा कि अब उसे गाँव से नाता तोड़ना पड़ेगा। वह माँ और बहू को शहर लाने का निश्चय कर गाँव पहुँच गया। माँ गाँव छोड़ने को बड़ी कठिनाई से तैयार हुई। वहाँ की बुढ़ियों से बिदा लेते हुए वह गद्गद् हो उठी थी। बड़ी दूर तक गाँव वाले उनको पहुँचाने आये थे। शहर माँ को पसन्द नहीं आया। वह बार-बार अपने खेतों की याद करती थी। वह गाँव देखने की लालसा को हृदय में छिपा कर मर गई। केदार बात नहीं समझ सका कि यह सब क्या हो गया है। बहू को देखता और अपनी आमदनी को। दोनों भारी उत्साह से इस गृहस्थी को चलाते थे। गांव से अब उनका कोई सम्बन्ध नहीं रह गया था। फिर भी ठीक तरह गुजर नहीं हो पाती थी। चार साल के जीवन के बाद उसने पाया कि उसकी शक्ति नष्ट हो गई है। गृहलक्ष्मी तो बिल्कुल मुरझा कर अस्वस्थ रहने लगी। अब जाकर उसे रहने को क्वाटर मिला था। तनख्वाह भी २५) माहवार मिल जाती थी। एक तरह से वह बाबू था। मन पर पिता की मृत्यु की गहरी छाप थी। गाँव के जमींदार के प्रति एक घृणा का भाव था। वह कई बार सोचता कि वह जमींदार लगान के बल पर शक्तिशाली बन कर गांव पर शासन करता है। गांव वालों का अपना कोई समाज आज नहीं है। वे लोग चुपचाप जी रहे हैं। वह उस जमींदार को आज भी माफ नहीं कर सका है। वह तो चाहता है, कि वह अपने गाँव जाकर वहां के लोगों को नया

जीवन दे। उनको समझाये कि उनकी मेहनत के बल पर जमींदार जी रहा है। उसे इस प्रकार शासन करने का कोई अधिकार नहीं है।

अपना उसका परिवार बहुत सीमित है। पत्नी का स्वभाव चिड़-चिड़ा होता जा रहा है। कभी कभी वह उससे झगड़ पड़ती है। तकरार कर केवल रूठी हुई चुपचाप नहीं बैठती। उसे कई बातें सुनाती है। अपने माता पिता को कोसती है कि किसी अच्छे घर में दिया होता, तो आज यह दिन न देखना पड़ता। यह शहर का जीवन उसे नापसन्द है। उनकी और सहेलियां देहात में आनन्द से होंगी। कभी कभी वह कपड़े पछाड़ती पछाड़ती आंसू बहाया करती थी। वह आज अनमनी और उदास भी रहने लगी है। केदार परेशान हो उठता है। दो महीने बाद एक रात्रि को उसने भेद खोला था, कि वह मां बनने वाली है। रात भर केदार सो नहीं सका था। वह पिता बनने वाला है, यह जान कर उसे बड़ी खुशी हुई थी। किन्तु वह उसकी ठीक परवा नहीं कर सका। पड़ोस की बुढ़िया ने लड़के का नाल काटा था। अधिक परिचर्या न हो सकने के कारण वह बीमार पड़ गई। वह घर की देख भाल स्वयं करता था। बीमार होने पर भी पत्नी को जिम्मेवारी कम नहीं हुई। वह डॉक्टरों से पूछ-ताछ कर सस्ती-सस्ती दवाएं उसे खिलाता रहा। पत्नी का स्वभाव बिगड़ता गया। वह खाना नहीं खाती थी। वह बड़ी खुशामद करके उसे दूध पिला पाता था। वह धौंस जमाती थी कि कँगले परिवार में आई है। पिता के घर बहुत सुख है। दो भैंस, चार गाय दूध देती रहती हैं। या अनायास कभी सुनाती कि उसे तो घुट-घुट कर मर जाना है, तब चैन की बंसी बजाया करना। केदार सब सह लेता है। किसी से शिकायत नहीं करता। वह पुरुष है और वह नारी। उसे याद था कि माँ बचपन में पिताजी पर बहुत झुंझ-लाया करती थी। लेकिन माँ एक मर्यादा का पालन करती थी। इस पत्नी की भाँति बातें कभी नहीं करती थी। वह कमजोर बच्चा कई बार

मरने का स्वांग भर चुका है। वह सोचता है कि अब कि वह जीवित नहीं होगा; पर वह बार-बार मौत को धोखा देकर जीता है। सातवें महीने वह पैदा हुआ था। अतएव वह स्वस्थ नहीं रहता है। उसकी ज्यादा चिन्ता केदार नहीं करता है। बस्ती के पास एक होम्योपैथी वाले डाक्टर रहते हैं। वे उसकी दवा करते हैं। दूसरे-तीसरे इतवार को पति-पत्नी बच्चे को लेकर वहाँ चले जाते हैं। डाक्टर दवा देकर सिर हिलाता है, कि बच्चा बहुत कमजोर है। आज पत्नी किसी प्रकार समझौता करने को तैयार नहीं है। शादी के दिनों में उसने उस लड़की में शील और गम्भीरता पाई थी। आज वह बहुत बदल गई है। आस-पास क्वाटरों की औरतें दिन को उसके पास बैठक जमाती हैं। वह सब को पतियों के खिलाफ मोर्चा बनाने की बात सुझाती है। यह सब केदार अपने साथियों से कई बार सुन चुका है।

कभी केदार सोचता, क्या पत्नी ठीक कहती है कि गरीबों को बच्चे पैदा करना जरूरी नहीं है। सच ही यह ये अपाहिज बच्चे अनाथ की भाँति समाज के नीचे पड़े रहेंगे। उनको पनपने का कोई साधन नहीं है। उनकी शिक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं है। वह इस पर भी अपनी हार नहीं मानता है। पत्नी का हर तरह से समझावेगा। चाहता है कि वह ठीक तरह से रहा करे। वह उसको सब सुख देना चाहता है। शक्ति भर कोई कमी नहीं होने देगा। वह फिर भी सन्तुष्ट नहीं रहती है, ता वह क्या करे। इसस अधिक वह कुछ नहीं कर सकता है। एक अकेली वही तो मुसीबत में नहीं है। हर एक परिवार दुःखी है। उस दुःख का स्वरूप अलग-अलग-सा है। पत्नी को धीरज देगा तो वह आँसू बहा-वेगी। वह अधिक इसलिए कुछ कहता भी नहीं है। वह चुपचाप काम करता है। अपने को हारा हुआ व्यक्ति नहीं पाता है। उसने कभी जीवन के साथ जुआ खेलने की चेष्टा नहीं की है। वह विवेक के साथ जीवन की परिस्थितियों से समझौता करता हुआ चलता है। वह एक

मशीन की तरह काम करता है। परिवार में पत्नी के उठते विद्रोह के प्रति उदासीनता नहीं बरतता है । वह जानता है, कि उसका आज का जीवन एक साहूकार और जमींदार की कृपा का फल है। वह पत्नी देहात के गाँव में रह कर अच्छा स्वस्थ जीवन व्यतीत कर सकती थी। वह मजदूरी का अच्छा अँश बचा कर अपने पुरखों के खेतों को अपने पास रख सकता था। वह पत्नी का मुरझाया चेहरा पाता है। वह पीली पड़ती जा रही है। बुखार और खाँसी रहती है। वह आज गाँव के जीवन की बार-बार याद करती है। वहां के लिए उसके मन में एक स्वाभाविक मोह है। गाँव की खुली हवा और वहां का अन्न-जल उसके शरीर को पुष्ट कर देता। चार-पांच साल उसे शहर में रहते हो गए हैं, दो कोठरियों की भीतरी दुनिया से बाहर वह नहीं गई है। वह उसकी विवशता और निर्बलता का अनुमान लगा कर चुप रहता है। जानता है कि वह झूठ बात नहीं कहती है। कभी-कभी उसकी बातों में तथ्य रहता है। वह उसकी बातों से इसीलिए अप्रसन्न नहीं रहता है, कि उसका पति के अलावा और कोई सगा नहीं है। उसी से लड़ती है, झगड़ती है।

केदार आज तक सदा प्रसन्न रहा है। जीवन की किसी परिस्थिति में उसने अपने को धिक्कारा नहीं है। वह अपने में बहुत दृढ़ है। एक अचैतन्य निम्नता उसे घेर लेती है। उसके फौलादी कड़े दिल से भावुकता टकरा कर चूर-चूर हो जाती है। वह अवसर पर बरसाती कैंचुएँ की तरह सिकुड़ जाना जानता है। वह किसी बात के लगाव से अधिक सम्बन्ध नहीं रखता है। वह सदा से अपने साथी मजदूरों को समझता रहा है। उनको दिलासा देता है। उनको उनकी शक्ति का सही रूप सुझाता है। परेशानी के समय हिम्मत बढ़ाता है। दुःख-सुख में सहारा देता है। कभी-कभी वह उनको नए जोश में क्रान्ति की चिंगारियाँ सौंप देता है। सब उसका आदर करते हैं। अपने भीतर

एक विद्रोह यदा-कदा उमड़ पड़ता है कि उसकी पत्नी का जीवन नष्ट हो रहा है। वह उसकी कई धुँधली तसवीरें टटोल-टटोल कर पा जाता है। पाँच छ साल के बाद पाता है कि उन सब पर धूल पड़ गई है। वे बहुत मैली लगती हैं। कभी तो उसका दिल भर आता है। वह उन आँसूओं को चुपचाप पोंछ डालता है कि कोई देख न ले। वह पिछले जीवन की ओर न झाँक कर आगे के संघर्ष का खाका खींचने पर तुल जाता है। भविष्य पर उसे बड़ी-बड़ी उम्मीदें हैं। वह अब अपनी शक्ति पर विश्वास करता है। इतना जान गया है कि एक-एक मानव शक्ति का प्रतीक है। कोई कमजोर नहीं है। वह अपने साथियों के बीच अपनी साधारण सी हैसियत रखता है। साधारण मजदूर से बड़ा अपने को नहीं गिनता है। वह इन मजदूरों के अधिकारों की बात की पूरी पूरी जानकारी रखता है। प्रत्येक सवाल को तोलना जानता है। अपनी मजदूरों की संस्था के साथ सहानुभूति के साथ काम करता है। वह उन अपढ़ों को उनके अधिकारों की बातें सावधानी से समझाता है। सब का विश्वास पात्र है। सब उसके लिये प्राण देने को तत्पर रहते हैं केदार अपनी इस हैसियत पर कभी नहीं सोचता है। पत्नी व्यंग करती है कि पहले घर का फैसला तो किया करो, मोहल्ले वालों की वाहवाही से घर वालों का पेट नहीं भरता है। मैं तो इस घर में जल-जल कर राख हो गई हूँ। वह तभी हँस कर कहेगा वह तो तुम्हारी अदालत है वहाँ तुम्हारी हुकूमत चलती है।

शहर की स्थिति भली नहीं है। वहाँ कई मिलें हैं। उद्योगों के उस महान केन्द्र में एक बड़ी तादाद में मजदूर रहते हैं। केदार सब से परिचित-सा है। हर एक मिल की अपनी ही कुछ समस्याएँ हैं सब जगह मजदूरों का शोषण हो रहा है। उनकी हालत खासो भली नहीं है। सब की स्थिति डांवाडोल है। मजदूरी की दर कम, छोटे छोटे सवाल उठाने पर बरखास्त कर देना, बेकारी....। सब के अस्वस्थ गृहस्थ, बच्चों की

शिक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं, रहने का ठीक सा ठिकाना नहीं......। सब की समस्याएँ एक सी ही थीं। इसीलिए सब एक रूप में बंध रहे थे उनका बन्धुत्व अपनी सीमाओं के भीतर पूर्ण था। पिछले दिनों सब ने अपने अधिकारों के लिए हड़ताल की थी। सब डटे रहे। उनको आशा तीत सफलता मिली थी। आज वे अब अपनी उस संस्था से स्नेह करते हैं। केदार उनको आज रास्ता दिखलाता है। वे उसके हर एक आदेश का पालन करने के लिये तैयार रहते हैं।

इधर कुछ पागल लड़कों ने एक क्रान्तिकारी दल की स्थापना की है। उनको विश्वास है कि वे अपने आतंकवाद से सफलता प्राप्त कर लेंगे। वे अभी पूर्ण सफलता नहीं पा सके हैं। उनको हर एक मोरचे पर पीछे हटना पड़ रहा है। उस दल ने अपनी सीमाएँ कुछ युवकों के गिरोह तक सीमित करदी हैं। वे वर्षों तक आगे नहीं बढ़ सके। कुछ फाँसी पा गए और अधिकतर जेलों में पड़े रहे हैं। वे लोग अब नया रास्ता ढूँढ़ निकालना चाहते हैं। वे अब व्यक्तिगत क्रान्ति से वर्ग क्रान्ति को समझ लेने पर तुल गए है। अभी वे इस ओर बहुत साफ नहीं सोच पाते हैं। पुराने साथी आज भी अपनी उन आतंकवादी चर्चाओं को उठाते हैं। कुछ यदि संदेह प्रकट करते हैं तो वे असन्तोष प्रदर्शित करते हैं। आज कुछ लोग किसान और मजदूर आन्दोलनों की अगुआई पर विश्वास करते हैं, केदार उनके साथ है। वह नवीन से मजदूरों के प्रश्न पर बहुत सी बातें उठा कर उससे परामर्श लेना चाहता है। वह तो चाहता है कि नवीन यहाँ की स्थानीय स्थिति से परिचित हो जाय। किरण अभी नहीं आई थी। वह चुपचाप बाहर बैठा हुआ था। बीबी ने आज चौथे दिन चूल्हे की ओर देखना शुरू किया था, अभी अभी वह बहुत कुछ उगल कर शान्त हुई है। केदार बच्चे को गोद में लिए उसे सुला रहा था। न जाने उसके मन में कितनी बातें उमड़-घुमड़ रही थीं। कभी वह एकाएक गम्भीर हो

जाता था। फिर स्वयं ही चिन्ता मिट जाती। तभी किसी ने दरवाजा थपथपाया। देवीजी के कान चौकन्ने हो गए।

नवीन का स्वर था, "केदार।"

केदार ने कुंडी खोली। किरण और नवीन भीतर आए। वह तो किरण को देख कर बोला, "कब आई हो किरण।"

तुम नवीन जी से बातें करो। मैं भाभी के पास जाऊँ। यह कह कर किरण ने बच्चा ले लिया। रसोई में पहुँच कर भाभी के चरण छू लिए।

पत्नी चुपचाप उसे देख रही थी। फिर कढ़ाही पर तरकारी झोंकती रही।

बोली किरण, "क्यों पहचानोगी भाभी। कभी देखा थोड़े ही है। केदार भाई ठहरे कंजूस आदमी। कभी कहा थोड़े ही होगा। मैं यहाँ रहने नहीं आई हूँ और मेरा नाम है किरण। क्यों तुम क्या देख रही हो। अच्छा पहचान लो।"

पत्नी ने किरण को पहचान लेने की चेष्टा तो की पर असफल रही। यह उनकी कौन सी बहन है। सच, आज तक नहीं बताया गया। नवीन को वह जानती है। इसे उसने कभी नहीं देखा है। वह उलझन में उसे देखती रह गई। फिर चूल्हा फूंकने लगी।

'क्या हो रहा है किरण। तू ही मना ले उसे। मुझसे तो वह नाखुश है। अभी तक मुँह फुला रखा था। तुम लोग न आते तो मेरी खैरियत थोड़े ही थी।' वह हँस पड़ा।

पत्नी मुरझा गई। यह कैसी शिकायत थी? किरण ने स्थिति सुलझाई "यहाँ रहते ऊब गई हो न भाभी, चार-पाँच साल से देहात नहीं देखा है। इसीलिए लेने आई हूँ। मेरे साथ गाँव चली चलो। वहीं हम रहेंगे। भला यहाँ शहर में किसे भला लगेगा। कब चलोगी? सुना कि यहाँ तो तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं रहती है।"

पत्नी किरण को देख रही थी। वह मोहनी सी है। वह जो बातें कर रही थी, उससे उसके मन कों कुछ शान्ति मिल रही है। उत्तर क्या दे, यह नहीं समझ सकी। वह बार बार किरण को देखती और फिर चूल्हा फूँकने लगती थी। लेकिन किरण कब मानने वाली थी। कहा ही, सोच रही होगी भाभी कि क्यों दूसरे के घर जाया जाय। लेकिन यह सही बात नहीं है, केदार भाई तो वहाँ कई बार हो आए हैं। सुनो केदर भाई।"

"क्या है किरण ?"

"आपको हमारा गाँव कैसा लगा।"

"क्यों बात क्या है ?"

"मैं वहाँ भाभी को ले जाने की सोच रही हूँ। यहाँ उसकी तबीयत ठीक नहीं रहती है।"

"क्या तय कर लिया है।"

"मैं भी वहाँ अकेली ही हूँ। साथ हो जायगा।"

"वह क्या कहती है ?"

"भाभी चलने को राजी है।"

"तब मुझसे पूछना बेकार है। तू ले जा अपनी भाभी को।"

पत्नी इस चर्चा पर अवाक् रह गई। वह बिलकुल गूंगी-सी बैठी हुई थी। किरण की ओर बार-बार देखती थी। केदार पर उसे अभी तक गुस्सा चढ़ा हुआ था। वह उसकी कोई परवा नहीं करते हैं। उलटे उसे कोसते हैं कि वह बीमार रहती है। कभी तो वह जरा सोचती है कि उसका वह व्यवहार ठीक नहीं है, फिर वह लड़का उसे परेशान कर देता है। वह उसके मारे तंग है। वे भी उसे रोता देखेंगे तो चुपचाप बाहर खिसक जायेंगे। केदार उसी भाँति खड़ा रहा। किरण की गोद पर बच्चा सो गया था। उसने उसे चारपाई पर सुला दिया। तब आकर फिर बोली, "चलना पड़ेगा अब तो। वैसे ही

पीछा छोड़ने वाली नहीं हूँ । दो-चार महीने रह कर चली आना ।"

वह फिर भी न सोच सकी कि क्या उत्तर दे ।

"अच्छा तो नहीं चलोगी । भला दूसरे के घर कौन जाता है ।"

भाभी आँखें फाड़-फाड़ कर उस किरण को देख रही थी । वह लड़की उसके बहुत पास पहुँच गई थी । वह उसके सवालों का अब उत्तर देगी । यहाँ से ऊब उठी है । किरण के साथ चली जावेगी । पर क्या वे भेजना स्वीकार करेंगें ?

"कुछ बोलो तो भाभी ।"

"चलूँगी ।"

"कब ?"

"यह उनसे पूछ लो ।"

"केदार भाई तब अब आपको क्या कहना है ? यहाँ तो यह रोगणी होती जा रही है । वहां ठीक हो जावेंगी । मैं सोचती हूँ कि............... ।"

"तीन-चार दिन में चली जावेगी ।"

"कल तक न इन्तजाम कर दो । हमारे गाँव की गाड़ी धर्मशाला में टिकी हुई है । मैं कल रात जाने की सोच रही हूँ ।"

"मैं किरण से सहमत हूँ ," बोला नवीन ।

केदार चुप रहा । फिर नवीन और केदार बाहर चले गए । बड़ी देर के बाद वे सामान लाद कर लौटे । किरण चुपचाप सो गई थी । केदार की बहू ने सुनाया कि उसकी तबीयत ठीक नहीं है । नवीन स्वयं बहुत थक गया था । वह बाहर चारपाई पर लेट गया । वह सो गया था । केदार ने जगाया कि कुछ खाना खा लो । उसने मना कर दिया और फिर चुपचाप बाहर पड़े खटोले पर लेट गया । उसे नींद आ गई थी ।

वह बड़ी सुबह उठ बैठा । उस बस्ती से बाहर निकल कर रेलवे लाइन की ओर घूमने निकल गया । लौट कर आया तो देखा कि

किरण रसोई बना रही थी। अब वह उठ कर बोली, "भाभी अपनी रसोई संभालो।"

उनके आ जाने पर उससे बच्चा ले लिया। केदार घर पर नहीं था। नवीन और किरण भीतर बैठ गए। किरण ने नवीन को कई बातें बताईं। किरण की बातें वह चाव से सुन रहा था। किरण नवीन से सहमत था, कि पिछले क्रान्तिकारी आन्दोलन असफल हो गए थे। वह यह स्वीकार कर रही थी, कि बिना जनता के सहयोग के किसी आन्दोलन को सफलतापूर्वक नहीं चलाया जा सकता है। फिर भी वह सुझाने लगी कि उनके सब साथी आज भी उस पिछले आन्दोलन को सही मानते हैं। उनकी दृष्टि में छोटे-छोटे दलों द्वारा हत्या कर के आतंकवाद से जनता में जोश फैलाना सही रास्ता है। अतएव नवीन को उन लोगों के साथ बहुत समझदारी के साथ चलना होगा। वह कई व्यक्तियों के सम्बन्ध में अपनी राय उसे बता रही थी, कि उनसे किस तरह सहयोग लिया जाय। नवीन कुछ परेशान लगता तो वह उसकी उलझन हटा कर सही रास्ता बतला देती। नवीन किरण की सूझ से अवाक् रह गया। उसके व्यक्तित्व की चर्चा वह लोगों से सुन चुका था। आज उसके तर्क सुन कर दंग रह गया। वह किरण इतिहास के विद्यार्थी की भांति अपनी सफलताओं और असफलताओं की बात समझा रही थी। कई घटनाओं का उसने उल्लेख किया जिनकी जानकारी नवीन को नहीं थी। आज किन परिस्थितियों में नवीन को फिर से बिखरी हुई शक्तियां बटोरनी हैं, यह वह सुना चुकी थी। नवीन सब सुन रहा था। कई बार वह प्रश्न पूछ लेता था। किरण उत्तर देती। यदि नवीन किसी बात पर उसका मत चाहता तो वह चुपचाप कह देती थी, कि वह नवीन का काम है।

तभी बाहर से पुकार हुई, "किरण।"

वह बाहर चली गई। दो प्यालों में चाय ले आई। नवीन चाय

पी रहा था। वह देख रहा था कि किरण ने आकर केदार की गृहस्थी में एक नया जीवन उड़ेल दिया है। वह पत्नी जो कल तक मुरझाई रहती थी, आज वह अपनी निराशा भूल गई है। चाय पीकर उसने प्याला एक ओर रख दिया। किरण ने दूसरा प्याला बढ़ाया तो वह पूछ बैठा, "तुम नहीं पियोगी।"

"मुझे आदत नहीं है। जाड़ों में कभी-कभी सुबह को पी लेती हूँ।"

नवीन ने दूसरा प्याला ले लिया। उसे चुपचाप पीकर प्याला एक ओर रख दिया। किरण चुपचाप बैठी हुई थी। केदार आ गया था। उसके आने पर वे लोग स्थानीय स्थिति पर बड़ी देर तक बातचीत करते रहे। किरण अब रसोई में चली गई थी और भाभी के अनुरोध पर खाने लगी थी।

दिन को केदार अपने आफिस चला गया। नवीन और किरण ने फिर एक बार सारी घटनाओं का सिंहावलोकन किया। नवीन ने पाया कि वह आसानी से सब कुछ समझ रही थी। अपनी व्यक्तिगत भावुकता का प्रवाह कहीं नहीं था। नवीन कहीं पर कुछ पूछ कर सन्देह प्रकट करता तो किरण कहती कि व्यवहार में कठिनाइयां तो सदा आवेंगी। ज्यामेटरी की लकीरों की भांति जीवन के नियम कभी नहीं चलते हैं। बस वह चुप हो जाता था। किरण अब सो गई थी। नवीन बाहर चला आया। वह शहर नहीं जाना चाहता था। उसे भय था कि कहीं सरला मिल गई तो क्या होगा? वह बस्ती से बाहर घूमने निकल गया। वहाँ एक फार्म में पहुँचा और निरुद्देश्य घूमता रहा। शाम हो आई तो वह जल्दी-जल्दी लौट आया।

वहाँ पहुँचने पर सुना कि केदार गाड़ीवालों को सब कुछ समझा आया है। रात को आठ बजे उन लोगों को खाना तैयार करना होगा। पत्नी खाना बना रही थी। किरण रसोई में मदद कर रही थी। नवीन

चुपचाप भीतर चारपाई पर बैठ गया। किरण ने उसे कुछ आवश्यक कागज दिए। नवीन ने रुपए की बात पूछी तो बोली वह, "सरला ने दे दिए थे फिलहाल काम चल जायगा।"

"सरला ने.........।"

"उसने एक लिफाफा दिया है। मैंने लेने से आनाकानी की तो वह रोने लगी। मैं अधिक झगड़ा नहीं बढ़ाना चाहती थी। वह तो पागल लड़की है। मैंने लिफाफा ले लिया।"

किरण ने वह लिफाफा नवीन को लाकर दे दिया। आश्चर्य में नवीन ने देखा कि उस में सौ-सौ के पाँच नोट थे।

किरण अपना सामान संभालने लगी। पूछा, "बरसाती हम लोग ले लें।"

नवीन ने सिर हिलाया। वह सरला की नोटों वाली बात पर सोच रहा था। किरण और उसमें यही अन्तर है, कि वह सहृदय नहीं है। नवीन लिफाफा लौटा रहा था कि पूछा किरण ने, "कितना रुपया है?"

"पाँच सौ।"

"मैं तो समझती थी कि हजार-डेढ़ हजार होगा। तब तो उसने हम लोगों की बड़ी सस्ती बिदाई की है।"

नवीन कुछ नहीं बोला तो कहा फिर, "आपके पास छोटे नोट हों तो सौ रुपए के दे दीजिये। मुझे ज्यादा रुपये की जरूरत इस समय नहीं है। इनको आप अपने पास रख लीजियेगा। हाँ और केदार भैय्या भाभी और बच्चे के लिए कुछ सामान तो ले आइए। बेचारी के पास ठीक कपड़े तक नहीं हैं।' कह कर दस-दस के तीन नोट केदार को दे दिये। केदार चुपचाप चला गया था।

किरण के मिलने के बाद से नवीन चुपचाप उसे भाँप रहा है और अब तक उसने पाया है कि वह हर एक बात में चतुर है। वह बाहर

दालान में खड़ा था कि बोली किरण, "खाना खा लीजिए।"

नवीन खाना खाने लगा। कुछ देर के बाद खाकर उठ बैठा। किरण ने बच्चा उसे सौंप कर कहा, "मैं भी खाना खा लूँ।" जल्दी खाना खाकर निपट गई और सब सामान ठीक तरह से बाँध कर रख लिया।

केदार आ गया था। उसकी बहू आस-पास के क्वार्टरों में अपनी हमजोलियों से मिलने चली गई थी। बाहर दो इक्के केदार ले आया था। वे सब उन पर चढ़ गए। धर्मशाला में पहुँच कर नवीन और केदार ने लोगों को ठीक तरह बैलगाड़ी पर बैठाया। बैलगाड़ी चली गई। नवीन और केदार चुपचाप क्वार्टर लौट कर आ गए।

अब बोला नवीन, "अविनाश के लिए मुझे दुःख है। किरण ने आज दिन भर उसकी कोई चर्चा नहीं की।"

"वह क्या करती? यह रोज का ही झगड़ा था। उसकी करतूतों से तंग आ गई था। उससे हम लोगों का अहित हो रहा था। किन्तु यहाँ की स्थिति भली नहीं है। उसके साथी सम्भवतः इस स्थिति से कुछ नया नाटक रचने की सोच लें। सुना कि पुलिस ने चुपचाप लाश जलवा दी। कल शाम को मजदूर एक सभा करेंगे।"

नवीन जानता है कि अविनाश को किरण कितना प्यार करती थी। विपिन तो कहता था कि किरण ही अविनाश को बिगाड़ रही है। पहले वह इतना उद्दंड नहीं हो जाता। आज अब किरण ने तो ममता की डोरी को स्वयं ही काट दिया है। वह नहीं चाहती कि उसके इस कर्त्तव्य पर कोई उससे प्रश्न पूछे।

सरला पर भी किरण ने कुछ नहीं कहा था। आज उसकी कोई चर्चा नहीं की थी। रुपए की बात प्रसंगवश उठी और दब गई। वह सरला के सम्बन्ध में अपना कोई मत प्रकट करके रुकावट नहीं डाल

रही थी। वह बोला, "केदार आज हर एक व्यक्ति कम से कम स्वतंत्र होने की बात तो सोचता है। इस स्वतंत्रता को पाना आसान नहीं है। बीच में कई रुकावटें हैं, हमें उन पर विजय पानी है। अविनाश की हत्या के कारण यहाँ जो परिस्थिति उत्पन्न होगी, उसे तुमको सावधानी से संभाल लेना है। सब को समझाना होगा कि उनको एक बड़े आन्दोलन की तैयारी करनी है। मुझे विश्वास है कि तुम अपने प्रयास म सफल होगे।"

केदार चुपचाप सुनता रहा। वह सारी बातों को जानता है। यहाँ की स्थिति से परिचित है। वह स्वयं इस सब ने सुलझाने की चिन्ता में था। सब बातें व्यवहार में आसान नहीं होती हं। समय और परिस्थिति पर सदा कोई नई बात स्वयं सूझ जाती है। अविनाश के पिछले दिन वाले परचे को पढ़ कर वह स्तब्ध रह गया था। जब उसने अविनाश की मौत की बात सुनी तो दंग रह गया। उसकी धारणा थी कि वह खून किसी सङ्गठित शक्ति द्वारा हुआ है; किन्तु किरण यह करेगी विश्वास न था। किरण को कभी गुस्सा नहीं आता है। वह स्वयं चाहता था कि कुछ दिन अकेला रहे। किरण उसे उबार लिया अन्यथा वह उस घुन लगी गृहस्थी से घबरा उठा था। सोचा कि वह अब चैन से रहेगा। गाँव के जलवायु से पत्नी स्वस्थ हो जायगी। वह अब सारा समय सङ्गठन के लिए देगा। किरण स्वयं यही चाहती थी। अब उसे कोई कठिनाई नहीं है। वह हर एक मजदूर से मिलकर बातें करेगा। वह बहुत खुश था कि आज वह पाँच साल के बाद मुक्त हुआ है। वह मानो कि पांच साल की जेल काट कर छूटा हो। उसे तो अब नया कार्यक्रम तैयार करना है।

नवीन कह रहा था, "केदार, इस समाज में हर एक व्यक्ति को अच्छी तरह रहने की सुविधा चाहिये। इस से अधिक माँग किसी की नहीं है। अविनाश बात सही कहता था, पर उसे वक्त को पहचान नहीं

थी। उसका प्रभाव बहुत लोगों पर है। वह जोश सही नहीं है। उसके पीछे सही शक्ति नहीं है। किरण से मैंने बातचीत की थी। विपिन पर शीघ्र ही मुकादमा चलने वाला है। वह उसकी पैरवी करने की तैयारी कर रहा है। फिर वह गाँव में रहना चाहती है। उसने अपने गाँव में आस-पास के किसानों के बच्चों के लिये एक मदरसा खोला है। वह वहाँ सब को नए युग के लिये सिपाही बनाना चाहती थी। वह अभी शहर से दूर रहना चाहती है।"

"आप तो यहीं रहेंगे। क्या विचार किया है?"

"किरण ने मुझ से तो यही कहा है, कि मैं सब साथियों से मिल कर फिर आगे के कार्य पर विचार करूँ। मैं उससे सहमत हूँ। जो शक्ति बची हुई है, उसी को नए सिरे से जमा करना चाहता हूँ।"

"मैं चाहता था कि किरण कुछ दिन यहाँ रह जाती तो ठीक होता।"

"वह स्वयं चाहती थी कि तुमको सहायता दे, पर एकाएक वह घटना घटी। वह दूर इसी लिये चली जाना चाहती थी। मैंने रोका नहीं।"

"आप क्या किरण के गाँव जावेंगे......।"

"नहीं तो। हाँ केदार, सरला हम लोगों के साथ आना चाहती थी।"

"सरला! आप क्या कह रहे हैं?"

"मैं सोचता हूँ कि उसका उपयोग हम कर सकते हैं। आज भले ही अपने साथ नहीं रख सकते। मैंने इसी लिये उसकी बात स्वीकार नहीं की। किरण से इस पर कभी राय ले लूँगा।"

"क्या सरला ने कहा था।"

"वह हमारी सारी शर्तें मानने के लिए तैयार है।"

"किरण जानती है।"

'सरला ने किरण से संभवतः यह बात कही होगी। किरण से

यह प्रश्न पूछना आसान नहीं है। वह नहीं चाहती थी कि मैं इस सरला के यहाँ टिका रहूं। साधारण चेतावनी उसने दी है। स्वयं सरला के समीप नहीं रहना चाहता हूँ। तुम क्या करोगे केदार।"

"नवीन, मैं तो अपनी गृहस्थी का अनुभव जानता हूँ। पग-पग पर रुकावटें हैं। फिर मनुष्य के स्वभाव की परख करता हूँ तो आश्चर्य चकित रह जाता हूँ। वह जितना ऊँचा उठ सकता है, उतना ही नीचे आसानी से गिर भी जाता है हर एक व्यक्ति पर यह बात लागू है।"

"क्या कहा केदार?"

"मैं स्वयं इस गृहस्थी की झंझटों से ऊब कर सोचता हूँ कि यह विवाह करना मेरी हार थी। कभी तो जीवन में अपनी हार स्वीकार कर लेता हूँ। लेकिन आप लोगों का सम्पर्क पाकर सारी कठनाई भूल जाता हूँ।"

"हाँ, तुम्हारी गृहस्थी सच ऐसी ही लगती है। लाखों गृहस्थों का यही हाल है! कभी-कभी मैं उन सुफेदपोश बाबू लोगों की गृहस्थी की ओर झाँकता हूँ तो लगता है कि वे और भी कमजोर हैं। लेकिन उनका उपहास उड़ाना हितकर नहीं होगा!"

"सरला की बात तुम तो कह रहे थे नवीन।"

"सरला को भूल जाता हूँ केदार। किरण ने ठीक सलाह दी है। उसकी सगाई तय हो चुकी है। पति पाँच-छै महीने में लौटने वाले हैं। वे बैरिष्टर हैं। उनका विवाह हो जायगा। वह अपनी समूची भावुकता को गृहस्थी के नव निर्माण में लगा देगी। मुझे प्रेम कहानियों पर कभी विश्वास नहीं रहा है। यह खेल भी सरला ने ही खेलना शुरू किया था।"

"सरला ने खेल····।"

"वह इस नाटक का स्टेज पूरा रच कर आई थी। मुझे किसी बात का ज्ञान नहीं था। स्वयं मैंने अधिक छानबीन नहीं की। अब उन

बातों पर सोचता हूँ तो सरला के साहस पर दङ्ग रह जाता हूँ। लेकिन सरला को सीमाएँ निर्धारित करने का ज्ञान नहीं है। अन्यथा वह इस प्रकार अँधेरे में भटकने का झूठ प्रयास कदापि नहीं करती।"

"आपसे क्या कहा था उसने।"

"केदार, वह बहुत कुछ कहना चाहती थी। मैंने उसे उकसाया नहीं। उसे साधारण सलाह देकर बतला दिया कि मैं उसके लिए सीमाएँ बना चुका हूँ। वह हमारी राह पर नहीं चल सकती है। वह सन्न सी सब कुछ सुनती रही। किसी बात को कह कर तकरार नहीं बढ़ाई। लड़कियों को बहका देना बहुत आसान धन्धा है। थोड़ा बुद्धि पर भरोसा हो तो कोई धोका नहीं खा सकता है। सरला लड़की है! वह चुप रह गई।"

नवीन चुप हो गया। वह अपने और सरला के बीच के फासले को अब व्यर्थ क्यों इस बात से तय करना चाहता है। किरण के कथन के बाद तो उसे बिलकुल चुप रह जाना चाहिए है। वह केदार को क्यों सुझाता है कि सरला बहुत ही निर्बल लड़की है। जिसकी भावना को लेकर वह एक झूठी माया-जाल वाली दुनियां बसा सकता है। कल्पना लोक की ओर पलायन करने वाला युग तो अब समाप्त हो चुका है।"

केदार चुपचाप उस नवीन की ओर देख रहा था। वह नवीन एक साधारण मनुष्य ही है। वह उसे बहुत नहीं पहचानता है। विपिन अक्सर उसकी चर्चा किया करता था। वह उसे चंद घंटों की पहचान में ही अपने बहुत समीप पाने लग गया है। वह नवीन कहीं यह साबित नहीं करता कि वह उन सबसे अधिक जानकार है। इसके विपरीत वह बार-बार उनके अनुभवों से स्वयं कोई रास्ता ढूँढ लेना चाहता है। वह नवीन को आज बहुत भार नहीं सौंपना चहता है।

उसे चुप देखकर कहा नवीन ने, "तुमको जल्दी ही यह नौकरी

छोड़देनी होगी। फिलहाल तुम मजदूरों के लिए कोई योजना तैयार करलो। मैं सब लोगों से मिल कर उन सब को इकट्ठा करूँगा ताकि कोई सही सा कार्यक्रम बना सकें। हमें सब लोगों को अपने आन्दोलन में लेना होगा। मध्यवर्ग, मजदूर, किसान, विद्यार्थी तथा और सब लोगों को एक करना होगा। हरएक के अपने अपने सवाल हैं, उनको उनके संगठनों द्वारा हल कराने में सुविधा रहेगी। सबकी शक्ति एकत्रित कर लेनी चाहिए। सब विरोधी शक्तियाँ जब मिल जायँगी, तो असाधारण सफलता बहुत बल पा जायगी। हमें क्या-क्या चाहिए यह सब सोचना होगा। अभी तो मैं तुमको अकेला ही छोड़ रहा हूँ।"

"क्या आप जाने की सोच रहे हैं?"

"मुझे तो यही उचित लगता है।"

"क्यों?"

"अविनाश की हत्या के बाद .. ..?"

"किरण ... ।"

"वह यहाँ लौट कर नहीं आवेगी। तुम यहाँ हो ही। हम निश्चिंत हैं कि तुम सारी स्थिति को संभाल लोगे। उधर राजनीतिक कैदियों की भूख हड़ताल का सवाल हल करना है। और कई जरूरी काम हैं।"

केदार चुप रह गया। वह बहुत कुछ बातें करना चाहता था। लेकिन नवीन तो जाने की सोच रहा है। नवीन से अधिक बातचीत फिर नहीं हुई।

—नवीन दिन की गाड़ी से चला गया। साँझ को केदार घर लौट कर आया तो वह घर बहुत सूना-सूना लगा। पाँच साल बाद आज वह एकाएक अकेला हुआ था। वह किरण, सरला और नवीन पर सोच रहा था। अविनाश भी एक प्रश्न छोड़ गया था। जिसके उत्तरदायित्व का सम्पूर्ण भार उसे ही निभाना होगा। नवीन ने जितनी बातें कही थीं,

उन सबसे केदार की जिम्मेदारी बहुत बढ़ गई है। वह कई बातों पर सोच रहा था। उस शहर का जीवन आज उत्तेजना की तहों के बीच था। केदार सोचता है कि क्या वह सचमुच परिस्थिति संभाल लेने में सफल होगा। वह चुपचाप अपने साथियों से मिलने चला गया। वे अब मिल कर जरूर कोई रास्ता ढूँढ़ लेंगे।

सरला का वह शहर नवीन ने छोड़ दिया है। किरण उसे एक बहुत बड़ा भार सौंप गई थी। केदार का वह उलझा सा छोड़ आया था। सब कुछ कई साधारण गुत्थियाँ लगीं। अविनाश की मौत जिस पर कि वह अकसर सोचा करता है कि आदमी एक दिन आसानी से मर जाता है; मौत का रहस्य उसकी अपनी समझ के दायरे की बात नहीं है। केदार की वह गृहस्थी जो कि साधारण रूप में बहुत कच्ची पड़ गई थी। किरण, सरला और तारा नारी की तीन सही छायाएँ सी लगती थीं। वह मनुष्य के बनाए हुए उस बुद्धिवाद पर सोचने लगा। आज की सभ्यता मानों चुनौती दे रही है कि वह निर्माण की सही नींव पर बनी हुई है। आदि काल से इन्सान का सांस्कृतिक विकास होता रहा है। जो धातुएँ जीवन में विकार की भांति पड़ी रह गई हैं, उनसे सदा ही छुटकारा मिला है। आज तो नवीन को वह सुविधा नहीं कि वह पहाड़ की किसी ऊँची चोटी पर बैठ कर भविष्य की ओर झाँक लेने का निरर्थक चेष्टा करे। वहां वह आसानी से स्वस्थ मन से सब पर सोच लिया करता था। या फिर गंगा के किनारे फैली चट्टानों पर बैठ जाना। वे चट्टानें अतीत के सामन्तवादी राजाओं के महलों के भग्नावेश मात्र हैं। गंगा की बाढ़ ने एक दिन सब कुछ बहा दिया था। आज अब वहां उन राजाओं की स्मृति का कोई चिन्ह नहीं है। केवल कुछ दन्तकथाएँ बूढ़ों द्वारा उनके युग तक पहुँची है। जो ज्यादा सुखद नहीं। गोरखाओं ने नेपाल से आक्रमण किया था। गोरखाओं का थोड़े समय का शासन

काल ! गोरखाणी शब्द के भीतर एक आतंक काल की स्मृति मात्र रह गया था। उस सैनिक जाति ने वह विजय अपनी शक्ति का परिचय देने मात्र के लिए की थी। उनकी भविष्य में वहां अपना राज्य स्थापित करने की आकांक्षा नहीं थी। उसके बाद गोरखा युद्ध हुआ। उस युद्ध की दन्तकथाएँ उसने सुनी है। अधिक परिचय किसी बात का नहीं है। वह इतिहास में भी चद लाइनों क अतिरिक्त उसके सम्बन्ध में और कुछ नहीं पाता है। लेकिन उसका अपना समाज गढ़ियों के जीवन, जहां छोटे सामन्त रहते थे, वहां से बाहर के शासन सूत्र में बध गया। वह हिन्दुस्तान का एक जिला रह गया, जिसकी राजधानी दिल्ली थी।

तारा गृहस्थी की अपनी दुनियां का भार भली भांति संभाल लेती है। उसकी उस गृहस्थी को देखने के लिए न जाने वह कब जा सकेगा। वह इस भांति दूर एकान्त में भाग कर क्या करेगा? यह उसके जीवन की हार होगी। उसे अब बहुत काम करने हैं। व्यक्ति का अपने चारों ओर सीमा बांध कर, वहां व्यर्थ म अकेले-अकल रहकर, जीवन नष्ट कर देना, समाज के लिए कल्याणकारी भावना नहीं है। हरएक व्यक्ति को समाज को अपनी शक्ति और बुद्धि देनी होगी। समाज के भीतर अपना छोटा कमरा न बना कर, एक बड़े समाज के भीतर, प्रवेश करना चाहिए। जिसे मानव समाज कह सकते हैं। इसी भावना के सम्मुख नवीन आज खड़ा है। वह उसे भली भांति समझता है और जानता है कि आज समाज का जो रूप है, भविष्य में वह बिल्कुल बदल जायगा। उस भविष्य का निर्माण, आज वर्त्तमान पर पूरा-पूरा निर्भर है। वह व्यर्थ अपने मन की भावुकता तारा को सौंपता है। तारा के प्रति उसका अपना कर्त्तव्य है, वह उसका भाई है। वह तारा उसके परिवार से बाहर दूसरे परिवार में सब नाता तोड़ कर चली गई है। समाज के प्रति यह कर्त्तव्य वह तो जानता ही है।

किरण कुछ नहीं कह गई थी। मानः कि वह नवीन को अपनी किसी बात का भार न सौंपना चाहती हो। वह तो सरला को भांति बचपन में गुड़िया के अपेक्षित खेल से परिचित नहीं है। तारा की गुड़िया वाली दुनिया की जानकारी उसे पूरी-पूरी है। आलमारी का एक पूरा खाना गुड़िया व गुड्डे और उनके समान से भरा रहता था। वह सरला का गुड़िया वाला आभार नहीं चाहता है। किरण से वह कई सवाल पूछना चाहता था। समय नहीं मिला। किरण आज अपने देहात की ओर बढ़कर वहीं रहना चाहती है। केदार की पत्नी का भार ले कर वह चुपचाप चली गई थी। सरला की भांति वह मन की बातें कहने की आदी नहीं है। उसे कुछ अधिक कहने को नहीं होगा। वह तारा की भांति एक सीमा के भीतर रहती है, जहाँ विपिन बहुत सावधानी के साथ उसे भारी.भारी जिम्मेदारियाँ सौंपता रहा है। वह तो उसे भली भांति निभाना जान गई है। आज वह एक सगे व्यक्ति की हत्या आसानी से करके चली गई थी। वह साधारण अपमान का बदला मात्र नहीं था। वह भविष्य के लिए एक रास्ता सा दिखला गई थी, कि हम में अपनी भावना वाली दुनिया को नष्ट कर डालने की पूरी-पूरी क्षमता होनी चाहिए। वह न साधारण झगड़ा करती है और न असाधारण समझौते की मांग रखती है। हर एक व्यक्ति का आवश्यक दरजा स्वीकार कर लेती है। मानो कि वह उलझन बरतना नहीं सीखी है। सरला की भांति हृदय में भावों की भारी आंधी तूफान वाली मौसमें बरतने से उसे कभी कोई सरोकार नहीं रहा है। सरला गुलाबी, पीली और सुफेद आसानी से बात बात में पड़ जाती थी। तारा और किरण वह व्यवहार बरतना नहीं जानती हैं। सरला अपने मन के घावों को बोरिक और टिंचर के पानी से धोने में प्रवीण है। यदि वह डॉक्टर होती, तो उसका जीवन आसान हो जाता। तब वह उतने आंसुओं से अपने मरीजों का दुःख पोंछ लेती। अकारण वह सरला के

प्रति बार बार सूफियों की तरह माया-मोह बटोर लेता है, जैसे कि वह आत्मा हो और सरला परमात्मा। यह नाता एक हँसी सा है, फिर भी दुनिया के लिए वह सही भुलावा है। सरला की बेड़ियाँ कमजोर थीं। नवीन उनको तोड़ चुका है। यह जान रहा है, कि वह आग अब उस सबको कदापि दुहरावेगा नहीं। वह सरला का नैतिक अतिथ्य नहीं था; वह एक मिथ्या अभिमान है, जिसकी जानकारी स्वयं उसे नहीं है। सरला के आँसू नारी की सबलता के आँसू नहीं थे। उसे उन आँसुओं को बहाने का कोई अधिकार नहीं था। एक किरण है कि उसने उस अविनाश के लिए थोड़ासा दुःख प्रकट किया। वह जानता है कि किरण का उससे भारी स्नेह था। उसने उस स्नेह का भार अपने हृदय में रख लिया। उसे व्यर्थ पिघला कर बाहर भावुकता में बहाना कदापि स्वीकार नहीं किया था। वह न किसी उदासीनता के लिए रुकावट डालती थी। सरला फिर भी बार-बार आ जाती है। वह तारा के आगे खड़ी हुई और आज लगता है कि किरण के आगे भी खड़े होने की भावना उसमें हो। वह किसी से साधारण हार स्वीकार कर लेने का पक्षपाती नहीं है। नवीन उसे इतना पहचान गया है। वह जानता है कि सरला की शक्ति, उसके सही उपयोग पर निर्भर है। उसकी भावुकता एक साधारण खेल ही नहीं है। यदि वह अपनी भावुकता से थोड़ा ऊपर न उठेगी तो किसी अहित की संभावना है।

फिर नवीन के सम्मुख भारतीय इतिहास के कुछ निरस अध्याय आ जाते हैं। १७५७ ई० में पलासी का युद्ध हुआ था और भारत में एक नई शासन प्रणाली आरंभ हुई। इसके सौ वर्ष बाद ईस्ट इंडिया कम्पनी के विरुद्ध संघर्ष हुआ। फिर १८७७ में महारानी विक्टोरिया की घोषणा हुई थी। देश एक 'साम्राज्य' बन गया। अब तो १९०० के बाद कई नई-नई घटनाएँ घटती जा रही है। १८५१ में पहले-पहल बम्बई में श्रीडावर की कपड़े बुनने और सूत कातने की मिल स्थापित

हुई थी। आज देश में मिलों का घना जाल फैलता जा रहा है। उसने कहीं पढ़ा था कि फैशन वाले गद्देदार सोफों और कुरसियों का छोड़ कर देशी गलीचे और कालीन इस्तेमाल करने चाहिएं। मिल के साफ किये चावलों के बजाय हाथ के कुटे चाँवल, चक्की के आटे की जगह जाँते का आटा, मशीन से पिरे तेल के बजाय कोल्हू का तेल और चमार का बनाया हुआ जूता और हाथ का कता बुना कपड़ा काम में लाना चाहिए। देशी लोहार छुरे कैंचियाँ और उस्तरे बनावेंगे। ब्लीचिंग पाउडर छोड़ देंगे·······तब देश की बेकारी सुलझ जायेगी। हमें आर्थिक स्वराज्य मिल जायगा। एक क्रान्ति की लहर देश में आजावेगी।

वह गाँधीवादी इस क्रान्ति की बात नहीं समझा सका था। दुहरा-तिहरा कर उसने सब कुछ पढ़कर लेखक की बुद्धि पर भरोसा नहीं किया। वह इस विज्ञान के युग में इस तरह की बातों का कैसे स्वीकार कर सकता है। आज तो वह बार-बार अपने पहाड़ी जीवन की ओर झांक-झाँक कर देखना चाहता है। वह तो एक अजीब सा सफर कर रहा है। डाकगाड़ी न जाने कितने छोटे-छोटे स्टेशनों को पीछे छोड़ती जारही है। उसका मन यह चाहता है कि पंछी की भाँति उड़कर पहाड़ भाग जाय, यदि उसे कहीं से डैने मिल जाँय तो·······। लेकिन वह उलझ जाता है। उसका जो देश है वहाँ कोई व्यक्ति साधारण कानून की धाराओं से ही शासन नहीं करता है। वहाँ शासन की बागडोर एक आर्थिक भित्ति पर निर्भर है। जिसका कि स्वरूप बहुत बड़ा है·····बैंक, बीमा कम्पनियाँ, विनियम, मुद्रा और मुद्रण, जहाज की कम्पनियाँ।

वह पांचवी, छठी कक्षा में भारतीय इतिहास की कहानियाँ पढ़ा करता था। टीपू सुल्तान, हैदरअली, लार्डक्लाइव···। आज तो उन सारी कहानियों का विस्तार वह अपने में नहीं समेट पाता है। उसका मस्तिष्क इतिहास की इन घटनाओं पर सोचता-सोचता थक सा जाता है·····।

वह इतिहास की घटनाओं की ढेरियों में से कुछ असाधारण सी बातें चुनकर उनको फिर एक बार तोल लेना चाहता है। पिछले दो-तीन दिन....। सरला का शहर बहुत पीछे छूट गया है। वह जैसे कि समीप कभी न रहा हो। उसके बाद कई और और शहर छूटने चले गए। वह जिस शहर में जा रहा है, वहाँ....।

और फिर वह अपने निश्चित शहर में पहुँच गया है। उस बड़े जंकशन की वह आज कल्पना नहीं करता है। वहाँ उसे अपने चंद मित्रों से मिलना है। शहर का व्यक्तित्व बहुत बड़ा है। जिसे वह भली भाँति पहचानता है। आधीरात......., चारों ओर घना अँधकार था। मेह की झड़ी लगी हुई थी। मानसून के भारी भारी झोंकों का अनुभव उसे हुआ। वह ताँगे पर बैठा हुआ सड़कें पार कर रहा था। इस समय उन सड़कों पर लगी तख्तियाँ पढ़ने में नहीं आ रही थीं। व्यक्ति के नामकरण के बाद शहर और सड़कों का नामकरण हुआ है। वह चुपचाप सड़को पर नाम लगी तख्तियों पर विचार करने लगा। धर्म और देवताओं के नामों के बाद सामन्तों और बादशाहों के नाम आए। अब नए शासकों की विजय के साथ, उनके नाम भी चल आए.......लेकिन ताँगा चुपचाप आगे-आगे बढ़ता जा रहा था। नवीन अपने दोस्त के ऑफिस की ओर जा रहा है। उसे उसने तार दे दिया था। वह दोस्त दैनिक समाचार पत्र के कार्यालय में काम करता है। शहर के बाहरी और भीतरी किसी रूप से नवीन अधिक परिचय पाने के लिये लालायित नहीं था।

नवीन ऑफिस पहुँच गया। देखा उसका दोस्त चुपचाप प्रूफ देख रहा था। उसके पास मसीनमैन को खड़ा देखकर उसे बड़ी हँसी आई। मसीनमैन के कपड़ों पर मशीन की काली-काली रोशनाई के धब्बे थे। नवीन चुपचाप खाली कुरसी पर बैठ गया। वे हजरत तो सिर नीचा किए प्रूफ देखने में मशगूल थे। आखिर पूरा प्रूफ देखकर उन्होंने

कभी अवश्य मिल जायगा। काम का यहाँ यह हाल है कि आजकल डबल-ड्यूटी दे रहा हूँ।"

"तो हाल सुस्त ही हैं, ऐसा लगता है।" नवीन ने कहा। तभी देखा कि एक सुन्दर कुत्ता कमरे के भीतर आ गया था। वह पूछ बैठा, "यह किसका कुत्ता है। अच्छी 'नस्ल' का लगता है?"

"हमारी मिस साहिबा का।"

"मिस साहिबा?"

"मालिक की छोटी लड़की का है। शायद 'सेकिंड शो' से लौट कर आई होगीं।"

"तब भाग्यवान हो?" नवीन ने चुटकी ली।

"कुछ महीने हुए इंगलैण्ड से लौट कर आई हैं। महीने में सैकड़ों रुपया, पाउडर और सेंट पर खर्च होता है। यह अखबार एकदम स्वदेशी है। सब शेयर हिन्दुस्तानी पूँजीपतियों के हैं। लाभ का उपयोग इस भाँति होता है। हम लोगों के लिए तो लगातार नुकसान वाली 'बैलेंस शीट' दिखला कर, मुसीबत भरी कहानियां रह जाती हैं।"

"तुम लोग चुप रह जाते हो। यह उचित नहीं लगता है।"

"बातें ऐसी नहीं हैं। कई बार 'स्ट्राइक' करने की बातें चली हैं। वैसे हम इन लोगों के ऐश-आराम में क्या दखल दें। एडीटर तथा मैनेजर दोनों ही फस्ट क्लास में सफर करते हैं और बढ़िया-बढ़िया होटलों में टिकने के आदी हैं, घाटा होने पर भी उन लोगो का काम चेक काट कर चल जाता है।"

—नया प्रूफ आ गया था। वह उसे देखने लग गया। सावधानी से अब अक्षरों को पढ़ता पढ़ता बीच-बीच में गुनगुनाने लगता था। नवीन ने चारों ओर फैले हुए अखबारों का ढेर देखा। पास ही दो-तीन आलमारी भी भरी हुई थीं। वह उठ कर आलमारी के पास

पहुँचा। एक पर ब्लाक भरे हुए थे। दूसरे-तीसरे में फाइलें आदि थीं अब वह दूसरे बड़े हाल में चला गया। वहां रोटरी मशीन चल रही थी। उसकी तेज आवाज कानों में पड़ती थी। वह अखबार का छपना देखता रहा। बाहर अभी तक मेह की तेज झड़ी लगी हुई थी। उसे नींद-सी आ रही थी। चुपचाप भीतर आया। उसका साथी अपने काम में लगा हुआ था। अब आहट पाकर उसने सिर उठाया और बोला, "नींद आ रही है। यहां तो हम लोगो का अजीब हाल है, विचित्र ड्यूटियां पड़ती है। कभी किसी शिफ़्ट में काम करते हैं तो फिर दूसरे शिफ्ट में।"

"तब एडीटर हो यह कम शान की बात है।"

"ऐसी सब एडीटरी सब को मिले। हां नींद आ रही हो तो सामने वाली मेज पर लेट जाओ। पंखा खोल देता हूँ।"

नवीन चुपचाप मेज पर लेट गया। ऊपर पँखा भर, भर, भर; खट, खट, खट, स्वर में चल रहा था। यदा-कदा बल्ब के चारों ओर चक्कर काटते हुए पतींगे उसके मुंह पर गिरते थे। अब उसने मुंह पर अखबार फैला कर सो जाने की चेष्टा की। आखिर नींद आ गई। वह सो गया था।

बड़ी सुबह उसकी नींद टूटी। देखा कि उसके दोस्त अखबार पढ़ रहे थे। नवीन तो उठ बैठा, पूछा, "ड्यूटी अब खत्म हो गई है?"

"तुम्हारे जागने का इन्तजार कर रहा था। वैसे चार बजे तक सब मैटर छप जाता है। सुबह का एडीशन है।"

"कोई खास खबर है?"

दोस्त ने नवीन की ओर अखबार बढ़ा दिया। नवीन ने सरसरी निगाह हेड लाइनों पर डाली। उसे जल्दी-जल्दी पलट कर मेज पर रख दिया।

"कहाँ से आ रहे हो?"

"………' से।" नवीन ने उत्तर दिया

"अविनाश का खून हो गया है ?"

"क्यों कोई खास खबर आई है क्या ?"

"हमारे 'विशेष सम्वाददाता' ने वह समाचार भेजा है। किसी लड़की ने उसकी हत्या कर डाली है। फिर वह किसी प्रतिष्ठित रईस के मकान पर पहुँच कर लापता हो गई। पुलीस ने खूनी को पकड़ने के लिए पाँच हजार के इनाम की घोषणा की है। यह तो बड़े आश्चर्य की बात लगती है। अविनाश का इस भांति खून होना……।"

"तुम अविनाश को जानते थे ?"

"पिछले सप्ताह तो वह यहीं था ! एक किताब उसने लिखी थी। उसी को छपवाने की फिक्र में था मजूर आन्दोलन पर उसने उसे लिखा था। पुस्तक में काफी आंकड़े दिए हुए थे। मैंने कहा था कि वह अन्तिम पाण्डुलिपि मेरे पास भेज दे।"

"उसकी बुद्धि की बात सही है। सदा हर एक दरजे में उसने अच्छी नम्बरें पाई थीं। इन्टर साइन्स में तीन विषयों में विशेष योग्यता थी। लेकिन उसे अपनी बुद्धि के आगे औरों की बातों का कोई भरोसा नहीं था। उसने बहुत क्रान्तिकारी साहित्य पढ़ डाला और वह सोचता था कि उस पढ़ाई के आधार पर वह यहाँ क्रान्ति कराने में सफल हो जायगा। अब तो वह दंभ बहुत अधिक बढ़ गया। मैंने स्वयं उससे बातें की थी। अपनी बुद्धि के आगे वह औरों से समझौता करने के लिए तैयार नहीं था। किरण के हाथों वह सब हुआ है। अनजाने पिस्टलसे गोली छूट गई। कभी तो छोटी-छोटी बातें बड़ी-बड़ी घटनाएँ बन जाती हैं।"

"किरण, की बात कह रहे हो नवीन। सुरेश अब यहीं लाया गया है। जल्दी ही मुकदमा चलेगा। सुना कुछ और लड़के भी लाए गए

हैं। उनकी पैरवी करने के लिये क्या सोचा है। मैंने कुछ लोगों से यहाँ बातचीत की है। वे सब सहमत हैं। तुम्हारे नाम भी तो वारन्ट हैं।"

"मेरे।"

"हाँ, देखो न, यह खबर देर से मुझे मिली है।" कह कर उसने टाइप किया हुआ कागज उसके हाथ पर दे दिया।

अविनाश के घर जो कागज तलाशी लेने पर पुलीस को मिले थे, उनमें नवीन का खत भी था, जो किरण की असावधानी से वहां छूट गया। नवीन ने कागज उसे लौटाते हुए कहा, "चलो घर चलें, देख लिया जायगा।"

"चलो।"

—दोनों उठे और बाहर आए। अभी आसमान पूरी तरह साफ नहीं हुआ था। देर तक बूँदा-बाँदी होती रही। वह चुपचाप उसके साथ सड़क पर चलने लगा। नवीन की आँखों में नींद भरी हुई थी। वे कई गलियाँ पार कर के गली के एक मकान की सीढ़ियों पर ऊपर चढ़ गए। कई सीढ़ियाँ चढ़ कर वे ऊपर पहुँचे। उसके साथी ने कमरे का दरवाजा खोला। नवीन भीतर चारपाई पर बैठ गया। रास्ते में कोई खास बातें नहीं हुईं। उस बड़े शहर के भीतर उसका मन न जाने क्यों संकुचित हो उठा। गलियों का घना जाल वहाँ था। जिसके दोनों ओर ऊँची-ऊँची इमारतें थीं। उन गलियों में शायद ही कभी धूप झाँकी हो। इस शहर का निर्माण आज का नहीं है। आज से हजारों वर्ष पूर्व किसी बादशाह ने इसकी नींव धरी होगी। तब से आज तक इतिहास कई पगडंडियां लांघ चुका है। आज भी शहर किसी नए आने वाले व्यक्तित्व का परिधान पहन लेने के लिए तैयार है। वह शायद उठ कर बोल सकता, तो न जाने ये गलियां क्या-क्या दास्तान सुनातीं! शहर लाखों कहानियों का

खजाना मिलता। लेकिन कुछ मुख्य घटनाएँ सदा ही जीवित रहती हैं, उन शक्तिशाली लोगों की भांति जिनकी पूजा करने वाली भावना इन्सान ने कभी एक दिन सीखी थी। और शहरों की पूजा वाली भावना कुछ नई नहीं है। पानीपत का मैदान तीन-चार मुख्य तिथियों के साथ बार-बार दुहराया जाता है। उस पर हुए बड़े महायुद्धों के कारण देश में नए विचार आए। नए शासकों ने व्यवस्था चलाई थी। युद्ध सदा से ही असाधारण बातें फैलाते रहे हैं।

"चाय पीओगे।"

"क्या बाहर जाना पड़ेगा ?"

"नहीं, रात का दूध है।" कह कर साथी ने स्टोव जला लिया। भर, भर, भर की ध्वनि कानों में पड़ी। और वह नीचे उतर कर बाहर चला गया। नवीन चुपचाप पलंग पर लेटा ही रहा।

सोच रहा था नवीन कि वह निराशावादी हो गया है। आज किसी भाँति वह कोई भी निर्माण की बात सोचने में असमर्थ है। कभी विपिन बहुत बातें कहता था। वह उस समय अनायास उत्तेजित हो उठता था। विपिन न जाने कहां से जब्त शुदा किताबें लाकर उसे पढ़ने को देता। तब उसने बार-बार मन में ठहराई थी कि वह क्रान्तिकारी दल में शामिल होकर भारतमाता को स्वतंत्र करेगा। भारतमाता की कोई तसवीर अब आंखों के सम्मुख नहीं आती थी। कुछ नौजवानों की तसवीरें वह जरूर पहचान लेता था, जिनको फांसियाँ लगी थीं और भारतमाता तक वे पहुँचे या नहीं, यह तो किसी को मालूम नहीं है। नवीन ने भारतमाता को गांधी जी का चरखा चलाते हुए देखा और पिस्तौल लेकर भी खड़ा पाया। इन दो धाराओं के बीच वह चुपचाप खड़ा रह जाता था। एक जलूस में उसने 'भारतमाता' का कोरस कभी गाया था—बन्देमातरम्; उसके बाद देखा कि वह 'कोरस' एक कदम आगे बढ़ कर 'एक नारा' बन गया है। जो १९३०-३१

के तूफ़ानी दिनों में बार-बार गूँजा करता था। आज 'भारतमाता' के सही अस्तित्व वाले छुटकारे के प्रश्न पर बुद्धिजीवियों में भारी मत-भेद था। सशस्त्रक्रान्ति के षड़यन्त्र असहयोग आन्दोलन के जनता की जागृति के बीच छुट गए। जो कि चन्द षड्यन्त्रों तक सीमित रह गया था। राजनीति से उसे खास प्रेम नहीं था। लेकिन आज वह कुछ नए से विचार पाता है। जहां वह देखता है कि नवयुवक बेकार हैं, शहर और गाँव के बीच यातायात का कोई सही माध्यम नहीं है। इतना बड़ा देश भूगोलिक विभाजन के अतिरिक्त अलग-अलग विचार धाराओं के टुकड़ों में बँट जाता है……

रमेश आ गया था। ताजी कचौरियां, जलेबी आदि खासा नाश्ता साथ था। उसने केटली पर चाय बनाली और मेज पर सब कुछ रख दिया। नवीन चाय बना कर घूँट-घूँट पीने लग गया।

रमेश तो बोला, "हमारे प्रेस में रोज ही सब लोग काम छोड़ देने की धमकी देते हैं। अभी हम लोगों में बड़ी कमजोरियां हैं। कुछ पढ़े-लिखों की बेकारी देख कर आश्चर्य सा होता है। आखिर कै प्रति सैकड़ा पढ़े-लिखे लोग देश में हैं। ये लोग तो किसी तरह काम निकाल ही लेते हैं। हर महीने दो-तीन सब-एडिटर काम छोड़ कर चले जाते हैं और उनके स्थान पर कई अरजी पड़ती हैं। इस सब को संगठित करने के लिये कोई नया रास्ता निकालना पड़ेगा।"

"मैं तुमसे सहमत हूँ। लेकिन तुम्हारी अपनी समस्या शहर की समस्या है। शहर का ढाँचा तो बहुत पुराना है। मुसलमान भारत-वर्ष में आए। उनकी जाति सैनिकों की जाति थी। शहरों में अपना अधिकार जमाने के बाद, वे उनसे बाहर नहीं फैले। शासन की बागडोर अपने हाथ में लेने के बाद उन्होंने जागीरदारों और राजाओं तक ही अपनी पहुँच रखी। समस्त देश के भीतर शासन सूत्र स्थापित करना नहीं चाहा। गाँवों को अपनी पंचायतें थीं और वहाँ वाले खुशहाल

थे। समुद्री किनारे के कुछ बन्दरगाहों में अरब वाले व्यापार करते थे। शहर का मध्यवर्ग व्यापार से अधिक सरोकार नहीं रखता था। ईस्ट-इंडिया-कम्पनी आई और बाबू लोगों की एक नयी जमात बनाई। बाबू लोगों की जमात के साथ निम्न मध्य वर्ग भी बढ़ा। यातायात की सुगमता केवल देश रक्षा तथा बाहरी व्यापार के लिए हितकर सिद्ध हुआ। हमारे गाँवों का आर्थिक ढाँचा तो टूट गया। इस आर्थिक साम्राज्यवाद के कारण देहात कर्जे से दबे हुए हैं और शहर का मध्यवर्ग टूट टूट कर मर रहा है।"

"तुमने तो नवीन इन बाबू लोगों की बातें शुरू करके मुझे बल दे दिया है। इनकी धात्री वह ईस्टइंडिया-कम्पनी आज इतिहास के कुछ अक्षरों भर में रह गई है; पर ये बाबूगीर परिवार तो फल-फूल कर शहरों की एक बड़ी आबादी बसा रहे हैं। मेरे चंद दोस्त इस पेशे में पड़ कर मुझे अपने दास्तान सुनाया करते हैं। उनकी बातें सुन कर बड़ी हँसी आती है। अपने सुपरिन्टेन्डेन्ट, अपने साथी बाबू लोगों के हाल-चाल के बाद कभी कभी अपने परिवार के दास्तान बघारने लगेंगे। इसके बाद, वही पीटी गई दफ़्तर की फाईलें आवेंगी। दुनिया के किसी परिवर्तन से उनको दिलचस्पी नहीं है, वे फाइलों में नोट्स लिख कर या कोई ड्राफ़्ट बनाकर ही जी रहे हैं। मुझे आई० सी० एस० की दुनिया के पीछे छुपे इस बाबूगीर दरजे पर हँसी आया करती है।"

"तू भाग्यवान है रमेश। तनखा कुछ हो बाबू तो नहीं है न।" कह बैठा नवीन। रमेश ने आगे बाबू लोगों की बात अधिक नहीं की। चुपचाप कचौरियाँ खाने लग गया। कुछ देर के बाद पूछा, "यहाँ कब तक रहोगे।"

"यही एक-दो दिन।"

"और आगे......।"

"सोच रहा हूँ कि एक बार गाँवों की धरती देख आऊँ वहाँ का

आर्थिक ढाँचा तो बिलकुल टूट गया है। उसकी सही जान-कारी प्राप्त करना चाहता हूँ।"

"मैं भी समझता हूँ कि उन लोगों के बीच एक नई चेतना लानी चाहिए। वे समझदार बन कर हमें समय पर सहायता देंगे। जिस दिन उनमें ज्ञान का प्रकाश फैलेगा, उसी दिन हमारी सफलता निश्चित हो जायगी। इन व्यक्तिवादी षड्यन्त्रों पर आज मेरी कोई आस्था नहीं रह गई है।"

"रमेश, तूने मेरे मन की बात कही है। पर आज एक कदम पीछे हट जाने के लिये तो कोई तैयार नहीं है। आतंकवाद में जो जोश है, उससे पीछे हटना भला कौन चाहेगा। शहरों में नए विचार फैल रहे हैं। कल के नागरिक अपने अधिकारों की पूरा माँग करेंगे। तुम लोगों को अखबारों के मोटे शीर्षकों द्वारा नागरिकों के हृदय तक अपना सन्देशा पहुँचाना होगा। उनकी संस्कृति की रक्षा का भार तुम पर ही है। समाचार पत्रों के शीर्षकों पर मेरी अक्सर दृष्टि पड़ी है। उनकी शक्ति का परिचय मैं पा चुका हूँ। अविनाश कहता था तुम उसके घोषणा-पत्र से सहमत थे।"

"अविनाश के विचार! मेरी व्यक्तिगत राय अविनाश के साथ है। तुम उसे हमारी हार कहोगे। कारण कि वह क्रान्तिकारी आन्दोलन असफल सा हो गया है मैं तो समझता हूँ कि उस असफलता का भी उपयोग है और वह यही कि शहरों में जबरदस्त क्रान्ति हो जायगी तो उस क्रान्ति की आग देहातों की धरती तक पहुँचेगी। तभी वहाँ नवीन विचारों का बीजारोपण होगा। वह तो व्यक्तिगत क्रान्ति है नहीं?"

"अब समझ में बात आई कि हम लोगों के बीच दो मत साफ-साफ हैं। एक ओर तो तुम स्वीकार करते हो कि व्यक्तिगत क्रान्ति की भावना, जो कि आज तक आतंक के रूप में चालू थी अनुचित है, फिर दूसरी ओर तुम यह कहते नहीं चूकते, कि शहर के मजदूर वर्ग

को आज आग सुलगानी चाहिए। मैं तुम्हारे इस जोश का कायल नहीं हूँ। किसी भाँति उस सब से सहमत भी नहीं हूँ। क्या आज हमारा मजदूर वर्ग उस क्रान्ति के लिए तैयार है? मुझे तो लगता है कि अभी उनका कोई ठीक संगठन तक हम नहीं कर पाए हैं। खैर यह बात छोड़ दो। अपनी अखबार नवीसी के हाल सुनाओ?"

'तुम अविनाश के 'मेनिफेस्टो' को क्या बिलकुल गलत मानते हो?"

'हाँ साम्राज्यवाद से समाज में जो बुराई फैली हुई है, उसे मिटाने के लिए समय तो चाहिए ही। अब तो फिलहाल यहीं रहेंगे न?"

"कोई चारा ही नहीं है। धमकी देने पर मालिक लोगों से कुछ न कुछ मिल ही जाता है। शहर का पूरा कर्जा चुकाए बिना कहीं जा भी नहीं सकता हूँ। इस अखबारी दुनियाँ का हाल विचित्र ही समझ। एक ओर भारतीय पूँजीपति कांग्रेस के भीतर अपनी जड़ें मजबूत किए हुए हैं, जब कि दूसरी ओर समाचार पत्र भी उनके हाथ में आ रहे हैं। पत्र द्वारा ऐसे समाचार तथा विचारों का प्रचार होता है, कि मध्यवर्ग में निराशा फैल जाती है। सनसनी पैदा करने वाले शीर्षक......खून तथा अन्य मुकदमों का हाल आदि आदि समाचारों को समाचार पत्रों में स्थान दिया जाता है। हमारी मौखिक आलोचना से कोई लाभ नहीं है। आज तो भारतीय व्यापारी अपने पंख फैलाने का निश्चय कर ही चुका है। वह, राष्ट्रीयता के मोरचे से भीतर बैठ कर, समाज के सब साधनों को हथिया लेना चाहता है। हमारे समाचार पत्र के सब शेयर व्यापारियों के हैं। वे ही इसकी नीति का संचालन करते हैं"

"तो क्या बलवा कराने की सोच रहा है। तेरा फक्कड़पन देखता हूँ कि आज भी वैसा ही है। कहीं गृहस्थ होता, तो शायद निम्न मध्य-वर्ग की भाँति आस्तिक बना सिर झुका कर चलता। वार-त्योहार के दिन तेरे माथे पर रोली-नक्षत्र चमक उठता और युग-युग से स्थापित

देवी-देवताओं की छाँह तेरे उस परिवार को भी ढक लेती। इस निम्न वर्ग की घर-गृहस्थी पर मुझे बड़ी हँसी सी आती है। आखिर शहर के समाज का वह कितना लूला अंग है।"

"और इस लूले अंग की शक्ति को पाकर जो वर्ग फल-फूल रहा है नवीन। उनके लिए तुम क्या सोचते हो? आदमी से सुना राम तेल बनाया जाता है। पिछले महायुद्ध के दिनों में यह बात बहुत प्रचलित थी। तब इनका 'राम तेल' बना लेना ही हितकर लगता है। अन्यथा उनकी उतनी चरबी समाज के किस काम आ सकती है।"

नवीन तो हँस पड़ा। रमेश की समझ में वह हँसी नहीं आई। यह नवीन क्यों एकाएक इस भाँति हँस रहा है लेकिन बाला नवीन तो, "रमेश, यह 'रामतेल' का आविष्कार तूने खूब किया है। यह तेरा सही विद्रोह है। मध्यवर्ग के थोड़े से पढ़े-लिखे बच्चों का विद्रोह, जिनको सबकी बेकारी सुलझाने वाली कमिटी रास्ता नहीं दिखला सकी; उन तक ही हमारी सीमा है। आगे जैसे कि वह जौगरफी वाली दुनिया एक एटलस में बन्द रह जाती है। इतिहास की एटलस के भारतवर्ष के नक्शे और भूगोल के..............। एक मनुष्य के संघर्ष के स्वरूप के साथ, राज्यों के राज्य-विस्तार और बड़े-बड़े युद्धों का हवाला देता है। पानीपत, पलासी ....। दूसरा तो पहाड़, नदी, शहर, पठार, समुद्र आदि के नामों तक ही सीमित भर है। तुमारी अखबारी दुनिया की कठनाइयाँ हैं; केदार की अपनी कुछ असुविधाएं हैं। मुझे दोनों की कठनाइयों में एक ही चीज लगती है, पढ़े-लिखों का सोचना कि वे बुद्धिजीवी हैं, तथा और सब अज्ञानता की काली छाया से घिरे हुए हैं। हम आज भी अपनी सम्पूर्ण शक्तियों को नहीं समझ पाते हैं। उन सबको नए सिरे से समझने की चेष्टा करनी होगी।"

"तुम सच पूछो तो नवीन, मन आता है कि एक दिन इस सारे दफ़्तर में आग लगा कर बाहर से खड़ा-खड़ा तमाशा देखूँ।"

"वह तमाशा ही तो समस्या को सही तरीके से न सुलझा सकेगा।" कह नवीन ने चाय का प्याला उठा लिया। चाय पीकर बोला, "तुमको अपनी सेहत का ख्याल रखना ही चाहिये।"

"क्या कहा तुमने?"

"यह बीमार रहना अच्छा नहीं है।"

"मैं स्वयं परेशान हूँ। प्रेस की नौकरी से तुमको पूरी जानकारी है ही। जब सारा शहर सोने की तैयारी करता रहता है, मैं आफिस के लिये रवाना होता हूँ। जब सुबह होती है, मैं घर लौट कर सोने की तैयारी करता हूँ। उस पर तनख्वाह वक्त पर नहीं मिलती है। सरकारी नौकरी के लिए इसीलिए तो एक बड़ा आकर्षण होता है।"

नवीन तो पूछ बैठा, "पास नाई की दूकान तो नहीं होगी।"

"है क्यों नहीं, नुक्कड़ पर ही सैलून है।"

रमेश ने छत से नवीन को दुकान दिखला दी। नवीन नीचे उतरा। गली पार करता हुआ सोच रहा था कि हर जगह एक अजीब निराशा और पस्त हिम्मती फैली हुई है। नवयुवक समुदाय जिसे कल नेतृत्व अपने हाथ में लेना है, वह तो बिलकुल मुरझाया और निर्जीव सा लगता है। उपनिवेश और वहाँ के गुलाम! वह तो दूकान पर पहुँच गया था। बाहर एक अजीब ढंग का रंगीन विज्ञापन था, जिस पर दूकान का नाम भी लिखा हुआ था। वह एक ओर खाली कुरसी पर बैठ गया। वहाँ खासी भीड़ थी। एक कुरसी पर कोई खद्दरधारी बैठे हुए गाँधीजी के नाम की दुहाई दे रहे थे। सामने दीवाल पर कई सिनेमा सुन्दरियों के चित्र थे, उनके बीच गाँधीजी की एक तसवीर थी जिसमें कि वे चरखा चला रहे थे। दूकान की सजावट का उल्लेखनीय भाग था, उन सिनेमा सुन्दरियों के चित्रों का चुनाव, जिनको चुन-चुन करके सजाने में दूकान के मालिक ने बहुत परिश्रम किया था। इस सैलून के भीतर किसी का 'शेव' बन रहा था, किसी के बाल कट रहे

थे और अन्य कुरसियों पर सब लोग बैठे हुए थे। मानों कि यहाँ के 'रेट' के अनुसार पैसा चुका देने से सब का बराबर अधिकार मिल जाता है। सम्भवतः हर एक व्यक्ति को अपने काम का सही मूल्य मिल जाय, तो बहुत कुछ भेदभाव मिट जायगा और समाज की भीतरी बुराइयाँ हट जावेंगी। लेकिन यह कोई आसान बात नहीं थी। दूकान में लगे हुए वे बड़े-बड़े आइने तो केवल व्यक्ति का बाहरी स्वरूप ही प्रतिबिम्बित करते हैं।

अब नवीन एक ऊँची कुरसी पर बैठ गया था। वह अपने में कई बातें आँखे मूँदे सोचने लगा। बार-बार आँखे खुल जाती थी। उसकी आँखों के आगे वे टँगी हुई तसवीरें पड़ जाती। कई सिनेमा उसने देखे भी हैं। अब यह कैसा विज्ञापन था? विज्ञापन आज के युग का एक भारी अस्त्र है, जिससे कि वह परिचित है। प्रतिदिन वह समाचार पत्रों में भाँति-भाँति के विज्ञापन देखा करता है। इन विज्ञापनों की चमक ऊँचे मध्य वर्ग तक सीमित है। बड़ी तादाद वाले लोगों के लिए वे नहीं हैं। विज्ञापन के इतिहास पर वह उलझना नहीं चाहता था। वह लौट आया। ठीक तरह हाथ मुँह धो कर बोला रमेश से, "तुम मास्टर जी के घर का पता तो जानते होगे।"

"मास्टरजी।"

"वही जो रेलवे में नौकरी करते हैं—महेशचंद्रजी।"

"नहीं।"

"वे कहीं रेलवे क्वाटरों में रहते हैं। मझे वहाँ जाना है।"

"तो खाना खाकर चले जाना। मैं तुमसे कई जरूरी बातें करना चाहता था। एक तो यह है कि मैं शादी करने को सोच रहा हूँ।"

"सोच रहे हो न?"

"नहीं तय सा कर चुका हूं।"

"तो यों क्यों नहीं कहता कि वागदान हो चुका है। कौन है वह?"

"यहीं कालेज में पढ़ती हैं।"

"तब दोस्त चलो किसी रसोगुल्ला-चमचम सन्देश वाले की दूकान पर जमा जाय।"

"मैं उससे अपनी सारी स्थिति बतला चुका हूं। वह इस मुफलिसी में बरमाला पहनाने को तैयार है। वह चाहती है कि जल्दी ही शादी कर ली जाय। मैं अभी तक अनिश्चित सा हूँ। इसी लिए कुछ उत्तर नहीं दिया है। तुम्हारी क्या राय है?"

"मेरी राय रमेश! यह तो अपनी सुविधा की बात है। यदि यह जिन्दगी तुमको नापसन्द है तो नई दुनिया बसालो। भला मैं क्या सलाह दे सकता हूँ।"

"मैं सोचता हूँ कि गृहस्थी जुड़ाली जाय। तुम तो शादी तक आओगे न!"

"अवसर मिलेगा तो अवश्य।"

"तुमको आना पड़ेगा। अभी से न्योता दिए देता हूँ।"

"तुमने उसे अपनी सब बातें समझाई हैं।"

"नहीं। उसे मेरे विचारों की अधिक जानकारी नहीं है। इतना ही उसे सुनाया था कि सन् ३० के आन्दोलन में नौ महीने 'सी' क्लास में काट आया हूँ। आज के अपने विचार सुनाकर उसे भय-भीत करना उचित नहीं लगा है। आगे सारी बातें वह स्वयं ही जान जावेगी।"

"मैं सोचता हूँ कि तुमको उससे सारी बातें साफ-साफ कह देनी चाहिए। यह तो तुम्हारा नैतिक कर्तव्य होगा। भविष्य में इससे कभी आपस में सिलवट नहीं पड़ेगी। विचारों की एकता बहुत आवश्यक है।"

"वह बहुत भावुक लड़की है।"

"और तुम उस भावुकता को उपयोग में लाने की ठान चुके हो।"

"यह बात झूठी है नवीन।"

"अभी तुम लोग शिकवा-शिकायतों की दुनिया में हो, जो कि अस्थायी है। इस मुगालते में कदापि न रहना कि तुम अपने में उसे सदा पकड़े रह सकोगे। उसे अपने प्रभाव से मुक्त करके स्वतन्त्रता पूर्वक उसको अपनी सम्मति दे देने दो। यदि आपसी समझौता हो जाय, तो बहुत अच्छी बात है। अधिक मैं क्या कह सकता हूँ।"

"तुम शायद मेरी निर्बलता की, ओर इशारा कर रहे हो, कि यह बदम भावुकता का एक उफान मात्र है! रोज की परेशानियों से मन उचाट हो उठता है। बड़ी-बड़ी रात तक नींद नहीं आती है। कभी-कभी अपने को नष्ट कर देने का निम्न-आत्मभाव मन में उठता है। सोचता हूँ कि मेरा जीवन बिलकुल बेकार सा है। अपने को दुनिया के बीच इतना सस्ता बनाकर चलाना नहीं जँचता है। मैं इस दुबलता से छुटकारा पाना चाहता हूँ। कभी-कभी आधी रात का मैं खुली छत पर से चारों ओर देखता हूँ कि सारा शहर चुपचाप सोया हुआ है। वहाँ कोई जीवन भास नहीं होता। उस रात्रि में क्या शहर का भीतरी जीवन नहीं चलता है, व्यभिचार चोरी-डकैती, खून ……। मनुष्यता का एक सही सा भ्रम वह सब है। यह जानकर तुमको आश्चर्य होगा कि मौत मुझे आसान सी लगती है। रोज सुनता हूँ कि फलाना व्यक्ति मर गया। मुझे विश्वास नहीं होता। लेकिन वह सच बात होती है। कारण की वह व्यक्ति फिर दिखलाई नहीं देता है।"

"तुम तो कवि और उससे आगे बहुत बड़े दार्शनिक बन गए हो। यही हाल रहा तो किसी दिन……।"

वह हंस पड़ा और बोला, "नवीन, हस बैठे, लेकिन मुझे तो कोई महत्वाकांक्षा नहीं है। अपने प्राणों को टटोलता हूँ तो पाता हूँ कि अभी मैं जीवित हूँ। मेरा कवि हो जाना! तुम ठीक कहते हो, मुझे सूर्य की रोशनी से चांदनी अधिक पसन्द है। और मेरी तृष्णा……?

हाँ वह लड़की मेरी कमजोरी है। वह शायद मेरी मौत हो। जीवन को तो पहचाना है, लेकिन। सोचता हूँ कि एक से दो हो जाँय तो ठीक होगा। क्या मैं गलत रास्ते पर हूँ ?"

"यह मैंने कब कहा है, तुम दो नहीं उसके बाद तीन, चार पाँच, छै...बन जाओ। स्वस्थ जीवन कहीं व्यतीत करो उचित बात होगी।"

"अच्छा तुम चलोगे।"

"कहाँ।"

"उसके घर।"

"फिर देखी जायगी।"

"यहाँ कुछ दिन रहने का विचार है ?"

"कल तक चला जाऊँगा।"

"तब आज जरूर वहाँ चलो।"

"चलूँगा।" कहकर नवीन चुप हो गया। उठकर बाहर आया। आकाश में बादल छाए हुए थे। काफी दिन चढ़ चुका था। उसने चारों ओर दृष्टि फेरी।

बहुत बड़ा नगर था। चारों ओर दूर-दूर तक ऊँची-ऊँची छतें नजर पड़ रही थीं। वह तो विस्तार का अनुमान सा नहीं लगा सका। कहीं ऊँची उठी मसजिद देख पड़ती, तो कहीं मन्दिर के कलश चमक रहे थे। मकानों का बनावट विचित्र सी थी। कुछ पुरानी इमारतें सदियों पुराना इतिहास अपने हृदय में छुपाये खड़ी थीं। दृष्टि की परिधि के बाहर सुबह का सुहावना वातावरण फैल रहा था। नगर-वासी उठ रहे थे। नीचे गलियों में लोगों की पाँतियाँ गुजरने लगीं। शहर के रहने वाले लोग जिनकी सम्पूर्ण आबादी पाँच प्रतिशत भी नहीं है। शहर, जहाँ कि एक निकम्मा, मध्यवर्ग किसी भाँति जीवित है। उसके साथी का वह कैसा अनुरोध था, कि वह उसकी भावी पत्नी

को देखने साथ चले। वह रिश्ता समाज में परम्परा से चालू हुए कायदों से अलग सा होगा। पती-पत्नी दोनों अपना-अपना व्यक्तित्व अलग-अलग मानकर भी गृहस्थी की सीमा के भीतर एक हो जावेंगे। यदि नवीन अवसर दे दे तो उसका साथी अपनी भावी पत्नी के गुण गान आरम्भ कर देगा। उसे तो महेश मास्टरजी के यहाँ भी जाना है, अब तो उनकी उम्र पार कर गई होगी। उन मास्टरजी के ऋण से अभी वह उऋण नहीं हुआ है। बचपन में मिट्टी फैले हुए पटड़े पर उन्होंने सर्व प्रथम अक्षर ज्ञान का पहला पाठ पढ़ाया था। हाल में उनका पत्र आया था कि अब वे रेलवे में नौकरी कर रहे हैं। उसके हृदय में अपने प्रथम गुरू के लिए एक सद्भावना आज भी बाकी है।

नवीन की आँख में नींद भरी हुई थी। वह अब नहाने लगा। फिर उसने जल्दी जल्दी कपड़े बदल डाले।

तभी उसके साथी ने प्रश्न किया, "महेश मास्टर रेलवे के क्वाटर में रहते हैं न ?"

"हाँ—हाँ !"

"तब मैं ठीक सोच रहा था। पिछले साल वहाँ एक अजीब किस्सा हुआ है। किसी की जवान लड़की को प्रलोभन देकर एक सेठजी भगा ले गए थे। उस लड़की के पिता का नाम महेशचंद्र ही था। कई महीने तक मुकदमा चला। अखबारों में उसकी बहुत चर्चा रही। उस लड़की के एक लड़का हुआ था। सेठजी ने उसे माहवारी सौ रुपया देना स्वीकार कर लिया है।"

"लड़की तो उनकी भी है।"

"कब तक लौट आवोगे ? खाना होटल में खाओगे...। नहीं आज वहीं खाना।"

"बिना बुलाए मेहमान।"

"वह तो अपना ही घर है।"

"उसके पिताजी क्या काम करते हैं।"

"बहुत दिन हुए मर गए। माँ के साथ है। माँ म्यूनिसिपिल स्कूल में अध्यापिका है"

"तब तो तुम भाग्यवान हो।"

"बहुत अच्छे लोग हैं।"

"अपना सोना कोई खोटा थोड़े ही बतलाता है। अभी से सिर न चढ़ाना।"

"आगे को देखली जायगी।"

अब नवीन सीढ़ियाँ उतर कर गली पार कर रहा था। दोनों चुपचाप कई गलियाँ पार कर एक जगह रुक गए। रमेश ने एक जीने का दरवाजा खटखटाया। भीतर से कोई बोला, "कौन है?"

सावधानी से रमेश ने कहा, "मैं।"

आवाज पहचान कर वह लड़की बोली, "रमेशजी।"

और रमेश के हामी भरने के साथ ही दरवाजा खुल गया। किन्तु नवीन को देख कर वह लड़की शरमा गई और दूसरे क्षण संभल कर दोनों हाथ जोड़ दिये। वह अब तो चुपचाप सीढ़ियाँ चढ़ कर बिना किसी की प्रतीक्षा किए ही ऊपर पहुँच गई थी। रमेश के साथ नवीन ऊपर वाले कमरे में पहुँच गया। उसने देखा कि सारा कमरा सुरुचपूर्ण ढङ्ग से संवारा हुआ था और नारी की बुद्धि के अपवाद स्वरूप झालरें, मेजपोश, तकिया-गिलाफ आदि सुन्दरता से कढ़े हुए थे। अध्यापिकाजी की आँखों में चश्मा था। वे कुछ मोटी सी थीं। वह लड़की तो साधारण, पर सुन्दर थी। रमेश ने बात को सुलझाते हुए कहा, "नवीन भैय्या हैं।"

माताजी ने इस पर कुछ नहीं कहा और वे चुपचाप बाहर चली गईं। पर वह युवती भौंचक्की सी क्षण भर नवीन को देखती ही रह गई। मानो कि वह उससे पूर्व परिचित हो और नवीन का यह आगमन

एक आश्चर्य-जनक घटना थी। रमेश को अब अपनी बातें कहने का अवसर सा मिल गया। वह बोला, "पहले सोचा था कि किसी होटल में चला जाय, लेकिन फिर एकाएक आपकी नाराजगी का ख्याल आ गया कि कौन बेकार में झगड़ा मोल ले ले। इनको कोई आश्वासन आतिथ्य सत्कार का नहीं दिया है, रुखी-सूखी जो मिल जायगी, हम लोग खा लेंगे।"

वह लड़की तो कुछ उत्तर न देकर बाहर खिसक गई। नवीन चुपचाप बैठा रहा। वह कुछ सोचना चाहता था पर कोई खास बात याद नहीं आ रही थी। आँखों में नींद भरी हुई थी। सारे शरीर से थकान टपक सी रही थी। माताजी आयीं और उससे पूछा, "कब आए हो?"

"सुबह की गाड़ी से।"

"थक गए होगे, आराम कर लो।"

रमेश को बात जैसे जँच गई। वह बोल बैठा, "हाँ, नवीन भैय्या लेट जाओ। इसमें तकल्लुफी का सवाल ही नहीं उठता है।"

नवीन ने चप्पलें उतार लीं। चुपचाप चारपाई पर लेट गया। तकिया टोढ़ी के नीचे दबा कर एकबार उस पर कढ़े शब्द पढ़े—मधुर स्मृतियाँ! मन में एक डंक-सा किसी ने मारा। फिर वह सब कुछ भूल गया। आंखों में नींद छा गई। वह सो गया। क्या नवीन कभी इस भाँति चैन से सो पाया था। रमेश ने एक-नए परिवार में उसको जगह दी। वह वहां किसी को नहीं पहचानता है। उसे कोई हिचक यहां आने में नहीं हुई। जब वह पहुँची तो वह उसे अज्ञात लड़की को ज्ञाता की जिज्ञासा में समेट लेने का इच्छुक नहीं हुआ। यह नींद जैसे कि एक असमर्थता थी। वह अन्यथा बहुत सावधान रहा करता है।

बड़ी देर के बाद रमेश ने उसे जगाया। पूछा नवीन ने, "क्या बज

आया होगा ?"

"बारह।"

"माताजी कहाँ हैं ?"

"वे स्कूल चली गई।"

"तब घर के बादशाह बने हुए हो।"

"क्या ?"

वह लड़की दरवाजे की दहेज पर आकर एकाएक चुपके ठिठक कर खड़ी हो गई थी। नवीन की आंखों के पकड़ में आते ही धीमे स्वर में बोली, "खाना बन गया है। ले आऊँ।"

"नहीं रसोई में ही चलते हैं।" कह कर रमेश ने नवीन से कहा, "चलो दोस्त तुम भी मुझे क्या समझोगे।"

खाना खाते-खाते नवीन को तारा की याद आई कि आज वह अपनी ससुराल में होगी। तारा अक्सर सावधानी से खाना परोसती थी। तारा के लिए मन सदा कोमल बन जाता है। वह स्मृति आसानी से वह नहीं भूल पाता है। आते समय वह तारा कई बातें कहना चाहता था, पर समय ही नहीं मिला। तारा की आखों में सदा आंसू उसने पाए हैं। वह तारा लड़की न हो कर यदि लड़का होती, तो वह उससे बहुत मदद पा सकता था। तारा यदि सब बातें सुनेगी तो सोचेगी कि उसका भैय्या सच बातें तक उससे न कर सका है। तारा ने अपनी ससुराल को कोई चर्चा कभी नहीं की। वह तारा को भली भांति पहचानता है और उसे पूर्ण विश्वास है कि तारा सफल गृहणी बनेगी। नवीन ने सदा उसे सही शिक्षा दी है।

"एक परांठा और......।"

नवीन अब नहीं खावेगा। उसका पेट भर गया है। लेकिन यह कैसा आग्रह है ? उसकी आँखे ऊपर उठीं और उस लड़की के माथे पर टिक गई। वहां सिन्दूर की एक रेखा बालों के बीच पाकर, उसे

आश्चर्य नहीं-सा हुआ। कोई उत्तर न पाकर उस लड़की ने असमंजस में सा परांठा थाली पर डाल दिया और मजबूरन नवीन उसे खाने लग गया। तरकारी पड़ी, अचार भी, वह मिठाई और उसका पेट जैसे कि इस सब के विरुद्ध हड़ताल ठान चुका था।

नवीन का मन भर आया कि उसने तारा को अब तक चिट्ठी क्यों नहीं लिखी? यही क्या उसका कर्त्तव्य है? सरला ने नवीन से कहा था, कि वे तारा की अधिक चिन्ता न करें। वह मानो कि पुरखिन बन कर तारा और उसकी जिम्मेदारी ले लेने के लिए उत्सुक ही नहीं, तैयार भी थी। वह बार-बार विश्वास-सा दिलाती थी कि तारा का पूरा-पूरा ख्याल उसे है। वह उसे अपनी सहेली से अधिक सम्मान देती है। सरला को तारा, उसकी ससुराल और उसके निकम्मे भाई नवीन की पूरी-पूरी फिक्र है। वह तो बाप-दादाओं की धरती की रक्षा करने के लिए भी चिन्तित थी। वह उनको अपने अपनत्व से क्यों क्रय कर लेना चाहती है। उसके आगे वह फौलाद की भांति खड़ा भर रहा, जहाँ भावुकता की आंधियों का कोई असर नहीं पड़ सका था। लेकिन सरला सारी परिस्थिति से परिचित है। सरला का मन फूल की पंखड़ियों की भांति कुम्हला जाता है, जो कि एक झूठी भावना है। उसे अधिक सबल होना चाहिये। यह भावुकता किसी युग की प्रगति को रोकती चली आई है। उसके बंधन तो तोड़ने ही पड़ेंगे।

"पापड़······!"

क्या उसे पापड़ चाहिये! वह कुछ कहाँ सोच पाता है। मना करना सम्भव नहीं है और प्रश्न के साथ ही फुर्ती से वह थाली पर पड़ ही तो गया। वह उसी भाँति वहां पड़ा रहा। नारी के किसी झूठे आग्रह की भांति चूर-चूर नहीं हुआ। वह इन मध्य वर्ग की लड़कियों पर अक्सर सोचा करता है। जो किसी महत्वाकांक्षा की चाहना नहीं

रखती हैं। वे चुपचाप गृहस्थी के बीच वहीं खो जाती है। समाज के निर्माण में आज भी इन गृहस्थों का हाथ हैं। सन् १८५७ की गदर के बाद भारत में जो एक नया व° बना था, आज के इतिहास में वह समाज के बुद्धिजीवी वर्ग की भावनाओं को दूर-दूर फैलाता है। जब कि पहिले परिस्थिति कुछ और ही थी। फ्रान्स की राजक्रान्ति ने दुनिया के इतिहास में एक नए वर्ग को जन्म दिया था। भारतीय गदर के बाद ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने हमें 'बाबू लोगों' का नया वर्ग दिया, जो शहरों के भीतर चीटियों की भाँति फैल कर मध्य वर्ग के ढाँचे में आज विद्यमान हैं। वह नवीन पापड़ का टुकड़ा खाने लगा। वह इस वर्ग के साथियों और उनके परिवारों से अलग कोई नया व्यक्ति नहीं है। उसके हृदय पर कई क्षणिक कुतूहल उफान लाते हैं और कभी-कभी तो उनमें पूर्णिमा के ज्वार-भाटे वाला वेग, वह अनजाने पाता है। उसका जो विगत है, जहाँ साधारण-सी मौत आती है और व्यक्ति चूर-चूर हो जाते हैं? अविनाश का जीवन एक बहाने के साथ ही तो मिट गया था। लेकिन नवीन अपने सम्पूर्ण संघर्ष को विचारों के घने कुहरे में छुपा लेने का आदी हो गया है। उन सामन्तों की भांति जो शतरञ्ज की बाजी में बड़े बड़े मैदान फतह कर लेते थे, लेकिन जीवन की वास्तविक स्थिति और यथार्थ की सही घटनाओं से उनका कोई सम्पर्क नहीं था।

रमेश ध्यानमग्न नवीन को देख कर हँस पड़ा। नवीन कल्पना की दुनिया में उस हँसी को पाकर चैतन्य सा हुआ। चुपचाप थाली एक ओर सरका दी। वह अब उठने को था, कि कहा रमेश ने, "तुमने तो कुछ भी नहीं खाया है।"

"इतना तो खा लिया।"

"भाई तुम सम्मानित व्यक्ति हो। सब तुम्हारी फिक्र करते हैं। सरकार इसीलिए तो तुम से चौकन्नी रहती है।"

"रमेश यह स्तुति गान रहने दो।"

"मैं इसे अभी तक उसी क्रान्ति की बातें समझा रहा था। तुम तो आते ही सो गए और बस मैं इससे गप्पे लड़ाता रहा। साथ पकौड़ी बनाने और तरकारी छौंकने के सबक भी चलते रहे। मैंने कचौड़ी बनाने की कोशिश की तो वे गोल न बन कर तिकोनी और चौकोनी बन गईं।"

नवीन चुपचाप सब बातें सुनता रहा। वह रमेश भावी गृहस्थी के निर्माण की तैयारी में जुट गया है। यह लड़की सहर्ष उसका साथ देने को तैयार है। लेकिन रमेश ने फिर कहा, "मैंने इससे कह दिया कि बिना तुम्हारी स्वीकृति के मैं चौपाया नहीं बन सकता हूँ।"

नवीन तो उठा और हाथ धोकर बोला, "क्या मैं पुरोहित बनूँगा?" और भीतर कमरे की ओर बढ़ गया। वह बड़ी देर तक चुपचाप बैठा रहा। बाहर से बीच-बीच में रमेश की हँसी की प्रतिध्वनि भीतर आती थी। जिसे सुन कर कि वह सावधान हो जाता था। अब वे दोनों भीतर पहुँच गए थे।

"आज देवीजी कालेज नहीं गईं। इसीलिए मुझ पर धौंस गाँठ रही थीं।"

वह लड़की बातूनी रमेश को इशारे से समझा रही थी, कि वह चुप रहे।

नवीन उससे बोला, "आप बैठ जावें।"

वह चुपचाप पास पड़े मोढ़े पर बैठ गई।

पूछा नवीन ने, "आप किस इयर में पढ़ती हैं?"

"फोर्थ।"

"क्या विषय लिए हैं?"

"हिस्ट्री, फिलास्फी……।"

और नवीन चुप हो गया। लेकिन भला रमेश मानने वाला था।

कहा, "हिस्ट्री तो समझ में आई, लेकिन यह 'फिलासाफर' बनने की फिक्र लड़कियों को क्यों होने लगी है?"

"यह तो अपनी-अपनी रुचि कि बात है।" लड़की ने उत्तर दिया।

"लेकिन घर-गृहस्थी में वे फिलासाफरों वाले तर्क करने लगीं तो सब कुछ चौपट हो जायगा"

नवीन फिर भी चुप रहा। अब कहा रमेश ने, "मुझको तो आफिस जाना है। क्या बज रहा होगा।"

"साढ़े तीन, चलो फिर।" कह कह नवीन तैयार हो गया।

"आप साँझ को आवेंगे।" पूछा उस लड़की ने रमेश से।

"क्यों नवीन आवोगे न?"

"मैं तो शाम की गाड़ी से चला जाऊँगा।"

"आज ही।"

"हाँ।"

"अच्छा तो फिर कभी सही। यदि जेल न चले गए।"

नवीन ने हँस कर कहा, "तू कब से इतना बातूनी बन गया है।"

"जब से इस घर में पदार्पण किया।"

नवीन अब उस लड़की से बोला, "माँजी से नमस्ते कह दीजिएगा।"

"हमारा फैसला तो पहले कर दो।" फिर बोला ही रमेश।

"क्या?"

"आपने अपनी स्वीकृति दे दी है।"

"तुम दोनों तो सबल हो रमेश।"

"तब इन्द्रा मिठाई खिलानी पड़ेगी।"

इन्द्रा चुपचाप खड़ी थी। उससे कहा नवीन ने "रमेश कभी कुछ काम करेगा, यह मुझे विश्वास नहीं था। कहीं टिक कर यह आज

तक नहीं रहा है। आज तक बीस-पच्चीस नौकरियाँ की और छोड़-छाड़ दीं। अब तो मुझे विश्वास है कि आप इसे सही आदमी बना देंगी। मुझे भविष्य में जब कभी अवकाश मिलेगा यहाँ अवश्य आऊँगा।'

इन्द्रा मूक खड़ी ही थी। रमेश उस गम्भीर वातावरण में चुप सा था। लेकिन उसने तो पाया कि वह इन्द्रा साहस बटोर कर बोली, "जाने से पहले तो आप आवेंगे न। माँ पूछेगी।"

रमेश ने यह बात काट दी, "अब वे बराती बन कर ही आवेंगे। सासजी से कह देना।"

रमेश की इस शरारत पर नवीन अनायास ही हँस पड़ा। इन्द्रा ने तो डाँट दिया, "आपको तो कुछ काम ही नहीं रहता है। अखबारों में समाचारों की काट-छाँट करते-करते दुनिया से कोई सम्बन्ध थोड़े ही रह गया है।"

नवीन ने इस बात को समझने की चेष्टा की, पर वह असफल सा रहा। बात बहुत तोल कर कही गई थी। वह चुपचाप बाहर आया और जीने की सीढ़ियों से नीचे उतर पड़ा। नीचे से पीछे मुड़ कर देखा कि वह इन्द्रा अनमनी-सी गम्भीर बनी चुपचाप खिड़की पर खड़ी हुई, उन दोनों पर दृष्टि टिकाए हुए थी। रमेश ने उस से पूछ ही डाला "मेरी श्रीमतीजी कैसी लगी।"

"तेरी छाँट के लिए बधाई देता हूँ। लेकिन है स्वार्थी। खैर अब तू पक्का दुनियादार बन गया है। इसी लिए माने लेता हूँ कि अपने लिए कहां से भाभी भी जरूर ही चुन कर ले आवेगा।"

"कोई घर नवीन तुमसे रिश्ता करने को तैयार है।"

"पर मुझ में तुझ जैसी पैनी बुद्धि कहाँ है?"

"मुझे तो यह अचानक एक मीटिंग में मिलीं। वह बड़ी सुन्दर कविता करती है! तुम बैठे ही नहीं। वह कविता सुनाती। इम्तहान के

बाद शादी होगी।"

"नहीं तो क्या तुम्हारा इरादा अभी से अपना टूटा ट्रंक व फटी दरी वहाँ ले जाने का है।"

"वे तो यही चाहते हैं।"

"और तुम जैसे नहीं चाहते हो।"

रमेश इस पर कुछ नहीं बोला। चुपचाप दोनों चलते रहे। अब नवीन ने कहना शुरू किया, "यह निकम्मा मध्यवर्ग अब अधिक दिनों तक जीवित नहीं रह सकता है। सन् १९२२ और ३० के आन्दोलनों ने गाँवों और शहरों में एक नई राष्ट्रीय बयार बहाई है। उस से कुछ और नए वर्गों में चेतना आ गई है। फिर वह राष्ट्रीयता का पुरोहित अधिक दिन तक नहीं रहेगा। इतिहास इसका साक्षी है कि सदा प्रगतिशील आन्दोलन उठे और रूढ़िवाद में परिवर्तन हुए हैं। मध्यवर्ग की पिछले दिनों की राष्ट्रीयता मजदूर किसानों और विद्यार्थियों तक सीमित न रह कर हमारे परिवारों में पहुँच कर हमारी माँ-बहिनों के हृदयों पर भी छा गई है। हम उपनिवेश की जनता हैं, फिर भी क्रान्ति इङ्गलैण्ड में नहीं होगी, भारत में होगी। चीन, ईरान, अरब आदि एशिया वाले देशों की जनता उठ रही है। हमारा पड़ोसी चीन तो········।"

"तुम आज जा ही रहे हो न।"

"हाँ। तुम्हारे आफिस का क्या हाल है?"

"भारतीय पत्रकार जगत पूँजीवादों के हाथ में है। हम लोगों की स्थिति श्रमजीवियों की-सी है, जो पत्र की नीति चलाने के लिए अपना श्रम बेच कर अपनी आजीविका चला रहे हैं।"

"तुम रात गाड़ी पर मिलोगे।"

"क्या एक-दो रोज रुकना सम्भव नहीं है।"

"मैं तो आज चला ही जाऊँगा। समय मिले तो स्टेशन पर चले आना, अन्यथा कोई आवश्यकता भी नहीं है"

"एक प्याला चाय तो पीओगे।" कह कर रमेश एक छोटे से टुटपूँजिया रिस्तोराँ की ओर बढ़ गया। कमरे में कोई सजावट नहीं थी। दीवाल पर कुछ सस्ते कैलेंडर टँगे हुए थे। मेज पर कुछ पुराने दैनिक पड़े हुए थे। वहाँ वे दोनों एक बेंच पर बैठ गए दूकानदार बूढ़ा बँगाली था। वह दो प्याले चाय बना कर रख गया।

पूछा रमेश ने, "अब कब तक यहाँ आओगे?"

मैं, स्वयं नहीं जानता हूँ रमेश, कि मुझे अब कहाँ-कहाँ जाना है। मेरे सम्मुख कोई निश्चित-सा कार्यक्रम नहीं है। हमारा सम्पूर्ण सम्पर्क इस निकम्मे मध्यवर्ग से है। उस से आगे हम नहीं बढ़ पा रहे हैं। मुझे व्यक्तियों की हत्या पर विश्वास नहीं है। हमें तो उन पुराने संस्कारों और धारणाओं को मिटाना है, जिनसे कि ये व्यक्ति बने हैं। हमें तो सम्पूर्ण विचारधारा को बदलना है कि नए लोग नए तरीके से सोच सकें। इसके लिए एक सांस्कृतिक आन्दोलन भी चलाना होगा। जिस जाति की सांस्कृतिक शक्ति जितनी बलवान होगी, उतनी ही वह जाति शक्तिशाली होगी। हम में अभी वह शक्ति नहीं आई।"

रमेश को इससे अधिक दिलचस्पी इन्द्रा की बातों से थी। वह जब कभी इन्द्रा को इन राष्ट्रीय आन्दोलनों की बात सुनाता है तो वह उनको ठीक-ठीक समझ नहीं पाती है। नवीन के बारे में उसने न जाने क्या-क्या बातें नहीं कहीं थीं। वह नवीन एकाएक आया और आज ही चला जावेगा। बोला ही वह, "नवीन इन्द्रा कहती है कि वह इसके बाद नौकरी करेगी।"

"नौकरी!" नवीन चाय पी रहा था, जो बहुत कड़वी थी और उस में दूध की मात्रा बहुत कम थी।

"वह कहती है कि यहीं उसे डेढ़-सौ की नौकरी किसी स्कूल में मिल जावेगी। फिर वह प्राईवेट एम० ए० देगी।"

नवीन ने कड़वी चाय घूँट-घूँट कर पी डाली। दूकान और

बँगाली महाशय पर एक नजर डाली और उठ गया। बाहर निकल कर चौराहे पर वह 'बस' की प्रतीक्षा में खड़ा हुआ। उसका साथी चला गया था। नवीन अब 'बस' पर बैठ गया। टिकट के पैसे चुका कर, वह उस टिकट को देखने लगा। बस में व्यापारी, ठेकेदार, स्कूल और कालेज से लौटते हुए लड़के-लड़कियाँ तथा और कई श्रेणी के लोग बैठे हुए थे। कोई एक दूसरे से सम्बन्ध नहीं रखना चाहता है। रमेश की गृहस्थी पर एक बार उसने सोंचा और यही निर्णय दिया, कि वह समझदार है। ठीक समय पर उसमें अपने लिए एक साथी चुना है।

नवीन जानता है कि बीती हुई जीवन घटनाओं को पीछे मुड़ कर देखना निरी भावुकता है। वर्तमान की कसौटी पर उसे परखना चाहिए और भविष्य पर उसे लागू करना है। अतीत की स्मृतियाँ तो केवल कुछ झाँकिया मात्र हैं, वे महान इतिहास के कुछ व्यक्तियों की चुनी जीवन घटनाओं के नौटंकी वाले संस्करण से हैं। वे झाँकियाँ क्षण भर हरियाली लाती हैं और बहुत प्यारी लगती हैं; किन्तु वे वास्तविक जीवन से बड़ी दूर है। आज उनसे शक्ति का ज्ञान पा लेना अधिक संभव सा नहीं है।

बस रुक गई थी। उसे वहीं उत्तर जाना था। वह उतर पड़ा। कंडक्टर ने सीटी बजाई, बस चली गई थी। वह पीछे छूट गया। अक्सर वह कब-कब पीछे नहीं छूटा था। इसी भाँति तो कई लोग बिछुड़ और खो से जाते हैं। अब नवीन संभल गया और आगे की ओर बढ़ा। सामने स्टेशन की बड़ी इमारत खड़ी थी। उसके एक ओर से एक संकरी गली बाबू लोगों के क्वार्टरों की ओर जाती थी, जहाँ कि आगे चल कर छोटे दरजे के कर्मचारी रहते हैं। सामने लोहे की पटरियों का घना जाल था। इधर-उधर इंजन दौड़ रहे थे। चारों ओर धुँआ छाया हुआ था। लोको, पार करके वह मालगोदाम

पहुँच गया। आगे वह पूछ ताछ कर पता लगा लेगा क्वाटरों पर नम्बर पड़े हुए थे। एका-एक मेह बरसने लगा। वह मालगोदाम के शेड के नीचे पहुँच कर वहाँ खड़ा हो गया। उसने चारों ओर एक दृष्टि डाली। चारों ओर बोरियाँ और तरह-तरह का सामान पड़ा हुआ था। वह बहुत कुरूप सा लगा। वहाँ कोई जीवन नहीं था।

नवीन बड़ी देर तक वहाँ खड़ा रहा। वहाँ के कर्मचारियों से उसने मस्टर जी के बारे में पूछा तो वे उत्तर देते कुछ उलझे से लगे। वे मानो मास्टरजी के परिचित व्यक्ति को सावधानी से पहचान लेना चाहते थे। शेड की टीन बज रही थी मालगाड़ी के डिब्बे खड़े थे। कहीं समान चढ़ाया जा रहा था। वह वहाँ शून्य सा खड़ा था। उसके सारे विचार चूक गए थे।

बड़ी देर के बाद मेह बन्द हो गया। अब तक उसने एक जमादर से थोड़ी जान-पहचान कर ली थी और वह उसके साथ चलने को तैयार हो गया। लाइनों को वह फिर पार करने लगा। कहीं कोई चिल्ला रहा था—पाँच डाउन एकसप्रेस छोड़ी है।

—नवीन जिन मास्टरजी के घर जा रहा है, उनका नाम महेश प्रसाद है। वे पार्सल के आफिस में बाबूगिरी करते हैं। पत्नी है और एक लड़की। सदा से भाग्यवादी रहे हैं। बचपन में इन मास्टरजी ने पटड़े पर मिट्टी फैलाकर नवीन को अक्षरों के ज्ञान का पहला पाठ पढ़ाया था। उसके पिताजी की मौत के बाद भी वे उनके घर आए थे। आगे बराबर चिठ्ठीयाँ दोनों ओर से आती-जाती रहीं। पिछले साल एक बड़ी दुर्घटना हुई थी। उनकी लड़की को कुछ गुंडों ने भगाया था। वह बहुत सुन्दर थी और एक सेठजी ने उस गरीब घर की लड़की को उबारने के लिए यह जाल रचा था। एक मास के बाद वह लड़की एकाएक एक दिन घर लौट आई। मास्टरजी ने मुकदमा लड़ा था।

कई सबूत पेश किए गए, पर अपराध वे साबित नहीं कर सके थे। फैसला हुआ था कि वह बदचलन लड़की है। वह अपनी इच्छा से भागी थी। फैसले के बाद सेठजी ने अपने मुनीम को भेज कर कहलाया था कि वे लड़की के खर्चे का माहवारी भार सौ रुपया देना स्वीकार करते हैं। पिता ने आत्म सम्मान की भावना से उसे ठुकरा दिया था। फिर आगे सेठजी भी चुप हो गए। लेकिन वह लड़की गर्भवती हो गई थी और एक दिन उसका एक सुन्दर लड़का हुआ। वह युवती उस लड़के के भार से दब गई, परिवार से बहार उसकी कोई सामाजिक स्थिति नहीं रह गई थी। सेठजी की बातें कभी-कभी वह लड़की सोचती थी। वहाँ कुछ दिन उसने काटे थे। वह मन में उनके लिए खास दुःख नहीं मानती है। उतना सुख उसे आज तक कहीं नहीं मिला था। उसका नारित्व तो चाहता था कि वह वहीं चली जाय। एक बार उसने अपनी माँ के पास चुपके प्रस्ताव भी किया था। उसकी माँ तो फीकी हँसी-हँसी थी। उस लड़की को विश्वास नहीं होता था कि सेठजी उसे इतनी जल्दी भूल गए होंगे। और उसने सेठजी को एक पत्र लिखकर अपनी हालत बयान की। पास-पड़ोस के एक लड़के को फुसला कर चिट्ठी ले जाने के लिए तैयार किया था। चिट्ठी से उत्तर में कुछ दस रुपए के नोट उसे प्राप्त हो गए थे। वह उन नोटों के मोह में पड़ गई थी और यदा-कदा चुपचाप फिर-फिर पत्र लिखती थी कि वह उनके दर्शनों की भूखी है। वह लड़का बहुत शरारती है। उसका नाम उसने मुन्ना रखा है। उसकी आँखें उनकी जैसी ही हैं। वह अनायस उनकी याद दिला देता है। इसका कोई असर नहीं हुआ था। सेठजी उसकी विन्ती पर नहीं पिघले थे।

एक दिन वह लड़की फिर कुछ दिनों के लिए पड़ोस के किसी लड़के के साथ अपनी मकरजी से भाग गई थी। एक सप्ताह के बाद जब वह लौट कर आई तो, परिवार में कोई उससे कुछ नहीं बोला।

वह अब आवारा हो गई थी। माता और पिता दोनों उसके व्यवहार से तंग थे। मास्टरजी अपनी मौत बार-बार बुलाया करते थे। वे इसके लिए अपने को दोषी न मान कर सामाजिक व्यवस्था को कोसते थे। एक वर्ग दूसरे कमजोर वर्ग को किस भाँति समय-समय पर निगलता है, इसकी पूरी-पूरी जानकारी उनको थी। समाज की आर्थिक नीति के कारण ही उनको वह सब देखना पड़ा था। सेठजी का सम्मान उसी तरह का था। उनकी बहुत बड़ी कोठी पर लाभ और शुभ सिन्दूर से लिखा हुआ था। उन्होंने दो-तीन मन्दिर बनवा कर कई मूर्तियाँ वहाँ स्थापित करवाई थीं।

नवीन ने क्वाटर के बाहर से ही पुकारा, "मास्टर साहब!"

"कौन है,," वे दरवाजे पर का फटा हुआ परदा उठाकर बोले। नवीन को देखकर अचंभित से हुए। बोले फिर, आ-आ कब आया तू!"

नवीन ने पाँव छू लिए थे। भीतर पहुँच कर मास्टरजी तख्त पर बैठ गए। उनका पोता उनको देख कर उधर बढ़ा। उसे गोदी में उन्होंने ले लिया था मास्टरजी ने न जाने कब से दाढ़ी और बाल रख लिये थे। उनको पहचान लेना आसान बात नहीं थी। कोई लड़की भीतर से एक मोढ़ा उठाकर ले आई थी। वह उसी पर बैठ गया। एक बार उस लड़की पर उसकी नजर पड़ी। उसके सूखे ओंठ देखे। उसका सस्ता शृंगार उसे प्रभावित नहीं कर सका। वह तो मास्टरजी के स्वभाव के बिलकुल प्रतिकूल लगी। वह अवाक सा उसको देखता सा रहा। उस युवती में कोई लाज नहीं मिली। उसकी आँखों में एक भयानक खिंचाव सा था। वह सभ्य परिवार की लड़की है, एकाएक नवीन के मन में किसी ने हल्ला मचाया।

मास्टर साहब तो बहुत ही बदल गए थे। गरीब की उम्र छोटी होती है। उसकी जवानी और बुढ़ापे के बीच ज्यादा दिन नहीं होते हैं।

उन्होंने पूछा, "तहाड़ से कब आया है ?"

"कुछ रोज हो गए हैं ।"

"सुना तारा की शादी हो गई है । ठीक किया । कन्या का तो ऋण चुकाना ही होता है ।" कह कर लगा कि उनका गला बैठ गया । फिर वे चैतन्य हुए और लड़की की ओर देखकर बोले, "खड़ी क्या देख रही है । उसे बुलाला । कहना नवीन आया है ।"

वह लड़की बड़े नाज से बाहर चली गई । मास्टरनीजी पड़ोस के किसी क्वाटर में गई हुई थीं ।

कुछ सोच कर कहा नवीन ने, "आप तो······।"

जिन्दगी जै दिन चल जाय, ठीक है । 'पाइल्स' की पुरानी शिकायत है । इधर दमा भी हो आया है ।"

मास्टर साहब केवल हड्डियों के ढाँचे भर रह गए थे । वहाँ का सम्पूर्ण वातावरण उसे डसता हुआ सा लगा । चारों ओर अजीब एक निर्जीवता फैली हुई थी । लगता कि कोने कोने से कोई श्राप ग्रसित आत्मा अपना अहंकार चारों ओर फैला रही हो । निम्न मध्यवर्ग का वह परिवार, जो कि कई वर्षों से इसी प्रकार एक-एक दिन काट कर जी रहा है । तीन चार पुश्त से वे नवीन के परिवार के साथ रहे । अब वे अलग होकर शहर के इस कोने में पड़े हुए हैं । ट्यूशन करने के बाद अब वे साधारण क्लार्की करते हैं, जहाँ भरपेट खाना नहीं मिलता है । सुख की किसी भावना के लिए अपेक्षित लालसा नहीं है ।

तभी मास्टरनीजी आ पहुँचीं । वे ठिगनी और मोटी थीं । उनके चेहरे पर भी नवीन को जीवन नहीं मिला । उसे लगा कि उस परिवार का सारा जीवन, सब सौन्दर्य और सम्पूर्ण वैभव जैसे कि वह लड़की अपने में समेट चुकी हो । इस डूबते और मिटते हुए परिवार में उसका बालक और वह जीवन प्रतीक लगे । वह बच्चा एक कुतूहल और गुदगुदी उसके हृदय में फैला रहा था ।

मास्टर साहब ने फिर दुहराया, "नवीन है।"

मास्टरनीजी पास आईं और बोलीं, "मैंने तो आज पहिले पहल इसे देखा है। क्यों शादी हो गयी है। नौकरी करता है या अभी पढ़ रहा है।"

इस प्रकार अधिकार पूर्ण सवाल सुनने का आदी वह नहीं था। वह अपने में सिकुड़ने लगा। तभी मास्टरजी ने बात सुलझा दी, "अभी पढ़ रहा है।"

"माँ होती तो ऐसा निठल्ला थोड़े ही रहता। भले घर के लड़कों की तो जल्दी शादी हो जानी चाहिये।"

वह नवीन भले घर का लड़का है और ये लोग? वे सच ही भले घर के नहीं हैं। यदि नवीन की माँ जीवित होती तो उसके सारे आग्रह वह मान लेता। माँ की मौत शायद इसीलिये हो गई कि वह स्वतंत्र हो जाय। प्रकृति कभी-कभी मानव स्वभाव को पहचानती है। उसने प्रकृति से सदा प्रेम किया है। बचपन में बरफ से भरे मैदानों में वह खेला करता था। देवदारु, चीड़, बाँज, आदि के घने जङ्गलों में वह खो जाता था। छोटे-छोटे झरने और मन मोहने वाले फूलों के भरे बनों ने उसका मन मोह लिया था। सेब, नारंगी, अखरोट, खुमानी और अनार आदि के वृक्षों के नीचे घंटों खड़े होकर उसने फल बिने थे। और वह नवीन की बहू वर्तमान में कहीं प्रत्यक्ष नहीं है। जब आवेगी तो उस अपेक्षित सत्य पर वह झुंझलावेगा नहीं। नारी जाति का यही हाल है। हर एक अपनी कोमल भावना से दूसरों के हृदय को छू लेने की क्षमता रखती है। उनका दायरा केवल परिवार के भीतरी कुछ समझौतों तक सीमित रहता है। फिर दरवाजे की आड़ से वह लड़की उसको घूर रही थी। वह कैसी दृष्टि थी? वह लड़की माँ है। समाज में भारी अपमान नित्य सहती है। उसका वह छोटा बच्चा अभी कोई भारी उम्मेद नहीं दिलाता है। वह बहुत कमजोर

है। वह लड़की कुटला है। किसी पुरुष के भाग्य से उसका अब कोई भी सम्बन्ध नहीं है। मास्टरजी रोगी हैं, फिर यह लड़की हृदय पर नासूर की भांति पीड़ा फैला देती है। नवीन यह सब सोच ही रहा था। उस परिवार की कहानी दर्दनाक उसे लगी।

"अब के कैसे भूल पड़ा नवीन" मास्टरनी जी बोलीं।

"पहाड़ से जल्दी चला आया हूँ।"

"यहाँ कब आया था।"

"सुबह। एक दोस्त के यहाँ टिका हूँ और आज रात की गाड़ी से चला जाना चाहता हूँ।

"दो-चार दिन रह जाता।"

"ऐसे ही काम है।"

गृह स्वामिनी लड़की से बोली, "चाय तो बना दे। हर वक्त खड़ी रहती है। कुछ समझ नहीं आई। इतनी बड़ी हो गई है।"

वह लड़की रसोई में चली गई। शायद लकड़ियां गीलीं थीं। उसने मिट्टी का तेल डाल कर उसे सुलगा लिया। चारों ओर धुआं और तेल की गन्ध फैल गई। मास्टरनीजी भी उठीं और उन्होंने तरकारी छीलनी शुरू कर दी। वह लड़की तो केतली पर पानी चढ़ा कर आटा गूँध रही थी। नवीन कहना चाहता था कि उसे भूख नहीं है। पर उस कर्तव्य के आगे झुक गया। कुछ देर चुप रह कर कहा, "आपकी सेहत तो भली नहीं लगती है। आप बिलकुल बदल गए हैं।"

"अरे तो क्या मैं आज का हूँ। तेरी माँ की शादी का सब काम मेरे ही जिम्मे था। तेरा पूरा बचपन मुझे याद है। अब तो तबीयत ठीक नहीं है। पाइल्स से बुरा हाल है। परसों से तो फिर वेग बढ़ गया है। हर पन्दरहवें दिन यही हाल रहता है। मैं तो कुछ महीनों का मेहमान हूँ। क्या करूँ। घर में भी शान्ति नहीं है। यह एक

लड़की है··············।"

"आप क्या कह रहे हैं। इन्सान का तो यही काम है कि वह संघर्ष करता रहे। जरा-जरा बात में हार जाना अनुचित बात है।"

"नवीन तू तो जानता ही है, कि मेरी पूजा-पाठ पर कितनी श्रद्धा थी। अब भगवान पर से भी मेरी आस्था हट गयी है। मैं अब नास्तिक हो गया हूं। भगवान आज के युग के लिए निकम्मे हो गए हैं। अब उनकी बेकार पूजा करना एक ढकोसला मात्र है। फिर मैंने देखा है कि बड़े-बड़े पापी सब से ज्यादा भगवान की पूजा-पाट और अनुष्ठान करते हैं। मेरा विश्वास है कि आज वह पुराना जमाना नहीं रह गया है।"

"आप तो मुझे पिताजी के मरने पर समझाने आए थे मास्टरजी; आज देखता हूँ कि आप भाग्यवादी बन गए हैं और उसका विकार आपके विचारों पर पड़ रहा है। आप सच्चे और खरे आदमी हैं। दुनिया के सम्पूर्ण व्यवहार में आज खोटापन पाकर उससे भाग जाने की सोच रहे हैं। आप मौत पर अपनी टेक लगा कर सुखी हो रहे हैं न?"

"क्या नवीन?"

"मैं बहुत पुराना नास्तिक हूँ। माँ ने मुझे फिर दूसरा सबक सिखलाया। गाँव की सीमाओं के भीतर पड़ोस के लोग, साहुकार, पटवारी सब की बातों को मैंने सुनी हैं। मुझे लगा कि हम सब गले-गले तक डूब गए हैं। यदि संभल नहीं जाते हैं, तो······।"

"नवीन तू तो······!"

"मैं आपकी स्थिति को जानता हूँ। समाज के एक बहुत बड़े अविश्वास से आप लड़ रहे हैं। आप की लड़की आप के विचारों का केन्द्र है। वह अभागिनी नहीं है। उसका कोई दोष नहीं है। समाज में आज परिवर्तन होना चाहिये और जो झोंके समाज का अहित

कर रही है, उनको मिटाने का सतत् प्रयत्न होना चाहिए। अन्यथा समाज का कल्याण नहीं हो सकता है। न्याय लड़की के पक्ष में नहीं पड़ा। वह भी शोषकों के वर्ग की भावना की रक्षा करता है। उस वर्ग को मिटाना है। आपको तैयार होना ही पड़ेगा।"

"तू पिता का लायक बेटा है नवीन।"

"नहीं मास्टरजी, पिताजी मुझसे अधिक सामर्थवान थे। उनका चेहरा सदा मेरी आंखों के आगे मुसकराया करता है। मैंने कभी उनकी आत्मा को दुःख नहीं पहुँचाया है। फिर भी उनकी उस बड़ी जमींदारी से मुझे कोई मोह नहीं रह गया है। उन ऊंचे-ऊंचे मकानों में कभी कभी चमगादड़ उड़ते हुए मैंने देखे हैं। मैं इसे शुभ कर ही समझता हूँ। वे मकान एक युग का प्रतिनिधित्व करते है और आज उस उजड़े हुए युग के सामान से हमें नव निर्माण करना है।"

"नवीन! नवीन!!"

"क्या?"

"आज यदि मैं मर जाऊं तो······।"

"परिवार फिर भी अपना वर्तमान पाकर चलता रहेगा। यही सदा से हुआ है। परिवार बढ़े हैं, मिटे हैं और फिर नए परिवारों का जन्म हुआ है।"

"मुझे तो लगता है नवीन, कि तू······।"

"आपसे सच कह दूँ मास्टरजी। हम नवयुवकों के मन में एक नई आग सुलगी है! हम चाहते हैं कि देश में एक बार उथल-पुथल मच जाय। गाँव-गाँव का किसान और शहर के मजदूर और मध्यवर्ग के लोग विद्रोह का झंडा उठा दें। एक बार बगावत हो जाय। हम चाहते हैं, हमारी सब पुरानी मान्यताएं नष्ट हो जाँय। विचार खो जांय। हम फिर बैठ कर नए सिरे से सारी बातों पर विचार कर उनका

नया मूल्यांकन करेंगे। उस राज्य में कमकरों को सारे अधिकार होंगे। सब की रोजी और रोटी सुरक्षित होगी।"

"नवीन, सच ही तू बहुत समझदार हो गया है।"

"आपको तो आश्चर्य हो रहा है। बचपन में नवीन पढ़ने से भागता था। वह पढ़ाई बेकार ही थी। आज नवीन दुनिया की झंझटों से नहीं भागना चाहता है। बचपन में अपराध करने पर आप कान उमेंठते थे और मैं रोता हुआ माँ के पास शिकायत लेकर जाता था। आज तो कभी आँसू ही नहीं आते हैं। हृदय बिलकुल सूख गया है। हर एक बात पर सोचा करता हूँ। आज मेरी अपनी की कोई सीमित दुनिया नहीं है। सब को अपने निकट का मान कर चलता हूँ।

वह लड़की एक गिलास में चाय ले आई थी। नवीन चुपचाप उसे निहारता रहा। उसके रूप में एक आकर्षण उसे मिला, जो कि सरला में नहीं था। उसके चेहरे पर कहीं विषाद की काली छाया नहीं दीख पड़ी। उसमे बहुत जीवन था। वह बच्चा रोने लगा। वह लड़की उसे लेकर भीतर चली गई। माँ का वह एक नया स्वरूप था। नवीन उसे बार-बार पहचानने की चेष्टा करके भी असफल रहा वे जो पिछले संस्कार उसके खून के भीतर फैले हुए थे, उन पर चोट लगती थी। लड़की के उस मातृत्व पर वह सोचने-सा लगा। एक लाज उसमें अब पाई थी। वह एक ऐसा कलंक था जिसे आसानी से वह नहीं विसार सकती थी। वह अपने विद्रोह को न दबा सकने और समाज को चुनौती देने के लिए ही शायद ही दूसरे लड़के के साथ एक सप्ताह गायब रही थी। उसे किसी की खास परवा तो है नहीं। कोई कुछ कहेगा तो वह उसकी बातों का उत्तर आसानी से दे देगी। उससे पूछेगी कि उसकी रक्षा आखिर पहिले क्यों नहीं की। वे गरीब थे, क्या इसीलिए थोड़े पैसे के मोह और लोभ में पड़ कर उन लोगों ने सेठ जी के पक्ष में गवाही नहीं दी थी? पिता की समाज

में कोई प्रतीष्ठा नहीं थी। वह जानती थी, कि उस सब के पीछे क्या व्यवस्था थी ? माँ ने बार-बार उसे घर से निकाल देने की धमकी दी थी। वह अहिल्या का श्राप नहीं था। न वह कोई ऐसा वरदान था जिसे वह शकुन्तला की तरह स्वीकार कर लेती। वह अपमानित हुई थी। उसका जी मचला होगा और पुरुष के प्रति क्रोध की एक तीव्र भावना उठी होगी। एक पाप को उसने आश्रय दिया। वह ऋषि-मुनियों के खून का घड़े में जमा करके गाड़ देना और राजा जनक का हल लगा कर सीता की उत्पत्ति वाली कोई नाटकीय दैविक घटना नहीं थी। वह तो साधारण मनुष्य का अपराध था, जिसके संयोग से वह लड़की गर्भवती हुई थी।

माँ ने शायद पिता से वह बात कही होगी। अपमानित पिता ने अनुभव की एक और कड़ुवी घूँट पी होगी। लड़की स्तब्ध सी माँ के आगे खड़ी हुई होगी। सारी बातें नवीन के दिमाग में चक्कर काटने लगीं। लड़की तो फूट-फूट कर रोई होगी। पिता ने पहिले उसे सान्त्वना दी होगी। माँ का मातृत्व निचुड़ गया होगा। वह बच्चा पेट में न होता तो शायद वह आत्महत्या कर लेती। नरक की तसवीरों ने भी उसे डराया होगा। बच्चे के बाद जीवन में परिवर्तन आया। मोह की नागफाँस में वह फँस गई। बच्चा बहुत सुन्दर था। अपने अज्ञेय पिता की भाँति उसका चेहरा और माँ की सी बड़ी-बड़ी आँखें थीं।

चाय का गिलास अभी गरम था। मास्टरजी ने कहा, कुंडी देदे। तुझे तो कुछ आता ही नहीं है।"

बच्चा रोने लगा था। वह लड़की बाहर आई। पत्थर की कुँडी उसे दे दी। नवीन ने एक-दो घूँट पी। मास्टरानीजी ने तभी कहा "खाना भी तैयार है।"

नवीन कुछ कहे कि, मास्टरजी बोले, "नवीन रूखा-सूखा खाना

उस लड़की को कुन्ती का सा वरदान प्राप्त नहीं था। न वह कुमारी गंगा थी जिसके पुत्र भीष्म थे। न वह इन्द्र की अप्सराओं का अधिकार पाए हुए थी, जो सदा कुमारी रह कर भी पुत्रदान लोगों को देती रहीं। वह सतयुग था जिसका वर्णन पुराण और महाभारत की महान कथाओं में मिलता है। आज तो नारी और पुरुष का आपसी रिश्ता कुछ उलझ सा गया है। उनके बीच सदा सन्देह की रेखाएँ पड़ जाती हैं। यह कलयुग कई नए सामाजिक-विधानों पर विश्वास करता है। जिसमें नारी को कोई अधिकार न देकर मनु की कसौटी कि उस पर पिता, पति और पुत्र का अनुशासन सदा लागू रहेगा! वह तो एक अविश्वास की प्रतीक है, जिसका रक्षा करना पुरुष का कर्तव्य है।

वह उसके विद्रोह को समझाना चाहता था। लेकिन अनायास ही उसकी मुसकान मन में भ्रम डालने लगी। वह कैसा तीखा व्यंग था। वह उसके पतन की उस सीमा पर स्तब्ध रह गया था। समाज की इस अतृप्त भावना को वह देख रहा है। पिछले १९१४-१८ के युद्ध के बाद यह एक नवीन प्रवाह आया है। राष्ट्रीय आन्दोलन कई प्रेम-कहानियों के "कैनवाह" रहे हैं। वहाँ एक नूतन मानवीय निर्बलता का आभास उसे मिला है। जो पहिले प्राकृतिक भले ही रहा हो, आज की स्थिति में वह सब उसे भला नहीं लगता। ऐसे अन्य उदाहरणों को वह जानता है, जहाँ लड़कियाँ झूठी मृगतृष्णा में फँस गईं। कुछ ने तो भावुकता के उफान में अपना जीवन तक नष्ट कर दिया। मध्यवर्ग में यह रोग तेजी से बढ़ता जा रहा था। एक अस्वस्थ सा वातावरण शहरों के भीतर फैल गया था।

वह अब ठीक तरह से खाना संजोज कर आई थी। वह खाना खाने लगा। बार-बार वह कहीं उलझ कर कुछ सोचता सा रह जाता है। हाथ रुक जाते। तभी वह लड़की एक और पराठा डाल देती थी।

वह कुछ नहीं कह पाता था और वह लड़की बिल्कुल मूक थी। अब तरकारी ले आई और गाजर का अचार ......! कुछ चूकता तो वह सावधानी से दे जाती। वह चुपचाप खाना खाता रहा। उस लड़की के इस व्यवहार पर मुग्ध था।

मास्टर साहब ने बातें शुरू की, "अब क्या विचार है नवीन?"

नवीन तो पराठे तथा और नैतिक विचार-धाराओं के बीच बह रहा था।

"आगे तो नहीं पढ़ेगा।" फिर सवाल पूछा।

"मैं पहाड़ जाकर हल लगाऊँगा मास्टर साहब।"

"क्या कहा रे।" मास्टरनी चौके से बोलीं। "अब यही करेगा कि बाप-दादा के नाम पर बट्टा लगे। बाप की तरह ओहदा......।"

"हल लगाना कोई बुरी बात थोड़े ही है। पुरखों ने भी कहा है, कि खेती सबसे उत्तम होती है और चाकरी नीच।" कह कर वह हंस पड़ा। मन में सोचा कि खेती आज वैसी उत्तम कहाँ है। वह पूरे परिवारों को अन्न नहीं देती है। किसानों के बेटे तो कस्बों और शहरों की ओर चले जाते हैं। उनका खेतों से मोह हट गया है।"

"वकालत नहीं ली।"

"ली तो है पर विचार नहीं होता। वकील साहब बनने की कोई खास इच्छा नहीं है। उससे हल लगाना बुरा पेशा नहीं है।"

मास्टरनीजी ने नेक सलाह दी, "अब शादी करले। कुछ बन्धन चाहिए। इस तरह मारे-मारे फिरना ठीक नहीं है। रोजगार तो कुछ न कुछ लग ही जायगा। पढ़े-लिखों के लिये क्या कमी है।"

'पढ़े-लिखे......'; यह व्यंग मास्टरजी के लिए था, कि यदि वे ज्यादा पढ़े-लिखे होते तो ये सब मुसीबतें न उठानी पड़तीं। हर एक समझता है कि उसे गृहस्थी का एक जीव बन जाना चाहिए। परिवारों का निर्माण इसी प्रकार हुआ है। वह कब सब से भाग रहा है। और

वह माँ चाहती होगी कि उसकी लड़की भी किसी परिवार में जाकर राजरानी बने। वह हवस पूरी नहीं हुई है। लड़की सदा के लिये घर में रह गई। एक नाजायज बच्चे की नानी बनना उसे भला सा नहीं लग रहा है। वह इसके लिए कोई नारी-सहानुभूति नहीं चरतर्ती है। कोसती है बार-बार उस लड़की को और अपनी कोख को भी दोषी ठहराती है। फिर भी बच्चे पर उसका मोह है। उसे यह आशा भी है, कि कभी किसी दिन सेठ जी आकर उस लड़की को उपपत्नी सी ग्रहण कर लेंगे इसकी चर्चा वह मोहल्ले की नारियों से अकसर करती है।

"तारा की शादी की तो चिट्ठी तक तूने नहीं भेजी।"

अब अपनी शादी की जरूर भेजूँगा। "ढोरा गाँव-गाँव जाकर करूँगा कि कोई मुझे अपनी लड़की दे दे।" कह कर नवीन हँस पड़ा। मास्टरजी भी हँसी नहीं रोक सके। लेकिन वह लड़की चुपचाप खड़ी थी। नवीन को उसका वह सस्ता बनावटी शृंगार फिर एक बार डस बैठा। वह सोचने लगा, कि नारी का यह कौन सा रूप होगा।

"ऐसा लड़का तो भाग्य से मिलता है।" मास्टरनीजी बोलीं। मन में एक हूक उठी। वे कई लड़कों को देख चुकी थीं। आज यदि वह घटना न हुई होती, तो वे क्यों समाज के बीच इस भाँति चुपचाप रहतीं।

नवीन उठा। उसने हाथ धो लिए। उस लड़की की भूखी आँखों ने एक बार उसे फिर पकड़ लिया था। वह असमंजस में पड़ गया। अब वह तो अपनी माँ से शिकायत कर रही थी, कि कुछ नहीं खाया है।

"गरीब घर का खाना ठहरा।" बोली मास्टरनीजी।

"क्या? इतना तो खा लिया है। चार दिन तक अब भूख नहीं लगेगी। फिर इस घर का अन्न तो ......।"

"हुक्का तो नहीं पीते हो?

"नहीं-नहीं !"

'कृष्णा, जा सिगरेट ले आ।" कह कह मास्टरनीजी भीतर गईं। सन्दूक खोल कर कुछ रेजगारी ले आईं।

नवीन ने कहा कि वह सिगरेट नहीं पीता है। फिर भी वह लड़की तो बाहर चली गई थी।

वह लड़की बार-बार मन में फैलती जा रही थी। सोचता रहा नवीन कि कहीं किसी अच्छे गृहस्थ में वह उसे सौंपने का प्रबन्ध करेगा। अपने कई दोस्तों के नाम उसने याद किए। फिर सोचता कि क्या वे पुरुष नहीं है। नारी के चरित्रको सदा से पुरुष ने कसोटी पर परखा है। अपना स्वार्थ वह सदा भूल जाया करता है। और वह देखता है कि, एक पूरा नारी-वर्ग सड़कों पर बैठा हुआ पुरुष को आमंत्रित करता है कि वे स्वतन्त्र नारी हैं। पुरुष उनसे कुछ पैसों में खेल सकता है। वे परिवारों से दूर रहती हैं। उनका कोई समझौता पुरुष से नहीं होता है। रात्रि को कोई-कोई पाँच सात, आठ और दस-बारह पुरुषों का साधारण परिचय प्राप्त करती हैं। वह उनको ठीक सा नहीं जानती, पहचानती भी नहीं है। उनकी कोई परवा उनको नहीं रहती है। एक धनिक वर्ग उनका आधार है। अन्यथा वे इस भाँति अपेक्षित समाज के बीज न रह जातीं। वह नारी जाति अपना साधारण सा मूल्य पाकर व्यवसाय चलाती है। जीवन को इस निम्न कोटि के व्यवसाय की ओर ले जाने देने की जिम्मेदारी एक धनिक वर्ग पर ही है, जो आर्थिक दासता हर एक पर लागू करने के लिए लालायित रहते हैं। उस वर्ग ने स्वर्ग और नरक की तसवीरें चित्रकारों से बनवाईं; तीर्थ की व्रत की व्यवस्था की, ब्राह्मणों को बुद्धि का सम्पूर्ण ठेका देकर उनको गुरू बनाया। उसने एक बहुत बड़ा जाल सम्पूर्ण समाज के ऊपर फैला रखा है। नारी का वह वेश्या वाला रूप कभी नवीन को नहीं भाया। सौंदर्य का वह भद्दा प्रदर्शन के

बनावटी हाव-भाव और वह झूठा प्रेम का सौदा। सारा का सारा वातावरण उसे अस्वस्थपूर्ण मिलता है । वह मानव शरीर का सौदा ·······वह लड़कियाँ आजीवन कैदी का सा जीवन व्यतीत करती हैं। यह औरतों की दासता तो अब परिवारों के भीतर भी प्रवेश कर रही है। मानवता का यह श्राप···। यह संभव व्यवस्था·······।

अब मास्टरजी बोले, "बचपन में तो तू बड़ा नटखट था, एक बार अस्तबल में घास जला दी थी। एक बार छत पर से गिर पड़ा था। तेरे पिता जी बड़े चिन्तित रहते थे।"

नवीन कुछ नहीं बोला। वह लड़की लौट आई थी। भीतर जाकर एक तश्तरी पर पान रख कर ले आई और दो बत्ती कैंची सिगरेट की। नवीन ने पान खा लिया और सिगरेट फूंकने लगा। उस लड़की ने माँ के कान में कुछ कहा। मास्टरनीजी खिल उठीं। कहा, "सुनते हो आज 'मेटनी' देख आवें।"

"रोज तो सिनेमा जाती हो।"

छै महीने हो गए, एक देखा था। फिर आज भाई साब आए हुए हैं।"

नवीन जैसे जड़ था और वहाँ यह प्राण अब आए थे। भाई साब! नवीन बच भी तो नहीं सकता था। पूछा ही कौन सी फ़िल्म चल रही है।

सावधानी से उत्तर मिला, "लैला-मजनू।"

नवीन का मन मुरझा गया। उसने हाथ की घड़ी पर देखा। तीन बजने को केवल बीस मिनट थे। चुपचाप उठा और बोला, आप तैयार हो जाँय। मैं ताँगा ले आता हूँ।"

"चौराहे पर बस मिल जायगी।" वह लड़की बोली।

नवीन चुप हो गया। मास्टरजी को तेज खाँसी आई। वे पलंग पर लेट गये। दूसरे छोटे पलंग पर वह बच्चा सोया हुआ था। मास्टरजी

के जीवन में एक काँटा चुभ गया है, जिसे निकालना आसान काम नहीं था। उनकी सेहत खास भली नहीं लगी। उसे लग रहा था कि वे अधिक दिन जीवित नहीं रहेंगे। यह अनाथ परिवार फिर भी रहेगा। सोच कर कहा उसने, "किसकी दवा कर रहे हो।"

"दवा......! परहेज पर रहता हूँ, बस।" वे नवीन की ओर देखते रहे। एकाएक कुछ चिन्तित से बोले, "पाँच हजार का बीमा है और यही आठ-नौ सौ सेविंग-बैंक में जमा है। मुझे कुछ हो जाय तो तू इनको देखना। परिवार के और लोग शायद इनको आश्रय न दें।"

मास्टरजी का गला भर आया। समाज रुग्ण है। उस पर कहीं नश्तर लगाना पड़ेगा। नवीन यही सोच रहा था। मास्टरजी का परिवार कोई एक परिवार नहीं था। हजारों और लाखों परिवारों का यही हाल है। वे आर्थिक-दासता से किसी न किसी रूप में घिरे हुए हैं। पैसा, इन्सान और उसके वर्ग के बीच विचारों का आदान-प्रदान आज करता है। पैसे और सामाजिक-प्रतीष्ठा वाले परिवारों के समूह अपना नया नाता जोड़ लेते हैं। परिवारों का वह पुराना ढाँचा टूट चुका है। छोटा और बड़ा दरजा है, जिनके बीच बहुत बड़ी खाई है। फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति ने वहाँ नया मध्यवर्ग का निर्माण किया था। भारत में अंग्रेजों ने आकर उसकी नीव डाली। नीव बहुत कच्ची थी। दुनिया में फैलता हुआ पूँजीवाद उपनिवेशों में तेजी से फैला और भारत में वह रोग प्लेग से कम खतरनाक साबित नहीं हुआ है।

मास्टरजी की आँखों में आँसू थे। वे कातर आँखों से नवीन को देख रहे थे। नवीन पर उनको विश्वास था। अब वे कहने लगे, "मैं तुझे चिट्ठी लिखने वाला हो था। अच्छा ही हुआ कि तू आ गया। इस लड़की की फिक्र सदा मुझे रही है। माँ-बाप अपने बुरे बच्चों को नहीं ठुकरा सकते हैं।"

नवीन ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। वह चुप ही रहा। यह

जिम्मेदारी सही थी। मास्टरजी का उस पर ऋण है। शायद उसका कोई साथी इस युवती के विवाह करने के लिए राजी हो जाय।

वे लोग तैयार हो कर निकल आईं। माँ बोली, "लड़का यहीं छोड़ रहे हैं। दूध पिला देना।" बाहर लड़की के साथ चली गईं।

नवीन उनके पीछे था। चौरस्ते मे बस मिल गई। जब वे टिकट लेकर भीतर पहुँचे तो एक रील समाप्त हो चुकी थी। नवीन चुपचाप फिल्म देखने लगा। वह सामन्तवादी धनी परिवार की लड़की लैला और मजनू एक साधारण परिवार का लड़का। सैकड़ों वर्ष पीछे छूटी हुई दुनिया की ओर उसने मुड़ कर देखने की चेष्टा की। वहां का वह वैभव! जहां कि राजा और प्रजा केवल दो ही वर्ग थे और बीच का एक छोटा सरकारी वर्ग, जो दोनों के बीच राजा खड़ा कर देता था। लैला और मजनू ....! एकाएक उसके हाथ को किसी की लँबी-लँबी उङ्गलियों ने छू लिया। लगा कि वे लैला की-सी उङ्गलियाँ थीं। फिर उसकी हथेली पर वे उङ्गलियां कुछ लिखने लगीं। उसे लगा लिखा जा रहा था—प्रेम-प्रेम प्रेम। वह सन्न रह गया। कुछ देर उसी स्थिति में बैठा रह गया। एक बार उधर देखा और पाया कि वह लड़की किसी अर्थ पूर्ण भाव से मुसकरा रही थी। उसके हृदय में कोई जोर-जोर से चोट कर रहा था। वहाँ एक भारी शब्द उठता था—भाई साब, भाई साब!

नवीन उठा और बाहर चला आया। वहाँ वह कुछ देर सन्न सा खड़ा रहा। फिर उसने पानी पिया और एक सिगरेट फूँकी। बड़ी देर तक आने वाली फिल्म की तसवीरें देखता रह गया। इन्टरवल हो गया था। वह भीतर चला गया। उसका मन झगड़ रहा था लेकिन वही परदे पर चलने वाली लैला, जो एक कहानी भर रह गई थी। एकाएक वह लड़की चुपके कान पर बोली, "मैं लैला और ......।"

नवीन का चेहरा सुर्ख पड़ गया। अभी तक उस लड़की का हाथ

उसे बार-बार छू रहा था। वह उस पागली लड़की के पतन पर सोच रहा था। जब-जब वह उसे देखता वही अजीब-सी मुसकान पाता था। उस हँसी के भीतर कितना गहरा रहस्य छुपा हुआ था। नवीन बार-बार उन सेठजी पर सोच रहा था, जिन्होंने उस परिवार की लड़की का जीवन नष्ट कर दिया। आज तो वह चुनौती देती हुई मिलती है। वह लड़की तरह-तरह की छेड़खानी करती रही। नवीन वह सब देख कर दंग रह गया। क्या वह कल उसका भार उठा सकेगा? असम्भव बात थी। वह अब इस परिवार में शायद नहीं रह सकेगी।

सिनेमा से वे लौट रहे थे। एकाएक वह बोली, "भाई साब, मुझे किसी विधवा-आश्रम में भेज दीजिए।"

नवीन उलझन में रह गया, तो बोली वह, "यहाँ मेरा जीवन नष्ट हो रहा है। वहाँ मैं सुख से रहूँगी।"

नवीन ने इसका भी कोई उत्तर नहीं दिया। वह कहती रही, "लैला ही भाग्यवान थी। आप आज तो यहीं रहेंगे भाई साब। क्यों आप तो चुप हो गये हैं।

मास्टरनीजी जो पीछे छूट गई थीं, वे उनका इन्तजार करने लगे। एकाएक उस लड़की ने नवीन का हाथ पकड़ लिया बोली, "आज आपको हमारे घर रहना ही पड़ेगा।" उसकी आंखों में आंसू थे।

'बस' नहीं मिली और नवीन ने तांगा ले लिया। जब वे घर पहुँचे तो अँधेरा हो गया था। मास्टरनीजी भीतर चली गईं। लेकिन उस लड़की ने एकाएक नवीन को जकड़ लिया और उसके ओठों को चूमती हुई भीतर भाग कर चली गई। नवीन का सारा शरीर कांप उठा।

भीतर जाकर वह बोला, "मुझे देर हो रही है।" साधारण अभिवादन किया। मास्टरनीजी बोलीं, "फिर जरूर आना। यहीं आज

रह जाता ."

"रात गाड़ी से जाने की सोच रहा हूँ ।"

"चिट्ठी देना नवीन ।" मास्टरजी बोले ।

नवीन बाहर आया । वह लड़की दरवाजे के दहलेज पर, टाट का फटा हुआ परदा हटाए खड़ी थी । वह अपनी ठोढ़ी पर हाथ टिकाए चिन्तित लगी । नवीन के मन में कोई बोला—यदि रात को वह वहां रुक जाता तो? उसके बदन में सिहरन हुई । वह घबरा गया । वह बार-बार उसकी बातें सोचता और समझने की चेष्टा करता । पाता कि वह एक ऐसे रोग की मरीज हो गई है, जिसका उत्तरदायित्व उन सेठ-जी पर है । यह रोग अब आसानी से सुधर नहीं सकता है । वह लड़की परिवार के मर्यादा वाले वातावरण में अब नहीं रह सकती है । उसका कोई भविष्य नहीं है । वह चुम्बन याद आता, जो रोगी का सा लगता था । उसके मुंह से प्याज की महक चल रही थी । वह कहीं भी स्वस्थ नहीं लगा ।

नवीन एकाएक लौटपड़ा । वह फिर उस दरवाजे के भीतर पहुँचा । उसने मास्टरनीजी को दस-दस के दो नोट दिए । गुरू की वह पूजा, आज भी वह नहीं भूल जाना चाहती थी । उनके ना-ना करने पर भी वह वहीं उनको छोड़ गया । मास्टरजी बोले, "ले ले न । उस परिवार का अन्न तो बरसों से खाया है ।"

वह लड़की लैला मजनू के गीतों वाली किताब के गीतों को गुन-गुना रही थी । नवीन ने उधर नहीं देखा । वह तो चुपचाप बाहर निकल आया ।

वह बहुत दुखी था । सामने वही रेल की समानान्तर लाइनें फैली हुई थीं । वह बहुत बड़ा जाल था वह अपने भीतर छानबीन कर रहा था । प्याज के दाने की भाँति वह मन छिलकों को उतारता-उतारता, उतारता ही रहा । कुछ नहीं मिलता था । वह एक महक पाता था—

प्रेम ! उस लड़की ने न जाने कितनी बार उसकी हथेली पर अपनी लम्बी उङ्गलियों से यह शब्द लिखा था। वह उसे किस अधिकार से रोकना चाहती थी। वह तो एक याचना ही कर रही थी। ओ' नारी का अपमान शायद अपना बदला लेना चाहता था। वह उसका विद्रोह होगा। आज वह हर एक पुरुष से आसानी से माँग कर लेती है प्रेम की। अपनी रुचि पर उसका यह प्रेम निर्भर है।

उसे बड़े रेल के स्टेशन से फैली लाइनों के बीच वह खड़ा है। अभी-अभी वह जीवन की एक ऐसी मंजिल को पार करके लौटा है, जिसका आज उसे पहला अनुभव हुआ था। उसके शरीर के खून में उस चुम्बन का असर पहुँच चुका था। उसका मन ठीक नहीं था। सिर में भी दर्द शुरू हो गया। उसकी वह पिचासी आँखें मानों कि वह 'काली' का अवतार लेने तुली थीं। उस लड़की ने नवीन पर एक भेड़िए की भाँति हमला किया था। नवीन वहाँ से भाग आया है। सोचा उसने कि वह यदि रुक जाता तो शायद एक और संघर्ष करता। कौन जाने वह उसके इन संस्कारों पर अपना असर डाल देती। लेकिन वे भूखी आँखें जो उसे बार-बार निगल लेने तुली हुई थीं। नारी का वह रूप और वह निमंत्रण ! अब नवीन को लगा कि वह लड़की एक 'हिस्टीरिया' की बीमारी उसे भी सौंप गई है। वह सच ही मजनू की भाँति सोच रहा था। वह लैला टाट के परदे की आड़ में खड़ी हुई उसे बुला रही थी। बीच में समाज और उसकी प्रतीष्ठा खड़ी नहीं थी। वह अपनी इस लैला को आसानी से पा सकता है; बीच में जो संस्कारों की दीवार खड़ी है, उसे तोड़ना कठिन नहीं है। वह लौट जायगा और·······। नवीन हँस पड़ा। लगा कि वह हिस्टीरिया उतर चुका था। उसका जीवन इस साधारण खेल के लिए नहीं था। वह एक उद्देश्य के लिए जीवित है। जहाँ कि वह तारा और सरला के बन्धनों को तोड़ कर बढ़ा है।

नवीन स्वस्थ हो गया। उसे अपनी मानसिक स्थिति पर बड़ी हँसी आई। वह अपनी आलोचना करने लगा। अपने इस पतन को सोच कर उसे बहुत दुःख हुआ। लगा कि कभी-कभी वह साधारण व्यक्ति के चरित्र से भी गिर जाता है। अपनी इस कमजोरी पर उसे बड़ा दुःख हुआ। वह आगे बढ़ गया। वह रुक पड़ा। वह मालगाड़ी जुड़ रही थी। इंजन तेजी से डिब्बे फेंक रहा था। एक आवाज चारों ओर गूँज उठती थी। एकाएक उसके नाक में सड़न की बदबू पड़ी। सामने खालों के ढेर गाड़ी से उतारे जा रहे थे। एक सवारी गाड़ी पूरब से तेजी से आकर बढ़ गई। उसकी खटर खटर खटर बड़ी देर तक कानों में पड़ती रही। वाचवार्ड के सिपाही टहल रहे थे। वह आगे बढ़ गया। दुनिया बहुतबड़ी है चोरी से मोटी खाते हुये कृष्ण के मुँहकी भाँति जिसे माता यशोदा ने खुलवाया और देखा था कि सारी दुनिया वहीं है। वे अवतार थे। वह लड़की किसी अवतार से कम नहीं थी। शायद वह उन ओठों को खोलकर देखता तो वहाँ एक बहुत बड़ी दुनिया नजर पड़ती। आठ का घंटा तभी बजने लगा। अभी गाड़ी के आने में चार घंटे थे। उस अँधकार और बिजुली की रोशनी के झिलमिले में उसे पीछे एक अजीब आहट सी महसूस हुई वह लड़की मनो कि उसका पीछा कर रही हो कि लौट आओ तुम ···। वह बड़े प्लेटफार्म पर पहुँच गया और वहाँ उसने टेलीफोन की स्थानीय काल के लिए पैसा देकर रसीद कटाली। कुछ देर बाद उसके कान पर वह था। पूछा उसने, "क्या हाल है।"

"वही ए० पी० और रूटर के समाचारों का अनुवाद।"

"यहाँ न चले आओ। मैं नुमायश में हूँ।"

"एक घंटे में आऊँगा। गाड़ी तो एक बजे तक जाती है। शायद वह लेट होगी।"

वह जैसे कि किसी भारी भार से मुक्त हो गया। उसने फोन रख

दिया। बाहर सड़क पर पहुँचा। लारियाँ खड़ी थीं। हर एक पर लिखा था कि वह कहाँ तक सफर करती है। सुना था कि विधाता ने हर एक इन्सान के माथे पर उसके जीवन का सारा रोजनामचा लिख दिया है शायद ये साइनबोर्ड उसके छोटे संस्करण होंगे, जो कि दीख पड़ते हैं। विधाता की रेखाएं तो केवल वर्तमान को सन्तोष देती हैं। लारियों की वह पलटन ऊबती हुई लगी। सामने वाले बड़े पार्क में बैंड बज रहा था। उस आकर्षण ने बरबस उसे अपनी ओर खींच लिया। एक सिनेमा का विज्ञापन करने वाले भी उधर बढ़ गए। इनके बड़े-बड़े पोस्टरों में कई तसवीरें थीं जो खूब चमक रही थीं। वह वहाँ बाग की भीड़ में पहुँच गया। गरदन कटी लड़की जिसका नीचे का हिस्सा मछली का था। उसे तीन आना का टिकट खरीद कर देखने का उत्साह उसे नहीं रह गया था। और मोटर सायकिल का मौत के घेरे में आना। उसने नुमायश के कई चक्कर लगाए। अभी खास भीड़ जमा नहीं हुई थी। मिश्र का जदूघर देखने का उत्साह भी उसे नहीं हुआ। सुन्दर सजी हुई दुकानें सौदागरों की सुरुचि का परिचय दे रहीं थीं। ग्राहक उन पर खड़े होकर चीजों को देख रहे थे। उसने मूंगफली ले ली और चबाता रहा। वह बिलकुल अपरचितों की सी दुनिया में अपने को पा रहा था। उसके मन में एक उमंग उठी और वह जादू का खेल देखने भीतर पहुँच गया। उनके बुद्धि के खेलों को देखकर वह स्वस्थ सा होता हुआ लगा। बाहर भीड़ बढ़ रही थी। वह बीच फुहारे के पास बैठ गया, जहाँ कि भारत माता की एक बहुत बड़ी मूर्ति थी। अपार श्रद्धा से उसका माथा अनायास झुक गया। वह भारत के बड़े नक्शे पर विचार करने लगा। ग्रामोफोन के रिकार्ड बज रहे थे। बन्देमातरम् पर वह अटक गया। वह बंकिम का भारत था, बंगाल देश। आनंदमठ, के मुगलों के बाद अंग्रेजों के आगमन की सुबह अंग्रेजों की गुलामी का प्रभातकाल। उसके बाद १८५७ में फिर एक

बार सामन्तवादियों ने अपनी फौजों की मदद से अपने रजवाड़ों को संभाल लेने की चेष्टा की थी, लेकिन जनता का सहयोग उनको प्राप्त नहीं था। किसान अकबर की राज्य व्यवस्था वाले बन्दोबस्त से आगे प्रगति नहीं कर पाया था। अमीर उमराव अपने खान्दान की प्रतिष्ठा और अपनी आन के लिए मर सकते थे, बादशाह के लिए नहीं आज वह सब इतिहास के कुछ धुँधले पन्ने मात्र थे, जिनमें कोई खास चमक नहीं थी।

और वह जिन्दा नाच ·· ···! वहाँ वेश्याएँ नाच रही थीं। संस्कृति का कितना ह्रास हो गया था। वहाँ बहुत लोग जमा थे। और कुछ टिकट पाने के लिए झगड़ रहे थे। वह फिर नुमायश का चक्कर लगा रहा था। काश्मीर, बंगाल, आसाम, मद्रास, बम्बई आदि सब प्रान्तों की दूकानें वहाँ थीं। भारत का वह फैला हुआ स्वरूप······· ।

उसका साथी आ गया था। कहा नवीन ने, "जल्दी चले आए हो।"

"दूर नहीं है। वह पुल पार किया और आगे पाँच मिटन का रास्ता भी नहीं है। वहाँ से जल्दी चले आए।"

"कुछ काम तो था नहीं?"

"देख आए न उस लड़की को?"

"हाँ।" नवीन बोला। मन में एक बार गूँज उठी—उस लड़की को देख आया। वह बहुत प्यारी लड़की है। उसका वह चुम्बन मैं भूलना चाहकर भी नहीं भूल पा रहा हूँ। वह न जाने क्यों मुझे रोक लेना चाहती थी। ठीक, अब कुछ समझ में बात आती है। लेकिन वह उसका पुरुष तो नहीं बन सकता था।

"उस बेचारी को अदालत में देखने सैकड़ों आदमी पहुँचते थे। उसने कुछ दिन तक शहर में नया जीवन डाल दिया था। मैं उस मुकदमें का विशेष-विवरण लेने जाया करता था। उसका सिर मैंने

कभी नीचा नहीं देखा। वह खूब शृंगार करके आती थी। उसके रूप की चर्चा खूब रहती थी। पुलीस ने मुकदमा लड़ा और आशा थी कि सेठजी को जेल हो जाती, लेकिन उस लड़की की गवाही के कारण सेठजी बच गए।"

"उसने उस सेठ को बचा लिया?"

"उसने कहा था कि यह सच है कि कुछ व्यक्ति उसे भगा कर ले गए थे। उनको उसने पहचान लिया था। लेकिन उसने स्वीकार किया कि सेठ ने उसे कभी मजबूर नहीं किया था। वह स्वयं वहां रही। अब वह सेठ के बच्चे की मां बनने वाली है। सबको उस बात से आश्चर्य हुआ था।"

तब नवीन की धारणा गलत थी। वह उसे पति मान कर ही शायद उसके विपक्ष में कुछ नहीं बोली। यह नारी की अपनी निर्बलता आदि काल से चली आई है। वे स्वयं मुसीबतें सह कर भी अपने पुरुष के विरुद्ध विद्रोह करना नहीं जानती हैं। अपनी भावुकता के कारण धोखा खाने पर भी चुपचाप सब कुछ आशीर्वाद सा सहती है। नवीन को यह आचरण भला नहीं लगा। दासता का एक युग था, जब दास प्रथा चली थी और यह नारी युग-युग से दासी कहलाकर आज भी उस मुकुट को दूर फेंक देने का साहस नहीं कर पाती है। अन्याय के प्रति मूक रहती है। उसी के लिए पग-पग पर उसे अपनी रक्षा करने का प्रश्न हल करना पड़ता है।

"क्या आज जा रहे हो?"

"हाँ।"

"एक-दो रोज रुक क्यों नहीं जाते हो।"

"क्या बात है। क्या मंगनी की प्रथा निभाना चाहता है। मैं तो पुरोहित बनूंगा नहीं।" नवीन खिल-खिला कर हंस पड़ा।

"परसों से न……षड्यंत्र के कैदियों की पेशी शुरु होगी। उनके

लिए वकील ठीक करने हैं। कल मैं उनसे मिलने की आज्ञा लूंगा। तुम्हारे रह जाने से सुविधा होगी।"

"पहिले मालूम होता तो वैसा ही सोच लेता। अब एक दिन रुक जाऊं तो लाभ कोई नहीं होगा।"

"आज ही मैंने सुना है। सरकारी-विज्ञप्ति निकली है कि सरकार ने 'विशेष-अदालत' को वह काम सौंपा है।"

"तब तो रुक जाऊंगा। अब फिर आफिस जाओगे। नहीं तो मुझे मकान तक पहुँचा दो। रात में रास्ता ढूंढ़ लेना मेरी बुद्धि की बात नहीं है।"

"खाने का क्या होगा?"

"मुझे तो भूख नहीं है।"

ताँगा करके वे रवाना हुए। ताँगा बाजार के बीच से गुजर रहा था। शहर में जीवन उमड़ रहा था कई रास्तों को उन्होंने पार किया। शहर का वह विस्तार नवीन को नहीं जंचा। आगे ताँगा एक सुनसान रास्ते को पार करने लगा, जिसके दोनों ओर कई बंगाले थे। रमेश बता रहा था कि भारत के सब धनिक यहां कभी-कभी आते हैं। यह उन लोगों की बस्ती है। आगे फिर बाजार का कोई टुकड़ा मिला। फिर वे कई गलियों का चक्कर काटते रहे। आखिर ताँगा एक गली के नुक्कड़ पर एका एक खड़ा हो गया। रमेश ने ऊपर छत पर चढ़ कर कमरे से चारपाई निकाल ली, स्विच दबाया था कि बल्ब चमक उठा। नवीन ने चारपाई पर बैठ कर बेलबूटों वाला तकिया उठा लिया। हंस कर बोला, "तेरे भाग्य को देखकर ईर्षा होती है।"

"क्यों?"

"यही न कि तुझ जैसे घोंघे बसन्त को अप्सरा ने बरना स्वीकार कर लिया है। कभी तूने अपनी सूरत ठीक तरह से आईने में देखी है।"

"अच्छा दावत का बदला यह मिल रहा है।"

"देख, एक मैं हूँ कि कोई लड़की सीधे मुंह बात तक नहीं करती है। तुझसे बड़ा खूँसट भी मैं नहीं हूँ।"

"और क्या सोच रहे हो?"

"कुछ खास बात नहीं।"

"यह डर तो नहीं लग रहा है नवीन कि शादी के बाद मैं तुम्हारे साथ काम नहीं कर सकूंगा। इस माया-जाल के साथ नमक, तेल और लड़की का चक्कर भर रह जायगा।"

"यह तेरा भ्रम है।"

"मैं सच बात कह रहा था।"

"मुझे तो सन्तोष है। तुम्हारा जोड़ा पसन्द है।"

"तो मैं शादी करलूं। तुम सहमत हो।"

"मेरा ख्याल है कि तुम तब ज्यादा समझदार हो जाओगे। एक से दोनों की बुद्धि ज्यादा सोच सकेगी।"

"आगे मैं फिर पिता बनूंगा। फिर बुजुर्ग बन कर अपने लड़कों का घोड़ा बनूंगा। सरकस का सा खेल है। पर क्या करूं, जब फंस गया तो अब रोने से कोई फायदा नहीं है।"

रमेश चुप हो गया था। नवीन अभी तक गिलाफ पर कढ़े हुए कमल के बड़े फूल को देख रहा था। रमेश तो बोला, "अब मैं जाऊंगा। दूध तो नहीं पीते हो। पास ही दूकान है।"

"नहीं।"

"पानी घड़े में है। किताब पढ़ना चाहोगे, आलमारी खुली है।" कह कर रमेश चला गया था।

—नवीन ने आकाश की ओर देखा। बरसाती बादल पूरब की ओर छा रहे थे। बड़ी उमेस हो रही थी। बादल कहीं घने थे तो कहीं कम। कुछ स्थलों पर तो तारे टिमटिमा रहे थे। ये तारे और सतऋषि

उसे भले लगते हैं। बचपन में वे पहाड़ की चोटी छूकर कहीं छुप जाते थे। तारा को उसने नव नक्षत्रों का ज्ञान सिखलाया था। तारा के साथ उसने अपना सारा बचपन काटा था। लड़कियाँ एक दिन आसानी से परिवारों में स्थान पा जाती हैं। उनका भविष्य वहीं सीमित हो जाता है। परिवार की अपनी मौसमों के साथ उनका जीवन बीतता है। वह गुत्थी उसे आज असह्य लगने लगी। तारा से जब-जब उसने ससुराल की बातें पूछीं, वह चुप रही। वहाँ की सारी बातें वह किसी भारी भेद की भाँति हृदय में छुपाए रही। सच ही उसे तारा में कई परिवर्तन देख पड़े थे। अब वह गंभीर थी। किसी बात पर अपनी राय नहीं देती थी। सब कुछ चुपचाप सुनती ही रहती थी।

रमेश ने उचित ही सोचा है। एक लड़की ने उसको अपने समीप खींच लिया है। कल उनकी एक सीमित गृहस्थी होगी, जो दादा-पड़दादाओं के बड़े-बड़े फैले हुए परिवारों से भिन्न होगी। पास कहीं रेडियो बज रहा था। उसका ग्रामोफोन के रिकार्ड का गीत मन में हिलोरें ले आता। कहीं बादल कड़क रहे थे। वह इस तरह गृहस्थी की बात नहीं सोच पाता है। उसके आगे अपनी ही उलझी हुई कई बातें हैं। उसके पास प्रेम करने के लिए खाली वक्त नहीं है। यह चकल्लस अमीरों के लिये है। उनके पास व्यर्थ समय होता है। विवाह किसी दिन वह करेगा। वह लड़की ढूँढ़ लेगा। जब निश्चय करेगा तो सरला या तारा को लिख देगा; नहीं वह रमेश से कहेगा और फिर आसानी के साथ सब कुछ जुटा लेगा। उसे कोई कठिनाई नहीं होगी। सरला ने सदा एक पहेली उसे सौंपी है। वह उसे सुलझा नहीं पाया। सरला उसे जाने क्यों बार-बार सावधान करती रहती थी। वह सरला तो उसके हृदय के बहुत समीप पहुँच कर पूछती थी—तुम ही हो तारा के भाई! ओ मैं न जाने कब से तुमको देखने के लिए लालायित थी। आज देख कर पाया कि मैं तो तुमको खूब-खूब पहचानती थी। वह

बात उभार कर रखनी अनुचित लगी। वह इस सब के लिए नहीं है। उसका जीवन तो कई अज्ञेय सी घटनाओं के साथ समझौता करने में कट जायगा।

चारों ओर छतें ही छतें दीख पड़तीं थीं। वहाँ नगरवासी सो रहे हैं। नगर भी रात्रि की काली चादर ओढ़ चुका है। उसने चारपाई बरसाती के नीचे खींच ली। भीतर आलमारी की किताबें टटोलीं। राजनीति, इतिहास तथा पत्रकार-कला पर कई पुस्तकें थीं। कुछ देर तक वह उनको देखता रहा। फिर बाहर आया। बल्ब बुझाया और सोने की चेष्टा की। तेज पूरबी हवा बह रही थी। उसे नींद नहीं आयी। शहर में अभी तक हल्ला हो रहा था। वह तो शान्त जीवन में रहने का आदी है। कोलाहल से बड़ी दूर। यदि वह जानता कि उसे रुक जाना है तो वह शायद मास्टरजी के यहाँ रह जाता। वह लड़की आसानी से उसे झंझट से बचा सकती थी। सेठजी का तोहफा वह लड़का उसके लिए गृहस्थी में प्रवेश करने के रास्ते बन्द कर चुका है। वह उसकी हत्या कर सकती है। अब मच्छर भिंग-पिंग कर रहे थे। वह उठ बैठा। छत पर टहलता-टहलता रहा। उन फैली हुई छतों पर परिवार के परिवार सोए हुए थे। शहर भर में बिजली की रोशनी फैली हुई थी। वह तो चिन्तित सा था। रमेश की गृहस्थी पर सचता। वह उनके विवाह में कौन जान शामिल हो सकेगा, या नहीं। वे गृहस्ती को चलावेंगे। वहाँ उनका बच्चा होगा। वही-वही आदि काल से सृष्टि के विकास में प्रयत्नशील मानव।

इन्सान पर उसकी खास श्रद्धा कभी नहीं रही है। वह उसे उपयोगी मानता है। अन्य जन्तुओं से वह समझदार भी तो है। वह अपने को एक कर्तव्य की ओढ़ना से ढक चुका है। उसे संगठन करना है। उसके सामने कई प्रश्न हैं, जहाँ जीवन और मौत का सवाल नहीं उठता है। उसे सूझता है कि जनता को अपना नेतृत्व स्वय संभाल

लेना चाहिए। मध्यवर्ग के कुछ बुद्धिवादी क्रान्ति नहीं ला सकते हैं। रूस की अक्टूबर क्रान्ति के बाद उसने दुनिया की क्रान्तियाँ देखी-सुनी थीं। मैक्सिको, चीन आदि के बाद स्पेन में एक दिन वह क्रान्ति की प्रगति पीछे हट गई थी। वहाँ वह असफल रही। अन्यथा युरोप की 'वारसलीज की सन्धि' में बना-बनाया नक्शा अब तक बदल गया होता। लेकिन जातियों में स्वार्थ है, जिन पर कि कुछ सांच तक नहीं पाता है। दुनिया तो विचारों के बीच बँटती जा रही है। उसे सब विचारों वाली धरती उपजाऊ नहीं मिलती है। नवीन जानता ही है कि उनकी क्रान्ति की धरती तो बड़े जमींदारों की भाँति है। जिसका मुनाफा उनको ही मिलता है। खेतिहर मजदूर को उससे कोई वास्ता नहीं रहता है। समाज, मजहब, न्याय, शिक्षा आदि के जो कुछ विधान है, उनमें भीतर ही भीतर उनको असक्त बना देने का छुपा भाव है। वे अपनी संस्कृति को ताकि भूल जावें। वह उनसे विद्रोह करना चाहें, उनका सिर झुकाने से लिए सब तैयार मिलेंगे। वह अपनी छोटी-छोटी दैनिक चर्चा में तक आजाद नहीं हैं।

नवीन लेटा हुआ था। उसकी आँखे खुली थीं। मन बिलकुल खाली सा था आकाश पर पूरे काले घने बादल छाये हुए थे। वे टिमटिमाते तारे वहीं छुप गए थे। टीन की बरसाती पर टम-टम-टम कर बड़ी-बड़ी बूँदे टपकने लगीं। मेंह की अब तो तेज झड़ी लग गई थी। चारों ओर छतों पर एक विचित्र सी भगदड़ मच गई थी। अब तो हवा के बहुत तेज झोंके चल रहे थे। एकाएक शहर की पूरी बिजुली बुझ गयी। चारों ओर खूब अँधकार छा गया। सारा शहर एक काले परदे के नीचे छुपा हुआ सा लग रहा था। उसे तो पहाड़ी बरसात का अनुभव है, जब कि चारों ओर कुहरा छा जाता है। वह कुहरा कमरे के भीतर घुसकर यहाँ फैल जाता था। नवीन कोई बड़ा कवि होता, दार्शनिक होता या प्रेमी ही होता, वह भी इन मेघों

से अपनी किसी प्रेयसी को सन्देश भेजता। वह प्रेमिका कहीं दूर पहाड़ों में होती। जहाँ कि देवदार के पेड़ों के गिरोह के पास किसी झरने के किनारे अनमनी सी वह खड़ी उसके वियोग की आग में तड़पती होती। वह सेब, खुमानी, नाशपाती के पके फलों की महक वायु के साथ बहती लगती। और पूरब के बरसाती बादल उस नायिका को एकाएक वायु की भारी-भारी झोंको से डरा देते। वह नवीन तो शून्य में सा खो रहा था। उसका हृदय बिलकुल खाली था।

एकाएक देश की आजादी का सुपना उसके हृदय में फैलने लगता। ऐसे गाँव जहाँ किसान स्वतंत्र हों। जमींदार, साहुकार और पटवारी का भय उनको न हो। उन समाज के शत्रुओं ने गाँव का जीवन नष्ट कर दिया है। वे जोकों की भाँति उनके जीवन के भीतर घुसे हुए हैं। अस्वस्थ शहर जहाँ कि एक निकम्मा मध्यवर्ग अपनी अन्तिम साँसे गिन रहा है। गाँव का अन्नदाता किसान स्वतंत्र हो जाय, तभी गाँव का लगखड़ाता जीवन संभल सकता है। बड़े-बड़े उद्योगों का राष्ट्रीकरण.........! नवीन को लगता है कि वह एक दिखलावा सा है। वह दूर किसी देश के स्वप्न को यहाँ पूरा होता हुआ देखना चाहता है। जो कि बिलकुल संभव नहीं है। इस नई धारा का सूत्रपात हो चुका है। वह एक बड़े देश में पनप चुकी है। उसके साथी आज भी सोचते हैं कि चंद लाग हथियारों के बल पर क्रान्ति करेंगे। वे आतंक जमा कर आजादी पा लेने की बात सोच रहे हैं। लेकिन वह तो कहीं नहीं दीख पड़ती है।

नवीन के वे सब साथी बहुत ईमानदार हैं। उनकी सच्चाई पर उसे विश्वास है। सब नेक हैं और वे सब मौत को हराने की ठान चुके हैं सब बहुत जोशीले हैं। एक यह नवीन है जो कि बहुत ठंडा है। कहीं उसमें जोश नहीं उठता है। वह तो अपनी सुकुमार भावना की महान डोरियों में ही झूलता-झूलता रहता है। वह उस कर्तव्य को निभाने

की कठिनता को समझता है। उन लोगों के आपसी मतभेद पर विचार करके अपनी राय देता है। उससे वे सहमत नहीं होते हैं, फिर भी कोई विरोध नहीं करता। हर एक के हृदय में उसने अपने सरल व्यवहार से स्थान बना लिया है। रमेश को वह पहचानता है। वह जानता है कि कहीं भी वह कच्चे सूत के तागे की तरह टूट सकता है। इन्द्रा को एक बार ही देख कर उसे विश्वास हो गया, कि वह उस निकम्मे व्यक्ति को ठीक बना लेगी। वह रमेश को जानता है वह उन बुद्धिवादियों में से है, जो कुर्सी पर बैठ कर समस्त संसार की राजनीति पर अपने विचार व्यक्त किया करते हैं। किसी काम के लिए उद्योग करना उनकी शक्ति से परे की बात है। वे बड़े-बड़े विधान आसानी से बना सकते हैं। जरा अड़चन पड़ी कि पीछे भाग जाना उनको सुहाता है। आत्मा का सुख वे बार-बार चिल्लाते हैं।

वह सरला को अमूल्य हीरा मानता है। जिसे पाकर उसकी रक्षा करना आसान बात नहीं है। उसे तो कंकड़ चाहिए, जिसका कोई मूल्य न हो और रात-दिन चोर डाकुओं का डर सिर पर सवार न रहे वह उन मेंह बरसाते हुए बादलों की ओर देख रहा था। जो हिन्द महा-सागर से उड़ कर वहाँ आए थे। टीन तेजी से बज रही थी। वह अपने से कोई खेल अब तो खेल रहा था। उसने भीतर जाकर वह पिस्तौल छूकर देखी। जिसके पास वह रही, उसने कई-कई हत्याएँ कीं। पिछले चार उनके प्राण फाँसी पर झूल चुके थे। वह साधारण झगड़ों के ऊपर मौत से भी नहीं घबड़ाती है। एक गोली ....सात राउण्ड ।

सोचा अब कि वह क्यों नहीं मास्टरजी के घर चला जाता है। उनके पास बरसाती है। वह उस लड़की को समझा देगा। वह उससे क्या कहेगी। वह क्यों उसके आगे हार जाता है। उसका चुम्बन! एकाएक हृदय में गुदगुदी उठी। वह लाल रंग का रेशमी ब्लाउज पहने हुए थी। उस पर वह कथई रंग की साड़ी और हरे साबर की सैंडल थी।

चेहरे पर वह कोई क्रीम मले हुए थी, जिसकी महक उसके खाए हुए प्याज के नीचे दब गई थी। वह तो बड़ी देर तक उसके ओठों से अपने ओंठ लगाए रही और फिर छूट कर भीतर भाग गई थी। वह उसके हृदय की गति और उठती हुई छातियों का कम्पन तब नहीं भाँप सका था। वह एक बच्चे की माँ थी। एक अनुभवी कुमारी थी, जिसका मातृत्व ब्राह्मणों के मंत्रों, कन्यादान और सात भंवरों पर निर्भर नहीं था। वह वहाँ जा सकता है। उस लड़की की खुशी के लिए। वह उसका आमंत्रण स्वीकार करता है। वह क्या कहेगी उससे…।

वह अपने ऊपर झुंझला उठा। यह कैसी नुक्ताचीनी वह अपनी कर रहा था। यह मेंह की तेज झड़ी शायद अभी बन्द नहीं होगी। समस्त शहर एक करवट लिए हुए सोया हुआ था। कहीं दूर से कुछ कोलाहल का आभास सा मिलता था, जो कि टीन की भारी आवाज में खो जाता। बादल तेजी से गरज रहे थे। काले आसमान पर बिजुली की कई चिट्टी रेखाएँ चमकती थीं। वह उठा और उसने सुराही से पानी पिया। अब पलंग पर लेट गया। तकिया मोड़ कर उसने सिर के नीचे डाला। वह खूब पसर कर लेट गया कि नींद के साथ सत्याग्रह करेगा।

नवीन एकाएक चौंक कर उठ बैठा। वह उस लड़की का स्वर था। मानो कि वह वहाँ आई हो। पुकारा था—भाई साब! उसकी हथेली पर मानो गड्ढे पड़े हुए थे। वह उन अक्षरों को पढ़ रहा था—प्रेम! वह लैला मजनू की कहानी को दुहराने लगा। वह मदरसे की बचपन की जान पहचान, फिर वे जवानी के दिन! वह किसी सामन्त से लैला की शादी का हो जाना! और मजनू का जीवन………। एक युवक जो कि समाज के लिए उपयोगी हो सकता था, उसका अंत हो गया। काश की लैला खुदा होती। नवीन उस सोफी मत पर सोचता रहा, कि मजनू खुदा के लिए पागल हुआ था।

ठीक सोचा उसने कि दोष उस लड़की का नहीं है। वह उससे कह रही थी कि वह वहाँ रहना नहीं चाहती है। वह अनुरोध करती थी कि नवीन उसे किसी विधवा-आश्रम में भरती कर दे। घर के बन्धन से उसे आश्रम का जीवन पसन्द था। क्या नवीन उसकी उस अधिकार पूर्ण बात को पूरा करेगा। वह मास्टरजी शायद उसे नहीं जाने देंगे। मास्टरनीजी उस बच्चे को न भुला सकेंगी। वह बच्चा भी तो उसके लिए एक बहुत बड़ा सहारा है।

उसे लगा कि कोई उसे लावनी गा-गा कर सुला रहा था। माँ उसे चिड़िया के बच्चे की भाँति छाती से चिपका कर रखती थी। वह चुपचाप कुछ देर बाद सो जाता था। वह माँ के उस सुख पर सोचने लगा।

नवीन गहरी नींद में सो रहा था। रमेश ने जगाया। नवीन ने करवट बदली; फिर आँखें खोल कर चारों ओर देखा। सामने की छतों पर धूप फैली हुई थी। उसने आँखें मलीं। कुछ देर वैसे ही लेटा हुआ रहा। पूछा रमेश ने, "सुस्त लगते हो।"

"रात भर नींद नहीं आई।"

नवीन की आँखें लाल थीं। उनमें नींद उमड़ रही थी। रात भर उसके हृदय में एक तूफान उठता रहा है। वहाँ एक ज्वार आया था, जो कि अब उतर चुका है। उसने रमेश के हाथ से अखबार ले लिया। सरसरी तौर पर वह उसे देखता रहा। उसने रमेश को प्रूफ देखते हुए देखा था। यह अखबार अब कुरूप नहीं था। यह भी एक कला थी, जिसमें रमेश निपुण होता जा रहा है। आज व्यक्ति अपने बाहर दूर दूर देशों के समाचार जानने के लिए लालायित रहा करता है। स्पेन, चीन, अमरीका……सब देशों के हाल वहाँ छपे रहते हैं। लेकिन

उनकी नीति की बागडोर एक पूँजीपति वर्ग के हाथ में रहती है। वे इसीलिए ऐसे समाचार छापते हैं, जिससे राष्ट्रीय आन्दोलन न पनप सके। सरकारें भी अपना अंकुश उन पर रखती हैं। फिर भी नए जमाने की वह एक जरूरत बन गया है। हर एक अखबार का अपना एक पाठक होता है। फिर अलग-अलग पाठकों के लिए वे तरह-तरह के स्तंभ खोलते हैं।

वह रमेश से उस दुनिया का हाल सुन चुका है। उसे याद है कि भगतसिंह को जब फाँसी लगी थी, तो अखबारों ने किस तरह उस समाचार को छापा था। विशेष संस्करण निकले थे। वह उसे दुबारा देखने लगा। एक अजीब-सा कार्टून बना हुआ था। भारतीय किसान अन्न उपजा रहा है। महाजन खड़ा है। जमींदार का गुमाश्ता खड़ा है, पटवारीजी पहुँच गए हैं। शहर के बनिए का गुमाश्ता भी पहुँच गया है। आगे किसी क्रिकेट मैच का हाल छपा हुआ था। कानूनी स्तंभ के नीचे एक सनसनी पैदा करने वाले खून का हवाला छपा हुआ था। खूनी को नीचे सेसन जज ने फाँसी दी थी, लेकिन हाईकोर्ट ने उसे बरी कर दिया था। आसाम की नदी में एक नाव तूफान से उलट गई थी। तीस मुसाफिरों का कोई पता नहीं लगा। व्यापारियों के लिए चीजों के थोक भाव दिए हुए थे।

लेकिन नवीन का सम्बन्ध किसी समाचार से जैसे कि नहीं हो। उसने अखबार उठा कर रख दिया और चुपचाप बैठा रहा। वह अपने में कुछ सोच सा रहा था। वह स्वयं नहीं समझ पाया कि वह क्या सोच रहा था। उसके सिर भीना-भीना दर्द था।

कभी कहीं वह तेज हो जाता। लगता था, कि कोई तेज डंक वहाँ मार रहा हो। वह पीड़ा असह्य हो उठती थी।

"आज क्या क्या करना है?"

"तुम तो जेल जाओगे न।"

"हाँ लिखकर तो भिजवा चुका हूँ फ़ोन से पूछ लूँगा। मुलाकात तो हो ही जायगी। कोई खास बात नहीं करनी होगी।"

"वकील ठीक कर लिए हैं न। उन लोगों से कह देना कि मैं यहाँ हूँ। वे सब अभी तक तो साथ हैं। सरकारी मुखबिर देखा है? क्या कहता है?"

"एक वकील साथ लेकर जाऊँगा। तुम्हारा साथ चलना उचित नहीं है। व्यर्थ में लोगों का सन्देह बढ़ जायगा। वैसे तुमको कोई यहाँ पहचानता नहीं है।"

"तुम अभी जा रहे थे?"

"हाँ जल्दी लौट कर आ जाऊँगा। इन्द्रा के घर जाना है। मैं कल रात आफ़िस जाते हुए उससे कह आया था कि तुम रुक गये हो।"

"कुछ आवश्यक तो नहीं था।"

"मेरा मन नहीं माना। क्या करता? उसे भी कुछ काम पर लगाना चाहता हूँ। अभी तो पैरवी के लिये ही बहुत रुपया चाहिये।"

"शाबास!" नवीन के मुँह से छूटा।

रमेश ने जल्दी-जल्दी हाथ मुँह धोकर कपड़े बदल लिए थे। वह नीचे सीढ़ियों से उतर गया था।

अब नवीन उठ बैठा और दंतुन करने लगा। फिर खूब नहाया। कुछ स्वस्थ होकर बरसाती के नीचे बैठ गया। अब उठ करके वह उन फैली हुई छतों को देखने लगा। भीतर स्टोव की भर, भर सुनाई पड़ रही थी। एकाएक वह बुझ गया। वह भीतर पहुँचा और देखा कि दूध का उफान उठा था। उसने दूध उतार लिया। गरम-गरम जलेबियाँ खाकर दूध पी लिया। उधर अखबार का एक बड़ा ढेर पड़ा था। उसमें से एक निकाल कर पढ़ने लगा। फिर उसने एक मोटी किताब निकाली। वह अनोखी और भूत-प्रेत की कहानियों का संग्रह था। वह उसकी कहानियाँ पढ़ने लगा। वे भूतों की कहानियां जीवितों

से ज्यादा रुझाने वाली थीं। एक बुद्धिवादी भूत तो लाइब्रेरी से पुस्तकें ले जाया करता था। एक बार नई कब्र खोदी तो वहाँ शेक्सपियर का पूरा सेट मिला। फिर वह भूत कभी लाइब्रेरी नहीं गया। वह दूसरी कहानी थी वैज्ञानिकों का एक मरते आदमी को, बन्द काँच के मकान में बन्द करके, आत्मा को पकड़ने की चेष्टा करना। एक लाल बिन्दु उस मनुष्य की आँखों से निकला। वे ही प्राण थे। फिर वह लाल धुएँ की तरह वहाँ चारों ओर फैल गया। एकाएक काँच का वह मकान चकनाचूर हो गया। और आगे वह बिन्दु ओझल हो गया था।

वह तो उन कहानियों के बीच चटाई पर सो गया था। बड़ी देर तक सोया ही रहा। जब नींद टूटी तो देखा कि मेंह की झड़ी लगी थी और हवा के तेज झोंके चल रहे थे। बारह बज गया था। वह छाता ओढ़ कर बाहर निकला। वही मेंह की तेज झड़ी लगी ही थी। वह उस बरसते हुए पानी को देखता रहा। यह इन्सान प्रकृति पर विजय पाने के लिए नए-नए आविष्कार कर रहा है। लेकिन एक बात उसकी बुद्धि से परे की है—वह मौत का हाल नहीं जान पाया है। वहीं से अन्धविश्वास आए हैं।

—अब पानी थम गया था। उसने अखबार उठा लिया और बरसाती के नीचे चारपाई पर लेट कर पढ़ने लगा। रमेश लौट आया था। बोला, "चार वकील ठीक कर आया हूँ। वे लोग तो बहुत खुश थे। कहते थे दो मुखबिर बने हैं, पर नादान बच्चे हैं। पुलीस की पढ़ाई से काम नहीं चला सकेंगे। सब एक बात का विरोध कर रहे थे कि वे हथकड़ी लगवा कर अदालत में नहीं जावेंगे। उन्होंने भूख-हड़ताल की बात भी सुनाई थी। तभी जाकर उनको साथ-साथ रहने की इजाजत मिली। कुछ को तो सी० आई० डी० वालों ने बहुत तंग किया। लेकिन उनका कुछ नहीं मिला। वे किले के किसी तहखाने में बन्द हैं। जहाँ बहुत अंधेरा और शीलन रहती है।"

नवीन चुपचाप सुन रहा था। बयालिस नौजवानों का वह सवाल था। वे सब अठारह से अट्ठाइस तक के नौजवान लड़के हैं। उनके ऊपर पुलीस अफसरों की हत्या, बादशाह के खिलाफ षड़यंत्र और न जाने क्या-क्या अपराध नहीं लगाए गए हैं। यह लहर तो बहुत पुरानी है। फिर भी आगे नहीं बढ़ पाती है। वे षड़यंत्र टूट जाते हैं। उन युवकों का त्याग और तपस्या उन तक ही सीमित रह जाता है। उसको आगे बढ़ाने के लिए कोई वर्ग नहीं छूट जाता है। वह सब केवल एक क्षणिक चेतना में रह जाता है। आगे नए नौजवान फिर नया गिरोह बनाते हैं। नवीन स्वयं एक उजड़े हुए गिरोह को फिर जमा करने की धुन में है। सारी शक्तियाँ तो बिखरी पड़ी हुई हैं। वह उनको एक सूत्र में जुड़ा लेना चाहता है, ताकि वे कोई संगठित कार्यक्रम चला सकें।

रमेश ने अब कहा, "पैसा सुना काफी जमा हो गया है। दो अंग्रेज जज हैं और तीसरा एंग्लो-इन्डियन। शायद एक महीने के भीतर वे अपना फैसला दे देंगे।"

नवीन उन हृदयहीन जजों को जानता है। वे वारन-हेस्टिंगस के वंशज ही हैं, जिसने महाराजा नन्दकुमार को फाँसी की तख्ती पर लटकवा दिया था। उनका न्याय तो एक ढोंग होता है। वे तो चाहते हैं, कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद का आतंक लोगों पर जमा रहे और वे स्कूलों में पढ़ाते रहें कि उनके साम्राज्य में कभी सूर्य नहीं छुपता है। पहिले वे सोचते थे कि उपनिवेश पके फल की भाँति एक दिन स्वयं पेड़ से अलग छूट जाते हैं। तब अमरीका की नजीर आगे थी, लेकिन आज उत्पादन की शक्ति के बढ़ जाने के साथ वह बात नहीं रह गई है।

"अब तो एक बजने वाला है।" बोला रमेश।

"एक!"

"चलना चाहिए। देर काफी हो गई है।"

"तब आज का कालेज जाना भी आतिथ्य सत्कार में रह गया है।"

"नहीं इतवार है।"

"मेरा जाना तो उचित नहीं है। न जाने तुझे कब समझ आवेगी। हर बात में उतावलापन।"

"अब तो मेरे सम्मान का प्रश्न है।"

"मैं तेरी सास से साफ-साफ कह दूंगा कि वह एक निकम्मे आदमी को अपनी लड़की दे रही हैं। कौन जाने कब नौकरी छोड़ दे फिर रोगी अलग। आखिर वे लोग किस बात पर रीझ गई हैं। तू बातूनी है न!"

"मैं तो कहने वाला था कि······।"

"मेरे लिए भी वे लड़की तलाश कर दें। यही न! नहीं बाबा कहाँ उसे ले जाऊंगा। यहाँ अपना ही कोई ठिकाना नहीं है।"

नवीन तैयार हो गया। कोट की जेब पर पिस्टल रख रहा था कि रमेश ने टोका, "इसकी वहाँ जरूरत नहीं पड़ेगी।"

नवीन हँस पड़ा।

"यदि अम्मा जान जाय कि तुम क्या करते हो, तो शायद कल से मेरे लिए दरवाजा ही बन्द कर दे। भला हत्यारों को कौन अपनी लड़की देगा। कसाई के गले में गाय बाँधना भूल ही होगी।"

"क्या वहाँ जाना बहुत आवश्यक है। मैं सोच रहा था कि मास्टर जी के यहाँ हो आऊं। बेचारे बीमार हैं। किसी डाक्टर से उनको दिखलाना चाहता था।"

"वे क्या सोचेंगी।"

"तू समझा देगा।"

"वह व्यर्थ का दुःख मोल ले लेगी। फिर मेरा सवाल भी है। माने लेता हूँ कि वह मेरी भूल थी। उसका दंड तुम दोगे ऐसा विश्वास कदापि नहीं था। अच्छा माफी मांग लेता हूँ।"

"तब तो तू बड़ा स्वार्थी हो गया है रे। मुझे डर लगता है कि कल तुझ पर कोई भरोसा करना चाहिए या नहीं।"

"नवीन भैय्या!"

"क्या है रमेश?"

"मेरा कसूर माफ करदो।"

"चल-चल, आज नई बात क्या है। कसूर उस दिन तूने किया था और वार्डन साहब से मेरा नाम ले लिया। भला मुझे कहाँ मालूम था कि उनके बाग में लीचियों का पेड़ है। तेरी चोरी करने की आदत तो पुरानी थी। कह दिया कि मैंने तुझे भेजा था। उस समय की तेरी सूरत याद आ रही है।"

रमेश हँस पड़ा।

नवीन सीढ़ियाँ उतर रहा था। रमेश ने कुंडी चढ़ा कर ताला लगा लिया। नीचे उतर रहा था कि देखा सामने पान वाले की दूकान पर सी० आई० डी० वाला बैठा हुआ है। वह नवीन के साथ पिछले दरवाजे से गली में पहुँच गया। एक ज्ञेय शंका उसके मन में उठी। लेकिन वह संभल गया। गलियों के टेढ़े-मेढ़े रास्तों को वह पार करने लगा। चुपचाप वहाँ का दरवाजा खटखटाया। इन्द्रा आई थी। वह साधारण खादी की सुफेद धोती और चेक का मोटा ब्लाउज पहने हुए थी। रमेश उसका भावी पति है। उसने दोनों हाथ जोड़ कर नमस्ते किया और साड़ी ठीक तरह से सिर पर रख कर ऊपर चली गई।

रमेश ने नीचे कुंडी लगा ली। वे दोनों ऊपर पहुँच गए थे। लड़की तो बोली, "बड़ी देर से आए। वक्त तो ग्यारह का लिखा था।"

"जेल गया था। कल की पैरवी का इन्तजाम करवाना था। वहीं देर हो गई। फिर इन्तजार में......।"

इन्द्रा गुलाबी पड़ गई। वे दोनों कमरे के भीतर पहुँचे, जो कि चतुरता से सँवारा हुआ था। लगता था कि काफी परिश्रम उसमें किया

गया है। मेज पर नया मेज-पोश बिछा था, जिस पर कि बतखें उड़ने की तैयारी कर रही थीं। आतसखाने पर झालरें थीं। वहीं एक ओर इन्द्रा का बस्ट टँगा था तो दूसरी ओर रमेश विरजमान थे। वहीं जयपुर के कई खिलौनों के जानवर, पक्षी और फल भी सँवार कर धरे हुए थे। दो प्राकृतिक सौंदर्य की रङ्गीन तसवीरें थीं। तारा को भी इन बातों का शौक था और वह तो डिब्बे और सुन्दर छोटी-छोटी शीशियाँ जमा करने में प्रवीण है। लड़कियाँ स्वभाव से ही कला का सौन्दर्य पक्ष पा जाती हैं। लड़की की माँ कमरे में आ गई थी। नवीन कुरसी पर से उठ बैठा और अभिवादन किया। वह बोली, "अच्छा हुआ रुक गए। इन्दु कहती था कि पहाड़ रहते हो। घर पर कौन-कौन हैं?"

यह प्रश्न पूछना जितना आसान था। उसका नवीन ने सरलता उत्तर दे दिया कि कोई नहीं है। यानि वह अकेला है।

और कुछ जैसे कि वह उससे नहीं पूछना चाहती थी। रमेश से अब बोली, "क्या रात की 'ड्यूटी' है?"

रमेश ने हाँ भरी। इन्द्रा रसोई में चली गई थी। रमेश कुछ देर तक कमरे में ही टहलता रहा और फिर एकाएक लोप हो गया। नवीन उस कुतूहल को मन में सँवार रहा था। इन्द्रा की माँ कई बातें पूछ रही थी। उस सिलसिले में अपनी लड़की की शादी की चर्चा भी की। लड़की के गुणों की वह स्वयं तारीफ करने लगी। यह बतलाया कि पाँच सन्तानों में वही एक बची है। उसके पिता कलेक्टरेट में नाजिर थे। घर का अपना एक मकान है। वह इस रिश्ते से बहुत खुश थी और रमेश को बार-बार होनहार लड़का कहती थी। पति की याद कर वह गदगद हो उठती थी। वह तो बिरादरी का हाल भी सुना रही था, कि किस भाँति वे उनकी जायदाद पर अधिकार जमाए हुए हैं। यदि मकान उसके नाम न होता तो उनकी अपनी गुजर न होती। एक विधवा की स्थिति और समाज के अपने अधिकारों पर, वह बड़ी देर तक बोलती रही।

इन्द्रा दरवाजे पर खड़ी होकर बोली, "खाना तैयार है।"

पूछा उसकी माँ ने, "रमेश कहाँ है?"

"वे तो खाना खाकर चले गए। कह गए हैं कि घंटे भर में लौट कर आवेंगे। आप तब तक यहीं रहें।"

नवीन ने चुपचाप खाना खाया। खास भूख नहीं थी। नवीन ने इस इन्द्रा को पहचान लिया है। रमेश के साथ उसकी निभ जावेगी। वे एक दूसरे को जानते हैं। स्वभाव से परिचित हो गये हैं। आगे कोई कठिनाई नहीं पड़ेगी। दोनों के बीच कोई झूठा आकर्षण नहीं है। एक दूसरे की स्थिति जानता है। इन्द्रा में अब कहीं चंचलता नहीं थी। वह तो सागर की भाँति गम्भीर लगती थी। वह रमेश तो अभी वैसा ही है। लड़कियाँ लड़कों से जल्दी बदल जाती हैं। वह आराम-कुर्सी पर आँखें मूँदे हुये बड़ी देर तक लेटा रहा। किसी की आहट से आँखें खुलीं। देखा कि इन्द्रा मेज के पास पड़ी हुई कुरसी पर बैठी है। वह किसी किताब को पढ़ रही थी। फिर नवीन ने आँखें मूँद लीं। जब खोलीं तो देखा कि वह लड़की पुस्तक पढ़ने में तल्लीन थी। आहट पाकर उधर देख कर पूछा, "आप शरबत पीवेंगे या चाय?"

"अभी कुछ नहीं चाहिये।"

"शरबत बना लाती हूँ।" कह कर वह उठी। कुछ देर बाद एक तस्तरी पर अंगूर और कांच के गिलास में शरबत ले आई।

नवीन चुप था। वह तो बोली, "अभी-अभी एक लड़का आया था। कहलाया है कि उनके कमरे की तलाशी पुलीस ने ली है। कुछ नहीं मिला। अब वे यहां नहीं आवेंगे। कल की पैरवी की तैयारी कर रहे हैं।"

"मैं यह बात जानता था। अब मुझे जाना है।"

"कहां?"

नवीन चुप रहा।

"आप शहर छोड़ रहे हैं?"

"संध्या की गाड़ी से चला जाऊँगा।"

"कहाँ जाइएगा?"

"अभी कुछ तय नहीं किया है। कुछ दिनों के लिये किसी गांव में चला जाना चाहता हूँ। एक पुराने जमींन्दार दोस्त हैं। वहां कुछ दिन रह कर सारी बातों पर विचार करना है। कोई नया रास्ता ढूँढ़ना ही पड़ेगा। आज तो हमारे बीच गतिरोध सी आ गई है।"

"आपका उनसे काम हो तो मैं चली जाऊंगी। फिर आपसे स्टेशन पर आसानी से मिल सकती हूँ। आप चिट्ठी लिख कर दे दें।"

"कोई खास काम नहीं है।"

उसने खाली गिलास और तश्तरी ले ली। पूछा नवीन ने, "माता-जी कहां है।" वह अपनी आंखें मलने लगा।

"नीचे मोहल्ले की लड़कियों को पढ़ा रही हैं।"

नवीन उठा और बोला, "तो मैं जा रहा हूँ"

"फिर कब आइएगा।"

"जब आप दोनों बुलावेंगे।"

"माँ से नहीं मिलेंगे।"

"नहीं, समय नहीं है।" कह कर वह नीचे उतरा और कुंडी खोल कर बाहर चला गया। वह लड़की इस स्थिति के लिए तैयार थी फिर भी अप्रतिभ हुई। वह क्या नहीं जानती कि नवीन साधारण व्यक्ति नहीं है। उस पर एक बड़ी जिम्मेवारी है। एक रमेश है, जो कभी किसी भार को स्वीकार करता हुआ हिचकता है; जीवन-मुक्त है। यदि इन्द्रा बार-बार अपनी माँ से न कहलाती तो शायद वह उस रिश्ते के लिए राजी न होता। वह रमेश के यहाँ दो-तीन बार गई है। उसकी उस गृहस्थी को देखकर खूब हँसी थी। रमेश को दुतकारा था अब चाहती है कि वह इसी घर में आकर रहे। वे पुरुष वाला सनातन से पाया हुआ अभिमान नहीं भुला सकते हैं। वह रमेश को न जाने क्यों

इतना प्यार करती है। वह तो उसके आगे अनजान बनी बावलों के से सवाल पूछा करती है। कभी वह सोचती है कि रमेश के साथ वह कबूतर के जोड़े की भाँति आकाश में उड़ कर देखे की यह दुनियाँ कैसी दीख पड़ती है।

नवीन तो सोचता है कि इान्द्रा अधिक चैतन्य नहीं है। अन्यथा उसे उसको जगाकर सुना देना चाहिये था कि पुलीस रमेश के मकान पर गई थी। कौन जाने वे यहाँ भी आते हों। वह एक गली के भीतर घुस गया। सोचा वह रास्ता ढुंढ लेगा। घन्टों वह गली-गली चक्कर काटता रहा। शहर का सही रूप उसने आज पहले-पहल जाना था। वहाँ बड़ी गन्दगी थी। पतनालों पर पड़ी हुई दरारों से पानी की धाराएँ बह रही थीं। तेज बदबू वहां थी। कहीं कूड़े के ढेर थे। तो कहीं मेहतरानियों ने अपनी टोकरियाँ खुली छोड़ दी थीं, जिन पर मक्खियों के झुंड-के झुंड बैठे हुए थे। उसके आगमन से एक बार उड़कर वे भनभिननें लगी थीं। कहीं भात पड़ा था, कहीं तरकारी के छिल्के तो कहीं सड़ी-चीजें किसी पिछवाड़े की खिड़की से फेंक दी गई थीं। जिस नरक की सृष्टि कभी ब्राह्मणों ने अपनी धर्म पुस्तकों में की थी उसका सही रूप यह था। उन गलियों में छोटी-छोटी खिड़कियाँ थीं। दीवालों पर नाली में कहीं-कहीं घास जमी हुई थी। टूटे कुल्हड़ के टुकड़े, टीन के डिब्बे, काँच के बरतन असावधानी से फेंक गए थे। और जो नालियां थीं, उनमें बहुत गंदला पानी बह रहा था। आज तक उसे यह मालूम नहीं था कि एक छोटा वर्ग यहीं पनपता है और कुछ दिन जीवित रह कर मर जाता है। शहर की रौनक में यह गलियाँ मानो दुर्वासा ऋषि के श्राप से अभी तक श्रपित थीं। वहाँ कुछ छोटी-छटी कोठरियाँ थी, जहाँ निम्नवर्ग के लोग गुजर करते हैं। अधिकतर कोठरियों पर ताले पड़े हुए थे। जो खुलीं थी, वहां छोटे-छोटे परिवार टिके हुए थे। उन परिवारों की ओर उसने देखा। उस का जी मितलने लगा मानो कि

वह कै करना चाहता हो। वह वहाँ अधिक नहीं ठहर सकता है। जो रौनक कल रात उसने उस शहर में देखा थी, उसका यह भद्दा स्वरूप पास ही होगा, यह कभी नहीं सोचा था।

वह तेजी से कदम बढ़ाने लगा। अब सड़क पर पहुँच कर 'बस स्टैंड' पर खड़ा हो गया। उसने स्टेशन जाने वाली 'बस' पर बैठने की ठहराई। कुछ सोच कर वह पास के एक केमिस्ट की दूकान पर घुस गया। वहाँ उसने 'पाइल्स' और दमे की कुछ 'पेटन्ट' दवाएं खरीदीं। बच्चे के लिए बिस्कुट के कई डिब्बे लिए। वह फिर 'बस' पर बैठ कर स्टेशन पहुँच गया था। वह जानता है, कि वह मास्टर साहब के यहाँ जा रहा है। उसका मन अच्छा नहीं है। वह अपने को रोगी सा पाता है। बस, रुक गई थी और वह अपनी परिचित सी बटिया पर बढ़ रहा था। वह दरवाजे के पास खड़ा हो गया। उसने दरवाजा खटखटाया। बड़ी देर में किसी ने पूछा कि कौन है? दरवाजा बन्द का बन्द ही था। कोई उसे दरवाजे की दराज से देख कर बोला, "कौन है?" और कुंडी खोल दी।

वह लड़की खड़ी मिली। वह अस्तव्यस्त सी खड़ी थी। उसका शरीर नींद और आलस्य से भरा हुआ था। वह तो नवीन को अवाक खड़ा देख कर बोली, "बाबूजी वैद्य के यहाँ गये हैं। अब आते ही होगे।"

नवीन फिर भी खड़ा सोचता रहा, तो उसने समाधान किया, "अम्मा पड़ोस में बैठने गई हैं। अभी बुला कर ले आती हूँ।"

नवीन इस नई स्थिति के लिये तैयार नहीं था। वह उसी भाँति खड़ा रहा। वह लड़की भीतर से मोढ़ा उठा कर ले आई थी। बोली फिर, "आप बैठ जावें। चुप क्यों हैं। क्या मुझसे गुस्सा हैं। अच्छा आप मुझे माफी नहीं देंगे? क्यों बोलते क्यों नहीं हो।"

क्या नवीन बोलता। उसकी जबान पर तो ताला लगा था। हथेली

पर बड़ी पीड़ा हो रही थीं। लगा कि वहाँ कोई जबरदस्ती कुछ अन्दर खोद रहा हो। उसने अनुमान लगाया कि वह 'प्रेम' शब्द था।

हतबुद्धि सा वह बैठ गया। सामान चारपाई पर रख दिया। वह कुतूहल के साथ सब देखने लगी फिर मुँह सिकोड़ कर बोली, "मेरे लिये आप कुछ नहीं लाए।"

क्या उसके लिये कुछ लाना आवश्यक बात थी। वह सिर नीचा किये कुछ सोचता रहा। वह क्या इसी लड़की के पास नहीं आया है। वे दवाइयाँ तो एक बहाना मात्र थीं।

"आप कब जा रहे हैं?"

"आज शाम को"

"कल भी आप जाने को कहते थे।"

"कल......!" बात सच थी। नवीन झूठा है। वह झूठ बोलना सीख गया है। वह वेश्या हो गया है उसकी बात पर कोई विश्वास नहीं करता है। वह पतित है। यह उसके पतन की शुरुआत है।

"आज आप रुक जावें। हमें नुमायश दिखा दें। एक महीने से हो रही है न। बाबूजी मना करते हैं। हमें बहुत सी चीजें खरीदनी हैं।"

नवीन निरुत्तर रह गया। वह क्या कहे, उसे कुछ नहीं समझ पड़ता था। वह अपने में पछता रहा था कि क्यों इस प्रकार चला आया है। यहाँ आकर यह क्या खेल खेल रहा है।

"अम्मा को बुला लाऊँ।" उस लड़की ने फिर धमकी दी।

नवीन ने उस लड़की को देखा। उसके ओठों पर उसकी आँखें टिक गईं। वे ओंठ कल रात बहुत गरम थे।

"आप कहीं मेरा प्रबन्ध करदें। यहाँ अब नहीं रहना चाहती हूँ। यहाँ मन नहीं लगता है।"

नवीन ने एक बार ऊपर से नीचे तक उस लड़की को देखा। इससे पहले वह सोचे कि कुछ उत्तर देना चाहिये, वह लड़की बाहर

चली गई थी। लौटकर आई तो माँ साथ थीं।

"कल नहीं गया रे नवीन!"

"अब इसी गाड़ी से जा रहा हूँ।"

"आज यहीं रह जा। गरीबों के यहाँ......।"

"मुझे तो जाना है।"

"कल भी आप यही कह रहे थे।" लड़की ने एक पैनी मुस्कान छोड़ी। वह भीतर चली गई थी।

उसकी माँ सावधानी से बोली, "उनकी तबीयत ठीक नहीं है। इधर तो हालत रोज़ गिरती हो जा रही है। कहते हैं, साल-छै महीने शायद ही जी सकूँगा। लाख कहती हूँ अपनी परवा किया करो, वे नहीं मानते हैं। भाग्य में अभी न जाने क्या-क्या देखना बदा हुआ है। आज बड़ी मुश्किल से वैद्यजी के पास गए हैं। यह सारी गृहस्थी उनके सिर पर ही है। आज मोहन बचा होता तो...!"

मोहन बचा होता तो अठारह वर्ष का होता। यह नवीन जानता है। लेकिन वह तो ग्यारह वर्ष हुए निमोनिया से मर गया था। आज अब उसकी याद में आँसू बहाना तो सही सान्त्वना नहीं लगी। वह संभल कर धीमे स्वर से बोला, "यह दवा लाया हूँ। तीन चार महीने के लिए होगी। फिर और भेज दूँगा।"

वह आगे क्या कहे। पूछा "वे कब तक आवेंगे?"

"कुछ ठीक नहीं है। कहीं रास्ते में चौसर न खेलने लगे हों। इनका यही हाल है। समझाने पर कहते हैं, औरतों का यही रोना है। तू ही कह बेटा हमारा क्या है!"

नवीन तो उठ बैठा। वह तो बोली, "खाना खाकर जाना।" नवीन के मना करने पर बोली, "सिगरेट कहाँ है री!"

वह लड़की सिगरेट ले आई। वह फूँकने लगा। फिर बोला "जाऊँगा मैं।" साधारण अभिवादन कर बाहर निकल गया। दरवाजे

से तभी किसी ने पुकारा, "सुनिए !"

वह लड़की खड़ी थी। उसने नवीन को एक चिट्ठी दी। नवीन का हाथ चिट्ठी लेते हुए काँप उठा। वह जल्दी-जल्दी आगे बढ़ गया। शरीर पर भारी बोझा जैसे कि लाद कर लौटा हो। उसने पेन्सिल से लिखी चिट्ठी पढ़ी—'आप बुरे आदमी हैं। हमें नुमाइश नहीं ले जाते। हमसे नाखुश हैं। हम आपसे प्रेम करते हैं—आपकी दासी !"

नवीन ने उसे फाड़ कर फेंक दिया और स्टेशन पहुँच कर गाड़ी का इन्तजार करता रहा। यह उसकी जीवन की एक बहुत बड़ी हार थी।

—नवीन एक माह तक शहरों-शहरों भटकता रहा। वह अपने साथियों से मिलता और उनकी बातें सावधानी से सुनता था। उस सारी संस्था के भीतर शिथिलता लगी। वहाँ विचारों में भी गहरा मतभेद था। हर एक के मन में वह बात जड़ पकड़ रही थी कि वह क्रान्तिकारी आन्दोलन असफल हो गया है। १६३० के असहयोग आन्दोलन ने गाँव-गाँव आजादी का सन्देशा जनता तक पहुँचाया था। सशस्त्र-क्रान्तिकारी कुछ बड़े शहरों के कुछ व्यक्तियों तक सीमित रह गई। वे लोगों की अपार श्रद्धा के पात्र बन गए थे, पर उनका कोई खास असर जनता पर नहीं पड रहा था। वह व्यक्तिवाद से आगे न बढ़ पाती थी। उसके पीछे कोई आन्दोलन करने वाली शक्ति नहीं थी। नवयुवक पकड़े जा रहे थे। संस्था का सारा ढाँचा टूट गया था। उनके आपस में ही कई दल बन गए थे और स्वकथित नेता बिना किसी केन्द्रीय अनुशासन के अपने मन का करते थे। आपस में फूट और द्वेष बढ़ गया था। एक निष्क्रियता का आभास बात-बात में मिलता था। साम्राज्यवाद की जिस जड़ को वे खोदना

वह नवीन सब बातों पर विचार करता है। सब मतों का वह आदर करता था। सारी घटनाओं को सावधानी से फैला कर उसका सिंहावलोकन करता है। देश में कई छोटे-छोटे षड़यंत्र चल रहे थे। रोज नई-नई गिरफ़्तारियाँ हो रही हैं। सैकड़ों नौजवानों को मिटाने का निश्चय साम्राज्यवादी कर रहे हैं। वह गोरी नौकरशाही अपना दाँव खेल रही है। युवकों में भी उसने देखा कि वह लहर जो कुछ साल तक बहती रही; उस सशस्त्र क्रान्ति की बात सब दुहराते हैं। लेकिन जो जनता का आन्दोलन चला था। नवयुवक ज्यादा उधर बह गए थे। १६३२ के समझौते के बाद अब वे उन गुप्त सगठनों के पास कम आते हैं। कई सस्थाएँ खुल गई हैं, जो लोगों की सेवाएँ करना चाहती हैं। नवयुवक राजनीति को पेशा बनाना नहीं चाहता था। सबका विश्वास था कि बिना काफी आमदनी के वे आगे नहीं बढ़ सकते हैं। देश में बेकारी फैल रही थी। आर्थिक संकट आ गया था। पिछली राजनीतिक आंधी के बाद लोगों के घर उजड़ गए थे। लोग उनको संभाल रहे थे। पिछली महानता की कहानियां सुनाई पड़ती थीं। भविष्य के लिए कोई कार्यक्रम उनके पास नहीं था।

नवीन तो दो मास बाद एक दिन चुपचाप एक पहाड़ी कस्बे में चला आया। वह बहुत थक गया था। वह अस्वस्थ था। वह जितनी बातें सोचता था, वे उतनी सुलझी न होती थीं। वह अपने साथ अलग-अलग दलों के 'मेनिफेस्टो' लाया था। प्रमुख साथियों ने उसे अपने विचारों का विवरण लिख कर दिया था। वह हर एक नौजवान साथी के बारे में अपनी एक व्यक्तिगत राय भी लिख कर लाया था। वह सोच रहा था, कि अब कोई अच्छा सगठन करेगा। वह अपना एक कार्यक्रम सब लोगों के आगे रखने की धुन में था। देखना चाहता था कि कहां तक वह सब को एक सूत्र में बांध कर जनता और क्रान्ति

के बीच समझौता करवा सकता है ।

उस पहाड़ी कैन्टूनमेन्ट में नवीन बचपन में रहा है । वहां के पेड़ों परप चढ़ कर वे खेला करते थे । देवदारु के बन बहुत प्यारे लगते हैं । चीड़ की पयाल पर वे लेटे हुए, दूर पहाडों की श्रेणियों को देखा करते थे । बचपन की स्मृति एकाएक हरी हो आई । पहाड़ी को काट कर एक बड़ा मैदान बनाया गया था । जहाँ सैनिक खेलते और कवायद किया करते हैं । उसने उन सैनिकों को जंगली लड़ाई सिखाने वाले मोरचों को देखा था । हजारों नवयुवक वहां भरती के दफ्तर में रंगरूट बनने आते थे । जब भरती खुलती तो वह खबर तेजी से पहाड़ों की चोटियों और गांवों में गूँज उठती थी । पहाड़ी की श्रेणियों पर बारिकें बनी हुई थीं । एक ऊँची पहड़ी पर पानी की बड़ी लाल-लाल डिग्गयां थीं । जहाँ तेल के इंजन से पानी नीचे से खींच कर जमा किया जाता था । पिछले दिनों ब्रह्मा के रहने वालों की कुछ पलटनें वहां आ गई थीं । वे दूध के विलायती डिब्बे और तरह-तरह का गोश्त खाते थे । लोग अभी तक उनकी नुक्ताचीनी करते थे । कुछ अरसे तक एक डोंगरा पलटन वहां रही । उनका व्यवहार शिष्ट नहीं था । वे दूकानदारों से लड़ते थे । औरतों ने बाहर निकलना बन्द कर दिया था । वे उसका पीछा करते थे । उनकी कहानियां और कई घटनाएँ आज भी भय पैदा करती हैं । सेकिंड-थर्ड पलटन आजकल वहां है । वहां पलटनें आती-जाती रहती हैं । हर एक बारिकों के नजदीक अपने-अपने बाजार हैं । उनके अपने छोटे-छोटे दफ्तर हैं । हर एक की अपनी सीमा और अपनी दुनिया है । बैण्ड और बिगुल सारी घाटी और चोटियों में गूँज उठती हैं । बड़ी परेड पर रंगरूट कवायद करते रहते हैं । बड़े-बड़े बोरों पर रेत भरी रहती है और वे संगीनों से उन पर हमला करते रहते हैं । नीचे दूर चांदमारी का मैदान है । वहां धड़-धड़ धड़-धड़ अक्सर चांदमारी होती रहती है । वे खाइयां खोद कर तरह तरह के मोरचे सीखते हैं ।

कभी तो आपस में एक पलटन को दुश्मन मान कर, दूसरी उस पर हमला करती है। आधी-आधी रात को वे रोशनियों से सिगनलिंग करते रहते हैं। उस छोटे कस्बे में सैनिक ही अधिक दीख पड़ते हैं। सैनिकों के कई तरह के बारिक हैं। उनके अफसर जमादार, सूबेदार कुटुम्बों के साथ रहते हैं। जमादारनियाँ और सूबेदारनियाँ अपनी 'सिवीलियन' सहेलियों से बार-बार कहा करती हैं कि वह सब सुविधा उन लोगों के कारण है। पलटन न होती तो यह इतना वैभव नहीं होता। सरकार ने पलटन वालों के आराम के लिए यह सब किया है। कुछ तो उन सैनिक अधिकारियों की पत्नियों के भाग्य की सराहना करती हैं। पास ही सदर में एक अंग्रेजी क्लब है। वहां नित्य शाम को बैण्ड बजता है। वहां अग्रेज अफसर और मेमें टेनिस खेलती हैं। सोडा-बरांडी पी कर नाचा करती हैं। वहां का औरतें इस बात को कुतूहल से सुनती हैं। गरीबों के उपहास के ऊपर वह उनका आमोद-प्रमोद अखरता है। पास ही जा गधेरा है वहां गरमियों में कंजरे बसेरा लेते हैं। वे खेती या मजूरी नहीं करते हैं, और चूहा, सांप बिल्ली, कुत्ता आदि सब जानवर खाते हैं। उनकी औरतें दिन को कुछ मैदान की बनी हुई चीजों की बिक्री करती हैं। वे अपनी औरतों पर विश्वास नहीं करते हैं और यदि कोई स्त्री शाम को देर से लौटती है, तो उस पर सन्देह किया जाता है तथा उसे कड़ा दंड मिलता है।

—वहां एक ऊँची पहाड़ी है, जिस पर एक 'स्टैचू' स्थापित है। वह काले पत्थर का एक सैनिक है जो युद्ध की लिबास में है। उसके पास एक बड़ी ऊँची और चौड़ी सीमेंट की दीवार खड़ी है, जिस पर अफगान, ब्रह्मा तथा सन् १८ के महायुद्ध में मरे हुए अफसरों के नाम अंकित हैं। वह 'स्टैचू' पिछले युरोपीय महायुद्ध में मरे हुए सैनिकों की यादगार है। वह 'साम्राज्यवाद' का एक सही प्रतीक लगती है। अंग्रेज अपने साथ भारत पर तबाही ही नहीं लाए, अपने सैना के योधाओं की

तथा वाइसरायों की 'स्टैचू' भी उन्होंने जगह-जगह स्थापित की। सड़कों के नामों का भी नया संस्करण किया कि वे बादशाह हैं उनके प्रतिनिधि हुकूमत करते हैं। वह 'स्टैचू' साम्राज्यवादियों के लोभ कि उपनिवेशों का बटवारा हो जाय; वहां निस्वार्थ मरी हुई जनता की कहानीको बताती है। वे किसानों के बेटे फुसलाए गए थे। यह 'स्टैचू' एक धोखा थी, जिसके पीछे हजारों विधवाओं की करुण-कहानी है। हजारों परिवारों के लाड़ले बच्चे साम्राज्यवादी लिप्सा के शिकार फ्रांस के मैदान में हुए थे। आज हरएक सैनिक और अफसर उसके आगे माथा झुकाता है। वह उन वीरों की वीरता से अधिक उपनिवेशों के स्वामी के प्रति श्रद्धांजली लगती है। हजारों अनाथ बच्चों को उसके बाद निराश्रय हो जाना पड़ा था। सन् बीस की बेकारी में सैनिक ने अपना सर्वस्व गँवा दिया था। वे कुछ महीने के बाद मैदान नौकरी की तलाश में भाग आए थे। उन्होंने अपने तमगे बेच डाले थे! लड़ाई से पहले डिपुटी साहब तहसीलदार, कानूनगो और पटवारी ने जिन झूठे वादों पर किसानों के बेटों को भरती किया था, उसे वे आसानी से भूल गए थे। विधवाओं के पास क्वीन मेरी का फोटो और पेन्शन का पट्टा पहुँचा था, लेकिन उनको तो वह बहुत मंहगा पड़ा था। वे अपना सब कुछ खो चुकी थीं। उनके अनाथ बेटों का कोई प्रबन्ध नहीं किया गया था। वे सैनिकों की पत्नियाँ खेतों में खो जाती थीं। उनका जीवन चूक चुका था। वे निर्जीव सी थी।

सन् १६१८-१६ में उस कैन्टूनमेंट से पलटनें युद्ध भूमि के लिए जाती थीं। वे उस साँप की भाँति मुड़े, रेंकते हुए रास्ते से नीचे की ओर बढ़ती थी। बैण्ड, युद्ध, का नारा, मार्च-गान बजाता था; हर एक सैनिक में नया जोश मिलता था। कैन्टूनमेंट का कोना कोना और नीचे फैली घाटी तथा ऊँची ऊँची पहाड़ियों में गूँज सुनाई पड़ती थी। उनके परिवार के लोग कतारें बाँध कर उनको विदा करते थे।

सिपाही अपनी बोली में मधुर गीत गाते रहते थे। फिर मरने वालों की सूची दफ़्तर के बाहर टंगी हुई मिलती थी। वहीं भर्ती, वही था रोज़ाना जीवन! उस युद्ध की सही पहचान न होने के कारण बड़े उत्साह के साथ सब ने उसमें सहयोग दिया था। समाचार पत्रों में सैनिकों के फ्रान्स में गाँवों से गुजरते हुए फोटो छपते थे। एक दिन एकाएक फिर सुलह की खबर मिली थी। स्कूल के विद्यार्थियों तथा नागरिकों ने विजयोत्सव मनाया था। कागज और कपड़े के यूनियन-जैक सड़कों और इमारतों पर फहराये गए थे। लड़कों को तमगे मिले थे जिसमें जार्ज-पंचम और कैसर-विलियम साथ-साथ खड़े थे। एक गीत बच्चे गाते थे :—ईश्वर चिरायु होंवे सम्राट जार्ज पंचम!

वह साम्राज्यवाद का अपना विजयोत्सव था, जिसके बाद पंजाब का हत्या-काँड हुआ था। सन् २२ में असहयोग आन्दोलन की आँधी उठी थी। बेकारी का दौर आया। पहले सैनिक की वर्दी गई। नोट का भाव गिर गया था। अनाज मंहगा हो गया था। जिसने उस महायुद्ध के दौरान में पूजी इकट्ठा की थी वह सब चूक गई। वह उस धक्के को सहने से असमर्थ रहे। अपने परिवारों की रक्षा करने के लिए वे मैदान चले गए और वहाँ एक बड़ी आबादी के बीच खो गए थे। 'साम्राज्यवाद' अपनी नींव जमा चुका था। देश के भीतर उठी हुई राष्ट्रीय आँधी को कुचलने के लिए उसने अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगादी थी।

एक दिन वह 'स्टैचू' विलायत के किसी कारखाने से बन कर आई थी। उस दिन कैन्टूनमेंट में बड़ा जलसा हुआ था। कई तोपें छूटी थीं और आतशबाजी से आकाश जगमगा उठा था। दूर-दूर गांवों से लोग उसकी स्थापना को देखने आए थे। सैनिकों ने कई कुशल खेल दिखलाए थे। जनता आश्चर्य-चकित सब कुछ देखती रह गई। नागरिकों और जनता पर उसका गहरा प्रभाव पड़ा। कुछ अज्ञानी

आगे उसकी देव-मूर्ति का सी पूजा करने लगे थे। उस मूर्ति के नीचे खुदा हुआ था—'एक पर्वतीय सैनिक'! वही पर्वतीय-सैनिक की अपनी बेश भूषा, वही चेहरे का भोलापन, वह उसकी वीरता अंग अंग से टपक रही थी। वह मूर्ति लगती थी, कि अब बोलेगी—अब बोलेगी! कुछ रात्रि को उसे जीवित सा व्यक्ति समझ कर भ्रम में पड़ जाते थे। वह मूर्ति उसी भाँति स्थापित रही। वहाँ की अन्य वस्तुओं के समान वहाँ के वातावरण में रल गई। चांदनी रात में यदा कदा वह चमक उठती थी। वह काली संग मूसा की बनी हुई मूर्ति लगती थी कि अब बोलेगी, अब बोलेगी! युद्ध के बाद यह कैन्टूनमेंट थक कर मानो विश्राम ले रहा था। साधारण दैनिक जीवन फिर भी चालू रहा। वह महायुद्ध अभी तक अपनी काली छाया फैलाए हुए था। कुछ साल बीत गए। नया परिवर्तन सा आ गया। कस्बे में मोटर की सड़क आ गई थी। बड़े बड़े ट्रक वहाँ धूल उड़ाते हुये पहुँचने लगे।

डैम स्वाइन! एक नागरिक की खादी की टोपी उतारते हुए उसे रोंदता हुआ एक अंग्रेज अफसर बोला था। आन्दोलन की चिंगारी फैल रही थी। वह आन्दोलन फिर भी वहाँ सिर उठा चुका था। गोरी-नोकरशाही थर-थर काँप उठी। वह उन पर एक बड़ा हमला था। जनता तिरंगे को यूनियन-जैक से ऊँचा उठाने का निश्चय कर चुकी थी। एक एक नागरिक जेल चले गए। वह स्वदेशी की कसम और देशी कपड़े की होली फिर भी रुकी नहीं। वर्षों से कुचली जाति ने अपना सिर उठाया था। उनके विद्रोह को दबाना आसान नहीं था। वे अपनी मर्यादा के लिए मरने को तैयार थे।

वर्षों बीत गये। एक बूढ़ा सैनिक, जिसका जवान लड़का युद्ध में मर गया था। पारिवारिक झंझटों के कारण गाँव से निकला। उसकी विधवा बहू थी। साहुकार से लड़के की शादी में कुछ कर्जा लिया था, जो बढ़ता चला गया। खेत बेचे और रोटी के लिये मोह-

ताज हो गया था। वह अपने छोटे लड़के को लेकर कैन्टूनमेंट बारह दिन पैदल चल कर फाल्गुन की एक रात्रि को पहुँचा था। वह कौन—मेरी का फोटो और पेन्शन का पट्टा साथ लाया था। पांच रुपया माहवारी पेन्शन पर परिवार को गुजर नहीं होती थी। वह लड़का ना समझ था। बार बार बूढ़े ने समझाया था कि वह अपनी भाभी को बैठाले; किन्तु वह अभी तक सफल नहीं हुआ था। वह बहू बार बार मायके जाने की धमकी देती थी। यदि वह सच ही चली जावेगी तो परिवार का आर्थिक ढाँचा टूट जायगा। वह गाय भैंस की देख भाल करती है; और लोगों के खेतों को आधे अन्न पर कमाती है। वह परिवार को कुशलता पूर्वक निभा लेती है। उसके गुणों पर बूढ़ा मुग्ध है। लेकिन वह छोटा लड़का परेशान है। उसकी वह भाभी उम्र में उससे तीन-चार साल बड़ी है यदि वह उसे घर में बैठाल लेगा, तो पेन्शन बन्द हो जायेगी। उस बेवा को अपनी परवरिश करने के लिये ही तो माहवारी पाँच रुपये मिलते हैं। छोटे लड़के की शादी करने की सामर्थ बूढ़े में नहीं है। वह दुबारा साहुकार के आगे खड़ा नहीं होना चाहता है। लड़के का जीवन दुःखी हो जायगा और उसे आजीवन परदेश में रहना पड़ेगा। वह कर्ज कभी नहीं चूकेगा। सूद बढ़ता जायगा। यह बात वह बहू को समझा चुका है। उसे वह लक्ष्मी मानता है। उसके आगे अपना हृदय खोलकर रख देता है। वह उससे बचन लेना चाहता है कि उसके मरने के बाद वह उस परिवार की रक्षा करेगी। बहू सिर झुका कर चुपचाप सुना करती है। बूढ़े के लिये उसके हृदय में अपार श्रद्धा है। वह उसकी भावना का आदर करती है। भविष्य के बारे में फिर भी कुछ निश्चित सी नहीं कह पाती है, कि क्या करेगी।

ऊँचे अधिकारियों से मिलने के लिये उसे एक सप्ताह रुकना पड़ा

था। उसने कांपते हुए हाथों से पेन्शन का पट्टा और क्वीन मेरी के फोटो वाला पत्र अधिकारी को सौंप दिया। अपने बड़े लड़के की बातें कहते हुए उसकी आँखें भींग गई थीं। अंत में उसने छोटे लड़के को कहीं नौकरी लगा देने की विनती की।

वह अफसर उन कागजों को पढ़ कर बोला, "नौकरी कहाँ से देगा।"

बूढ़े ने अपनी गरीबी का बखान किया और परिवार की सैनिक सेवाओं की चर्चा की तो वह अधिकारी तेजी से बोला, "तुम लोग भूखा मरता था। इसलिए लड़ाई में भरती हो गया; नौकरी नहीं है।"

बूढ़े की आँखों के आगे अँधेरा छा गया। उसने अपनी फैली आँखों से अधिकारी को देखा और धड़ाम से वहीं गिर पड़ा। लड़के ने बूढ़े को उठाने की कोशिश की तो ज्ञान हुआ कि वहाँ प्राण नहीं थे। वह घबरा गया। सरकारी अस्पताल में वह उस लाश के साथ गया। उसे विश्वास था कि वह जी उठेगा। लेकिन बूढ़े के दिल पर बड़ा लड़का जो चोट लगा गया था, वह चोट खुल गई थी।

वह लड़का कई घरेलू नौकरियां कर ऊब गया। उसका मन सदा अपने, गाँव और खेतों में रहता था। वह पागल सा उस कैन्टुनमेंट में घूमता रहता था। तीन दिन से बरफ पड़ रही थी। वह जंगल-जंगल मारा-मारा फिर रहा था एकाएक उस 'स्टेचू' के समीप वह पहुँचा और वहीं बेहोश हो गिर पड़ा। बरफ सारे मैदान को ढक चुकी थी, उसे भी चारों ओर से ढक लिया। एक दिन कोई सैनिक उधर से गुजरा। उसने अपने बड़े बूट से ठोकर लगा कर देखा कि वहाँ कोई सिवीलियन मरा हुआ पड़ा है।

नवीन उस 'स्टैचू' को उठाकर फेंक देना चाहता है। वहाँ के लोगों की सैनिक परम्परा के आगे वह माथा झुकाता है। लेकिन यह तो 'साम्राज्यवादी-प्रतीक' है। वह विदेशी कारीगरों ने बनाकर भेजी है

कि उसकी भावुकता की आड़ में 'यूनियन-जैक' सदा वहाँ फहराता रहे। यूनान और रोम ने अपने वीर सेना नायकों की 'स्टैचू' की स्थापना की थी। वह भी सैनिकों का जाति का प्रतीक स्थापित करने का पक्षपाती है। उसके पीछे वह चाहता है कि राष्ट्रीयता हो। वह गुलामी की जँजीर में जकड़ी हुई सैनिक जाति का सच्चा सच्चा प्रतीक नहीं है। वह सैनिकों की क्रान्ति देश की आजादी के लिए चाहता है। उस खून से उनका सही प्रतीक रंगा जायगा।

नवीन को वे पहाड़ियाँ बहुत पसन्द हैं। ऊपर चोटियों पर घने देवदारु और सुरई के बनों के बीच से होकर सड़कें जाती हैं। वहां वह अपने को बहुत स्वस्थ पाता है। वह जानता है कि भारत में सैकड़ों ऐसे कैन्टूनमेंट है, जहां काली और गोरी पलटनें रहती हैं उपनिवेशों पर सत्ता जमाने के लिये सैनिक शक्ति आवश्यक है। ये कैन्टूनमेंट ब्रिटेन की शक्ति हैं, जो उसके साम्राज्य में कभी सूर्य अस्त नहीं होने देते हैं। वे दुनिया भर की पद दलित जातियों की आजादी का बेड़ा उठाये हुए हैं। वे काली जातियों को इस योग्य बनाना चाहते हैं कि वे अपना शासन स्वयं चलाने के योग्य बन जावें। दुनिया की शान्ति का ठेका भी उनका ही लिया हुआ है। वे सात समुद्र पार से भारी कष्ट सह कर यहाँ आये हैं, राष्ट्रीय आन्दोलनों की सीमाएँ भी वे स्वयं निर्धारित करते हैं। वे हुकूमत की बागडोर बार-बार भारतवासियों को सौंप देने का आश्वासन देते हैं। वे हर कोटि का दमन कर राष्ट्रीय आन्दोलन को कुचल डालना चाहते हैं। वे तो सभ्यता की रोशनी सारी दुनिया को दिखला देना चाहते हैं। वे अपनी ईमानदारी की बात बार-बार दुहराते हैं।

इंगलैण्ड के व्यापारियों के हाथ में वहाँ की सम्पूर्ण राज्य शासन की बागडोर है। अनुदार दल के राजनीतिज्ञों का एक मात्र आदर्श केवल अपना व्यापार बढ़ाना है। उसके द्वारा धन प्राप्त कर वे अपनी शक्ति और अधिकार में उत्तरोत्तर वृद्धि करने की धुन में हैं। पार्लियामेंट

के सदस्य गोला-बारूद के कारखानों के शेयर-होल्डर हैं। वे साम्राज्य की शक्ति के कर्णधार भारत के ऊपर अपनी पूरी सत्ता जमाए रखना चाहते हैं। उन पहाड़ों में वे विजेता पहुँच कर वहाँ का शान्तिपूर्ण जीवन हर ले गए हैं। बादशाह के गौरव के गीत वे पाठशालाओं में पढ़ाते हैं। भारत के ऊपर आज भी बादशाह के ताज की हुकूमत है। वह बादशाह क्या है? यह केवल उपनिवेशों की जनता को भुलावा देने का एक साधन मात्र है—देवता का झूठा कथित रूप!

संसार की संस्कृति उस महायुद्ध के बाद मिटती चली गई। वहाँ पूंजीपतियों ने शतरंज खेली थी। वे बाजी जीत गए। कस्बे में नवीन के बचपन के कई दोस्त हैं। कुछ कैन्टूनमेंट के दफ़्तर में बाबूगिरी करते हैं। बचपन में कई घरानों से उसकी माता की पहचान थी। वे लोग नवीन को देखते हैं और आत्मीयता का परिचय देते हैं। उसके रूखे व्यवहार की वहां चर्चा होती है। बूढ़ी औरतें उसकी माता का गुणगान कर सलाह देती हैं, कि उसे गृहस्थी जोड़ लेनी चाहिये। कुछ तन, मन, धन से उसकी सहायता करने का आश्वासन देती हैं। कुछ अपनी विवाह योग्य कन्याओं के लिए वर तलाश करने के लिए उससे अनुरोध करती हैं। उनको विश्वास है कि वह अच्छे लड़कों को जानता होगा। कई तो उसके परिवार की व्यक्तिगत बातों की जानकारी मालूम कर लेने के लिये सवाल पूछती हैं, कि जमीन जायदाद का क्या प्रबन्ध है? रुपया जो पिता छोड़ गये थे सब फूँकफाँक दिया या कुछ बचा हुआ है। वह कब नौकरी करेगा। वकालत ठीक नहीं है। नौकरी में ज्यादा इज्जत है। नौकरी में सुख है कि वक्त पर पैसा मिल जाता है। कुछ ख्याल है कि माँ जीवित होती तो वह इस भाँति मारा-मारा नहीं डोलता। अब तक दो-तीन बच्चों का पिता बन गया होता। बात तो झूठ नहीं है। उसके बचपन के साथी पक्के-पक्के गृहस्थ बन गए हैं। औरतें छेद-छेद कर बातें उससे निकाल लेना चाहती हैं। कुछ अपनी

लड़कियों को सजा धजा कर आगे लाती हैं, मानोंकि वे बरमाला पहना कर ही मानेगी। वह सारी स्थिति को समझ कर चुप रहा करता है। हर एक की बात सुनता है। बातों का नपा-तुला उत्तर देता है। कुछ को दिलासा देता है कि बहू छाँटने का काम बुआ को सुपुर्द कर चुका है। वे फिर भी नहीं मानती हैं। वह उनसे आसानी से छुटकारा आखिर पा जाता है कि पहले नौकरी ढूढ़ेंना और फिर गृहस्थ बनेगा। वह वहाँ एक अन्तर पाता है। जो छोटी-छोटी लड़कियां जमीन पर रेंगा करती थीं वे तो लज्जावन्ती युवतियाँ सी खड़ी मिलती हैं। उसके आगे वे आँख नहीं उठाती हैं। कुछ को वह चिढ़ाना चाहता है, पर हृदय में कोई धमकाता है, कि वह उसके अधिकार के परे का व्यवहार है।

नवीन हृदय हीन नहीं है। मां की याद उसे आजकल आती है। वह माँ को बहुत प्यार करता था। जब पिताजी मर गए तो दो सप्ताह तक वह मां के पास से नहीं हटा था। वह बार-बार मां को समझाता था। माँ बहुत अधीर लगती थी। वह मां के आँसुओं को पाकर कभी तो भौंचक्का सा रह जाता था। मां को फिर उसने कभी मुस्कराते नहीं पाया। वह चिन्तित सी सदा न जाने क्या सोचा करती थी। वह उससे कई बातें कहना चाहता था। मां घर के काम में जुटी रहती थी। आजकल वह मां की कई बातें सोचता है। मां की याद वहां के पहाड़ों की पुरानी स्मृतियों के साथ उभर आती है। मां की सहेलियां उसकी बार-बार चर्चा करती हैं। रात को बड़ी-बड़ी देर तक वह मां की तसवीर को आगे फैला कर एक आज्ञाकारी बालक की भांति उसके समीप खड़ा सा रहता है। वहाँ तारा के साथ की लड़कियां हैं। वह उनको अपना सा नहीं पाता है। वे गांव की संस्कृति से दूर शहरी-संस्कृति में पली हैं। गांवों से उनका कोई जीवित सम्पर्क नहीं रह गया है। उनकी चपलता

उन्हें मोहती नहीं है। वहां वह केवल एक बात सोचता है, कि मां से बड़ा वरदान जीवन में और कोई नहीं है।

वहाँ एक बरसाती गधेरा है, जो कि गरमियों में सूख जाती है। पहाड़ों को काट कर वह बहा करता है। उससे उसका बहुत पुराना नाता है। वहाँ बरसात में पानी बहता है। वहाँ बड़ी-बड़ी पत्थर की चट्टानें हैं वह वहीं किसी चट्टान पर बैठ जाता है। सुना कि वहाँ भूत, प्रेत और डाइन रहती हैं। वह कभी-कभी उन भूतों पर सोचता है, जिनकी कि कोई वैज्ञानिक व्याख्या नहीं है। कभी-कभी कुछ सोच कर उसका हृदय किसी अज्ञात पीड़ा से छटपटाने लगता है। उसी गधेरे के दोनों किनारों की पोली मिट्टी में कस्बे के मरे हुए बच्चे गाड़े जाते हैं। कभी कोई जानवर रात को गड्ढा खोद कर किसी को निकाल कर ले जाता है। उसके पावों के निशान वहाँ स्पष्ट दीख पड़ते हैं। चारों ओर बच्चों के रंगीन कपड़े पड़े मिलते। कुछ उनमें बहुत बहुमूल्य होते हैं और गरीब लोग उनको उठा कर ले जाते हैं। गधेरे के दोनों ओर बिच्छू तथा और घनी झाड़ियाँ हैं। आड़ू, मेलू, बाँज आदि के पेड़ हैं। वह बड़ा काला पत्थर एकाएक चमक उठता है। दिल में मानों एक पीड़ा फैल जाती है। उसकी पाँच साल की छोटी बहन को निमोनिया हुआ था। वह मर गई। वह उन लोगों के पीछे छुप कर आया था। यहीं उसे सब ने गाड़ दिया था। अगले दिन उसने देखा था कि एक पहाड़ी लोमड़ी उसके पास से भाग गई है। पहले वह उसकी याद करता था, आज आँसू नहीं आए। वह भावुक नहीं है। मौत के उस अनुभव को पिताजी ने गहरा कर दिया था और माँ तो भारी घाव छोड़ गई थीं।

ऊपर की ओर चीड़ के पेड़ हैं। चोटी पर देवदारु के पेड़ों से घिरा हुआ लाल टीन का बँगला है। गधेरे में पानी बह रहा था। नीचे उसने दृष्टि डाली आड़ू और पाँगर के पेड़ों के कई झुँड थे। वह वहाँ

क्यों आया करता है, नहीं जानता। वहाँ बैठ कर वह घंटों सोचा करता है। किताबें पढ़ता है। कभी-कभी किसी चट्टान पर आँखें मूँदे सो भी जाता है। यदि कोई नगरवासी उसे वहाँ देख ले तो कल सारे कस्बे में चर्चा फैल जायगी, कि वह नवीन पागल हो गया है। वह पेड़ों पर लगे हुए लाल-लाल फूल देखता है। बरसात बीत गई है, चारों ओर सुन्दर हरियाली दीख पड़ती है। वहाँ का दृश्य बहुत ही सुहावना लगता है।

क्या नवीन वहां भूतों को पहचानने आया है। उन छोटे-छोटे बच्चों को भूतों के समीप अकेला छोड़ दिया गया है। वे बच्चे अब न जाने कहां होंगे। सुना डायन बच्चों को खा जाती है। वह उस डाइन से कहना चाहता था, कि बच्चे तो प्यार करने के लिए होते हैं। वे बहुत कोमल होते हैं। वह क्यों उनके साथ यह विभत्स खेल खेला करती है। कभी कभी वह कोई गीत गुनगुनाना चाहता है। पानी बहता रहता है। कई जगह कुदरती झरने हैं। वह प्रकृति के व्यापार को निहारता रहता है। वह कभी-कभी अपने को भूल सा जाता है। देखता है कि चारों ओर कोई नई दुनिया है। जिसका सृष्टा कौन है, यह जानकारी किसी को नहीं है। वह एक जगह जमा हुए पानी के ताल के पास खड़ा होकर देखता है कि वहां छोटी मछलियां और जोंके खेलती रहती हैं। पानी चुपचाप बहता-बहता रहता है। वह दूर नीचे धोबी-घाट को पार कर आगे किसी बड़ी नदी में मिल जाता है।

नवीन एक चौड़ी चट्टान पर कभी बैठ जाता है। वहां वह कोयले से हिंदुस्तान का बड़ा नक्शा बनाता है। उसके बड़े-बड़े नगरों का नाम लिखेगा। उसके बाद उसके सामने इंगलैण्ड का नकशा बना कर हँस पड़ता है। वह भारत बहुत फैला हुआ देश है और गुलाम है। वे लोग चाहते हैं कि वह स्वतंत्र हो जांय। देहातों की जनता जाग्रत हो चुकी है, पर उसका अपना कोई संगठन नहीं है। वह उस संगठन पर

सोचने लगता है। साथियों की बताई बातों पर सोचता है। किसान सभा के कागजों को देखता है। संध्या हो आती है। अँधियारी फैलने लगता है। वह चुपचाप अपने होटल की ओर बढ़ जाता है। रसोई में बैठता है और उस फैले हुए धुँए के बीच अधकच्ची दो रोटियाँ खाकर एक कमरे में पड़ा रहता है। रात को खटमल और पिस्सू दल-बल सहित हमला करते हैं। वह उनसे मोरचा लेता रहता है। अगले दिन फिर वह वहीं गधेरे में पहुँच कर सोचेगा कि मजूर-आन्दोलन चलाया जाना चाहिए। अब तक का सारा संगठन कमजोर है। उसके आगे लोहे, जूट, कपड़े, तेल, तथा कई और बड़े-बड़े कारखाने फैल जाते हैं। वह क्रोपटकीन की किताबें पढ़ता है; और देशों की क्रान्ति के इतिहास पर भी सोचता है। भारत की हालत उसे अजीब सी लगती है। १६३०-३२ के जन-आन्दोलन के बाद भी कहीं क्रान्ति का वातावरण नहीं मिलता हैं।

वह एक आदर्श गांव का ढांचा बनाता है, कुए, मदरसा, लाइब्रेरी पँचायत-घर, अस्पताल और खेती की उपज बढ़ाने के नए साधनों का ख्याल आता है। आज के गांवों का जीवन उसे नीरस लगता है। वह तो इसी भांति उलझा-उलझा लगता है। आबादी से दूर भाग कर वहां एकान्त में पड़ा-पड़ा अपनी निर्बलता पर कभी-कभी ठहठहा मार कर हँस पड़ता है। वह हँसी गधेरे में गूँज उठती है। पेड़ों पर बैठे हुए पक्षी चुप हो जाते हैं। कुछ भय से दूर नीचे की ओर उड़ जाते हैं। बड़ी ऊँचाई पर किसी गीध का घोंसला है। वह अक्सर गीध को ऊँचाई पर उड़ता हुआ देखता है। मानों कि वह जमीन पर सोई हुई मानवता को उठा, ऊचाई से तोल रहा हो। सुपने में नवीन भी कई बार उड़ा है, और मां तो बार-बार वही पुराना अंध विश्वास दुहराती थी कि उसकी उम्र बढ़ गई है आज की मानवता पतन की ओर बढ़ रही थी। वह लोगों में आपसी स्वार्थ पाता है। यह युद्ध एक

नई व्यक्तिवादी भावना लाया है यह सामूहिक जीवन के विरुद्ध है। पुराने परिवार तो गाँवों से कस्बों में आए, आगे बढ़ कर शहरों में पहुँच गए। आज भूमि का मोह शहर वालों को नहीं है। अन्न की खड़ी फसलें, उनके खून को रोमांचित नहीं कर पाती हैं। लोगों में अलग दूर रहने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है।

वहां के कथित समाज से वह दूर रहते हैं। कुछ वकीलों की मंडली है, जो कि 'रन-कट्टाल' या ब्रिज खेलती मिलेगी। कुछ और हैं जो संध्या को नित्य अपने खान-पान में मग्न रहते हैं। कुछ बाबू हैं जो परिवारों के भीतर खो जाते हैं। जिन परिवारों से मां घनिष्ठता का नाता जोड़ गई है, वहां वह शिष्टाचार के खातिर जाया करता है। वह उनसे अधिक मेल-जोल बढ़ाने का पक्षपाती नहीं है। बार बार कहने पर भी होटल की कोठड़ी को छोड़ कर किसी का अतिथि बन कर पड़ा रहना उसे मान्य नहीं है। फिर जल्दी छुटकारा पाकर वह बजरी कुटी चौड़ी सड़क पर निकल जाता है और पहाड़ की चोटी पर चक्करदार सड़क से घूमता हुआ पहुँच जाता है। परिवार वाले रोकना चाह कर भी उसे रोक सकने में अपने को असमर्थ पाते हैं। वह कई छोटी छोटी पगडंडियां आसानी से पार कर लेता है। सामने नाशपाती, खुबानी, सेब और अखरोट के पेड़ों से घिरा हुआ एक बंगला है। उसके चारों ओर रिंगाल के बड़े बड़े झाड़ हैं। वह उनके पास खड़ा होकर उनकी ऊँचाई पर गर्व से देखता रहता है। एक ओर पानी का एक सोता है जो बाज के पेड़ों के गिरोह की जड़ों से निकलने के कारण बहुत मीठा लगता है। तीन चार सुफेद मिट्टी वाले खड्डों की ओर देखकर उसे याद आता है कि उस मिट्टी को पानी में भिगो कर, उससे वे कालिख पुती पाटियों पर कभी लिखा करते थे। वहां अपर स्कूल के लड़कों की टोली प्रति रविवार को हमला करती हैं। फिर वह गिरजे वाली सड़क पर बढ़ जाता है। कुछ देर तक सिमेंट की बनी हुई मुंडेरी पर बैठ जावेगा।

नीचे पगडण्डी से उतर कर क्लब के पास बैंड सुनेगा और बाजार से मोमबत्ती लेकर अपने होटल चला जाता है। रात को बड़ी देर तक किताबें पढ़ता रहता है। होटल के छत की कोई चादर उखड़ी हुई है, वह रात भर हवा चलने पर बजती रहेगी, या फिर बड़े-बड़े चूहे कड़ियों से झाँक कर चूँ-चूँ-चूं करते हुए भण्डार की ओर चले जावेंगे। एक बूढ़ी बिल्ली वहाँ है, वह उनसे डरती है और होटल का मसाले मिला हुआ चरपरा गोश्त खाने के बाद उस ओर से उदासीन रहती है। वह बड़ी-बड़ी देर तक चिट्ठियों का उत्तर देगा, किताबों के पन्ने चाटेगा। अखबार पढ़ता रहेगा और आधी रात के बाद सो जावेगा। सुबह उसकी नींद से टूटती है। वह बड़ी देर तक तो आलसी-सा चारपाई पर पड़ा रहता है। होटल के नौकर के चाय देने और उसे पी लेने के बाद उसे चेतना आती है।

नवीन ने फिर भी एक परिवार से नाता-सा जोड़ लिया है। वह अक्सर संध्या को वहाँ बैठने के लिए जाने लगा है वे सामर्थवान और धनी लोग हैं। वे उसके दूर के रिश्तेदार हैं। उनका लड़का तीन बार मैट्रिक में फेल होकर अब के फिर चौथी बार फेल हुआ है। वह आवारागर्द लड़का है। बड़ी-बड़ी रात तक नैपालियों के परिवार में पड़ा रहता है। प्रतिदिन वहाँ से दराम चढ़ा कर लौटता है। उसकी सूरत टी० बी० के रोगियों के समान लगती है। वह नवीन को अक्सर उसके बारे में फैली हुई बातें सुनाता है। यह भी सुनता है कि वहाँ का दरोगा कहता है कि यह लड़का बड़ा खतरनाक है। नवीन उसकी बातें हँसी में उड़ा देता है। वह वहाँ जाता है। उसका अपना स्वार्थ है। वहाँ एक रोगिणी है। जिससे सारा घर घृणा करता है वह युवती भी मरना चाहती है; किन्तु बुलाने से कब मौत आती है! वह आत्म-हत्या करने के उपाय ढूँढ़ा करती है, पर सफल नहीं हो पाती। वह उस लड़के की बहू है। माँ अपने लाड़ले को समझाती है कि उसके

पास न जाया कर, उसे छूत की बीमारी है। वह राज्य-यक्ष्मा की मरीज है, उसकी यह पक्की धारणा है। वह रोज भगवान, से मनाती है कि कि उस पिशाचिनी से मुक्त मिले, नहीं तो सारा घर चौपट हो जायगा। वह नुपुत्र से कई चिट्ठियाँ मायके वालों को डलवा चुकी है कि वे अपनी लाड़ली बेटी को ले जावें। इस डर से कि मायके वह अपने गहने न ले जाय, सास ने उन पर अपना अधिकार जमा लिया है। वह लड़का उससे कभी सीधे मुह बात नहीं करता है और बात-बात में उसके मायके वालों को गंदी-गंदी गालियां देता है, कि उसका जीवन नष्ट कर दिया है। वह नवीन उस लड़की को बहुत समीप से देखता है। घर के लोगों की बात नहीं मानता कि वह रोग उस पर चिपट जावगा। वह उसका पीला पड़ा हुआ चेहरा देखता है। उनके बाल रूखे लगते हैं। वह खासती है तो बड़ी देर तक खुट खुट-खुट करती रह जाती है। गृहस्वामी और स्वामिनी लड़के की दूसरी शादी की बातें चलाया करते हैं माँ एक लड़की को देख आई है। लेकिन यह काँटा किसी तरह नहीं निकलता है। नवीन की साँत्वना उस लड़की को बल देती है। नवीन विश्वास दिलाता है, कि वह अच्छी हो जावेगी। लेकिन वह तो मरना चाहती है। जीने में उसे कष्ट लगता है: वह डाक्टर को दिखलाने को कहता है, वह इन्कार करती है। बार-बार कहती है कि नवीन उसके पूर्व जन्म का भाई है। कभी भूली-सी वह पति के अत्याचार की शिकायत करती है, लेकिन फिर सभल कर चुप रह जाती है। पति देवता होता है। इस संस्कार को वह आज तक नहीं भुला पाई है। वह बहुत कम बोलती है। और नवीन उसे तारा की बातें सुनाया करता है। किस तरह वे रहते थे। वह तो भूल-सा जाता है कि वह किसी दूसरे परिवार में एक उपेक्षित रमणी को बल प्रदान करता है जो घर वालों को उचित नहीं लगता है।

वह असमंजस में पड़ जाता है। उसको वह उदारता चाही

व्यवहार की सीमा लाँघ लेती है। वह मानवता के नाम पर जो अप-नत्व वहाँ अपेक्षित समझता है, वह उसकी भूल है। सास मोहल्ले की औरतों से कहती है कि बहू मायके से ही कुलच्छनी थी। अब उसने नवीन पर भी जादू-टोना कर दिया है। वह जब उस लड़की की कातर आँखे देखता है। तो उसे समझाता है, कि उसे स्वस्थ होना चाहिए। समाज में कुछ अबूझे सवाल है, उनका उत्तर उससे पूछना भविष्य के लिए हित कर होगा। यह उसकी वकालत करेगा। वह पन्द्रह-सोलह साल की लड़की निरुत्तर रह जाती है। पति प्यार उसने कभी नहीं पाया है। लात-घूँसे उसे अवश्य मिले हैं। पति के आगे कभी वह अपनी कुछ बाते हृदय खोल कर नहीं रख सकी। आज उसका परि-वार के दैनिक जीवन के कोई सम्बन्ध नहीं है। वे सब उस ओर से उदासीन रहते हैं। नवीन उसके मायके पत्र लिख चुका है। वह यह सब नहीं चाहती थी।

वह वहाँ जाना चाह कर कभी नागा कर जाता है। गृह-स्वामिनी उसे बार-बार समझा चुकी है, कि वह बीमार पड़ जावेगा। वह जब से शादी हुई रोगिणी ही है। घर में पाँव रखते ही अमंगल हुआ था। उसका पाँच साल का बच्चा एकाएक एक सप्ताह बाद मर गया। उनका ऐसा अच्छा लड़का उनसे हट गया कि घर तक आना पसन्द नहीं करता है। लेकिन नवीन उस सब के बाद भी चिन्तित रहता है। डाक्टरों की राय लेकर दवा का प्रबन्ध कर रहा है। वह उसको रोग-मुक्त करने का दृढ़ निश्चय कर चुका है। पर सच ही एक दिन उसके मायके के लोग उसे लेने आ पहुँचे। पति देवता उस दिन भर लापता रहे। सास चीख-चीख कर रोती हुई बहू के गुणगान करने लगी। उसकी आँखों से बड़े-बड़े आँसुओं की बूँद टपक रही थीं। मोहल्ले की औरतें उस नाट्य को देख कर दङ्ग रह गईं। बूढ़ा ससुर बाजार में एक बजाज की दूकान पर बैठा हुआ अपने समधी को कोस रहा था, कि वे अपनी

लड़की को क्यों ले जा रहे हैं। कौन जाने वहाँ उसकी ठीक दवा कर सकेंगे या नहीं। यहाँ तो घर भर तीमारदारी में फँसा रहता था। वह बहू तो लक्ष्मी है। भाग्य से ऐसी लड़की मिलती हैं। नवीन उस करतब को देखकर दङ्ग रह गया था। नवीन जानता था, कि वह अधिक दिन जीवित नहीं रहेगी : डाक्टर अपनी साफ-साफ राय दे चुके हैं। नवीन को फिर भी आशा थी कि वह जीवित रहेगी। उसने बहुत लांछन और अपमान सहा है। उस सबको हृदय के घोसले में छुपा कर उसके प्राणों का उड़ जाना उचित नहीं ही होगा। उसकी कई तृष्णाएँ अधूरी रह गई हैं। उस परिवार से उसे कोई श्रद्धा नहीं होती है, जहाँ नारी का इस भांति अपमान होता है। वह डोली पर बैठकर चली गई थी। नवीन ने जाते समय देखा कि उस लड़की के चेहरे पर आजादी की एक नूतन झलक थी। वह अपनी इस मुक्ति पर खुश लगी। नवीन वादा किया किया कि वह कभी-न-कभी उसके मायके, निकट भविष्य में अवकाश मिलते ही अवश्य जावेगा। वह जाते समय और कुछ नहीं बोली थी। फिर भी वह पति से मिलने अतुर मिली।

आगे उसने जीवन को अपनी पुस्तकों साथियों की रिपोर्ट और संगठन की शैली को सुलझाने में केन्द्रित कर दिया। होटल के पास ही एक नैपाली-परिवार नीचे टट्टिओं के पास वाले टीन के शेड में रहता है। वह माँ को देखता था। वह कानों में सुन्दर कुंडल पहने बच्चे को पीठ पर बाँधे हुए बाजार सौदा-पत्ता लेने जाया करती थी। वह बहुत स्वस्थ है। सुना कि एक दिन वह लड़का बीमार पड़ गया। पूजा की गई। औरतें डमरू और बजती हुई थाली के साथ नाचीं; और उन्होंने अपनी किलकारियोंसे सारा मोहल्ला छल लिया था। एक ने बताया कि उसे भूत लग गया है। उस भूत की सब माँगे खिचड़ी, मुरगा आदि पूरी की गईं। ओझाजी ने तीन दिन तक की अखंड पूजा की। वह बच्चा तो फिर भी नहीं बचा।

वह मोहल्ले के लोगों के साथ गधेरे तक गया था। लोग गड्ढा खोद रहे थे और वह ठाव-ज्यामेटरी का एक सवाल कोयले से चट्टान पर बैठा हुआ हल कर रहा था। उसने बी० ए० में हिसाब लिया था। उसे उस विषय से बड़ा शौक था। आज एकाएक उसके मन में कुछ भूले हुए सवाल हल करने की सूझी। वह बड़ी देर तक उनको हल करता रहा। लोग लौटने लगे थे। वह भी उनके साथ लौट आया। चट्टान पर हल किये हुए सवाल वैसे ही चमकते हुए छोड़ गया था। आगे फिर वह उस गधेरे की ओर नहीं गया था। वह तीन-चार दिन तक अपने होटल के कमरे में ही लिखता-पढ़ता रहा।

पहाड़ भी उसे नहीं रोक सके। वह किसी मोह के लिये नहीं बनाया गया था। एक दिन संध्या को वह उस कस्बे से चुपचाप चला आया। किसी से मिला नहीं। किसी को सूचना नहीं दी। पहाड़ों में वह पैदा हुआ था। वहाँ उसे जीवन मिला था। वहाँ से वह आज जा रहा है। कब लौट कर आवेगा इस पर नहीं सोचा!

—अप्रैल का महीना था। नवीन अपने एक दोस्त के यहाँ गाँव में पड़ा हुआ है। उसके मित्र एक अच्छे जमींदार हैं? उसे वहाँ पन्द्रह दिन हो गए हैं। पिछले छै महीने वह कई जगह गया और कुछ संस्थाओं का संगठन करके, उनको एक सूत्र में बाँधने में सफल रहा है। वह प्रमुख साथियों से मिला और उनसे सारी स्थिति पर विचार-विनिमय किया। फिर भी अभी वे आगे के लिए कोई कार्यक्रम बनाने में सफल नहीं हो पाये हैं। लोगों में गहरा मतभेद है। अधिक-तर साथी वहीं व्यक्तिगत क्रान्ति के पक्षपाती हैं। नवीन जब कि उस पर विश्वास नहीं करता है। उसने अपने दृष्टिकोण को हर एक के सामने सच्चाई के साथ रखा है। आपस में जो सन्देह हैं, वे फिलहाल दब गए थे; पर अधिक दिनों तक उनको दबाकर रखना संभव नहीं

लगता था। इन्द्रा का पत्र कभी-कभी आता था और वह कई बातों पर चतुरता से प्रकाश डालती थी। प्रतिदिन समाचार पत्रों से षड्यंत्र के कैदियों का हाल मालूम होता रहता था। किरण के भाई को एक मामले में फांसी की सजा हुई थी। अब हाईकोर्ट के फैसले पर सब की आँखें लगी हुई थीं। शायद वहाँ वह सजा कालापानी में बदल दी जाय। वह इस पर आशावादी नहीं था। उसके कुछ साथी कार्यकर्त्ता अपनी असावधानी के कारण पकड़े जा चुके थे। सरला को वह अब तक एक पत्र भी नहीं लिख सका था। तारा न जाने क्या सोचती होगी। तारा के प्रति यह उसका बहुत बड़ा अन्याय था।

जमींदार साहब के कारिन्दे हैं। वे गाँवों से लगान वसूल किया करते हैं। उनकी अपनी कचेहरी और सिपाही हैं। कभी-कभी वे दिन को वहाँ बैठा करते हैं। गाँव वाले बहुत दुःखी हैं। वे दरबार में फरियाद लेकर आये थे कि पानी के वक्त पर न बरसने के कारण फसल ठीक नहीं हुई है; गन्ने पर कीड़ा लग गया सो अलग, चारागाहों में घास तक नहीं उगी है, मवेशी चारे के बिना मर रहे हैं। राजा साहब ने कारिन्दों और पटवारी पर सब कुछ छोड़ दिया था।

एक दिन दोस्त ने अपना कच्चा चिट्ठा बयान किया, "अभी तक हम लोगों पर पाँच-सात लाख का कर्जा है। रोज नए-नए खर्च लगे रहते हैं। पास ही अपना जङ्गल है। वहाँ कोई न कोई अफसर मौके-बे-मौके आ धमकता है। पड्डा चाहिए, चमार लाइए, रासन, मोटर और मेम साहिब साथ आ गईं, तो ढेर हो लिए। उधर महाजन अलग गरदन दबाते जाते हैं। समझ में नहीं आता कि क्या किया जाय। बाहर लोग समझते हैं कि मियाँ बहुत खुशहाल हैं।"

"तो कुछ ठाट-बाट कम कर दो।" बोला था नवीन।

"यह बाप दादाओं की डिगरी चली आ रही है, जब कि जवाहर

बाई और अल्लाही जान तीन तीन, चार चार सौ रुपए रोज पर मुजरा करने के लिए आती थीं। अब तो बार-बार खटका लगा रहता है कि कहीं रियासत 'कोर्ट' में न चली जाय, फिर तो मुसीबत में मारे गए।"

नवीन सब बातें जानता है। तीन रानियाँ घर पर हैं और दो रखेल अलग। वे शौकीन तबीयत के हैं, मुजरा-उजरा तो लगा ही रहता है।

"छोटी साहिबा तो आते ही बीमार पड़ गईं। चालीस हजार रुपया मसूरी, कलकत्ते, दिल्ली इलाज में खर्च हो चुका है। कसूर मेरा है, पर क्या करता? पहली शादी पिताजी ने तय की। दूसरी-लड़की माँ के पसन्द आई और तीसरी के पिता पाँवों में गिर पड़े कि कुल की लाज रख ली जाय। बस सब कुछ मजबूरी में हुआ। नहीं तो मैं पक्का समाजवादी हूँ; लेकिन...!"

"इस झूठे आडम्बर को उठा कर फेंक दो। सारी मुसीबत हल हो जायगी और अपनी प्रजा के साथ अच्छा व्यवहार करना ही पड़ेगा।"

"कुल की प्रतीष्ठा का सवाल न होता तो मैं सारी जमीन जायदाद लोगों में बाँट देता, लेकिन और लोगों के आगे नीचा देखना पड़ेगा।"

"मेरा खयाल है....।"

"नवीन कालेज से लौट कर मैंने भी सोचा था कि किसानों की माली हालत सुधारनी चाहिए। लेकिन लगान, रीति रीवाज, फिर साहू-कारों का कर्जा! रुपया कहाँ से लाया जाय। रिआया नहीं देगी तो कौन देगा? बाहर वाले भीतर की हालत नहीं जानते हैं। इसीलिए नसीहत दिया करते हैं।"

नवीन इस तर्क पर मन ही मन हँसा और चुप रहा। वह न समझ

सका कि एक परिवार अपने सुखों के लिए सैकड़ों परिवारों को मिटाने की इतनी क्षमता क्यों रखता है? हजारों रुपया ये अपने साधारण सुख के लिए निछावर कर देते हैं और उधर हजारों लोग नंगे और भूखे रहते हैं। इनको साम्राज्यवादियों ने अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिये पनपने दिया है। वह अधिक न कह वहाँ से उठ कर चला आया था।

रात को नवीन ने एक चिट्ठी लिखी :

बहिन तारा,

जबसे मैं पहाड़ से आया, तुझे एक चिट्ठी नहीं लिख सका हूँ। तू अपने मन में बहुत दुःखी होगी। वह सब जान कर भी मैं चुप रहा। यह तो जानता हूँ कि मेरी लापरवाई पर तू नाखुश नहीं हुई होगी। हम एक दूसरे को भली भाँति जानते हैं। सरला ने इस बीच तुझे कई चिट्ठियाँ लिखी होंगी। सरला तेरी सच्ची सहेली है। तेरी इस छाँट की तारीफ़ करता हूँ। मैं उसके घर कुछ दिन रहा। सरला को सही सा पहचान कर वहाँ अधिक नहीं टिका हूँ। सरला तुझ से ज्यादा समझदार है। वह मुझसे ज्यादा तेरी बातें समझ लेती है। यह स्वाभाविक गुण लड़कियों में होता है। उसने तेरा भार मुझ से ले लिया और मुझे मुक्त कर दिया। सरला मुझ से अधिक तेरे निकट रहना चाहती थी, मुझे कोई और आपत्ति नहीं हुई। भला मैं रुकावट डालने वाला कौन था! उसने तुझे माँगते हुए कोई हिचक नहीं बरता। वह उसका बड़प्पन है। यह चिट्ठी सरला के मार्फत ही भेज रहा हूँ।

मैं विश्वविद्यालय नहीं गया। वहाँ मेरी कोई आवश्यकता नहीं थी। इसका और उत्तर सरला दे देगी। वह सारी परिस्थिति जानती है। वह बहुत सरल है और मैंने उसके आगे कोई बात नहीं छुपाई है। वह हमारे परिवार से व्यर्थ मोह करता है। मैंने साहुकारों को लिख दिया

है कि आम का बाग और शहर का पक्का मकान बेचने को तैयार हूँ। वे सन्तुष्ट हो जावेंगे। सरला ने यदि कुछ रुपया भेजा हो तो उसे वापिस करवा देना। उसकी हमारे परिवार से इतनी दिलचस्पी लेनी उचित नहीं लगती है। आशा है कि तुम कुशल से होगी। पिता और ससुर दोनों परिवारों की मर्यादा की रक्षा करनी तुझ पर निर्भर है। मुझे घर और पैत्रिक-सम्पत्ति की कोई लालसा नहीं है। वह बाप-दादा की जायदाद मुझे सुख नहीं देती है। मैं तो आगे बढ़ कर देश की ओर देखता हूँ। वह सोने का देश आज कङ्गाल हो गया है। अकाल, महामारी, बेकारी, गरीबी आदि क्या-क्या नहीं इस पर लादा गया है। कहीं स्वस्थ परिवार नहीं मिलते हैं। मुझे देश का कार्य करना है। बन्धन वाले जीवन से इस बड़े परिवार में रहना मुझे पसन्द है। यहाँ बहुत से नवयुवक साथ-साथ रह कर भारतमाता की स्वतन्त्रा की बात सोचा करते हैं। हम चाहते हैं कि जिस सांस्कृतिक बल को हम खो चुके हैं, उसे एक बार फिर जमा कर लें। तुम मेरा स्वभाव जानती हो; अतएव इस बात को पढ़ कर चिन्ता न बढ़ाना। हृदय में व्यर्थ का दुःख मोल न ले लेना। सारे देश की हालत डाँवाडोल है, भारी विपत्ति के बादल इस पर छाए हुए हैं। मैंने गाँव-गाँव जाकर देखा है। वहाँ का ढांचा टूट रहा है। किसान थक कर बैठ गया है। हल और बैल भी कमजोर पड़ गये हैं। वह धरती-माता उसे आज पूरा पेट भर के अन्न नहीं दे पा रही है। हमे उस पर विचार करना है।

तू आशा है कि अपनी गृहस्थी में भलीभाँति रहना सीख गई होगी। मैं आजकल देहात में अपने दोस्त के घर पड़ा हुआ हूँ। चारों ओर फैले हुए खेतों को देखता हूँ। फसल पक गई है। गेहूं की सुनहली बालें चमक उठती हैं। मैं उनके बीच कभी-कभी खेत की मेंड पार करता हुआ चलता हूँ। जौ, चना, मटर······! वे खेत अन्न हमें देते हैं। उस उपज को देखकर मन कुछ स्वस्थ सा होता है। लेकिन तभी

पाता हूँ कि उनको उपजाने वाला वह किसान सदियों के कर्जे से दब रहा है। उसके मिट्टी के घर जो घास-फूस से छाए रहते हैं, वे बहुत मैले हैं। भैरव की मँडैय्या के पास पीपल के नीचे लड़के खेला करते हैं। वे भी अस्वस्थ लगते हैं। भय सा होता है कि यह सारा वर्ग कहीं खेतों को छोड़ कर भाग न जाय। उसका उस धरती से मोह हट गया है। वे खेत अब उसे और उसके परिवार को दो जून खाना तक नहीं देते हैं। वह परमात्मा पर भी विश्वास रखता हुआ थक गया है। गाँव के साथ के उसके बन्धन ढीले पड़ गये हैं। हजारों वर्षों से उसके परिवार वालों ने जिन खेतों को जोता है, उन से नाता तोड़ कर बहुत से किसान तो कस्बों और शहरों में चले गए हैं।

सरला से जो बातें तूने मेरे बारे में कहीं, वह तो उनको बार-बार दुहराया करती थी। तू उसकी शादी के अवसर पर आकर शामिल हो सकती है। मैं न जा सकूँगा। सरला जानती है कि मेरे पास समय नहीं है, मैं बहुत व्यस्त हूँ। वह मुझे निमन्त्रण नहीं भिजवायेगी। सरला को खूब सजाना। वह दुलहिन के वेश में अति सुन्दर लगेगी, यह मेरा अनुमान है। ऐसे अवसर कम आते हैं। सरला यदि बुला- येगी तो भी मैं अलग रहूँगा। वह मेरी स्थिति को भली-भांति जानती है। मुझे गांव भले लगते हैं। वे देहाती बहुत भोले होते हैं। उनका हृदय जितना निर्मल है, वे गाँव उतने ही भद्दे और मैले हैं। वहाँ कभी-कभी छी-छी मन में होती है। मैं स्वयं अपने संस्कारों को नहीं भूल पाता हूँ। वह पैत्रिक मर्यादा आज भी मेरे खून में बहती है। मेरा मिथ्या अभि- मान मुझे सदा उनसे दूर हटाने की चेष्टा करता रहता है। वह घुड़- मक्खी की तरह मुझे डसता रहता है। उसके डंक की चोट से मैं तिलमिला उठता हूँ। कोई मेरे कान पर कहता है कि मैं बड़ा हूँ, मैं बड़ा हूँ—बड़ा हूँ। यानि बहुत-बड़ा हूँ। और इन गांवों में यह गन्दगी क्यों है? यहां लोग इतने मैले-कुचेले क्यों रहते हैं। इनके

जीवन का स्तर इतना नीचा क्यों है। यहां की सामाजिक परम्परा तो नष्ट होती जा रही है। उनमें वह सनातन संस्कृति नहीं दीख पड़ती। हजारों वर्षों से वे खुशहाल थे। उन गांवों की धरती पर पिछले तीन सौ सालों से कड़ी-कड़ी चोटें पड़ती जा रही हैं। एक शुभ लक्षण कहीं दीख पड़ता है—वह राष्ट्रीय तिरंगा झंडा पीपल के पेड़ पर फहराता है।

किसान परिवारों के बीच बैठा करता हूँ। वे अपनी उस कड़ी मेहनत के बाद पेट नहीं पाल पाते हैं। अपने बच्चों की ठीक परवरिश नहीं कर सकते हैं। जाड़ों में वे कड़ी शीत में रात भर जागरण कर काट देते हैं। मौत से वे नहीं डरते हैं। प्लेग, मलेरिया, हैज़ा, चेचक आदि के बाद भी वे वहाँ वैसे ही रहते हैं। कोई खास परिवर्त्तन उनमें नहीं होता है। वहाँ की आबादी खास सी घटती नहीं है। न मालूम उनका वह हाल कब तक रहेगा। लाखों परिवार वर्षों तक पूरा पेट खाना नहीं पाते, क्या यह कम आश्चर्य की बात है? और हम उनकी स्थिति से परिचित होने पर भी शहरों में चैन से मौज उड़ाते हैं। उनका यह हाल आखिर कब तक रहेगा! वह सब तो असहनीय सा लगता है। यह सब देख कर भौचक्का रह जाता हूँ। इन लोगों के बीच खड़ा होकर पाता हूं, कि मैं इनसे अलग हूँ। मेरा अस्तित्व, वह मेरा झूठा सा बड़प्पन है। मैं अभी तो इनको कोई दिलासा नहीं दे पाता हूँ। जमींदार, पटवारी, हाकिम, दरोगा, साहूकार आदि आज भी इन पर अत्याचार करते हैं। कच्चे कुए हैं, पानी का ठीक प्रबन्ध नहीं; शिक्षा का कोई साधन नहीं है।

तारा, न जाने क्यों बार-बार मां की याद आती है। क्या वह मां आज सुखी होगी। उस गौलोकवासी आत्मा की याद अनायास हृदय को भर लेती है। उसका सारा व्यक्तित्व आंखों के आगे फैल जाता है। मां की पवित्र मूर्ति तो मैंने राख बना कर गँगा में बहा दी थी। तब उतना दुःख नहीं उमड़ा। मैं एक कर्त्तव्य में डूब गया। सारी सामर्थ

को जुटा कर कॉलेज पढ़ने चला गया था। आज मुझे मां की सान्त्वना की भूख सताती है। तारा तुम भी मां की याद जरूर करती होगी। मां की याद लड़कियों के मन में अधिक पीड़ा फैलाती है। अब तुम ससुराल में अपने परिवार के बीच हो, आशा है कि वहां सुखी होगी। सरला के मन में तुम्हारा ससुराल के प्रति मैंने बहुत विद्रोह पाया। क्या सच ही तुम सन्तुष्ट नहीं हो। तब तो वह सौदा तेरे प्राणों से भी बहुत महँगा पड़ता होगा। ससुराल लड़की का कैसा आश्रय है! वह प्रणाली बदल देनी पड़ेगी। लड़की का जीवन तो सदा के लिये बँध जाता है वह उस परिवार की एक दासी बन जाती है और वहां सड़गल कर मर जाती है। लेकिन सोचता हूं कि तुम वहां अपनी जगह आसानी से बना लोगी। वे भले लोग हैं। तू अपनी तन्दुरुस्ती की चिन्ता करना।

मास्टर जी को तो तू जानती ही थी। कल अखबार में पढ़ा कि उनकी लड़की ने मालगाड़ी के नीचे कट कर आत्म-हत्या करली है। मैं उनके घर एक बार गया था। वह लड़की तब एक विद्रोही भावना में थी। मास्टर जी का पहचानना अब आसान नहीं है। वे साठ साल के बूढ़े से लगते हैं। मुझे उस लड़की की मौत से कोई आश्चर्य नहीं हुआ है। अखबार की कतरन साथ भेज रहा हूँ। उससे सारी स्थिति तेरी समझ में आ जावेगी। उस लड़की का फोटो देख कर बरबस मेरी आँखों में आंसू आ जाते हैं। वह छापना उस नारी का अपमान करना है। सरला की शादी की बात भी सुन चुका हूँ। तुम को बुलाने शायद वह किसी को भेजेगी। निःसंकोच चली आना। वह अपना घर है। सरला की माँ को देख कर एक बार तुम अपनी माँ का दुःख भूल जावोगी।

गाँव तुम जाओगी तो बाहर का कमरा गाँव के लड़कों को दे देना। वहां आलमारी के ताले खोल लेना। वहां लड़कों ने सुना एक संघ खोला है। उनको सारी सुविधा दे देना। हमारी किताबों और

दवाखाने का उपयोग वे कर सकें, तो यह उचित व्यवस्था होगी। मैं अभी कुछ साल तक गांव नहीं जा रहा हूँ। वहां जाकर तू सब देख भाल कर आना। बुआ को मैंने रुपये भेज दिए हैं। मकानों की मरम्मत करना बेकार लगता है। वे पुरानी खान्दानी दीवारें आज उजड़ जाँय, तो मुझे दुःख नहीं होगा। आने वाले युग में लोग, उनसे नई मजबूत मकानों की नीव डालेंगे—ऐसा मेरा विश्वास है।

यह चिट्ठी डाक से न भेज कर आदमी के द्वारा सरला के पास भेज रहा हूँ। साथ रुपया भी है। सरला यह चिट्ठी तुझे देगी। उसके लिए कोई अच्छा उपहार खरीद लेना। वह बहुत सुघड़ लड़की है। जिस गृहस्थी में जावेगी, वहां नया जीवन लावेगी। उससे बहुत बातों पर दलील कर चुका हूँ। अब वह तकरार करने वाली भावना बिसार चुकी है। उसे आशीष भेज रहा हूँ। वह एक 'संभव' परिवार में जा रही है। वह सामर्थवान है। उससे मुझे बहुत आशा है। कभी किसी दिन थक कर उसकी गृहस्थी में विश्राम करने पहुँच जाऊँगा। वह परिचर्या करने में प्रवीण है।

किरण के भाई की पैरवी हो रही है। सरला किरण को पहचानती है। आशा है कि किरण से वह कभी भविष्य में झगड़ेगी नहीं। हम लोगों ने जो व्रत लिया है, वह बहुत कठिन है। आशा है कि मैं सफलता पूर्वक उसे निभा लूँगा और एक दिन यदि मौत भी आ जावेगी, तो तू दुःख न मानना। मैं अपने कर्तव्य के आगे झुक जाता हूँ।

आशा है कि तू कुशल पूर्वक होगी। सरला को मेरी ओर से आशीष दे देना।'

नवीन ने चिट्ठी बन्द करके एक आदमी के हाथ सरला के पास भेज दी। वहाँ से केवल यही उत्तर मिला कि तारा अभी नहीं आई है।

वह जमींदारों की इस जाति पर सोचता है। वह वहां फैली हुई

खराबियों को देखता है, और देशों के इतिहास में इन लोगों द्वारा साहित्य और संस्कृत का निर्माण हुआ है। वह संस्कृति भले ही उस वर्ग के स्वार्थों से भरी हुई रही हो। उनके द्वारा तरह-तरह के वैज्ञानिक अन्वेषण हुए हैं। यहाँ का हाल यह है, कि पतित-जीवन व्यतीत करना इनका धर्म है।

इन किसानों को अपने खेतों से बाहर की दुनिया देखने का अवसर नहीं मिलता है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी उनका यही हाल रहा है। वे कभी उठ नहीं सके हैं। उनकी संस्कृति कुंठित हो गई है। शायद कल ......; नवीन गांवों का चक्कर लगाया करता है। वह दूर-दूर तक घूमने निकल जाता है। चनों की क्यारियां, गेहूँ के खेतों के बीच सरसों पकी हुई। गाँव वाले उसे देख कर शंकित होते हैं। बच्चे उसे घूरते हैं। गाँव का मुखिया खाट डाल देता है सब लोग उसके चारों ओर जमा हो जाते हैं। कुछ अपने परिवार के बीमारों की दवा-दारू की व्यवस्था पूछने आते हैं। बच्चों के खेल के बीच कभी-कभी वह अपने को खो देता था। नवीन उनके हृदय में बैठ कर सारी बातें निकाल लेना चाहता है। उत्तर पाकर भी उसके मन को शान्ति नहीं मिलती। हर एक व्यक्ति कुछ छुपा लेता था। उनका विश्वास पात्र वह नहीं बन सका है, तथा और अधिक उत्साह-सा वह उनसे बातें करने में अब नहीं पाता है।

—एक दिन नवीन चुपचाप बैठा हुआ कुछ पढ़ रहा था। एकाएक उसने देखा कि खेतों में आग लग रही है। गाँव के लोग उधर भाग रहे थे। भारी भगदड़ मची हुई थी। उस समय उसके दोस्त भीतर जनानखाने में अपनी रानियों के साथ ताश खेल रहे थे। वह चुपचाप आगे बढ़ गया। देखा कि गेहूँ के खेत जल रहे थे। कारिन्दा किसी का नाम ले लेकर चिल्ला रहा था कि उसकी बदमाशी है। अभी दो साल का लगान बाकी है। हर साल वह कोई न कोई शरारत करता

ही रहता है। डर के मारे अब के सारी फसल जला दी है। वह उसे उसी वक्त कचेहरी ले जाना चाहता था। वह अधेड़ व्यक्ति चुपचाप खड़ा था। उसकी कमर पर दो महीने से दरद है। भारी उम्मीद के साथ सात-आठ बरस में अब के अच्छी फसल हुई थी। कल सुबह वह उसे काटने का निश्चय कर चुका था। अब वह फूट-फूट कर रोने लगा। अपनी तबाही अपनी आँखों से देखना, उसके लिए असह्य था। वह तो नवीन के पाँवों पर गिर पड़ा। बार-बार अपनी रक्षा की पुकार मचा रहा था। नवीन ने कारिन्दे को समझाने की निरर्थक चेष्टा की। किसान को उसने सांत्वना दी कि वह सारा मामला ठीक करवा देगा। न जाने क्यों उसके मन में बात उठ रही थी, कि वह सारी शरारत उस कारिन्दे की है। उस रात्रि में वे खेत जल रहे थे। पीली-पीली बालें झुलस कर राख बन रही थीं। खड़े लोगों के चेहरे उसकी लाल रोशनी में साफ-साफ दीख रहे थे। कुछ अपने खेतों की रक्षा करने में संलग्न थे।

वह कुछ देर तक असहाय-सा वहाँ खड़ा रहा। आग की ज्वाला कम पड़ रही थी। चारों ओर राख और काले डंठल दीख पड़ते थे। वह दूसरे गाँव की रिआया पर कैसे अनुशासन लाद सकता था। वह खिन्न मन लौट आया। यह उसकी अपने जीवन की एक बहुत बड़ी हार थी। वह एक किसान की रक्षा करने में तक असमर्थ रहा है। उसे नींद नहीं आई। आज उसे लगा कि इस समाज पर किस तरह जोंक चिपटी हुई है, जिनको हटाना आसान नहीं है। वह चुपचाप घर से निकला और गांव की पगडंडी पर बढ़ता हुआ चला गया। खड़ी फसलों के बीच वह खेत भी दीख रहा था। दूज की चांद आकाश पर थी। एकाएक उसने देखा कि सामने से उस ओर कुछ लोग आ रहे थे। उनकी लालटेन की रोशनी चमक पड़ी। देखा उसने कि वे उस किसान को पकड़ कर ले जा रहे थे। साथ में पुलीस का सिपाही था।

वह अवाक खड़ा रहा गया। फिर पूछा, "इसे पकड़ कर कहां ले जा रहे हो।"

"चौकी।"

"किसने कहा है।"

"दरोगा साहब ने हुक्म दिया है।"

"इसका क्या कसूर है?"

"सरकार, लगान देने के डर से फसल जला दी। यह एक नम्बर का बदमाश है। लोगों को भड़काता है कि लगान मत दो। शाला सुराज लेने लगा है।"

नवीन उनके साथ हो लिया। तभी वे लोग बोले, "सरकार आप?"

"मैं चौकी चलूँगा।"

नवीन चुपचाप उनके साथ चल रहा था। वह कारिंदा बीड़ी फूँकता हुआ सिपाही से कह रहा था, "पहले-पहल झंडा लगाने आया था। यह कहता है, खेत के मालिक वे हैं जो उस पर मेहनत करते हैं। मालिक तो मेहनत नहीं करते, वे मुफ़्त खाते हैं। अब के साले को तीन साल की न कराई तो······।"

उस कानून की बात नवीन ने सोची। वह उसकी मोटी-मोटी कानून की किताबों से बाहर थी। अपराध और दण्ड तो समाज की सुरक्षा के लिए बनाया गया है। आज उसका दुरुपयोग इस भाँति हो रहा था। वे चुपचाप खेतों को पार कर रहे थे। कई बागों से वे गुजरे। फिर किसी नदी का खादिर पार किया। कहीं पास ही कोई सियार हूआ-हूआ मचा रहा था। रात्रि निस्तब्ध और शान्त थी। वह बटिया कभी सीधी तो फिर टेढ़ी-मेढ़ी-सी आगे बढ़ रही थी। तीन-चार मील चल कर वे चौकी पर पहुँचे। दीवानजी रपट लिख कर मिलान कर रहे थे। फिर उस किसान को उन लोगों ने एक कोठरी

में बन्द कर दिया। वह चिल्लाया तो एक ने उसे लात मार भीतर धकेल कर, माँ की गाली भी दी। वह अब चुपचाप भीतर चला गया था। नवीन के लिए दीवानजी ने बाहर पेड़ के नीचे चारपाई डलवा दी। एक सिपाही ने रहम कर के अपना कम्बल उस पर बिछा दिया।

सुबह को नवीन की नींद टूटी। देखा कि दरोगा साहब बाहर कुर्सी पर बैठे हुए कागजों पर दस्तखत कर रहे थे। नवीन उठ कर उनके पास आया और चुपचाप खड़ा हो गया। दरोगा साहब ने उसका अभिवादन किया। फिर तपाक से बोले, "बड़े नालायक नौकर हैं। "अरे जोधासिंह!"

"हजूर"

"तुम सब बड़े हरामखोर हो गए हो। रात को मुझे जगाया होता। आपने नाइक तकलीफ की। एक नौकर भेज देते, मैं खुद हाजिर हो जाता।"

उन भीमकाय शरीर वाले दरोगाजी को देखकर, वह दंग रह गया। पास की कुरसी पर बैठकर बोला, "कल एक मुलजिम आया है। मैं उसे जमानत पर छुड़ाने आया हूँ।"

"आप उसकी पैरवी करेंगे साहब! आप अभी इन लुच्चों को नहीं जानते हैं। ये साले बड़े बदमाश हैं। इसके तीन-चार भाई तो दस नम्बरी हैं। आप अभी नए-नए कालेज से आए हैं। एम० ए० पास कर लिया है न! इनकी मक्कारी की बातें हम ही जानते हैं। दिन-दोपहर खून करके छुपा डालते हैं। चमड़ी अलग कर दीजिए हामी नहीं भरेंगे। उस सफाई को देखकर हम लोग ही दंग रह जाते हैं। पुलीस तो इन गुण्डों के पीछे बेकार बदनाम है। आप ही सोचिए इस हल्के में साठ-सत्तर गाँव हैं। हम लोगों के साथ छोटी गारद होती है। चोरी, डकैती, खून, मारपीट आए दिन होते रहते हैं। सख्ती से

काम न लें तो·······!"

"सरकार!" कारीन्दा बोला।

"क्या है?"

"मैं वहीं खड़ा था। मैंने इसे आग लगाते हुए देखा। और गवाह भी हैं।"

यह झूठ बोल रहा है।" नवीन ने कहा ही।

अच्छा बाबू साहब, आप ही बताइए कि गाँव के कारिन्दे और चौकीदार पर विश्वास न करें तो काम किस तरह चल सकता है। मैं तो हर जगह जा नहीं सकता हूँ। तहकीकात और सबूत पर ही निर्भर रहना पड़ता है। गाँव के ही गवाह हैं। जमींदार का कारिन्दा क्यों झूठ बोलने लगा। आप को सच ही विश्वास नहीं होगा। लेकिन हमारे बाल तो इनके बीच ही पके हैं। फिर अदालत हमारी ही बात पर तो चलेगी नहीं। सफाई के गवाह भी होंगे। आप मेरी जगह पर होते तो यही करते। शेरसिंह चाय तो ले आ। अरे साहब के लिए भीतर से धुली धोती और तौलिया माँग कर ले आ।"

यह कैसा आतिथ्य था! कुएँ पर वह नहा रहा था और सामने वह किसान शिकचों के भीतर बन्द था। नवीन का उसे छुड़ाने का दावा झूठा निकला है। गाँव में आपसी लाग-डाँट इतनी अधिक है कि भाई-भाई के खिलाफ आसानी से चला जाता है। जमींदार के मुलाजिम के पक्ष में गवाह मिलना कम कठिन बात होगी। लोग इतने कुचले गए हैं कि वे सर नहीं उठाते हैं। चाय पीने में उसको कोई उत्साह नहीं हुआ। वह कुछ और कहता तो शायद उसे छुटकारा दिला सकते। लेकिन उत्साह चूक गया था। यह एक साधारण घटना थी। इसी आतंक के बल पर वहाँ शासन चलता है। उसे जेल हो जावेगी और एक बेकसूर आदमी वहाँ सड़ जायगा। उसे बचाना आसान नहीं था।

दरोगा साहब ने कहा, "आप बेकार इस बदमाश के चक्कर में फँस गए हैं। अब आप शाम को जाइयेगा। सुना था कि आप आए हुए हैं। आज दर्शन हो गये।"

"मुझे अभी लौट कर जाना है।" बोला नवीन।

नवीन के इन्कार करने पर भी दरोगा साहब ने रथ मँगवाया कुछ देर बाद नवीन उस पर बैठकर लौट रहा था। वह बहुत उदास था। यह दुनिया कितनी गलत राह हर चल रही है। बुराइयाँ अपनी जड़ फैला चुकी है। उन को मिटाना आसान नहीं था। वह खेतों की ओर सूनी दृष्टि डालता था। मन में ग्लानि भर रही थी। वह व्यर्थ यहाँ पड़ा हुआ है। उस से कुछ भी नहीं होगा। जमींदार और दरोगा से संघर्ष करना होगा। वह भरी हुई पिस्टल तो एक दो हत्या भर करती है। उनको तो समाज को खोदना है। इसके लिए लाखों, करोड़ों जनता को तैयार होना होगा। रथ हाँकने वाला मस्ती के साथ कोई देहाती गीत गा रहा था। वह जमींदार या पटवारी के विरोध का गीत नहीं था। वह तो किसी देहाती बाला का गीत था, जो सावन-भादों की बरसात में अपने परदेशी पति का इन्तजार करती-करती थक गई थी।

देहात में ऐसी घटनाएँ साधारण बात थीं। वे सब इसके आदी हो गये हैं। वे कानून नहीं जानते। शिक्षित नहीं हैं। वे अपने अधिकारों तक को नहीं जानते हैं। वे अपने ऊपर होने वाले जुल्म के विरोध में प्रदर्शन नहीं करते। उनके भीतर एक राष्ट्रीय चेतना तो आई है, पर अभी वे अपना संगठन नहीं बना पाए हैं। उस किसान को भरोसा हुआ होगा, कि शहर का रहने वाला नवीन उसे आसानी से छुड़ा लेगा, जो कि सच नहीं हुआ है। नवीन का दर्प चूर-चूर हो गया। वह हुकूमत करने वाली जाति में पैदा हुआ था। उसके पुरखे कई पीढ़ियों से ऊँचे-ऊँचे ओहदों पर रहे हैं। और उस किसान की

असहाय स्त्री, वे बच्चे ! उस गाँव का विस्तार बढ़ता लगा । वह घटना उसके लिए एक असाधारण सा सबक था। आगे के लिए उसे अब देहात का संगठन करने की योजना बनानी पड़ेगी । इन लोगों को सबल होना चाहिए। हरएक व्यक्ति को समाज के भीतर वाली अपनी जिम्मेदारी समझ लेनी है। उसको उसके अधिकारों का सम्पूर्ण ज्ञान हो जाना चाहिए। लोगों को समझाना पड़ेगा कि आपसी झगड़ों को मिटाकर उनको एक नए राष्ट्र के निर्माण में हाथ बँटाना होगा, जहाँ कि स्वतंत्र होकर अपने-अपने गाँव के झगड़ों को अपनी पंचायत में निपटावेंगे। उनके बच्चों की रक्षा होगी और हरएक को पनपने का अवसर मिलेगा। उनका शोषण कोई नहीं करेगा। वे आजाद होंगे। हाकिम, जमींदार, दरोगा का आतंक मिट जायगा ! यह काम आसान न होने पर भी उनको करना है। कुछ अन्ध-विश्वासों के प्रति उनकी भावना बदलनी पड़ेगी। उनको बलवान बनाना होगा। उनको आने वाले राष्ट्रीय युद्ध के लिए तैयार करना होगा। वह किसानों की क्रान्ति ···· !

—नवीन गाँव में पहुँच गया था गाँव का दैनिक जीवन चल रहा था। सब व्यस्त थे। वह सिर झुकाए हुए कुछ सोच रहा था। कल की घटना आ कर बीत गई थी। उसकी कोई छाप वहाँ के जीवन में नहीं थी। कुछ लड़के साहब समझ कर उसे सलाम कर रहे थे। वह उन बच्चों को देख रहा था। श्रीहीन सी औरतें गोबर पाथ रही थीं, खेत कट रहे थे। वह आगे बढ़ कर कुएँ के पास पहुँचा। वहाँ युवतियाँ पानी भर रही थीं। कुछ लड़कियाँ आपस में ठठोली कर रही थीं। वह आगे बढ़ कर कोठी में पहुँच गया। रथ से उतर कर अपने कमरे में पहुँचा और सोफा पर लघर गया। वह बहुत थक गया था। राजा साहब आए थे। मुस्करा कर बोले, "गाँव में भी मुवक्किल फाँस लिए हैं।"

"यहाँ का न्याय मेरी समझ में नहीं आया है।"

"आवे कैसे, तुम ठहरे समाजवादी! किसानों को जमींदारों के खिलाफ उभाड़ोगे। उनका सत्यानाश करने का नारा लगाओगे। पछले दिनों कोई खद्दरधारी नेता यहाँ आकर बड़े जोशीले व्याख्यान दे गए थे। कहते थे कि खेत का असली मालिक तो किसान है जमींन्दार तो डाकुओं की एक कौम है। उनको लगान नहीं देना चाहिए। बस फिर क्या था किसानों को बादशाहत मिल गई। पुलीस उनकी गुलाम थी। तीसरे रोज आसपास गांवों में चार डाके पड़े। जोश में दो जगह बलवा हो गया। एक पुलीस का सिपाही घायल हुआ। लाचारी फौज बुलवानी पड़ी थी। जोश दिलाना तो बहुत आसान है। बगावत का नारा देकर उसे आग लगा कर शुरू करवा देना बहुत सरल काम है; पर उसे निभाना बहुत कठिन होता है। कल की घटना के बाद आज सुबह सब ने गड्ढे खोद कर दबे रुपए निकाल डाले और तीन-चौथाई से ज्यादा बकाया लगान जमा हो गया। लात का भूत बातों से नहीं मानता है। मैं पाँच साल से यही सब देख रहा हूँ।"

"सरकार, तहसीलदार साहब आए हैं।" नौकर ने बताया।

राजा साहब अब बोले, "यह देखो सरकार तो एक दिन की मोहलत नहीं देती है। उनका रुपया खजाने में वक्त पर पहुँच जाना चाहिए आप कहीं से लावें। चलो न बैठक में।"

नवीन साथ हो लिया। तहसीलदार साहब घोडे पर आए थे। ब्रीचेज कसे हुए थे। पीछे हाथ में 'राइफल' लिए चपरासी था।

राजा साहब बोले "आपने बड़ी तकलीफ की है?"

"तकलीफ कहां! यहां फजीता है फिर कमिश्नर साहब की चिट्ठी पहुँच गई है। बीस तक सब बसूली हो जानी चाहिए। यह नौकरी मुसीबत ही है।"

"तुम्हे तो कलक्टर साहब का खत मिला है, कि जाड़ों में वे शिकार

पर आवेंगे । अभी और कितनी वसूली बाकी है?"

"कोई दो लाख!"

"हमारे यहां तो लगान आ रहा है। परसों तक तहसील भिजवा दूँगा।"

"अच्छी बात है।"

"खाना खाकर जाइएगा"

तहसीलदार साहब ने नवीन की ओर देखा। "ये मेरे दोस्त हैं। गांवों की हालत देखने आए हैं। किसानों के ऊपर कोई किताब लिखना चाहते हैं।" दोस्त बोले।

नौकर ने मेज लगादी थी। चिलमची पर हाथ धुलवाए। तहसीलदार साहब बिना किसी तकल्लुफ के खाना खाने लगे।

"रास्ते में कुछ शिकार मिला?"

"वक्त कहां था आप लोग शेर तो कलक्टर साहब के लिए रखते हैं। हमें तो गीदड़ भी नसीब नहीं होता है।"

नवीन तो उठ कर बाहर चला आया था। सीढ़ियां चढ़ करके चुपचाप ऊपर अपने कमरे में पहुँच गया। कल रात की घटना से उसका मन बहुत दुखी था। देखा कि डाक आ गई है। वह चिट्ठियां और अखबार खोल कर पढ़ने लगा। रात वाली बात बीच-बीच में उभर आती थी। वह एक गलत परिवार में पड़ा हुआ है। उस उनके दोस्त को अपनी हैसियत की चिन्ता है। मानवता का नाता वे आज बिसार चुके हैं। दो मोटरें हैं। विलयाती-शराब की पेटियां सीधे करांची से आती हैं। मुर्गियां अलग पाली गई हैं। जंगल से रोज कोई न कोई जानवर आ जाता है। रानियां हैं, जो विलासता में डूबी हुई रहती हैं। रुपया पानी की तरह बहता है। नवीन उस परिवार में व्यर्थ समय नष्ट कर रहा था। वह छोटी हैसियत वाले परिवारों में टिकते हुए न जाने क्यों हिचकता है। वह अपना बड़प्पन बिसार चुका है। फिर

"मुझे तो बहुत काम करना है।"

"तीनों रोज कहती हैं कि तुमको तो बुरके में डाल कर रखना चाहिए। इस तरह लजाना अनुचित है। यह तुमारा अपना घर है, फिर परदा कैसे। डेढ़ महीने हो गए हैं, लिखने के अलावा और कोई काम नहीं है। कितनी किताब लिखली है।"

"अभी तो तीन चेप्टर भी पूरे नहीं हुए हैं।"

"तब नहीं चलोगे।"

"आज वक्त नहीं है।"

"आज मैं सबसे तुम्हारा परिचय करवा दूँगा। घर के आदमी हो। कुछ बाल-वाल ठीक कर लेना और बुद्धू की भाँति चुप बैठे हुए न रहना। अब तो ये काफी बदल गई हैं। लेकिन आधुनिका बनाने में बड़ी मेहनत करनी पड़ी है। कई साल तक एक इसाइन रखी। पहले सब एक दम फूहड़ थीं। हमारे यहाँ के दकियानूसी विचार जानते ही हो। परदा अलग है कि हवा न लग जाय।"

"अब तो पसन्द हैं तीनों।" नवीन हँस पड़ा।

"भई, मुझमें तो तुम्हारी तरह काम करने की शक्ति नहीं है। न मैं खादी का चोगा पहन कर गाँव-गाँव फिरना चाहता हूँ। उसके लिए मेरी पैदाइश नहीं हुई है। हाँ अब तो मझली हिंदू नाच भी सीख गई है। वह बहुत अच्छी आर्टिस्ट है। तुमारे लायक थी, लेकिन शौकीन बहुत है। तुमसे कम पटती। अच्छा नोटिस दे देता हूँ कि खाना आज अन्दर ही होगा।"

"मुझे आज बहुत काम करना है।"

"यह तो दिल की कमजोरी है। अरे अब कब तक इस तरह अपनों से दूर भागता रहेगा।"

नवीन चुप रहा।

"बड़ी की सेहत भली नहीं रहती है और सब से छोटी हिस्टरिक

है। मक्खली मौजी है, उसे किस्से कहानी पढ़ने का शौक है। तीनों अपनी-अपनी दुनिया में रहती हैं।"

वे चले गए थे।

नवीन को बड़ी हँसी आई। जब ये कालेज में पढ़ते थे तो एक अलग बंगला लेकर रहते थे। हर एक बार दो-तीन लुढ़कियाँ खाकर दरजा पार किया। नवीन फुटबाल का केप्टिन था और अनायास इनको फुटबॉल खेलने का शौक हुआ। दोस्ती फिर बढ़ती ही चली गई। आज तक उसको उनके हैरम का हाल मालूम नहीं था। वह तो ऐसे अजायबघर में अधिक दिन तक नहीं रह सकता है। बैठक में जाकर देखता है कि बड़ी-बड़ी खालो का प्रदर्शन है। गेंडा, शेर, मगर……! विलायती सीनरी टँगी हैं। दरी एक से एक उम्दा बिछी हुई रहती हैं। हर एक कमरे की सजावट बड़ी पुराने जमाने की याद दिलाती है, उनके पुरखों के अतीत की महानता!

वह मेज पर पड़े हुए सूचीपत्र को देखने लगा। कई किताबों के कैटालाग थे। वह अच्छी-अच्छी किताबें चुन कर उन पर लाल पेन्सिल से निशान लगाने लगा। सोचा कि उसके पास अच्छी अपनी लाइब्रेरी होती तो वहाँ बैठ कर पढ़ा करता। फर्निचर आदि के सूचीपत्रों को देख कर अनुमान लगाता है, कि देश आजाद होता तो वे अच्छे-अच्छे पैम्फलेट निकाल कर जनता को पढ़ाते। उनका ज्ञान बढ़ाते। जनता अपढ़ है। उनका आज भी अपनी सही स्थिति मालूम नहीं है। उनके आन्दोलनों को चलाने के लिए कई बातों पर विचार करना होगा। उनकी आर्थिक-स्थिति का सुधार होना चाहिए। वह उनको नष्ट कर रहा है। उनकी अपनी सामाजिक कमजोरियाँ हैं, जिन पर विचार करना है। बड़े-बड़े पोस्टर टीन पर बनवा कर गाँवों के भीतर टाँग दिए जाने चाहिएँ। उनको अच्छे गाँवों का हाल ताकि मालूम हो जाय और निचले स्तर से ऊपर बढ़ने की कोशिश करें।

वह किसान शायद अब तक छूटकर आ गया होगा। वह दरोगा दोस्त के इशारों पर नाचता है। वह जिस न्याय की दुहाई सुबह दे रहा था, अब उसे आसानी से भूल गया है। उस बर्ताव पर वह दंग रह गया। किन्तु अब उसका छूट जाना नवीन की दूसरी हार थी। वह सोचता था कि वह अदालत से उसे छुड़ाकर दरोगा और कारिन्दे के खिलाफ जिहाद बोल देगा। वह इमना करे कि इससे पहले वह मोर्चा कमजोर पड़ कर चकनाचूर हो गया था। नवीन अपनी इस भावुकता के लिए बार-बार अपने को कोसता है। उसके हृदय पर एक बहुत भद्दी छाप पड़ती जा रही है। वह किसानों की ओर देख कर उनकी नई जागृति पर विचार कर रहा है।

किसान का हल, बैल, भूमि.....। वह उस सबको अपने बच्चों से ज्यादा प्यार करता है। जब भूमि पर से उसका विश्वास हट जाता है, तो वह अपने परिवार के साथ शहर की ओर मजूरी की तलाश में बढ़ता है। गरीबी के कारण ही वह चोरी-डकैती और हत्या करने उतारू होता है। वह अपने जमींदार से एक भेड़िये की भाँति डरता है। वे एक गिरोह बनाकर किसानों को लूटते हैं। किसान उसकी शक्ति के आगे चुप रह जाता है। उनका समाज में कोई स्थान नहीं है। किसान की गुलामी दास-प्रथा के दुनिया से मिट जाने के बाद भी नहीं हटी है। नवीन पुस्तक वहीं मेज पर पटककर कमरे में टहलने लगता है। वह जानता है कि इसका एक मात्र उपाय है भूमि का राष्ट्रीय-करण करके किसानों में बाँट देना। वह कभी देखता है कि वे लोग ईख की खड़ी फसल को काट रहे हैं, कभी पाता है कि कपास बोई जा रही है, आसाम में चाय के बाग हैं.......। धान, गेहूं, जूट और कई तरह की फसलें देश में होती हैं। देश में भारतीय-पूँजीपति उठ रहा है। विदेशी पूँजीपति के साथ मिलकर वह मुनाफा कमाने में असमर्थ अपने को पाकर राष्ट्रीय-आन्दोलन का दामन पकड़ता है।

वह अब सुन्दर फूल और शाक-भाजी वाला कैटलॉग उठा लेता है। अच्छी-अच्छी रंगीन तसवीरें उस पर बनी हुई हैं। वह किसी बीज का व्यापार करने वाली कम्पनी की विज्ञापन की पुस्तिका है। यह जीवन उसें एक बहुत बड़ा विज्ञापन सा लगता है। जहाँ वह कई प्रदर्शन करने तुला हुआ है।

"नवीन क्या कर रहा है?"

"कुछ नहीं।"

"तू क्या सोच रहा है?"

"मैं, कुछ नहीं।"

"तब लगता है कि तू अब कुछ वर्षों में बहुत बड़ा दार्शनिक बन जायगा। लेकिन ये लक्षण अच्छे नहीं हैं। तू कहां चक्कर में पड़ गया है। मनुष्य योनि लाखों वर्षों में एक बार मिलती है। उसे जितने आराम से काटा जा सके, काट लेना चाहिये।"

"लेकिन मैं यह नहीं सोचता हूँ।"

"चलो अब!"

"क्या?"

"खाना नहीं खाओगे।"

"भूख नहीं है।"

"लेकिन भीतर चलना ही पड़ेगा। वहाँ अपने आप भूख लग जायगी। लेकिन अरे, तूने तो अभी तक 'शेव' नहीं किया है। जल्दी तैयार हो जा। मैं नौकर भेज दूँगा।"

"मेरा मन स्वस्थ नहीं है।"

"अपने पंचायत-घर की योजना और सामूहिक खेती की बातें सोचने से और क्या मिलेगा। बराबर न्याय तो भगवान तक नहीं करता है। तुम लोग फिर भी अपनी बात पर अटल रहोगे। चार दिन की जिन्दगी है, आराम से कट जाय, आगे तो एक दिन सभी मर जावेंगे।"

नवीन चुप रहा। वे भीतर चले गए थे। नवीन बड़ी देर तक चुप चाप खड़ा रहा। फिर कमरे में टहलने लगा। आइने पर उसने अपना चेहरा देखा। वह उसे देख कर हँस पड़ा। कभी वह अपने रहन-सहन को बहुत ऊपर उठा कर रखता था। आज उसे अपनी परवा नहीं है। अब वह खिड़की के पास खड़ा हो गया। वह बड़ी देर तक वहाँ खड़ा रहा। नौकर के आते ही वह उसके साथ चला गया। अपने दोस्त की हिदायतों को वह भूल गया था। उसके मन में कोई खास कुतूहल नहीं उठा। यह आज उसके लिए नई सी परिस्थिति थी। वह उनसे दूर की दुनिया का जीव है। आगे शायद इस प्रकार स्वर्ग-लोक देखने का अवसर नहीं मिलेगा।

भीतर पहुँच कर उसने तीनों को अभिवादन किया और एक ओर चुपके बैठ गया। खाना परसा जा रहा था। वह जल्दी-जल्दी खाना खाने लगा। उसे भय लग रहा था कि वह व्यर्थ यहाँ आया है। इस परिवार से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। यह जान-पहचान यहाँ से जाते ही वह भुला देगा। वह उस झूठे अभिमान को बल दे रहा है, जो राजा साहब के लिये भले ही अपेक्षित हो, उसे उससे कोई सरोकार नहीं रखना है।

राजा साहब तो मजाक करने में नहीं चूके, "तेरी शादी का इन्तजाम करवा सकता हूँ। मेरी एक साली है।"

नवीन चुप रहा। नौकरानी खाना परस रही थी। वे तीनों युवतियाँ संकुचित सी बैठी हुई थीं। राजा साहब उनसे बोले," 'क्यों अब सवाल क्यों नहीं पूछ रही हो। मेरा तो सिर खाए रहती थी।"

उधर से कोई उत्तर नहीं मिला। नवीन सर झुकाए खाना खा रहा था। उस ओर फिर नहीं देखा। लगा कि कोई एक उठकर चली गई है। जाने की गति के साथ एक झंकार हुई थी। दोस्त ने फिर कहा, "यह गृहस्थी तो मुसीबत की जड़ है। तू ही भाग्यवान है कि इस

दरी है। यहां तो रोज कोई न कोई झगड़ा रगड़ा लगा ही रहता है।"

नवीन उस व्यंग को अपने मन के भीतर टटोलता है। कहीं कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वहां एक अड़चन पड़ती थी। लेकिन वह गृहस्थी की जिम्मेवारी को जानता है। केदार की गृहस्थी उसने देखी हैं। उसको वह अपने पर लागू नहीं करता। लेकिन अनुभव शून्य नहीं है। मास्टर जी की गृहस्थी का पूरा-पूरा परिचय उसे है। यह गृहस्थी की चर्चा नई नहीं लगती है। वह उसमें बिना किसी अड़चन के पड़ जाना संभव मानता है। वह आज स्वतंत्र होता तो किसी छोटे घोंसले का निर्माण कर वहाँ जरूर रहता। वह उस भार को आसानी से निभा लेने की क्षमता रखता है। वह गृहस्थी के अस्वस्थ वातावरण पर सा सोचने लगा। एक बार उसने कमरे के चारों ओर दृष्टि डाली। वे दोनों युवतियाँ आपस में कुछ बातें चुपके-चुपके करती मुसकरा रही थीं। उसने उन दोनों की आँखे छू लीं। कहीं कोई परिचय नहीं मिला। वे अपनी सगी-सी नहीं लगी। उनका अपनत्व दूर-सा लगा। दुनिया में पहचान और अपनत्व की दो अलग-अलग सीमाएँ हैं। वह मुस्कान मन में चुभने लगी। क्या वे उस पर मुसकरा रही है।

वह तो उठा बैठा। उसने हाथ धो लिए। अपने कमरे की ओर जाने को था कि, राजा साहब बोले, "अरे वह बेचारी पान लिए खड़ी है।"

नवीन ने एक खड़ी हुई युवती के हाथ पर वाली तश्तरी से पान का बीड़ा उठाया। इलायची लेली और मुँह में डाल कर आगे बढ़ गया।

उनका सौन्दर्य खरा था। मित्र की परख पर वह उसे अपने मन में बधाई देने लगा। वह स्वाभाविक परिचय था। वह अपने किसी कर्तव्य पर नहीं सोच पाया। वहां वह रुका नहीं था वह नीचे उतरा और अपने कमरे में आसानी से पहुँच गया। पलंग पर लेट कर एक साप्ताहिक अखबार पढ़ने लगा। उसमें कई हजार की एक पहेली छपी थी।

वह उस पर दिमाग लड़ाने लगा। आज जुआ खेलने की प्रवृत्ति बढ़ गई थी। वह एक रुपया भेज कर बीस हजार रुपया अपनी साधारण बुद्धि से जीतने के लिए उसे सुलझाने लगा। हृदय के भीतर एक श्रेय-सी छटपटाहट हो रही थी। वह एक अभाव महसूस कर रहा था। मन की पीड़ा उमड़-उमड़ पड़ती थी। अपनी किसी बात के लिए जैसे कि उसका मन कोमल हो उठा था। वह किसी परिचर्या का फिर भी भूखा नहीं था। वह उसी भाँति लेटा रहा। वह पहेली आँखों के आगे थी। वह पेन्सिल से खाली खानों में अक्षर भरने लगा। उन युवतियों की वह सात्त्विक-सी मुसकान। नवीन उनके लिए विचित्र जीव-सा है।

नवीन शहर नहीं गया। वह अनुचित वर्ताव होता। उसका दम वहां कमरे के वातावरण में घुटने लगा। वह बाहर निकला और गाँव की ओर उस कड़ी धूप में बढ़ गया। कुछ लड़कियां सुअर चरा रही थीं। पानी भरे तालाब के पास गया, बैल और भैंसों का गिरोह खड़ा था। कुछ लड़के पानी में तैर रहे थे। सम्पूर्ण वातावरण शान्त था। वह निरुद्देश्य-सा घूमता रहा। जब थक गया तो एक पेड़ के नीचे बैठा। कटाई कर के लोग घरों को लौट रहे थे। गाँव का अपना जीवन अब निरस नहीं लगा। वहां उसे एक नई गति मिली। उसे आशा हुई कि उन गांवों का ढांचा कुछ वर्षों के भीतर बदल जायगा। लेकिन वह तो एकाएक घर की ओर लौट आया। अपने कमरे में पहुँच कर लेट गया। आखें मुँदी थीं; लगा कि कोई उसकी हत्या करने की चेष्टा कर रहा है। नींद खुल गई। वह अपने सिराहने रखा हुआ उपन्यास पढ़ने लगा। बड़ी देर तक उसी में डूबा रहा। वह किसानों की क्रान्ति की कहानी थी। किसानों को अपने अन्ध-विश्वासों को हटाने में काफी समय लगा था।

घर की नौकरानी आई थी। पूछा, 'चार बज गए हैं। नाश्ता ले आऊँ।"

"नहीं।"

"तैयार हो गया है।"

"अभी नहीं। वे कब तक लौट आवेंगे।"

"रात को।

वह चुप रहा। वह तो स्वयं ही बोली, 'माँजी आने को पूछती हैं।"

"कौन ?"

"छोटी माँजी।"

नवीन उसकी ओर अवाक सा देखता रहा। फिर सोचा कि क्या कहे। लेकिन उसके उत्तर की प्रतीक्षा किए ही बिना दूसरा सवाल हुआ, "आप बाहर तो अभी नहीं जा रहे हैं ?"

"नहीं।"

"तो माँजी से कह आऊँ।"

नवीन अब संभल गया। जल्दी-जल्दी उसने बिस्तर ठीक किया। सारी किताबें बिस्तर पर ढेर-सी लगी हुई थीं। अखबार इधर-उधर बिखरे पड़े हुए थे। वह उनको संभाल रहा था कि वे आ गईं। नवीन को नमस्ते किया और पास पड़े सोफा पर बैठ गईं। नवीन चुप ही रहा। वह इस आगमन के लिए अभी ठीक-ठीक तैयार नहीं था।

सवाल हुआ, "आप सरला को जानते हैं, न ?"

"हाँ।"

"उसकी चिठ्ठी आई है।"

"आपके लिए।"

"वह मेरी मौसी की लड़की है। मैंने उसे आपके बारे में लिखा था। भला मुझे क्या मालूम था कि वह आपको भली भाँति जानती है।"

"नवीन चुप रहा।"

"लिखा है कि उनको तो वह महल जेलखाना-सा लग रहा होगा।

चलो 'ए' श्रेणी का कैदी बना कर तुम लोगों ने उनको कुछ दिन रोक लिया, यह बहुत बड़ी जीत।"

नवीन फिर भी चुप।

"क्या आप सरला से झगड़ कर आए हैं।"

"नहीं तो।" नवीन चौंक उठा।

"लेकिन उसकी एक-एक लाइन से पीड़ा और परेशानी झलकती है। वह शायद उस रिश्ते को तोड़ना चाहती है। घर भर चिन्तित है। उसने लिखा है कि अब उसका मन जीने को नहीं करता है। वह स्वयं नहीं जानती कि उसे क्या हो गया है।"

नवीन उस युवती की सच्ची बातों को सुन कर अवाक् रह गया। वह सरला की वकालत करने आई थी। अब उसे सरला के सहारे के कारण कोई संकोच नहीं है। वह उस लड़की के मन की सच्ची भावना व्यक्त करती है। उसने कहीं पढ़ा था कि विवाह एक लाश होती हुई संस्था-सी लगती है! फिर भी लोग उसमें बँधते जाते हैं। वह पुरानी संस्था क्या आगे कुछ नया रूप ग्रहण करेगी? व्यक्ति की इकाई में परिवार टूट गए हैं। वहाँ पति और पत्नी तक गृहस्थी रहती है। उनके आपसी मतभेद यदि हों तो क्या वे बहुत दूरी तक अपने को सफलता-पूर्वक चला सकेंगे।

नौकरानी कुछ कीमती पकवान ले आई थी। नवीन खाने को था, कि एकाएक पूछा, "आप!"

"हम अभी ईसाई नहीं हुई हैं। धर्म पर आस्था है।"

"धर्म...... !"

"उसे मानना ही पड़ता है। न मानें तो आप ही हँसी उड़ावेंगे।"

नवीन तो युग-धर्म पर अटक पड़ा। वह अपने में ही कुछ तर्क कर रहा था। सरला के बाद उसके विचार, धर्म की उस दीवार से टकराने लगे।

"तारा के बारे में सरला ने लिखा है।"

नवीन ने मूँग के हलवे की चिम्मच वहीं प्लेट पर रख दी। पिस्ते की बरफी से आँखें हटा कर उस युवती के चेहरे पर फैला दीं। पूछा, "क्या लिखा है?"

"उसकी तबियत ठीक नहीं है। वहाँ आदमी भेजा था। उसकी मरी हुई लड़की हुई और फिर ठीक परवा न होने के कारण निमोनिया।"

नवीन ने आँखें मूँद लीं। वह न जाने क्या सोचता रह गया। एकाएक उसने आँखें खोलीं। सरला ने उसको पत्र न लिख कर यह समाचार दूसरे के द्वारा भेजा है। वह उसके स्वाभाव से परिचित है। वह उसे भयभीत करना नहीं चाहती होगी।

"आप जानती हैं कि तारा मेरी बहन है।"

"हाँ, सरला ने लिखा है कि तारा की ज़्यादा फिक्र आप न करें। जब चलने लायक हो जायगी तो वह बुलवा लेगी।"

वह तो चुप रहा। तारा का विवाह उसने किया था। वह माँ बनी। लड़की मरी हुई है। अब वह बीमार है। वह तो पहले बहुत स्वस्थ थी। शायद वहाँ की जलवायु उसके माफिक नहीं होगी।

वह युवती सामने बैठी हुई थी। नवीन ने तश्तरी एक ओर सरका दी। वह युवती तारा और सरला के मार्फ़त कितनी समीप पहुँच गई थी। अब वह युवती बोली, "पहले मालूम होता तो आप से हम लोग इतनी दूर क्यों रहतीं। कुछ बचपन से ऐसी ही आदत पड़ गई और यहाँ तो परदा है।"

"चिट्ठी कब आई।"

"आज सुबह आई है। आप पढ़ेंगे? ले आती हूँ।

"नहीं।"

"आप तो शहर जाने वाले थे।"

"किसने कहा।"

"वे कह रहे थे।"

"नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं हुई थी।"

"आप कोई किताब लिख रहे हैं।"

नवीन उस उन्नीस-बीस वर्ष की युवती की जिज्ञासा पर मोहित हो गया। वह सवाल पूछ रही थी। वह आसानी से उनका उत्तर दे रहा था। बोला ही, "किसानों पर एक किताब लिख रहा हूँ। आपकी रिआया की हालत बहुत खराब है। आप रिश्ते की बरफी खाती हैं और उनको बाजरे के दाने-दाने के लिये मोहताज रहना पड़ता है।"

वह उठा और मेज पर से सिगरेट की डिबिया उठा ली। उसे खाली पाकर वहीं रख दिया। वह युवती तो भीतर से गोल्ड-फ़्लेट का एक डिब्बा ले आई। पूछा फिर, "आपने भीतर महल देखा है।"

"नहीं!"

"आप इस कमरे में बैठे-बैठे ऊबते नहीं हैं। आप को तो लड़की होना चाहिए था।"

"मुझे! वह आप का आशीर्वाद अब तो पूरा नहीं हो सकता है।"

"हम लोग चाहती हैं कि बाहर जाकर नित्य स्वच्छन्दता से घूमें-फिरें। यहाँ का अनुशासन इतना कड़ा है कि वह सम्भव नहीं होता है।"

"मैं तो किताबों के साथ महीनों कमरे के भीतर काट सकता हूँ।"

"आइए आपको महल दिखला दूँ।" कह कर वह उठ बैठी।

नवीन उस अनुरोध को अस्वीकार नहीं कर सका। तारा की बीमारी की खबर ने मन को उद्वेलित कर दिया था। वह अकेला नहीं रहना चाहता था। व्यर्थ में नहीं तो वह और दुख मोल ले लेता।

नवीन ने महल का कोना-कोना देखा। वह भारी उत्साह से सार

बातें समझा रही थी। सरला की चतुरता पर वह मुग्ध था। अभिजात वर्ग की ये लड़कियाँ इतनी समझदार क्यों होती हैं। यह युवती आज उसके दुःखी मन को ढाढ़स बँधा रही है। वह अनमना-अनमना सा घूम रहा था। कमरों में कीमती तेल-चित्र थे। जनान-खाना, रंग-महल, कचेहरी और……! वह महल पुरानी कैंचुली उतार कर फेंक चुका है। आधुनिक रूप उसका कुछ भला सा नहीं लगता था। वह युवती परिवार के तेल-चित्र दिखला रही थी। पूजा का मन्दिर भी उसे दिखलाया। कभी अपने वैभव के मध्यान में वहाँ एक बहुत बड़ा परिवार रहता था, जो कि आज बहुत सीमित हो गया है।

वह आँखें खोल कर भी कुछ ठीक देख सा नहीं पा रहा था। मन में तारा का खयाल उठता, कि वह बीमार क्यों पड़ गई है। उसका मन उमड़ रहा था। वह बहुत दुःखी होगी। वह तारा बहुत दूर है। नवीन का आज उस से खास सा कोई सम्बन्ध नहीं है। वह उसके सुख-दुःख में आसानी से कहाँ शामिल हो पाती है। उसके यदि डैने होते, तो वह वहाँ उड़कर पहुँच जाता और अपनी आँखों से उसे देख आता। यह व्यर्थ का भ्रम था! सरला ने झूठी बात नहीं ही लिखी होगी। तारा निरोग हो रही है। वह उसे अपने यहाँ बुलावेगी। नवीन उसे जाकर देख आवेगा। वह इस भाँति पग-पग पर दुःख पाकर रुक नहीं सकता है। उसे कई काम करने हैं। आज तारा एक याद सी रह गई है। यही इस दुनिया का सही कारोबार है परिवार टूट जाते हैं। एक दूसरे से मिलना तक सम्भव नहीं होता है। जहाँ जो रहता है, वहाँ वह अपना एक परिवार बना लेता है। आज घर के दालान में कई परिवार रात को कहाँ बैठते हैं! अब वह उस युवती के साथ रंगमहल में पहुँचा। वहाँ कई युवतियाँ थीं। मझली रानी शायद वीणा बजा रही थीं। नवीन को आते हुए देख कर बोली, "आइए।"

नवीन चुप रह गया।

"आखिर आज तू देवर को रंग-महल में ले ही आई है।" उसने ठठोली की। नवीन का मन सिकुड़ गया।

वहां की सजावट देख कर वह दंग रह गया। बड़े-बड़े अश्लील आइल पेन्टिङ्ग टंगे हुए थे। रास-लीला के कई चित्र थे। कहीं कृष्ण बांसुरी बजा रहे थे। और वह पेड़ पर छुपे कृष्ण जो कपड़े चुरा कर ले गए थे और तालाब में नहती हुई गोपियां। वह वहां फिर भी बैठा हुआ रहा। वह युवती 'वीणा' एक ओर रख कर बोली, "मैं तो आपसे पूछ कर कुछ अच्छी किताबें मँगवाना चाहती थी। यहां कुछ सीखने का सुविधा ही नहीं है। मामा के घर में जो सीखा उसे भी भूलती जा रही हूं।"

"मैं पुस्तकें आपको मँगवा दूँगा।" कह कर वह उठ बैठा।

तभी बोली वह, "आप हमरे साथ किसी दिन शहर चले चलते तो मैं खरीद लाती।"

नवीन कुछ न कह कर बाहर दालान में खड़ा हो गया। नीला पत्थर बिछा हुआ था। बीच में एक युवती की स्टेचू थी जिसकी उंग-लियों से पानी की धाराएँ बह रही थीं।

नवीन तो अपने कमरे में लौट आया। एक लड़का आया था। उसने किरण की चिट्ठी ले कर पढ़ ली। किरण ने लिखा था कि वहां की हालत ठीक नहीं है। उसे तुरंत बुलवाया था। दो-तीन लाइनों का पत्र था, कि उसे वहां आना पड़ा है। बड़ी घसीट में पत्र लिखा गया था।

वह तो स्वयं ही यहां से विदा लेने का निश्चय कर चुका था। बात क्या होगी, इस पर नहीं सोच सका। क्यों किरण आई थी? वह केदार के यहां है। वह जो किसानों की क्रान्ति की बात सोच रहा था। किसानों का ऋण, उनकी आर्थिक हालत सुधारने का प्रश्न।

इसी समय वह किसान आ पहुँचा। उसका चेहरा खिला हुआ

था। वह नवीन के पावों पर गिर पड़ा। नवीन भौंचक्का सा खड़ा रहा। वह उसे कैसे समझाता कि वह उसकी विजय नहीं थी। उनको इन अत्याचारों के खिलाफ मिल कर संगठित मोरचा लेना पड़ेगा।

नौकरानी आकर रोशनी कर गई। वह अपना सामान संभालने लगा। होलडाल पर सब चीजें भर ली और बाहर गुमाश्ते को ढूँढ़ने चला गया। देखा उसने कि पक्षी अपने घरों को लौट रहे थे। क्षितिज पर डूबते सूर्य की धुंधली लाली दीख पड़ रही थी। गांव धीरे-धीरे रात्रि की काली परछाईं में छुपने लगा। पशुओं के गलों की घन्टियां बज रही थीं। उसने बैल-तांगा तैयार करने के लिए कहा और लौट आया।

अब वह कुरसी पर बैठ कर चिन्ता-मग्न हो उठा। वह चुप था। किरण ने एक बार पहाड़ उसे पत्र लिखा था और आज यह दूसरा पत्र आया है। इस बीच एक लंबा अरसा गुजर गया है। वह उन लोगों को सूचना दे देना चाहता था कि वह जा रहा है। उसमें भीतर झांक कर देखा। ऊपर मंजिल से युवतियों की ठठोली सुनाई पड़ रही थी। एकाएक एक गीत किसी ने गया। उसकी झंकार से उसका हृदय भी झकारित हो उठा। वीणा बजा रही थी। वह संगीत बरबस उसे अपने समीप खींचने लगा। वह न जाने कब तक वहां खड़ा ही रह गया था।

गीत बन्द हो गया। उसकी गूंज फिर भी अभी तक उसके मन में फैल रही थी। एक नौकरानी से वह बोला कि अपनी छोटी माँजी को बुलवादे। कुछ देर बाद वह युवती आ गई थी। वह बोला, "मैं जा रहा हूँ।"

"इसी समय रात को।"

"एक जरूरी काम आ पड़ा है।"

"सुबह जाइएगा 'कार' तब तक लौट आवेगी।"

"नहीं, अभी मुझे जाना है और जंगल के रास्ते जाने में कोई

खास कठनाई नहीं पड़ेगी।"

"क्या......!"

"डर की कोई बात नहीं है।"

"सरला से मिलोगे?"

"वहाँ नहीं जा रहा हूं।"

"सरला की शादी में तो मैं आऊंगी। वहाँ भेंट होगी।"

"वहाँ न जा पाऊंगा।"

"आप क्या कह रहे हैं?"

नौकर सामान नीचे ले गया था। नवीन उठा, बोला, "आप लोगों की मेहमानदारी के लिए धन्यवाद।"

वह बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए ही नीचे उतरा। बैल-तांगे पर बैठकर उसे चलाने का आदेश दे दिया। वह बैल गाड़ी चूं-चूं-चूं करती लीक पर बढ़ गई। वह सब पीछे छूटी स्मृतियों पर कुछ देर तक विचार करता रह गया। स्मृति में कई सुन्दर और प्यारी घटनाएं रह जाती हैं। वह स्मृति कभी-कभी वहां कुछ टटोलती है। सांप तो कई सालों में अपनी त्वचा बदलता है। यह बुद्धिजीवी व्यक्ति तो अवसर अवसर पर वक्त पहचानता हुआ बदलता जाता है। वह महल पीछे-पीछे छूटता जा रहा है जहाँ कि उसके दोस्त और उनकी रानियां किसी कहानी में सी रहती हैं।

—घनी रात पड़ गई थी। आकाश पर तारे टिमटिमाते दीख पड़ते थे। तारा की बीमारी की बात मन में उठती थी। तभी किरण का पत्र वर्तमान और भविष्य को ढक लेता था। बैल गाड़ी चुपचाप गांव की सदियों पुरानी लीक पर बढ़ रही थी। बीच-बीच में गाड़ी-वाला बैलों को किसी नई परिभाषा में कुछ समझाता हुआ सा मिलता था। कभी-कभी गीदड़ों के किसी गिरोह को वह पाता था। उनका ऊँचा स्वर, उस घने अन्धकार को भेदता हुआ दूर तक बढ़ जाता था। उसकी

प्रतिध्वनि कानों पर टकराती थी। फिर कान कुछ क्षणों के लिए बहरे बन जाते थे। गाड़ी-वाले के गीत के साथ एकाएक वीणा की झन्कार उठती थ और कमरे में टंगे हुए 'रासलीला' के अनेक तैल-चित्र याद पड़ जाते थे। उन चित्रों के बनाने वालों की बुद्धि की वह सरहाना करने लगा। तथा उनको रंग-महल में सजाने वालों की शैली पर तो चकित रह गया। सुन्दर और मधुर संगीत ने सदा उनके मन को मोहा है। वह स्वयं अब किसी गीत को गुनगुनाना चाहता था। कोई याद ही नहीं पड़ा। इधर उधर झाड़ियो के अतिरिक्त और कुछ दीख नहीं पड़ता था।

वे ऊंचे ऊंचे पहाड़ भी याद नहीं पड़े जिनको वह अपने मन में संवार कर रखता था। वह ममता और मोह को भूल गया था। वह जीवन में अपने को निपट अकेला पाने लगा। वह परिस्थितयों के साथ किसी के समीप पहुँच कर फिर अलग हट जाता है। वह किरण के बुलावे पर जा रहा है। वह असाधारण लड़की है। उसके प्रति मन में बहुत आदर जमाकर चुका है। सरला है। वह उसे पत्र नहीं लिखती है। वह इन्द्रा को लिख चुका है कि अब आगे का उसका पता' निश्चित नहीं है रमेश को इसकी सूचना दे दें। वह तारा कहीं सख्त बीमार न हो। यह असंभव बात नहीं हो सकती है। मौत के बाद तो आपसी नाता सदा के लिए टूट जाता है। प्राणों के रहने तक ही किसी व्यक्ति से सम्बन्ध रहता है। मौत के बाद की बात कोई नहीं जानता है। तो क्या तारा इतनी आसानी से मर जायगी। उसकी मरी हुई लड़की हुई। तारा तो माँ बनी थी। वह छोटी बच्ची क्यों मर गई होगी। बच्चा का मर जाना उसे अनुचित लगता है। वे बहुत प्यारे होते हैं। तारा जीवित रहेगी। वह नवीन के बारे में पूरी बातें सुनेगी, तो न जाने कितना दुःख मोल ले लेगी।

मन सिकुड़ने लगा। वह किसी से सरोकार नहीं रखना चाहता है।

आज वह अपने कर्तव्य के लिए अपना सर्वस्व निछावर कर सकता है। तारा का अपना परिवार है। उसकी अब कोई जिम्मेवारी उसके प्रति नहीं है। अब वह सब कुछ सोच चुका है। गाँवों का संगठन, शहरों में मजदूरों का संगठन और मध्यवर्ग के आजादी-पसन्द नवयुवकों का संगठन! तीनों आपस में मिलकर एक क्रान्ति आसानी से ला सकते हैं, जो व्यक्तियों की अपनी क्रान्ति से बहुत शक्तिशाली होगी। उसे तोड़-ना आसान नहीं होगा। किरण सब कुछ काम संभाल लेती है। नवीन को उससे बहुत कुछ सीखना है। वह किसी भावुकता की शिकार नहीं बनती। उसने उन लोगों की पैरवी के लिए चंदा एकत्रित किया था। वह किरण पर बहुत विश्वास करता है। वह रास्ता उसे दिखलाती है। वह कहीं कोमल नहीं, काँच की तरह कठोर है। समय को पहचान कर चलती है। असाधारण परिस्थितियों में रास्ता निकाल लेती है।

वही, वही और वही रास्ता! बैलगाड़ी घने जंगल को पार कर रही थी। अब चाँदनी खिली थी चारों ओर रोशनी फैल गई। वह बच्चों की तरह देख रहा था कि चाँद उसके साथ-साथ चल रहा है। तारा बीमार पड़ी होगी तो उसे जरूर नवीन की याद आई होगी। उसका पता किसी को मालूम नहीं है।

अन्यथा वे लोग पत्र जरूर भेजते। अब के उसने एक पत्र नहीं भेजा था। भैय्यादूज का त्यौहार भी बीत गया। तारा लड़कियों की तरह ही भावुक है। वह वहाँ नहीं जा सकता है। तारा सख्त बीमार है, वह असहाय है। कुछ नहीं कर सकता है। सरला का आभारी है कि वह तारा की इतनी परवा करती है। तारा सरला के पत्र से बल पाती होगी।

किरण ने पत्र में कुछ साफ-साफ बातें लिखा होतीं तो वह उस पर अभी से कुछ सोच सकता था। साधारण सूचना देकर बुलवाया है। विस्तार से लिखना मानो उसे उचित नहीं लगा हो। वह बहुत फूँक-फूँक

कर पाँव रखती है। हर एक व्यक्ति पर भरोसा नहीं करती। वह सबकी दलील सुन कर अपनी बात सफलतपूर्वक निभा लेती है। उसकी बात के विरोधी भी कुछ नहीं कह सकते हैं। उसी किरण ने शायद यह भार उसे सौंपने का सुझाव दिया है। यह उसकी भूल थी। वह सरला के आगे खड़ी होकर नवीन को वहाँ से छुड़ा लाई। नवीन के उस व्यवहार पर उसने गहरा असन्तोष प्रकट किया था। वह सदा कड़ी बनी रहती है। आसानी से अपनी बात नहीं काटती है। सदा बहुत व्यस्त रहती है। उनकी हँसी उड़ती है कि वे बुद्धिवादी गधे हैं, जो न माल ढोने के काम आ सकते हैं और न सावारी के!

बैल-गाड़ी चूँ-चूँ-चूँ करके आगे बढ़ रही थीं। बैलों की घंटी यदा-कदा बज उठती थीं। गाड़ीवान बैलों को हाँकता हुआ कुछ अजनवी शब्दों का उच्चारण करता था। वह बैलगाड़ी की लीक आगे-आगे दीख पड़ती थी। मन में बहुत बातें उठती थीं। फिर वह उनको ढक लेता था। गाँव को दुनिया से फिर वह शहर की ओर जा रहा है। वह किसानों के सम्पर्क में कुछ दिन रहा है। वह चाहता है कि जल्दी इन गाँवो को लौट जाय। शहर के जीवन में उसका गला घुटने लगता है। यह देहात उतना मैला नहीं है। यहाँ उतनी बुराइयाँ नहीं हैं। यहाँ अभी लोगों ने एक पश्चिमी झूठी सभ्यता की चमक नहीं देखी है। वहाँ अभी भारत की पुरानी संस्कृति की झाँकियाँ दीख पड़ती हैं।

उसे नींद आ रही थी। किरण के पत्र को वह भूलता जा रहा था। निश्चित था कि वहां यदि कुछ खास घटना भी हुई होगी तो वह स्थिति को संभाल लेगी। वह उससे खास बातें नहीं करेगा। वह अपने भावों को अपने तक सीमिति रखेगा।

कहीं उल्लू घू-घू-घू बोल रहा था। कहीं नजदीक तालाब में मेढक टाँय-टाँय लगाए हुए थे। किसी उड़ती हुई जंगली चिड़िया की आखें

चमक रही थीं। वह बैलगाड़ी चुपचाप उसी रास्ते पर आगे शहर की ओर बढ़ रही थी।

—जिस व्यवस्था पर नवीन ने कभी नहीं सोचा था, वही पाकर वह स्तब्ध रह गया। तीसरे दिन शाम को रेलगाड़ी से उतर कर वह केदार के घर पहुँचा तो देखा कि केदार को किरण संभाले हुए थी। वह अनर्गल बक रहा था। नवीन को देख कर किरण खिल उठी। गहरी सांस लेकर उत्साह से बोली, "आप आ गए, अब चिन्ता की कोई बात नहीं है। यहाँ मजदूरों ने अपने आप हड़ताल कर दी है। हम कुछ नहीं सोच पा रहे हैं। इनका हाल अजीब सा है। न जाने कब से शराब पीनी सीख गए हैं। अभी भट्टी से उठा कर लाए हैं। वहाँ से उठने का नाम नहीं लेते थे।"

किरण खास भयभीत नहीं लगी। वैसे उसके चेहरे पर फैली हुई चिन्ता की रेखाएँ साफ-साफ दीख पड़ती थीं। नवीन केदार के पास पहुँच कर बोला, केदार!"

केदार गहरे नशे में था। उसी-भाँति पड़ा रहा।

"केदार! केदार!!" फिर नवीन ने पुकारा।

केदार कई भद्दी-भद्दी गालियाँ बक रहा था।

केदार को छोड़ कर किरण उठी और नवीन को एक ओर ले जाकर उलझन हटा, बात शुरू की, "मैं अभी हड़ताल की पक्षपाती नहीं थी। संगठन बहुत कमजोर है। हमारी हालत बहुत नाजुक है। मैंने आपके चले आने तक स्थगित करवाने की यथा-शक्ति चेष्टा की। लेकिन बिल्कुल अकेली पड़ जाने के कारण असफल रही। कोई और उपाय न निकाल सकी। मजदूर बहुत परेशान थे। केदार ने नेतृत्व अपने हाथ में ले लिया। मेरे लाख मना करने पर भी एक नहीं सुनी।

मैं लाचार हो गई। परसों रात के वक्त केदार बहुत शराब पीकर सभा में आया था। उसने मेज पर खूब जोर-जोर से हाथ मार कर एलान किया कि अब वक्त आ गया है। सब मजदूरों को तैयार रहना चाहिए। उधर अधिकारियों ने भट्टियों के ठेकेदारों से कहला दिया कि उधार शराब पीने दी जाय। मैं असमञ्जस में पड़ गई कि क्या किया जाय। हम जरा चूके कि यहाँ का सारा आन्दोलन वे कुचल कर संगठन को जड़ से उखाड़ कर फेंक देंगे।"

नवीन ने चुपके से सब सुन लिया। केदार की पत्नी चूल्हा सुलगा रही थी। उसका बच्चा गदेली पर सो रहा था। केदार को देखकर वह अवाक् था। वहाँ किरण न होती तो वह घबरा उठता, वह कुछ सोच नहीं पाता था। वह उनकी बहुत कठिन परीक्षा है। वे लोग आग से खेल रहे थे। सारा वातावरण बहुत सदिग्ध था। केदार को अधिकारियों ने किसी बात पर डाँटा-फटकारा था। उसे चेतावनी दी थी कि उसे नौकरी से हटा दिया जायगा। वह मजदूरों को भड़काया करता है! उस पर दो रुपया जुर्माना किया था। वह अधिकारियों के पास मजदूरों की शिकायतें लेकर पहुँचता था। जो कि उन लोगों को सह्य नहीं था। कई मजदूर निकाले जा चुके थे। झगड़ा बहुत बढ़ गया था। दोनों ओर से तनातनी बढ़ती चली गई। परिस्थिति बहुत बिगड़ी हुई लगी। नवीन तो केदार के पास पहुँचा। उसे झकोरते हुए बोला, "केदार उठ देख मैं आ गया हूँ।"

केदार चुपचाप पड़ा हुआ था। अब उसने एक भारी कै की। चारों ओर बदबू फैल गई। नवीन को मतली आने लगी। वह एक ओर खड़ा हो गया। किरण तो एक बाल्टी पर पानी ले आई। उसे धोकर चारपाई पर लिटाते हुए बोली, "अब नशा उतर जायगा।"

नवीन वहाँ खड़ा का खड़ा ही रहा। यह कैसा तमाशा है! ऐसे निकम्मे व्यक्तियों की भी दुनिया में जगह है। वह गृहस्थ है। वह उस सब

से खिन्न सा हो उठा। किरण बात सुधारते हुए बोली, "बैठ जाओ। हर तरह के आदमियों से दुनिया में वास्ता पड़ता है। इस समय तो ये पशु हैं। पशुओं को भी समझ होती है, इनको तो उतनी भी नहीं है। भट्टी में पड़े हुए कुल्हड़ चाट रहे थे। इनको बड़ी मुश्किल से उठाकर लाई हूँ। हरएक संगठन की अपनी मर्यादा और नैतिक सीमाएँ होती हैं। इनका व्यवहार तो असह्य सा होता जा रहा है।"

नवीन को गुस्सा चढ़ रहा था। केदार कितना पतित हो गया है। वह उस बात को तोल, उसकी सही व्याख्या करके समझौता करवाना चाहती थी। अपने झूठे अपमान की परवा न कर उसे भट्टी पर से उठा लाई है। उसकी रक्षा स्वयं कर रही है। उसके प्रति कहीं क्रोध का प्रदर्शन नहीं किया। सारा परिस्थिति को संभाले हुए थी। उसकी सहनशीलता को देखकर वह दङ्ग रह गया।

किरण ने केदार के सिर पर पानी डाला। तौलिये से पोंछ कर पुकारा, "केदार बाबू, उठो अब!"

केदार उठा। अभी तक बड़ी तेज महक उसके सारे शरीर से आ रही थी। वह कुछ हिला और होश में सा आया। किरण ने तो कह दिया, "नवीन जी आ गए हैं। चलो अब हमारा भार कम हो गया है।"

"नवीनजी!" असमंजस में सा वह शब्द केदार के मुँह से छूट गया। वह होश में आ गया था। वह गहरी खुमारी लेता हुआ उठा और नवीन के पास आया। हाथ जोड़कर बोला, "मुझे माफी देना नवीन जी। थोड़ी पिली थी। मन नहीं माना। अब आगे नहीं पीऊंगा। सुनिए आप ठीक वक्त पर पहुँचे हैं। कल हमने मिल पर हमला करने की ठहराई है। या तो हम मजदूरों के पूरे अधिकार लेकर लौटेंगे या एक-एक कर मिट मरेंगे। दोनों बातें साथ-साथ नहीं चल सकती हैं। हमारी शक्ति का दुरुपयोग हो रहा है। अब यह हमारे लिए

आखिरी मौका है। तुम चुप क्यों हो रहे हो। मैंने सब कुछ कर लिया है। कल हमारी विजय होगी। हम मालिकों के साथ आखिरी फैसला करेंगे।

"अब तुम सो जाओ भैय्या। नवीनजी आ गए हैं। हम सब मिल कर कोई सही रास्ता निकाल लेंगे। अब तक वह उत्तरदाईत्व अकेले तुम पर ही था। यह तो सोचना ही होगा कि हमें क्या करना है। लेकिन अभी नवीनजी सफर से आए हैं और तुम भी बहुत थके हुए हो। उतावली का सवाल नहीं उठता है।"

"तो नवीन……!" केदार उत्तेजित होकर बोला, "कहो तुम सहमत हो न! इस समय सब मजदूर एका किए हुए हैं। हमारी सम्पूर्ण शक्ति केन्द्रित है। हमने काफी पैसा जमा कर लिया है। हम किसी के आगे झुकने के लिए तैयार नहीं हैं! अभी तो सही इम्तहान का मौका हाथ आया है।"

फिर किरण बोली, "भैय्या तुम सो जाओ। मैं नवीन जी को, सारी बातें समझा दूँगी। बिना सारी परिस्थिति समझे हुए वे कुछ निर्णय तो नहीं कर सकते हैं। अब तुम सो जाओ। नहीं तो बेकार तबीयत खराब हो जायगी। संगठन अभी बहुत मजबूत नहीं है। लगातार लोगों को तोड़ने की कोशिशें जारी हैं। अभी तक चालीस-पचास साथी पकड़े जा चुके हैं। इस तरह आवेश में आ जाने से तो आन्दोलन को धक्का पहुँचेगा।"

केदार उठा और भीतर जाकर चारपाई पर लेट गया। उसे नींद आ गई थी। अब किरण नवीन के पास आकर बोली, "आप थक गये होंगे। यहाँ का हाल देख ही लिया है। बहुत चाहा कि सब कुछ संभल जाय, लेकिन मेरे बूते के बाहर बात हो गई थी। इसीलिए आपको बुलाना पड़ा। शायद हम लोग कुछ स्थिति को सभाल सकें।"

"तब क्या करना चाहिये?" नवीन ने ऐसा सवाल पूछा कि

मानो उसका विश्वास था कि किरण उसे सुलझा सकेगी।

"मैं क्या कहूँ। आप मुझसे ज्यादा सोच सकते हैं। हर ओर से खतरा है। बहुत सोच-समझ कर कदम बढ़ाना चाहिए।"

बच्चा रोने लगा था। वह उसे गोदी में लेकर थपथपाने लगी। पूछा, "दूध गरम हो गया है।"

"हाँ।"

वह दूध शीशी में भर कर उसे पिलाने लगी। वह चुपचाप दूध पी कर सो गया था।

नवीन उस भविष्य पर विचार करने लगा। भारी भार उन लोगों के सिर पर आ पड़ा है। उसे संभाल लेने वाली शक्ति उनके पास नहीं थी। फिर भी उनको इसे हाथ में लेना होगा। किरण के साथ होने से उसे बहुत बल मिलेगा। किरण ने पास आकर पूछा, "क्या सोच रहे हो?"

"कुछ नहीं।"

"मैं जानती हूँ।"

"क्या?"

"आपके मन की बात मैं समझ गई हूँ।"

"क्या किरण?"

"यही न बेकार आपको बुलाया है मैंने। वहाँ चैन से राज दरबार में पड़े हुए थे। दिन भर किताबें पढ़ना और सिगरेट फूंकना, दो ही काम रहे होंगे।" किरण हँस पड़ी। कहती रही, "यही मैं भाभी से कह रही थी। कभी मौका आए, हमको भी वहां का महल दिखला लाना।"

"नहीं यह तो झूठी बात है।"

"तारा की बीमारी की फिक्र होगी। मैं सरला के यहां गई थी। तारा बिल्कुल ठीक हो गई है। वैसे साधारण कमजोरी तो रोग के बाद रहती ही है।"

"तारा अच्छी हो गई है ?" नवीन ने कुतूहल से पूछा। यह किरण कितनी सुलझी हुई लड़की है।

"सुनिए अब आपको घबराने की कोई बात नहीं है। आप सुबह केदार को रोक लीजिएगा। मैं मिल का भार निभा लूँगी उम्मेद है कि सब कुछ ठीक हो जायगा। इसके अतिरिक्त और कोई चारा नहीं है। आप न आते, मैं यहाँ रहती और भाभी को मिल भेजती। आपके आने से बहुत कुछ काम हल्का हो गया है।

नवीन ने किरण की बनाई हुई योजना सुनी। उसकी बात सुन कर वह दंग रह गया। यह साहस कम लड़कियों में होता है। वह सारी बात की जानकारी रखती है। इस छोटी अवस्था में कोई काम उसे कठिन नहीं लगता है। अब वह बोली, "घर में कुछ नहीं है। बाजार से खाना लाना पड़ेगा। कुछ राशन भी लेते आना। मैं तो दिन भर कई कामों में फँसी रहती हूँ।"

वह परचा लिखा कर नवीन पास की दूकान से सब सामान ले आया। हलवाई के यहां से कचौड़ी-मिठाई लाना भी नहीं भूला था। उसे आज बड़ी भूख लग रही थी। केदार की बहू सब चीजें संभालने लगी। किरण थाली पर सब सामान परोस कर ले आई। नवीन ने हाथ-मुँह धो लिया। खाना खाकर वह वहीं लेट गया। उसे बड़ी नींद आ रही थी। कब सो गया ज्ञात नहीं हुआ।

सुबह उसे किरण ने झकोरते हुए जगाया। किरण कह रही थी थी, "उठो-उठो केदार भाई चले गए हैं।"

"कब ?"

"न जाने रात कब उठ कर चले गए हैं।"

"तो अब क्या होगा ?" नवीन एक बच्चे की भाँति उसे देखता हुआ, यह सवाल पूछ बैठा। मानो कि वह उसकी गुरू हो।

"शायद कहीं ढूंढ़ने से मिल जावें। आप जल्दी चले जाइए। किसी तरह हो उनको लौटा ला लाइए।"

नवीन उसी तरह बाहर चला गया। मिल में पहुँचा। वहाँ बड़ी भीड़ जमा थी। केदार वहाँ नहीं था। पुलिस वहाँ पहुँच गई थी। कुछ घुड़सवार थे। वे जनता से अधिक मालिकों के हितों की रक्षा करने के लिए आए थे, उनको देख कर जनता और उत्तेजित हो कर, 'मालिकों का नाश हो', के नारे जोर-जोर से लगा रही थी। वह अब केदार को कहाँ ढूंढ़े। जिसी से पूछता वे अपनी अनभिज्ञता प्रकट करते थे। वह अब भट्टी की ओर बढ़ गया। जहाँ पिछली संध्या को केदार मिला था। ज्ञात हुआ कि केदार अभी-अभी चला गया है। वह उस रास्ते तेजी से बढ़ गया। उसने देखा कि केदार नशे में झूमता हुआ बहुत से मजदूरों के साथ आगे जा रहा था। वे सब नशे में चूर थे। नवीन ने बढ़ कर केदार से कहा कि उससे उसे कई बातें करनी हैं। लेकिन केदार ने उसकी बातें नहीं सुनी। वे सब आगे बढ़ गए। उनको रोक लेना उसकी शक्ति से परे की बात थी।

उधर किरण मिल में पहुँची, उसने मजदूरों को मनाने की चेष्टा की। वे किरण की बात स्वीकार कर समझौता करने के लिए तैयार हो गए। किन्तु केदार के पहुँचते ही मजदूरों में हलचल मच गई। एक नई चेतना फैली। केदार गरज कर बोलने लगा, "साथियों क्या तुम मालिकों के गुमाश्तों को देख कर डर गए हो। उन्होंने पुलीस बुलवा कर हमारे ऊपर आतंक छाने की कोशिश की है। इन सब मिलों के असली मालिक हम हैं, जो रात-दिन मर-मर कर काम करते हैं और मुनाफा खाकर मोटे होते हैं मालिक। उनकी चरबी बहुत बढ़ गई है। इधर हम लोगों की दशा क्या है, आप सब लोग जानते हैं। इस मिल का सारा वैभव हमारे द्वारा ही स्थापित हुआ है हमारे बिना मिल एक दिन नहीं चल सकती है। हमारी संगठित शक्ति के आगे कोई कुछ

नहीं कर सकता है। हमारी माँगे मालिकों को माननी ही पड़ेंगी। हम चाहें तो इस मिल को चंद मिनटों में नष्ट कर सकते हैं।"

नवीन एक ओर चुपचाप खड़ा था। वह किसी की नजर के सामने नहीं पड़ना चाहता था। किरण चुपचाप खड़ी थी। केदार चिल्ला-चिल्ला कर कह रहा था, "हमें मिल की तालियाँ देकर मालिक इस्तीफा दे दें। हम उनको वाजिब मुनाफा दे देंगे। वे हमारा खून चूस कर ऐश करते हैं और इधर हमारे बच्चे दाने-दाने के लिए मोहताज हैं। ऐसे मालिकों का नाश हो जाना चाहिए। यदि वे हमें पूरे अधिकार नहीं सौपेंगे तो हम स्वयं इस पर अधिकार जमा लेंगे।"

जनता में एक नया जोश आया। किसी ने पुलीस पर पत्थर फेंके। एकाएक पुलीस ने लाठी-चार्ज किया। भीड़ ने पत्थरों से उसका जवाब दिया। पुलीस ने चार राउण्ड गोलियाँ चलाईं। केदार सब से आगे था। वह भूमि पर गिर पड़ा। जनता पागल हो गई थी। फिर भगदड़ मच गई। चारों ओर अजीब शोरगुल सुनाई पड़ रहा था। घुड़सवार उनके ऊपर दौड़ रहे थे। लोग चीख रहे थे। बड़ी घबराहट फैली। नवीन और किरण चुपचाप खड़े थे। केदार ने एक बार उठने की चेष्टा की और धड़ाम से गिर पड़ा। कुछ देर तक वह पाँव पटकता रहा। उसके गले से विचित्र-सी गरड़-गरड़ आवाज सुनाई पड़ी और एकाएक वह बन्द हो गई। पुलीस वाले लाश उठा कर 'पोष्टमार्टम' के लिए ले गए थे। नवीन लुटा-सा खड़ा था। किरण पास आकर बोली, "चलो अब।"

"कहाँ?"

"अस्पताल से लाश लेनी है।"

नवीन उस केदार की मौत पर सोच रहा था। अब वह कभी बोलेगा नहीं। वह उठ कर फिर उन लोगों का साथ नहीं देगा। पाँच धातुओं का शरीर अब अग्नि द्वारा भस्म हो जायगा। अब उसका

अस्तित्व तो एक धोखे के अलावा और कुछ नहीं लगता था। उसने केदार को कभी दारू पीते हुए नहीं देखा था। उसे कभी गुस्सा नहीं चढ़ता था। उसे उन पूँजीपतियों से स्वाभाविक घृणा थी। लेकिन वह सदा समझदारी से चला करता था। पहले जब कभी हड़तालें हुईं, उसने खूबी से सबका संचालन किया था। अपने कर्तव्य और ध्येय के लिए वह मर सकता था। आज भी उसने अपने प्राण अपने किसी विश्वास पर अर्पित कर दिए थे। वह एक नव-निर्माण की नींव तैयार करने में नष्ट हुआ था। वह स्वाभाविक मौत सी लगी। उसका चेहरा एक बहादुर सिपाही की तरह था, जो अपने ध्येय के लिए संघर्ष करता हुआ, अपना जीवन उत्सर्ग कर देता है। उसने मानवता की रक्षा के लिए अपना जीवन दिया था। केदार और उसकी मौत पर व्यर्थ-सा न जाने क्या-क्या सोच रहा था। किरण गम्भीर थी। वह चुपचाप उसके साथ आगे-आगे बढ़ रही थी।

"तुम जीवन के बारे में क्या सोचती हो किरण?" नवीन ने प्रश्न पूछा।

"मैं कुछ नहीं सोचा करती हूँ। इतनी बुद्धि होती तो......।"

"यह केदार की मौत की बात!"

"वह एक घटना नहीं, एक अनुभव और एक सबक है। मैं उसे होनहार नहीं मानूँगी। आपको पहले बुला लेती तो सम्भवतः बात न बढ़ती। उस वक्त मुझे अपनी बुद्धि पर भरोसा था।"

"क्या तुम नहीं सोचती हो कि कोई सुख की मौत मरता है और कोई........।"

"अभी मैं कुछ नहीं सोचती हूँ! यही हितकर है। अन्यथा जब बूढ़ी होऊँगी तो क्या सोचा करूँगी!"

"और यह मौत की घटना?"

"केदार अपने वर्ग की आजादी के लिए मरा है। वह एक रास्ता

सबको दिखला गया है कि मरना कठिन बात है। उस पर कई गोलियाँ लगीं और वह बार-बार छाती तान कर मजूरों की आजादी की पुकार मचाता जाता था।"

"तुम भगवान को मानती हो किरण।"

"हाँ।"

"उन पर तेरा विश्वास है।"

"बहुत।"

"और भाग्य!"

"उसको भी मानती हू ।"

"लेकिन किरण यदि सच बात सोची जाय तो वे सब झूठी बातें हैं। कभी कुछ पुरोहितों ने इसका निर्माण किया था·····।"

"आपकी बात मैं स्वीकार नहीं करूँगी। कुछ घटनाएं सदा विश्वास पर चलती हैं। जब मैं सुबह उठी मेरी आँख फड़की। मानो कोई अपशकुन होने वाला था। भाभी ने एक बुरा स्वप्न देखा था। मैं इस अनर्थ की बात जानती थी। फिर केदार भाई की मौत ने क्या हम पर एक गहरा प्रभाव नहीं डाला है। तुम सोचते होगे कि कल कहीं किरण मर जायगी तो क्या होगा! इस सृष्टि में सदा से मौत का ऊपरी हाथ रहा है, कोई उससे विजयी कब हुआ है! आखिर कौन इसका संचालन कर रहा है? हम जानते हैं तो फिर क्या हम व्यर्थ उस व्यवस्था पर झुंझलावें! आदि मानव ने प्रकृति से भीषण युद्ध किए हैं। आज भी वह उससे अलग नहीं है। फिर यदि मैं कुछ बातों पर विश्वास करती हूँ तो वह मेरी निर्बलता ही सही मैं, उसे बिसार नहीं सकती। हमारी परीक्षा भी यह आगे आ पहुँची है ।"

नवीन चुप था। मजदूरों की टोलियाँ अस्पताल की ओर बढ़ रही थीं। उनमें एक नया जोश और बदले की भावना थी। सबके चेहरे उतरे हुए थे। केदार की मौत पर सब चिन्तित थे। उस असम्भव पर

उनका विश्वास बढ़ रहा था। यह उनकी हार थी। नवीन को लग रहा था कि केदार एक भारी बल था। उसे खोकर उनकी शक्ति घट गई है। वह बार-बार अधीर हो उठता। किरण के धीरज पर दंग था। उसका हृदय उमड़ पड़ा। वह बोला, "मैं भाग्यवादी नहीं हूँ किरण।"

"फिर भी इस घटना को समेट लेने में असमर्थ पा रहे हो। क्या मैं नहीं समझ रही हूँ।"

"नहीं किरण, शायद हम केदार को बचा लेते।"

"आप?"

"हाँ, हमारी आँखों के सामने वह अनर्थ हुआ। हम असहाय खड़े रह गये। उस पशु बल के विरोध में हमारा अपना संगठन बहुत मजबूत होना चाहिए। अन्यथा हम सफल नहीं हो सकेंगे। हमें नष्ट करने वाली शक्तियाँ बढ़ रही हैं। हमें उस ओर से उदासीन नहीं रहना चाहिए। मैं स्वयं इन घटनाओं पर सोचा करता था। जन-शक्ति के आगे यह पशु-शक्ति स्वयं कमजोर पड़ जावेगी। वह खोखली होती जा रही है। वे किसानों के बेटे एक दिन समझ जावेंगे कि अपने भाइयों पर गोली चला कर अपने पावों पर ही कुल्हाड़ी मार रहे हैं।

नवीन चुप हो रहा। फिर वही भीड़-भीड़-भीड़······! मजूर जनता उमड़ी चली आ रही थी। उनके नेता की मृत्यु हो गई थी। उनकी रीढ़ की हड्डी तोड़ने का प्रयास किया गया था। केदार मालिकों के लिए सबसे अधिक खतरनाक था। उसे मिटा कर वे शायद सोचते होंगे कि झगड़ा शान्त हो जायगा। लेकिन मुरझाए, सुस्त पड़े हुए चेहरे को, जिनके हृदय में एक ज्वालामुखी फूट चुकी थी। वह देख रहा था। वह उनकी कथा को समझता है। नवीन उनको रोकना चाहता था। वह आगे के लिए चिन्तित था। किरण बात

समझ गई, कहा, "अब बहुत समझबूझ कर चलना है। ये सब पागल हो गए हैं। उधर पुलीस मौका देख रही है। वे अवसर पाते ही इनको गोलियों से भून डालेंगे। किसी तरह हो इस भीषण गोली-कांड को बचाना चाहिए।"

नवीन क्या उत्तर दे। किरण भी चुप थी। वे चुपचाप आगे बढ़ रहे थे। पुलीस की कई लारियाँ अस्पताल की ओर बढ़ रहीं थीं। नगरवासी भी उधर जा रहे थे। हरएक अपने में कुछ आशंकाएं छुपाए था। वे लारियाँ बढ़ती जा रही थीं। सबके सब हथियारों से लैस थे, मानो कि प्रलय होने वाला हो। किरण कुछ खास प्रभावित नहीं लगी। उसकी आँखों में एक दृढ़ विश्वास की झलक सी दीख पड़ती थी। नवीन को अब कुछ कहना नहीं था।

कड़ी धूप पड़ने लगी। नवीन हाँफ रहा था। चेहरे पर से पसीने की बूंदे टपक रही थीं। किरण के चेहरे से तो भारी थकान टपक रही थी। दोनों अपने-अपने में कुछ बातें कुतरते हुए आगे बढ़ रहे थे। अब अस्पताल की इमारत नजर पड़ी। जिसके चारों ओर हजारों आदमी खड़े थे। नवीन पास पहुँचा। किरण अधिकारियों से मिलने चली गई थी।

किरण कुछ देर बाद लौट कर बोली, "छाती पर दो गोलियाँ लगी थीं। केदार उन्तालीस साल में मर गया है। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट लाश देने से मना कर दिया है। उन्होंने एक सौ चवालीस का एलान किया है। उनका कहना है कि बलवा होगा। रात को 'करफ़्यू' छै बजे से लगा दिया गया है!"

जनता बहुत उत्तेजित थी। सब केदार की लाश माँगने के लिए आए थे। पुलीस इस लाश को लारी पर ले जाने के लिये बढ़ी थी कि मजूरों ने लारी रोक ली। पुलिस को फिर तीन राउण्ड गोलियाँ चलानी पड़ीं। जनता पागल हो गई थी। वे पीछे हटने के लिए तैयारी नहीं

थे। लारी पर पत्थर-पत्थर बरसने लगे। एक बार फिर गोलियाँ चलीं और वह लारी भीड़ चीरती हुई आगे बढ़ गई। लोग एक दूसरे का मुंह ताकते हुए ही रह गये। नवीन और किरण सब कुछ देख रहे थे। किरण आगे बढ़ी और अस्पताल की सीढ़ियों पर चढ़ कर वहां के लोगों को समझाने लगी कि सब अब अपने-अपने घरों को लौट जाँय। इस भांति व्यर्थ गोलियाँ खाने से कोई लाभ नहीं है। वह उनको बता रही थी कि जोश का प्रदर्शन सही अवसर पर किए बिना जीत नहीं होती है। वह उनकी बहादुरी की सराहना करने लगी और केदार की बहादुरी का वर्णन कर, उसकी आत्मा की शान्ति के लिए उसने आँसू बहाए।

जनता सब कुछ सुन रही थी। चारों ओर सन्नाटा था। भीड़ छटने लगी। नवीन बहुत थक गया था। वह पास के शीशम के पेड़ की छाया में बैठकर सुस्ताने लगा। किरण उनको सारी बातें समझा रही थी। उनकी शक्ति और अभयता की तारीफ करती हुई अनुरोध कर रही थी, कि अब उनको उतावला नहीं होना चाहिए। पुलीस के अत्याचार के खिलाफ भी वह बोली कि गोलियाँ चला कर उन्होंने भारी अपराध किया है। इस मौत के लिए वे जिम्मेवार हैं। मजूरों को विश्वास दिलाती थी कि जनता की अदालत में इस पर न्याय होगा। आज उनकी सरकार नहीं है। वे तो गुलाम हैं। केदार की सराहना करती कि वह ध्येय के लिए शहीद हो गया है। वह मजूरों की आजादी के लिए सच्ची कुरवानी का रास्ता दिखला गया था। उस जड़ पर उनके भविष्य की नींव आज पड़ी है। उस खून का बदला वक्त आने पर लिया जायगा। न्याय होकर ही रहेगा।

नवीन देख रहा था कि किरण का मुंह सूख रहा है। वह उन लोगों के बीच अकेली खड़ी-खड़ी उनको धीरज दे रही थी। नवीन वह सब आसानी से नहीं कर सकता था। किरण के प्रति उसका आदर उमड़

पड़ा। वह लड़की अपने भाई के सम्पर्क से इतनी सबल हुई है। किरण इस समय सबको समझा रही थी कि उनका कुछ पग पीछे हट जाना उनकी हार नहीं है। व्यर्थ अन्यथा और लोगों की जान चली जायगी। वह अपनी राय दे रही थी कि अभी सब कुछ स्थगित रखा जाय। वह उनसे फिर मिलेगी और वे सारी बातों पर दुबारा विचार करेंगे।

वह सब सुन रहा था कि एक लड़का उसके पास आकर बोला, "आप यहाँ से चले जाँय। व्यर्थ नहीं पुलीस का सन्देह बढ़ जायगा। कौन जाने कहीं वे किरण को पकड़ लें। वे चाहते हैं कि मजूरों में उत्तेजना फैले और वे उस संगठन को सदा के लिए मिटा दें।"

नवीन लौट गया। सोचा कि वे सच ही किरण को पकड़ लेंगे तो बड़ी कठनाई होगी। केदार को खो कर के वह लौट रहा था। उसका दिल पिघलते लगा। वह केदार सुबह तक जीवित था। इस मनुष्य के जीवन का कुछ ठीक नहीं है। किरण तो उनकी सभा के दफ़्तर में जावेगी। वहाँ कुछ लोग इस पर विचार करेंगे। वह भी एक दिन इसी प्रकार कोई बहाना पाकर मर जावेगा। वह कोई आश्चर्य-पूर्ण घटना नहीं होगी। गोलियाँ चली थीं। वह एक युद्ध हुआ था। स्वयं केदार को आशा नहीं रही होगी कि वह इस प्रकार मर जायगा। अब बच्चा और बीबी अकेले हो गए हैं। वह किरण के साथ उनकी देखभाल करेगा। व्यर्थ चिन्ता बढ़ाने से कोई लाभ नहीं है। वह केदार की मौत तो एक चुनौती भर है। वह लहर फिर भी फैलेगी। यह आग शहर और गाँवों में फैलेगी। यह तो जनता की सही क्रान्ति का प्रातःकाल है, जो कि व्यक्तिवादी सशस्त्र-क्रान्ति से भिन्न है। इसकी जड़ जनता की उपजाऊ धरती में फैल जायगी।

केदार का घर मोहल्ले की औरतों से भरा हुआ था। उसकी औरत जोर-जोर से चीख रही थी। वह समाचार वहाँ पहुँच गया था।

वह स्वयं मरने की धमकी दे रही थी। बच्चे का गला घोंट कर खुद आत्महत्या करने की कसमें खा रही थी। वह अब जी कर क्या करेगी, जब वे ही नहीं रहे। उसका गुस्सा उन लोगों पर था। जो खड़े-खड़े तमाशा देखते रहे और उनको मरने दिया था। वह कह रही थी कि उस व्यक्ति का खून करके चैन लेगी, जिसने गोली चलाई थी। वह वहाँ होती तो यदि उनका खून पी डालती। विकराल स्वर था। कभी वह फूट-फूट कर रोने लगती, तो फिर सिर पटकती थी।

वह बाहर ही कुछ देर खड़ा रहा। भीतर औरतों के बीच नहीं गया। एक मरा और पचास तक घायल हुए थे। कुछ की हालत बहुत नाजुक थी। वह लौट आया और एक बाग में जाकर बैठ गया। कुछ देर बेंच के सहारे नींद ली। अब साँझ हो आई थी। वह तेजी से केदार के यहाँ पहुँचा। बड़ी सनसनी फैली हुई थी। कई झूठे समाचार विस्तार पा चुके थे। पुलीस की भरी लारियाँ शहर मे दौड़ रही थीं।

नवीन भीतर पहुँचा। किरण वहाँ थी। केदार की बहू जो अब तक चुप थी एक बार उसका हृदय फिर फूट निकला। बोली वह, "भैया, उनको कहाँ छोड़ आए हो?" रो पड़ी।

किरण ने उसे समझाया। नवीन से बोली, "आप दिन भर कहाँ रहे हैं। मैं ढूँढ़ती रही।"

"बाग में चला गया था।"

"सुनिए अब हमें यह मकान छोड़ देना पड़ेगा। कल तक किसी निर्णयपर पहुँच कर, मैं भाभी के साथ गाँव चली जाना चाहती हूँ। ये वहीं रहेंगी। मैने पूछ लिया है। ये अपने मायके जाने का हठ कर रही थीं। मैंने मना कर दिया है।"

यहाँ तक तो किरण ने ठीक तय कर लिया था। नवीन चुप रहा। उसे कुछ कहना नहीं था। किरण तो फिर बोली, "मैं सरला के पास गई थी।"

"सरला के ?"

"हमारी मीटिंग खत्म होने पर सरला के पिताजी का आदमी आया था। वहाँ डाइरेक्टरों की मीटिंग हुई। वे कोई समझौता करना चाहते थे। मुझे मध्यस्त बनाया है। सरला से भी बातें हुईं। उस बेचारी को मजदूरों के जीवन का कोई ज्ञान नहीं है। वह उस गोली चलाने की बात को नहीं समझ सकी। परेशान थी कि तुम तो वहाँ खड़े नहीं थे। वह प्रेम करने की कला में निपुण है।"

"क्या किरण ?"

"वहीं मालूम हुआ कि प्रेम प्लेग की बीमारी से कम खतरनाक नहीं होती है। वह बहुत घबरा गई थी। बार-बार पूछती थी, कि आप तो नहीं पकड़े जावेंगे।"

नवीन कुछ नहीं बोला। उसने कभी अपनी पूरी आत्मा को सरला को नहीं सौंपा था। क्या किरण कोई व्यंग कर रही थी! क्या वह सरला उसके जीवन में रुकावट की भाँति पड़ी है। वह किरण की बातों की थाह नहीं पा सका।

"अवश्यकता पड़ने पर क्या आप उसकी हत्या कर सकते हैं ?"

"उसकी हत्या ?" नवीन किरण का चेहरा पढ़ना चाहता था। वह गंभीर थी। "अभी नहीं, लेकिन कौन जाने कल ऐसा मौका आ पड़े। आपके जीवन से सम्बन्धित सब लोगों का लगाव हमारे आन्दोलन से भी है। अभी तो ऐसा अवसर शायद नहीं आवेगा। आप तो घबरा गए। मैंने सरला से एक अनुरोध किया था। उसे स्वीकार नहीं हुआ।"

"क्या था वह ?"

"मैं चाहती थी, कि वह अपने पिता के दफ़्तर से मजदूर-सभा सम्बन्धी कागजों की फाइल हमें दे दे। वह बोली कि पिताजी के प्रति

किसी अविश्वास की बात को स्वीकार नहीं कर सकती है। तब मैंने दूसरा दाँव खेला कि नवीनजी यह चाहते हैं। यह उनके सम्मान का प्रश्न है। तब वह तपाक से बोली कि कहीं उसके पिताजी पर तो कोई आँच नहीं आवेगी। मैंने आश्वासन दिया कि नहीं। मैं उसकी जिम्मेवारी फिर भी नहीं ले सकूंगी। तब वह कहने लगी कि वह मुझ पर विश्वास नहीं करती है। मेरे ऊपर आरोप लगाया कि मैं स्वयं तुमसे प्रेम करती हूं। मुझे गुस्सा चढ़ा और मैंने इस बात का मुंह तोड़ उत्तर दिया, कि किताबें पढ़ कर, तसवीरों से प्रेम करना उसका काम है। मुझे वह हिस्टीरिया का रोग नहीं है। वह ऊंचे कुल की लड़कियों के लिए है। वह न जाने क्यों मुझे घृणा से घूरती हुई भीतर भाग कर चली गई।"

इन तर्क-वितर्क पर नवीन कुछ नहीं बोल सका। वह सरला और किरण दोनों को पहचानता है। एक जितनी सरल है, दूसरी उतनी ही सबल। दोनों गैर नहीं हैं। सरला ने किरण की चिट्ठी पढ़ी थी। किरण की धमकी भी आज सुन ली है। वह जानती है कि किरण एक दिन अपने किसी दावे को आगे रख कर उसे उसके घर से निकाल कर ले आई थी। सरला को सारी बातों का ज्ञान है। वह इधर फिर सरला पर बहुत सोचता है।

पूछा किरण ने, "आप तो सरला की शादी में जावेंगे?"

"निमन्त्रण तक तो नहीं आया है!"

"कल बारात आवेगी। शायद रात का लग्न है। सरला को मालूम है कि आप शहर में आए हुए हैं। अपने आदमी से कम से कम वह यह आशा जरूर करेगी, कि वे वहाँ आवें। क्यों आप क्या सोच रहे हैं? क्या मैं कोई पहेली गढ़ रही हूँ। आप जैसी पैनी बुद्धि मेरी नहीं है।"

खीज कर सा नवीन बोला, "यह तो हमारा भविष्य नहीं है

किरण। जिसे हम छोड़ चुके उसके प्रति मोह क्यों फैलाया जाय? छोटी-छोटी बातों पर विवाद करना नहीं जंचता है। मेरा खयाल है कि तुम गाँव चली ही जाओ। देवेन्द्र यहाँ है ही। हम कोई ठीक सा समझौता कर लेवेंगे।"

"मैं कल चली जाऊंगी।"

"कल!"

"यहाँ भाभी बहुत परेशान हैं। पुलीस को शक होता जा रहा है। यह मकान भी छोड़ देना चाहिए। मैं अभी गिरफ़ार नहीं होना चाहती हूँ। मैं आज ही जाने की सोच रही थी। अब तो स्थिति नाजुक नहीं है। आप लोग सम्भाल सकते हैं। आपकी क्या राय है?"

"तब आज ही चली जाओ। मैं सब सम्भाल लूँगा। हड़ताल अभी कुछ दिन रहेगी। तुमको बिदा करके मैं देवेन्द्र के पास चला जाना चाहता हूँ। तुम सब सामान ठीक कर लो। मैं बैलगाड़ी लेकर अभी लौट आऊंगा।

नवीन बाहर चला आया। आज दिन भर उसने कुछ नहीं खाया था। मन खिन्न था। चित्त उदास था। वह एक खोंचे वाले के पास पहुँचा और उसने पेट भर कर चाट, दही-बड़ा, मटर और आलू की टिकिया खाई। शुद्ध 'कोकोजम' का बना हुआ माल था। वह गलियाँ पार करने लगा। सरला की शादी है। वहाँ केदार की मौत सुबह हुई है। वह मौत स्वाभाविक नहीं थी। वह सरला को भुला कर, केवल केदार को याद रखना चाहता है। सरला अब तारा की तरह दूसरे परिवार में चली जायगी। वह भली भाँति रहे। यही उसकी मनोकामना है। सरला दुलहिन बन जावेगी। वह रूप तो साधारण रूप से भिन्न होता है। एक बार ही लड़की को वह प्राप्त होता है। मायका और ससुराल की दूरी के बीच उन्नीस-बीस साल की दूरी

होती है। सब लड़कियों को ससुराल जाना है। किरण भ. जावेगी।

वह देवेन्द्र के घर पहुँचा। दरवाजे की कुंडी खटखटाई। विपिन दरवाजा खोल कर बाहर आ आश्चर्य में बोला, "आप आए हैं?"

"किरण गाँव जा रही है?"

"कब ?"

"आज अभी। केदार की बहू का शहर में रहना उचित नहीं है। वह कहीं कल मिल के फाटक पर पहुँच गई तो उस बड़े प्रवाह को रोकना कठिन हो जायगा। तुम और लोगों को बुला लाना। मैं उनको विदा कर, सीधे यहीं आऊँगा।"

"बैठेंगे नहीं।"

"उनको पहले विदा कर आऊँ।"

नवीन आगे बढ़ गया। अड्डे पर पहुँच कर उसने एक बैलगाड़ी तय करली। अभी सवाल उठा कि कुछ पैसा चाहिए। उसके बटुए पर कुल पाँच-छै रुपये बचे हुए थे। सरला से पैसा लेना उसे अनुचित नहीं लगा। अब उसने पेन्सिल से एक चिट पर कुछ लिखा। अभी नौ बजे थे। सरला घर पर ही होगी। गाड़ी उस ओर बढ़ाई। फाटक से कुछ दूरी पर उतर करके गाड़ीवान को चिट देकर भीतर भेज दिया। उसे सारी बातें समझा दीं। वह गाड़ी पर लेटा-लेटा सोचने लगा कि शहर इस समय तो शान्त है। लेकिन 'करफ्यू' है। मौत की तरह उसे सारा वातावरण लगता था। विश्वास नहीं आता था कि वह केदार मर गया होगा। घास काफी गुदीगुदी थी। वह उस भाँति लेटा रहा। वह चौंका। देखा कि सरला पिछले फाटक से निकल कर वहाँ आकर गाड़ी के पास खड़ी हो गई। वह चुपचाप उतर पड़ा।

"अन्दर आने की मनाही तो है नहीं।"

"मुझे अभी लौट जाना है। तुमको कष्ट दिया, क्षमा करना"

हैं।" सरला बिना किसी उत्तर की प्रतीक्षा किए ही नमस्ते करके भीतर चली गई।

नवीन ने लिफाफा ले लिया। गाड़ी-वाले के पास पहुँचा। वह बैठा हुआ ऊँघ रहा था। उसे जगा कर गाड़ी पर बैठ गया। गाड़ी वाले ने गाड़ी हाँकी। बड़ी देर तक सड़कों का चक्कर काटकर गाड़ी अन्त में केदार के घर पहुँच गई. आधी रात गुजर चुकी थी। उस उजड़ी गृहस्थी में प्रवेश करते हुए उसकी आत्मा काँप उठी। देखा कि किरण तैयार थी! सब छुटा मोटा सामान आँगन में धरा हुआ था। उसने समान लादा। किरण किसी मजूर को साथ चलने के लिए तैयार कर चुकी थी। वे लोग बैठ गए। नवीन ने किरण के हाथ पर लिफाफा रख दिया। किरण ने पचास रुपए रखकर बाकी लौटा दिए। मजाक में बोली "सरला क यहाँ गए थे।"

नवीन ने कुछ नहीं कहा।

"उसने चिट्ठी आपके लिए लिखी है; मेरे नहीं।" कह कर उसने गाड़ीवान से कहा कि गाड़ी चलाओ।

नवीन यदि किरण की आँखों को देख सकता तो पाता कि किरण के मन में सरला के प्रति अच्छी भावना नहीं है। वह पहले लिफाफा खोल कर पढ़ लेता तो ठीक होता। अब उसे दुनियादार बन जाना चाहिए।

गाड़ी खड़ी थी। वह उसी स्थिति में खड़ा था। किरण फिर जोर से बोली, "गाड़ी हांको। बड़ी दूर का सफर है।"

बैलगाड़ी बढ़ गई। पहिले की चूं-चूं-चूं उसने सुनी। वह किरण की बातों को तोलता रहा।

गाड़ी आगे मोड़ के बाद नहीं दीख पड़ी। नवीन संभला! एक बार चाहा कि दौड़ कर वह किरण से माँफी मांग ले। लेकिन वह किरण क्यों इस भाँति व्यंग करती है! वह क्या सुझाना चाहती है?

नवीन धीरे-धीरे विपिन के घर की ओर बढ़ गया। रास्ते में एक जगह बिजुली के खंभे के सहारे खड़े होकर उसने सरला की चिट्ठी निकाली और पढ़ने लगा। लिखा था:—

नवीनजी,

मैं बहुत नीची साबित हुई हूँ। लेकिन क्यों किरण बार-बार अपने को बड़ी साबित कर मुझे नीचा दिखाने की चेष्टा करती है। मैं उसका यह अपमान नहीं सह सकती हूँ। मैंने कौन-सा कसूर किया है। मैंने अपनी सारी स्थिति आपके आगे रखदी थी। मुझे आपसे अधिक किसी से स्नेह नहीं है। आपके किसी आदेश पर मैं अपना सर्वस्व निछावर कर सकती हूँ। जबसे आप गए आँखें नहीं सूखती हैं। मन बहुत आकुल रहता है। प्रतिक्षण सोचती हूँ कि न जाने कैसा अशुभ समाचार कोई सुनादे। मन की पीड़ा बढ़ती ही जा रही है। तारा ने अनजाने जिस भाई को मुझे सौंपा था, न जाने क्यों उसे इतना प्यार करने लगी हूं। फिर भी आपके जीवन में मैंने कोई रुकावट नहीं डाली। मैंने आपके कहने पर गृहस्थी के शाप को अपनाने में आनाकानी नहीं की। आप आए और चले गए। एक आग लगा गए थे, जिसे बुझाने की क्षमता किसी में नहीं है! मैं न जाने क्यों किसी अज्ञेय को पाना चाहती हूं! यह मेरा सब से बड़ा दुर्भाग्य था, कि आपके किसी काम नहीं आ सकी।

आप अपनी पिस्तोल, क्रान्ति और देश को उठा कर चल रहे हैं। मैं आजीवन के लिए किसी गृहस्थी में प्रवेश कर रही हूं। वहां अपना जीवन किसी तरह व्यतीत कर लूंगी। मैं आजकल बहुत परेशान रहती हूं। तुम से बहुत बातें पूछ लेना चाहती थी। तुम्हारे पास इतना वक्त नहीं है, कि आ सको। तुम्हारे पास व्यक्ति से ऊपर के काम हैं, जहां एक व्यक्तिगत इकाई अमूल्य हो जाती है। तारा आ जाती तो कुछ मन शान्त होता। तारा नहीं आ पाई है। तुम आकर मुझे अपने

हाथों जिसे सौंप दगे, मुझे स्वीकार होगा। मैं मनोहर के साथ वहाँ रहूँगी। यदि तुम सोचते हो कि मुझे दान में देना ही है तो स्वयं आकर दे दो। मैं कुछ आपत्ति नहीं करूँगी। तुम्हारी बात अस्वीकार न कर सकूँगी। क्या आओगे? यह मेरा अपना पहला अनुरोध है! वैसे अपने किसी अधिकार से आपको नहीं बुला रही हूँ।

पिताजी के प्रति वाले आदर की रक्षा का भार आप पर ही छोड़ रही हूं। मैं उनका और आपकी संस्था दोनों का आदर करती हूँ। पिताजी से यहाँ इन मजदूरों के मसले को लेकर मैं झगड़ी हूँ। वे अपने विश्वासों को बदलने के लिए तैयार नहीं हैं। आप आकर उन से बातें करें, तो मैं सोचती हूँ कि वे आपकी किसी बात को अस्वीकार नहीं करेंगे। वे बार-बार आपकी बुद्धि की सराहना करते हैं। आप उनसे मिल कर सारी स्थिति सुलझा सकते हैं। आपके आज के विचार हैं और उनके बहुत पुराने। जीवन में कई समझौते करने पड़ते हैं। भले ही हम न करना चाहें। सम्भवतः आप कोई ठीक समझौता करवा कर पिताजी की रक्षा कर सकें। आपकी बातों पर वे अवश्य ही विचार करेंगे।

आपने कभी मेरे हृदय की भावना का आदर नहीं किया है। तारा ने अपने भाई की तसवीर बिना किसी चेतना के मेरे हृदय पर खींची थी जब आप मिले तो मैं उलझी नहीं। आपको तो मैं पहचानती थी। तारा को कभी-कभी कोसती हूँ। कभी सोचती हूँ कि वह मेरी अनाधिकार चेष्टा थी। उसका कोई अपराध नहीं है। आप पास आए और मेरे जीवन को छू कर चले गए। मैं न जाने क्यों उद्विग्न हो उठी। तब से सदा भगवान से मनौती करती हूँ कि आप कहीं रहें, कुशल से रहें अब अपने प्रति मुझे अविश्वास बरतना आ गया है। तुम न जाने क्या सोचते होगे। क्यों मैं किसी पर अपना व्यक्तित्व फैला कर अपने को धोखा दे रही हूँ। मेरी मन चाहता है! तारा को

उस भाँति सौंप कर भी आप बरी नहीं हुए। तारा आज बार-बार अपने भाई के परिवार में कुछ दिन बसेरा लेने के लिए तड़पती है।

सोचोगे कि ये लड़कियां आदि-काल से मनोती करने में प्रवीण होती हैं। वह संकुचित धारणा पुरुषों की है। लड़कियां हरएक के प्रति आसानी से आदर नहीं बटोरती हैं। और वे अपना विश्वास तो किसी एक को ही समझ कर सौंपती हैं। इसने अधिक तर्क करना कभी नहीं सीखा है। तारा की सहेली सदा के लिए पिता का घर छोड़ रही है। वह अपने मन को नहीं समझ पाती है। उसे समझाने जरूर आना। वह आजकल बहुत भावुक हो रही है। उसका मन ठीक नहीं है। आप आकर उसे समझा सकते हैं। वह बहुत पागल लड़की है। क्या यह अनुरोध मानोगे? अपने मन की बात अभी तक मैंने किसी को नहीं सुनाई है। वह लिख सकती, लिख देती। आप से कई बातों पर राय लेना चाहती हूँ। ओ, किसे लिख रही हूँ! जानती हूँ कि आप बहुत हठी हैं। आप कदापि नहीं आवेंगे? आप बहुत बड़े हैं। अपनी उस संस्था से बाहर कहीं देखने-सुनने का अवकाश आपको नहीं है। आपकी उस महानता पर हँस पड़ती हूँ। जहाँ कि किरण बार-बार आप को बैठा देती है। मैंने आपको बहुत साधारण- सा पाया है।

मैं बार-बार अपने मन को सबल बनाना चाहती हूँ। मैं अधिक घटनाओं पर नहीं सोचती हूँ। लेकिन किरण मेरे नारित्व को जगा कर वहाँ चोट मारती है। यह कैसा अभिशाप है? मैं अपने मन को शायद समझा लूँगी। अपने अनुरोध को वापिस ले लूँगी। मैं हरएक बात की मान्यता पर अधिक विचार नहीं किया करती हूँ। न अपने प्रति किसी अन्याय की भावना को उठाती हूँ। मैं बात को समझ कर भी कभी-कभी अपने बावले मन के प्रवाह में बह जाती हूँ। यह पत्र पढ़ कर आप भूल जाना। यहाँ सब झूठी-झूठी बातें मैंने लिखी हैं। मैं आपको बहकाना चाहती थी। आप सबल हैं। आप अपना कर्तव्य

देखिएगा। वह बड़ा है। मैं अपने किसी अनुरोध से आपको नहीं बाँधूंगी। आपको आज स्वतंत्र कर देती हूँ। मैंने अपने दिल का ताला तोड़ कर आज तारा के भाई की तसवीर चूर-चूर कर फेंकदी है। वह मेरा पाप था। अब आप मुक्त हैं।

आप मुझे क्षमा करेंगे।

—पत्र पढ़ कर नवीन कुछ देर स्तब्ध खड़ा रह गया। वह सरला ने एक बड़े इम्तहान में सफलता पाई थी। वह वहाँ नहीं जा सकेगा। वह क्यों कर जा सकता है। वह बहुत व्यस्त है। किसी की आहट पाकर वह चौंक उठा। पेड़ों पर चमगादड़ लटके हुए थे। वे उड़-उड़ कर फिर लटक जाते थे। पेड़ों से कोई फल टपक रहे थे। उनकी भीनी-भीनी महक आ रही थी। वह उनको देखने लगा। उनके डैनों की फड़फड़ाहट कानों में पड़ रही थी। वे दिन भर पेड़ों पर लटके रहते हैं और जब सारी दुनिया सो जाती है, तो चारे की खोज में चूहे, छुछूंदर आदि जानवरों को पकड़ने उड़ते हैं। वे गाँधीवादी नहीं हैं और उनका शिकार करते हैं। वह सरला के सुन्दर अक्षर देखने लगा। वह सब सरला ने क्या सोच कर लिखा होगा?

एकाएक कई लारियाँ सड़क पर से गुजर गईं। एक कुछ आगे रुकी थी। नवीन ने सोचा कि शायद वे उसके पास आ रहे हैं। शहर पर 'करफ़्यू' था वह क्या उत्तर देगा। लेकिन ट्रक चला गया था। उसने उस चिट्ठी के टुकड़े-टुकड़े कर डाले वहीं सड़क पर उनको बखेर कर आगे बढ़ गया। सरला के आँसुओं पर कुछ सोचना उसे व्यर्थ लगा। किरण झूठ नहीं कहती है। उसने सोचा कि सच ही सरला उसकी भावना को कुचल डालती है। वह उसके प्रति बहुत उदार है। उसका उससे भविष्य में कोई सरोकार नहीं रहेगा। वह सरला की स्मृति को भुला देगा। क्यों सरला ने तारा को अपने

बचाव के लिए पकड़ा है। तारा, तारा, तारा; कह कर वह सुझाना चाहती है कि यह सरला है। उसे पहचान लो।

आज वह जिस शहर में है, वहाँ वर्षों से कुचले गए मजूरों ने सिर उठाया है। वे उनको सही रास्ता दिखा सकते तो यह एक सफल मोर्चा फतह होता। केदार को खोकर उन्होंने एक अच्छा जन-नायक खो दिया है वह उनका अपना आदमी था। उनकी सारी बातों को समझता था। वे चमगादड़ इधर-उधर उड़ रहे थे। वह चुप-चाप तेजी से विपिन के घर की ओर बढ़ रहा था। उनको आगे कल के नए मोरचे की तैयारी करनी थी। अब वह दौड़ने-सा लगा। सड़क से वह गली के भीतर पहुँचा। म्युनिसिपैलटी की लालटेनों के प्रकाश में आगे-आगे बढ़ कर विपिन के घर पर जाकर रुका। उसके पाँव थक गए थे। वह चूर-चूर थका हुआ था।

विपिन नवीन को देख कर चकित हुआ। उसका चेहरा मौत की तरह सुफेद पड़ गया था। नवीन की आँखें लाल थीं। वह हाँफ सा रहा था। वह पास पड़ी कुरसी पर लुढ़क गया। विपिन बोला, "नवीन आ गया है।"

जो लोग वहाँ बैठे थे। उन्होंने अभिवादन किया। कुछ देर सुस्ता कर नवीन बोला, "हम लोग आज एक आवश्यक बात पर विचार करने के लिये यहाँ एकत्रित हुए हैं। आज सुबह हम पर हमला हुआ है। हमारे मोरचे को तोड़ने के लिए मालिकों ने पुलिस की मदद ली। केदार मर गया और हमारे चालीस-पचास साथी घायल हैं। कुछ की मौत संभव है। आज वह नया जोश हम सब में आया है। उसे देखकर मुझे खुशी हुई। फिर भी आगे का सवाल है कि अब हमें क्या करना चाहिए। वह प्रश्न गंभीर और विचारणीय है। मुझे पूरा विश्वास है कि उस आतंक का प्रभाव यह हुआ कि हमारी सम्पूर्ण बिखरी हुई शक्तियाँ संगठित हो गई हैं। मैं सोचता हूँ कि हमें हड़ताल जारी

रखनी चाहिए। कोई जलूस अभी नहीं निकाला जा सकता है। हम लोगों को ठंडे दिल से सारी परिस्थिति पर विचार करना होगा। व्यर्थ की उत्तेजना से हमारे भाइयों को बेकार गोली का शिकार होना पड़ेगा। मैं जनता हूँ कि हर एक भाई अपने सीने पर गोली खाकर अपनी आजादी लेने के लिए शहीद होने को तैयार है। वह भी हम करेंगे, पर आज अभी वह अवसर नहीं आया है। किरण गाँव चली गई है। केदार भाई के बच्चे उसके साथ चले गए हैं। कल से विपिन पर सारा भार होगा। आप लोग उसकी सलाह पर चलेंगे। मैं यहीं रहूँगा।"

एक व्यक्ति खड़ा हुआ। तेजी से बोला, "हम खून का बदला खून से लेंगे। मैं निश्चय कर चुका हूँ कि बिना……कि हत्या के चैन नहीं लूँगा। यह सब उसी की करतूत है। केदार भाई मैं तुम्हारी शपथ लेकर प्रतीज्ञा करता हूँ कि तुम्हारा बलिदान व्यर्थ नहीं जावेगा।"

"अब मैं समझा कि आप ही चिट्ठियाँ लिख कर उन लोगों को धमकी देते रहे हैं कि उनका खून करेंगे। वह आज गलत रास्ता है। एक व्यक्ति की हत्या करने से कुछ लाभ नहीं होता है। उल्टे पुलिस को हमारे संगठन पर हमला करने का अवसर मिलता है। अभी हमें अपने संगठन को मजबूत बनाना है। मैं आपकी बात से सहमत नहीं हूँ।"

"तो यह अपनी पिस्तौल लीजिये। आज आपकी शस्त्र क्रान्ति पर विश्वास नहीं है। आपको तो गाँधीवादी होना चाहिए था। इस सारे झगड़े के पीछे वही व्यक्ति हैं। आज का सारा प्रदर्शन उसी की करतूत थी। वह धमकी देता था कि मिल को बन्द कर देगा; पर जो मजदूर अनुशासन भङ्ग करेगा, उसे वापिस नहीं लेगा। वह सैकड़ों मजदूरों को गोलियों से उड़वा सकता है। कहता है कि पुलिस और मजिस्ट्रेट उसके नौकर हैं, न कि जनता के। उसे अपनी शक्ति का बहुत घमंड है। मैं उसके घमंड को चूर-चूर कर डालना चाहता हूँ।"

चारों ओर बैठे हुए लोगों ने उसकी बात का समर्थन किया। नवीन ने फिर एक बार उनको समझाने की चेष्टा की तो एक व्यक्ति उठकर बोला, 'हम जानते हैं कि वह सरला का पिता है।"

नवीन वह सुन कर हँस पड़ा और बोला, "सरला को आप अलग रखें तो उचित होगा। आप अपने आप फैसला कर सकते थे। लगता है मेरी आवश्यकता यहां नहीं है। मैं बहुमत का आदर करता हूँ और स्वयं अल्पमत में होने के कारण आप लोगों पर सारा भार छोड़कर मुक्त हो जाता हूं।"

"नवीनजी ।" विपिन बोला।

"क्या है ?"

"उस हत्या का प्रश्न तो हल हो चुका है। अब हम अपने पुराने निश्चय को कैसे बदल सकते हैं। वह हमारे अधिकार की बात नहीं है।"

"कब यह निश्चय हुआ था ?" उलझन में नवीन ने पूछा।

"कल किरण के आगे यह प्रश्न उठा था। काफी देर तक विचार-विनिमय के बाद यह निश्चय हुआ।"

नवीन ने कुछ सकुचित होकर विपिन की ओर देखा और बोला "मैं आज इस भांति व्यक्तियों की हत्याओं पर विश्वास नहीं करता हूँ। पीछे सुरेश मुझसे सहमत हो गया था। यदि वह पकड़ा नहीं गया होता तो आज मुझे इतनी कठनाई नहीं पड़ती। हम स्वयं देख रहे हैं कि एक-दो व्यक्तियों की हत्या के बाद हम आन्दोलन को आगे नहीं बढ़ा सके हैं। उस से जन आन्दोलन कभी आगे नहीं बढ़ता है। किरण ने मुझसे यह बात कही होती तो मैं रोक लेता। न जाने क्यों वह यह बात मुझसे छुपा लेना चाहती थी। उसके पीछे मैं नहीं समझ पाता कि अब क्या करना होगा। कम से कम मैं उस परम्परा से सहमत नहीं हूँ। हमारे बीच गहरा मतभेद है। यह यहीं नहीं और जगह भी है। वैसे

आप लोगों के निर्णय के आगे माथा झुकाता हूं। और तुम यहाँ के संचालक हो। मैं जा रहा हूं। मेरी अनुपस्थिति में जो चाहो कर सकते हो।"

नवीन चुप हो गया तो एक सज्जन उठ कर बोले, "हम सारी बातें जानते हैं। सरला हमारे और आपके बीच खेल रही है। इसीलिए यह और भी आवश्यक है कि यह हत्या हो। हम साफ साफ बातें आगे रखते हैं। एक यह है कि वे मैनेजिंग डाइरक्टर हैं और अधिकारियों से मिल कर उन्होंने हम पर हमला किया। दूसरी बात यह है कि आपको उनकी लड़की पथ-भ्रष्ट बना रही है। इसके बाद हर एक समझदार व्यक्ति सोच सकता है कि क्या करना चाहिए। किरण का कथन था, कि आज हमारा आन्दोलन बहुत आगे बढ़ जाता यदि आप सरला के चगुल में न फंस जाते। किरण को इसका बहुत दुख है।"

नवीन तो हंस पड़ा। बोला, "दोस्तों यह झूठ है। सरला को व्यर्थ आप बीच में ला रहे हैं। यह एक व्यक्ति का प्रश्न नहीं है। आज आप कोई निश्चय करना चाहें, कर सकते हैं। लो मैं उठ रहा हूं! आप लोग अब जैसा चाहें निर्णय करलें। जब कि मुझ पर आप लोगों का विश्वास नहीं है, तो मुझे अपनी सफाई नहीं देनी है।"

नवीन वहां से उठ रहा था कि विपिन बोला, "नवीनजी यह आप क्या कर रहे हैं, ? इस समय हमें एक ऐसे व्यक्ति की जरूरत है, जो सारी स्थिति को संभाल ले। हम आपके हरएक आदेश को स्वीकार करेंगे। हमारा आप पर सदा ही विश्वास रहा है।"

चारों ओर सन्नाटा छा गया। नवीन अचकचा कर सबके चेहरों की ओर देखा। सावधानी से बोला, "साथियो कल आपने जो निश्चय किया, लगता है उसी के कारण आज केदार मारा गया। हमारा संगठन अभी बहुत कमजोर है। सशस्त्र-क्रान्ति और जन-क्रान्ति दो अलग-अलग रास्ते हैं। उतने नौजवानों को फाँसी लगी, फिर भी

हमारी आजादी की लड़ाई कहाँ आगे बढ़ पाई है। हम अपने जोश को वक्त पर काम में लावेंगे। जिस हत्या का निश्चय आपने किया, उसका नतीजा यह होगा कि हमारे कुछ अच्छे साथी फाँसी पर लटक जावेंगे। और कई नौजवानों जेलों में सालों तक सड़ते रहेंगे, जब कि दूसरा व्यक्ति उस स्थान पर आकर उसी पुरानी नीति पर चलेगा। हममें जो जोश है वह अपने संगठन को मजबूत करने में लगाना चाहिए। एक दिन समय आवेगा जब कि किसान और मजदूरों के आन्दोलन देश भर में उठेंगे। पुलीस वाले किसानों के बेटे हैं। वे गोली चलाते-चलाते सोचेंगे कि वे अपने भाइयों की हत्या कर रहे हैं। वे भी बगावत कर देंगे। फौजी आवेंगे और एक दिन वे भी हथियार रख देंगे। उस क्रान्ति को कोई नहीं रोक सकेगा। उसके पीछे अपार जन बल होगा। केदार की मौत हमारे लिए एक नसीहत है। उसकी मौत का सबसे बड़ा दुःख मुझे है। आप लोगों में से अधिक लोग वे हैं, जिनको अपने प्राणों का दाँव लगाना आसान लगता है। मैं आपकी सराहना करता हूँ। आप लोगों के त्याग के सामने नतमस्तक होता हूँ।"

नवीन चुप हो गया। एक बार उसने सब चेहरों को पहचान लेने की चेष्टा की। धीमे स्वर में बोला, "इस समय तीस से अधिक छोटे-बड़े षड़यंत्र देश भर में चल रहे हैं। वहाँ हमारे मध्यवर्ग के बुद्धिजीवी नवयुवक जेलों में सड़ रहे हैं। न्यायालय न्याय नहीं करते। उनका काम ब्रिटेन की सत्ता को जमाना है। आप लोगों के आगे सारी बातें रखते हुए मुझे झिझक नहीं हो रहा है। यदि उस हत्या से सफलता मिलती तो वे सज्जन मेरी गोली के निशाने बनते। मेरा सुझाव तो यह है कि कुछ लोग कल मिल के फाटकों पर जावेंगे। अभी जलूस नहीं निकाला जायगा। कल वहाँ शान्तिपूर्ण पिकेटिंग होगी। आवश्यकता पड़ेगी तो हम जलूस निकालेंगे। हर एक वहाँ

खड़ा खड़ा मर जायगा। एक भी अपनी पीठ पर गोली नहीं खायेगा।"

नवीन इतना कह कर चुप हो गया। उसने एक गिलास पानी मँगवा कर पिया। कुछ देर के बाद शान्तिपूर्वक बोला, "अब आप लोग जावें। कल विपिन आप लोगों का नेतृत्व करेगा। एक बात से आगाह करदूँ। कोई भट्ठी की ओर कदम बढ़ावे तो उसको आप रोक लें। यह षड्यंत्र है। सबको होशियार हो जाना चाहिए। कल विपिन आपका नेतृत्व करेगा।"

सब लोग चले गये थे। अब अकेले विपिन और नवीन रह गए। तो नवीन बोला, "विपिन शान्ति पूर्वक पिकेटिंग कुछ लोगों को करनी चाहिए, ताकि अधिकारी गोली न चला सकें। शायद कुछ लोग गिरफ़्तार हो जाँय। हड़ताल चलाने के लिए पैसा चाहिए और नागरिकों की सहानुभूति! एक परचा निकाल कर इन लोगों की माँगे साफ-साफ बना लेनी होंगी। फिर चार-चार का दल बना कर जलूस निकाल सकते हो। पुलीस को मौका देना ठीक नहीं होगा। आज की गोलियों के कारण सब लोग बहुत उत्तेजित हैं। कुछ लोगों को मोहल्ले-मोहल्ले भेज कर वहाँ के लोगों में भी इस आन्दोलन की चर्चा फैलानी चाहिए। कुछ वालिंटियरों को बेकार मजदूरों के खाने-पीने का प्रबन्ध करना होगा। जब तक यह सारा संगठन नहीं हो जाता, आन्दोलन को बल नहीं मिलेगा। जनता का दबाव मालिकों पर पड़ना चाहिए कि वे समझौता करें। कुछ उदार प्रतिष्ठित व्यक्तियों के बयान ले लेने चाहिए। स्थानीय अखबार सारे समाचार को सही-सही नहीं छापेंगे। इसलिए आवश्यक है कि हम कोई ठीक प्रचार करने की व्यवस्था बनालें। मैं तो सोचता हूं कि विद्यार्थी साथियों को मजदूरों के बीच जाकर उनको राजनीति की शिक्षा देनी चाहिए। बिना इस सबके कुछ

सम्भव नहीं होगा : यह एक युद्ध है। जि के लिए पूरी तैयारी होनी चाहिये।"

विपिन ने नवीन की ओर देखा। वही उदास पड़ा हुआ चेहरा था। पूछा, "तुमने खाना भी खाया या नहीं?"

"नहीं।"

"तो मैं लिए आता हूं। कह कर वह चला गया। बड़ी देर के बाद लौट कर आया। बोला कि, "सब दूकानें तो बन्द हो गई हैं। सिनेमा से कुछ नमकीन और मीठा ले आया हूँ।"

नवीन चुपचाप खाने लगा। विपिन गौर से नवीन को देख रहा था। यह व्यक्ति कितना सहनशील और उदार है। वह सब कुछ सुनता ही रहा और जब अपनी बात कहनी शुरू की तो एक पैने तर्क से सबकी बातें काट दी। अवस्था यही चौबीस-पच्चीस साल की होगी। सारी बातों पर सोच कर कल की व्यवस्था तय की है। इस समय जरा भी चूक हो जाय तो भारी अनर्थ हो सकता है। हठात् नवीन ने विपिन की ओर देखा। उलझन हटाते हुए पूछा, "क्या तेरा इन हत्याओं पर विश्वास है?"

"हाँ?"

"तू अभी भी सरला के पिता की हत्या से सहमत है।"

हाँ, वही सारे झगड़े की जड़ हैं।"

"सरला तो हमारे साथ काम करने को तैयार थी। मैंने मना किया। फिर भी उसने हर प्रकार की सहायता देने का वचन दिया है। मैं उसे यहाँ नहीं लाना चाहता था। वह हम पर एक भार सी पड़ जाती।"

"आपने मना किया?"

"क्यों क्या ठीक बात नहीं थी?"

"किरण सरला के प्रति बहुत उदासीन थी।"

"यह तो अपना-अपना विचार है। मगर वह हमारी बहुत बातें जानती है। वह चाहती तो हम सब लोगों को पकड़वा देती। वह अपने पिताजी से भी मजूरों के पीछे झगड़ती है। यदि वह बात ठीक ठीक समझ जाय तो हमारे बहुत काम आ सकती है। पिता से वह डरती नहीं है। सही न्याय की माँग करती है। वह आजकल बहुत भावुक बन गई है। कल उसका जन्म है। वह मुझसे भीख माँगती थी कि मैं उसके पिता के प्राणों की रक्षा करूँ। मैंने उसे कोई आश्वासन नहीं दिया। अपने विवाह के अवसर पर उसने मुझे बुलाया है।"

"आप जावेंगे ?"

"नहीं, मेरी आज व्यक्तिगत कोई हैसियत नहीं है। मेरा वहाँ जाने का प्रभाव मजूरों पर अच्छा नहीं पड़ेगा। कल उसने कुछ आवश्यक कागज देने का वादा किया है। वह पिता के मजूरों के साथ समझौते वाली फाइल चोरी करके हमें देगी। उससे हमें उस पक्ष की बातें समझने में आसानी होगी और हम अपनी माँगों को उसी के अनुसार बढ़ कर रख सकेंगे।"

"क्या यह सच कह रहे हो ?"

"हाँ विपिन, वह बहुत तेज लड़की है। छोटी छोटी बातों की परवा नहीं करती।" कह कर नवीन ,चुप हो गया। वह बहुत थक गया था। ऊंघने लगा।

"अब सो जाओ।" ,कहकर विपिन ने चारपाई पर बिस्तर बिछा एक बार उस नवीन की ओर देखा। नवीन चुपचाप लेट गया। उसने 'पिस्तौल' ठीक तरह देख कर चुपचाप सिरहाने रख दी। वह सो गया। विपिन को बड़ी देर तक नींद नहीं आई। वह नवीन की बात पर सोचने लगा। वह व्यक्तिवादी क्रान्ति का पक्षपाती नहीं है। यह बात वह सुन चुका है। किरण नवीन की इस बात से

सहमत नहीं है।। उसकी धारणा है कि इस प्रचार से वे कमजोर पड़ रहे हैं। जो रोमांचकारी भावना हत्या करके जनता में जागृति फैलाने की है, उससे यह बहुत सस्ता प्रचार है। यह तो सेवा-समिति का सा कार्य है। वह नवीन से कुछ नहीं कहती, कारण कि सुरेश ने नवीन को यह भार सौंपा था। नवीन में औरों की तरह जोश भी विपिन नहीं पाता है। नवीन ने तो एक नई क्रान्ति की बात कही है। क्या वह संभव होगी!

—नवीन सुबह को देर से सोकर उठा। जाली लगी हुई खिड़कियों से धूप भीतर झाँक रही थी। विपिन वहाँ नहीं था। वह बड़ी देर तक चुपचाप वहाँ पड़ा रहा। अभी तक भारी थकान लगी हुई थी। नौ बजे विपिन आया। बोला, "मैंने परचे बँटवा दिए हैं। अब मिल जा रहा हूँ।"

पूछा नवीन ने, "वहाँ का क्या हाल है? अब तो मुझे आशा है, कि वातावरण शान्त हो गया होगा।"

"हाँ, मेरा अनुमान भी यही है। लोग परेशान हैं। पुलीस ने गुण्डों से समझौता करके मजदूरों को उभाड़ने के लिए कहा है। कुछ मजदूर टूट रहे हैं। वे काम पर जाने को तैयार हैं। आज हड़ताल का आठवां दिन है। कल की गोलियों से उन लोगों में काफी आतंक छाया हुआ है।

"तब तो कुछ समझौते की सूरत तुरन्त निकाल लेनी चाहिये। वे लोग भी अभी कुछ दे देंगे। यदि हमारा पक्ष कमजोर पड़ गया तो फिर उसका प्रभाव अच्छा नहीं होगा। वे लोग सारे संगठन को नष्ट कर देंगे। हड़ताल के नेताओं और उससे सहानुभूति रखने वाले लोगों को अलग करने में उनको कोई कठिनाई नहीं होगी। कई स्थानों पर ऐसा हुआ है। और लोगों का क्या कहना है?"

"वे हमारी बात मानने के लिए तैयार हैं। आपकी बातों का उन पर अच्छा प्रभाव पड़ा है।"

"इसीलिए विपिन मैंने कल सब बातें साफ कर दी थीं। हम एक नए जमाने में प्रवेश कर रहे हैं, जो कि पिछले से सर्वथा भिन्न है। अब हमें मजूरों की संस्था का भार उनको ही सौंप देना चाहिये। हड़ताल ने कई परिवारों पर असर डाला है। सब के घरों की माली हालत अच्छी नहीं है। अतएव यह भी देखना होगा कि उनकी रक्षा हो। वालंटियर तुरन्त वहाँ भेज दो। रुपयों की माँग नागरिकों से करो। कल मिल मालिकों ने कुछ शर्तें किरण के आगे रखी थीं। उनको सावधानी से जाँचना है। उनसे कह देना कि हमारी कमेटी उन पर विचार कर रही है। पहला सवाल साफ है कि जो मजूर निकाले गए हैं, उनको बिना किसी शर्त के वापिस ले लेना होगा। देखना है कि समझौता क्या रूप लेता है। हरएक बात ठंडे दिल से सोचना है। जोश का कोई सवाल नहीं उठता है। मैं हर हालत में अच्छा समझौता पसन्द करूँगा। कल की घटनाओं ने सारी स्थिति बदल दी है। तुम जल्दी चले जाओ। कुछ लोग जो समझदार हों वे वहाँ धरना दे सकते हैं। और लोगों को वापिस उनके घरों को भेज दो।"

"अच्छा नवीन......!"

"जाओ दोस्त, बुद्धि से काम लोगे तो बात सुलझ जावेगी। हर एक बात को तोल लेना। किसी भी हालत में कोई झगड़ा नहीं होना चाहिये। किन्तु यदि वे लोग उतारू हो जायँ और पुलिस गोलियाँ चलाए, तो सबको वहीं डटा रहना पड़ेगा; फिर पीछे भागना उचित बात नहीं है। मेरा तो विश्वास है कि तुम सब कुछ ठीक तरह निभा लोगे।"

नवीन अधिक नहीं बोला। विपिन चला गया था। उसने विपिन को जाते हुए देखा और चुप रह गया। अब वह उठा और हाथ मुँह

धो लिया। स्वस्थ होकर बाहर निकल पड़ा। वह स्वयं दूर से सारी स्थिति को समझ लेना चाहता था, ताकि समय पर मोर्चा बदल सके। वातावरण में बहुत गरमी थी और किसी भी समय वह उभर सकता था। लोगों में उसने देखा कि वह कल वाली उत्तेजना नहीं थी। उसके साथियों ने रात भर जो प्रचार किया उसका असर अच्छा पड़ा था। केदार की मौत का ताजा घाव अब बासी बन कर दुखने लगा। सब के चेहरों पर उस दुःख की गहरी छाप थी। मालूम हुआ कि पाँच और भी मजूर अस्पताल में मर गये थे। वह चुपचाप आगे बढ़ रहा था। उसने देखा कि सड़कें सजी हुई थीं। केदार की लाश उन सड़कों से गुजरी थी, जहाँ कि चारों ओर बन्दनवार और झंडियाँ टँगी हुई थीं। वह उसका कैसा स्वागत था? उसने एक आदमी को रोक कर पूछा, "क्या यहाँ कोई जलसा होने वाला है?"

"नहीं बाबू।"

"यह सजावट किस लिए है?"

"आज बारात आने वाली है।"

ओ' सरला की शादी थी आज। केदार की मौत के बाद का यह उत्सव! किसी ने भारी चोट उस पर की। सरला के विवाह के लिए सारा शहर सजाया गया है। कल केदार के पीछे भी तो जनता का जुलूस था। सरला को वह भूल जाना चाहता है। उससे उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। वह तो चाहती थी कि नवीन कुछ आदेश उसे दे दे। वह नवीन की बात की अवज्ञा नहीं कर सकती है। उसने अपने मन में एक विद्रोह पाल लिया है। जिसे लेकर वह उस नए गृहस्थ में पहुँच जावेगी। आज तो सरला स्वतंत्र है। पिता के घर में सम्मान है, उसे कल यहीं छोड़ कर वह दूर चली जावेगी। इस शहर और उस परिवार से उसका नाता टूट जावेगा। नवीन शक्तिशाली होता तो वह उसे जरूर आश्रय दे देता। सरला नया बल उसे प्रदान करती और वह

अपने संगठन कार्य में नए उत्साह से जुट जाता। वह जब बहुत थक जाता है तो चाहता है कि कहीं टिक कर आराम कर ले। वह नारी की ममता का भूखा है। वह अब तक अकेली खड़ी थी। पति के साथ सात भंवरे हो कर वे दोनों जीवन के एक नए सूत्र में बँध जावेंगे। जाति, परिवार और समाज—मनुष्य के विकास के साथ इनका निर्माण भी हुआ है।

वह सरला को बार-बार आगे जाना अनुचित लगा। सरला कभी कुछ नहीं कहती थी। वह साफ साफ बातें कह देती तो शायद वह उसकी बातों पर विचार करता। नवीन एक व्यक्ति है वह अपने मन में कुछ सोचे, वह स्वतंत्र सा है। मन का हल्ला दब गया था। सड़कों पर लोग बढ़ रहे थे। वह मिल का रास्ता है। वह एक गली की ओर मुड़ गया। संकरी गली थी। उसी के भीतर चलता रहा। गली के दोनों ओर ऊंचे-ऊंचे मकान खड़े थे। गली साफ थी। वहाँ हजारों मध्यवर्गी परिवार बसेरा लेते हैं। दीवारों पर सिनेमा तथा कई और विज्ञापन टंगे हुए थे। एक महिला ऊपर मंज़िल से एक टोकरी लटका कर तरकारी वाले से तरकारी ले रही थी। लड़के और लड़कियाँ स्कूल जा रहे थे। कुछ बाबू लोग अपनी साइकिल के केरियर जी पर फाइलें बाँध रहे थे। नुक्कड़ वाले दूकान पर जो पान की दुकान थी, वहाँ बहुत से लोग इकट्ठा हो रहे थे। वह और आगे बढ़ गया। कुछ मैली-कुचैली गलियाँ पार कर मजूरों की बस्ती में पहुँचा। वहाँ फूस की झोपड़ियाँ थीं। वहाँ की गंदगी को देख कर उबकाई आने लगी। वह वहाँ चलता-चलता एक झोपड़ी के भीतर पहुँच गया। देखा कि वहाँ कुछ लोग बैठे हुए थे। उसे देख कर वे अचरज में पड़ गए। नवीन बोला, "विपिन ने मुझे यहाँ भेजा है; वह मिल गया है। आप लोग आज अपने घरों पर ही रहें। यह परीक्षा का वक्त है। जरा हम चूक जावेंगे तो कठनाई पड़ेगी। आप लोग बहुत बहादूर हैं।

एक दूसरे के कान में चुपके बोला, "नवीन बाबू हैं।"

नवीन का नाम वे सब सुन चुके हैं। वे अब उसे देखते ही रह गए। कहा नवीन ने, "आप लोगों ने आज का परचा पढ़ा होगा। अभी आप लोगों की हड़ताल चलेगी। कमर कस लेनी चाहिए। एक परिवार को दूसरे की मदद करनी होगी। आप लोग बड़े-बड़े लंगर खोल कर खाने की व्यवस्था संभालेंगे। हिम्मत हारने से दुश्मन मजबूत पड़ता है। आप लोग क्या सोच रहे थे, मुझे बताइए? शायद मैं उस पर ज़्यादा प्रकाश डाल सकूँ।"

"कुछ नहीं—केदार की बातें हो रही थीं। वह हमारे बीच सब से मजबूत आदमी था।"

"इसलिए तो उस पर पहला हमला हुआ। अभी आप लोगों के और नेताओं पर भी हमला होगा। और सब लोग कहाँ हैं?"

"कुछ खाली बैठे हैं। बाकी मिल की ओर तमाशा देखने के लिए चले गए हैं। अब तो अधिक दिन काम नहीं चल सकता है। आमदनी का कोई रास्ता नहीं। सब घर के लोग भूखे मर रहे हैं"

नवीन ने उस व्यक्ति की ओर देखा। उसकी आँखें गड्ढे में धँसी हुई थीं। वह नर-कंकाल मात्र लगता था। तो वह बोला, "बिना त्याग के कभी सफलता नहीं मिलेगी। आप लोग और सब्र करें। रुपए का प्रबन्ध किया जा रहा है। कल तक यहाँ आप लोगों की अपनी राशन की दूकान खुल जावेगी।"

तभी एक लड़का भीतर आकर बोला, "झब्बो की माँ की हालत अच्छी नहीं है।"

"क्या हुआ?" नवीन ने पूछा।

"परसों से वह बेहोश है। उसका बच्चा होने वाला है।" फिर उस लड़के से पूछा, "क्या हाल है रे?"

"दाई कहती है कि शायद बच्चा पेट में ही मर गया है। अब

डॉक्टरनी के बिना काम नहीं चल सकेगा। वह बहुत घबरा गई है।"

नवीन यह सुन कर उठा और बोला, "मैं डाक्टरनी को बुला कर ले आता हूँ।" वह बाहर आया। सोचता-सोचता रहा कि वह कितना गंदा मोहल्ला है। जिसका कि वातावरण बहुत अस्वस्थ है। बिल्कुल मैली-कुचैली बस्ती है। वहाँ एक बड़ी तादाद वाले परिवार रहते हैं। वे अपनी मजबूरी के कारण कुछ पीढ़ियों से यहाँ गुजर कर रहे हैं। इन लोगों का जीवन मूल्यवान नहीं है। औरतें दरवाजे के बाहर राख की ढेरियाँ लगा देती हैं। उसी में बच्चे खेला करते हैं। उधर ही कोई लड़का टट्टी पेशाब कर देगा। कच्ची मिट्टी की दीवारों वाली झोंपड़ियाँ हैं। ऊपर टूटे-फूटे खपरलों से छाई हुई हैं। दरवाजे रात को घास और बाँस के बने हुए टट्टरों से ढक दिए जाते हैं। एक-एक कमरे में पूरा परिवार अपनी गुजर करता है। पुरुष हैं, उनको देखकर डर लगता है। उनका स्वरूप बहुत भद्दा है। श्रीहीन निर्जीव औरतें हैं। बच्चे तो मानो शाप-ग्रसित आत्माओं की भाँति उस नरक में पड़े हुए हैं। ये नागरिक हैं। समाज पर उनका भी पूरा-पूरा दावा है। लेकिन उस समाज ने कभी इनको उठाने की चेष्टा नहीं की। वे औसत दरजे के नागरिक नहीं हैं। वे एक निम्न-कोटि के मजदूर हैं, जिनसे समाज कोई जिवित सम्बन्ध रखना हितकर नहीं समझता है। उनकी अपनी कोई हैसियत नहीं है, कारण कि वे बहुत गरीब तबके के लोग हैं।

यदि वह औरत मर जावेगी तो क्या होगा? वह दाई भार लेने में असमर्थ है। नवीन उन लोगों का जीवन देख कर दंग रह गया। बच्चों की शिक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं है। औरतों का जीवन...! वह वहाँ का सही रूप देख कर दंग रह जाता है। वह तो आगे चौड़ी सड़क पर बढ़ गया था। अब उसने सन्तोष की साँस ली। वहाँ तो उसका गला घुट गया था। वह अपने को देखने लगा कि कहीं वह

मैल उस पर तो नहीं चिपट गया है। वह अस्पताल पहुँच गया था। डाक्टरनी से बातें करके उसे ताँगे पर ले आया। आखिर एक घन्टे के बाद मरा बच्चा हुआ। नवीन को कई बातें समझा कर वह डाक्टरनी चली गई थी।

वह स्त्री बच गई। अब वह होश में आ गई थी। हठात् ख्याल आया कि वह तारा भी माँ एक दिन बनी थी। सरला आगे माँ बनेगी। वह किरण को बार-बार पहचान लेना चाहता है। वह इतनी निठुर क्यों है। वह क्यों सरला के पिता की हत्या करवाना चाहती थी। वह अपने पुराने संस्कारों को नहीं भूल सकती है। वह नई जागृति को नहीं समझ पाई है। वह उसे सारी बातें समझावेगा, तो वह उसकी बातें स्वीकार कर लेगी।

वह बाहर टहल रहा था। तभी एक मजूर आकर बोला, "आप खड़े-खड़े क्या कर रहे हैं?"

"मैं!" नवीन अचकचाया। उस व्यक्ति की ओर देखा।

"मैं आपका आभारी हूँ। आपने मेरी स्त्री के प्राणों की रक्षा की है।"

"वह तो मेरा कर्तव्य था।"

"आप भीतर बैठ जावें।"

—नवीन भीतर जा कर बैठ गया। उस युवक की ओर देखा। वह मुरझाया हुआ खड़ा था। वे लोग उस बच्चे को ले गए थे। वह पिता था। यह उसका पहला बच्चा था। वह सुन चुका है कि वह तन्दुरुस्त और सुन्दर लड़का था। डाक्टरनी ने कहा था कि इतने स्वस्थ लड़के उसने कम देखे हैं। बच्चे की परवा नहीं हुई। वह बहुत कमजोर थी।

पूछा नवीन ने, "कहाँ से आ रहे हो?"

"मिल गया था।"

"मिल ! वहाँ का क्या हाल है ?"

"वहाँ बहुत से लोग पहुँच गए हैं। हड़ताल हो रही है। विपिन को पुलीस ने पकड़ लिया है। कुछ और लोगों को भी वे लोग पकड़ कर ले गए हैं।"

"फिर क्या हुआ ?"

"लोगों में जोश फैला। पुलीस गोलियाँ चलाने लगी। लोगों में भगदड़ मच गई है। पुलीस से हमें यह आशा नहीं थी।"

"हड़ताल टूट गई ?"

"नहीं ज्यादातर लोग डटे हुए हैं।"

"तब मैं वहाँ जाऊँगा।" कह कर नवीन उठा।

"आपका जाना ठीक नहीं है। आप भी गिरफ़्तार हो जावेंगे।"

"मैं।"

"विपिन बाबू ने यही कहलाया है कि आप मिल कदापि न जावें। वहाँ और लोग हैं। और कहीं आपको छुप कर रहना होगा। वहाँ के लोग जनता को समझा रहे हैं कि पुलीस के बहकावे में आकर उत्तेजित न हो जावें। आज लोग घायल बहुत हुए हैं।

"मैं कहाँ तक छुपा-छुपा फिरूँगा, बात समझ में नहीं आती।"

"चलिए मैं आपको वहाँ पहुँचा दूँ, जहाँ कि सब लोग इकट्ठा होंगे।"

"क्या विपिन के घर नहीं जाना होगा।"

"वहाँ से आपकी सब चीजें हटा दी गई हैं। उस स्थान पर पुलीस का पहरा होगा। आज पुलीस रात को और लोगों को गिरफ़्तार करने की सोच रही है। सुना कि वे सूची तैयार कर चुके हैं।"

नवीन को चुप देख कर वह बोला, "मैं कल वाली बैठक में था। आपकी बातों से सहमत हूँ।"

नवीन चुपचाप कुछ सोच-सा रहा था। वह एक बार दूर से वहाँ

की हालत देख कर फिर लौट आवेगा। अब उनको दूसरा मोर्चा ले लेना चाहिए। मिल जाना कुछ आवश्यक नहीं है। उनको हड़ताल प अपनी सारी शक्ति केन्द्रित कर देनी चाहिए। वह बोला, "आप मेरे साथ चलें तो एक बार मैं सब देख आता। फिर सब लोगों को मल कर आगेका कार्यक्रम तय करना होगा।"

"आपको वहाँ नहीं जाना चाहिए। आप कहीं पकड़े गए तो बड़ी कठनाई पड़ जायगी। यहाँ का आन्दोलन हमारे हाथ से निकल जायगा।"

"तो मुझे जहाँ जाना है बता दो। फिर सब लोगों को सूचना दे दो। मैं आज अपने हाथ में सारा भार ले लूँगा।"

वह तैयार हो गया। उसकी पत्नी घर पर बीमार है लेकिन उसे उसकी चिन्ता नहीं थी। वह तो आज एक बड़े भार को संभाले हुए है। नवीन ने सोचा कि उसका जाना अनुचित होगा, बोला, "तुम यहीं रहो। मै किसी और के साथ चला जाऊंगा। तुम्हारी पत्नी की हालत ठीक नहीं है। घर पर भी कोई नहीं है। अभी किसी को अस्पताल ही जाना होगा।"

"मैंने सारा प्रबन्ध कर लिया है। घर के उत्तरदाइत्व के ऊपर आज एक और जिम्मेदारी हमारे ऊपर है। वह सैकड़ो परिवारों का सवाल है। इस समय हम घर के छोटे-छोटे झगड़ों में फंसे रह जावेंगे तो और अपने कर्तव्य से च्युत होंगे। आप न आए होते तो बीसियों औरतों की तरह वह भी मर गई होती। अब तो आपने पुनर्जीवन दिया है।"

"यह किसने सिखलाया है।"

"मैं विपिन जी का चेला हूँ। उनको मैंने अपना गुरू बनाया है। वे हम कुछ नौजवान लड़कों को रोज शाम को पढ़ाते थे। आज यहाँ का संगठन केदारजी और उनका ही बनाया हुआ है। पहले से अब मजदूरों की हालत बहुत सुधरी हुई है। पहले तो बहुत अपमान सहना

पड़ता था। सारा नरक का-सा जीवन था।"

—नवीन बाहर आया। वह खड़ा-खड़ा इधर-उधर देखने लगा। वे ही औरतें बच्चे और मर्द! वही-वही गन्दगी चारों ओर फैली हुई थी। बार-बार मन में उबकाई उठती थी। वह जानता है कि आज तक वे वर्षों से कुचले गए हैं। अब उनमें नई चेतना आई है वे एक जागरूक-शक्ति में परिणित हो गए हैं। वे अपने अधिकारों के लिए मर जाने को तैयार हैं। उनका संगठन मजबूत होता जा रहा है। उसे पुलीस और फौजें कल आसानी से नहीं तोड़ सकेंगी। वह उनको असहाय मानने के लिए तैयार नहीं था। उसे तो लगता था, कि वे सही माने में क्रान्ति के दूत बनेंगे और यह जन-क्रान्ति ही आजादी लावेगी। राष्ट्र का हित भी उनके द्वारा ही होगा। केदार की मौत और उन लोगों की मौत बेकार नहीं जा सकती, जो इन लोगों के लिए मरे हैं। अब वे अपनी शक्ति के साथ सबल बन जावेंगे। सब के लिए रोटी ········; जो जमीन जोतते हैं वे उसके मालिक होने चाहिए। जो अनाज पैदा करते हैं, उनको पहले पेट भर कर खाना मिलना चाहिए। मजूरों को उनका पूरा हक देकर ही मालिकों को मुनाफा सोचना पड़ेगा। इन मिलों के पीछे किसान गाँवों से अपना नाता तोड़ कर आए थे। नवीन ने कहीं पढ़ा था, 'मजूर का अपना कोई देश नहीं है। जो उनके पास है ही नहीं, उसे हम छीनेंगे कहाँ से!···क्रान्ति! क्रान्ति में पहला काम जो मजदूर-वर्ग को करना है, वह है अपने को शासक-वर्ग के रूप में परिणित करना, जनतंत्रता के युद्ध को जीतना।'

नवीन जानता है, कि मजदूर-वर्ग अपनी प्रधानता धीरे-धीरे समाज में बना लेगा। वह वहाँ अधिक नहीं ठहरा। चुपचाप उस व्यक्ति के साथ निकल गया। रास्ते में एक धाबे में वह खाना खाने लगा। तंदूर की मोटी रोटियाँ थीं। अधिकतर स्टेशन के कुली वहाँ बैठे हुए खाना खा रहे थे। वह उनकी बातें सुनने लगा। वह मिल वालों

हड़ताल उन लोगों पर प्रभाव डाल चुकी थी। पुलीस और मालिकों के व्यवहार से असन्तुष्ट होकर वे भी उनको बल देने के लिए हड़ताल करने का निश्चय कर चुके थे। मजदूर सभा ने बिजुलीघर के मजदूरों से बातचीत की और वे उसका विरोध करने के लिए तैयार थे। नवीन को इस प्रगति की आशा थी। अपनी धारणा की सफलता को वह मन के भीतर दबा कर चुप रह गया। वह चुपचाप खाना खाता रहा। चार तंदूर की मोटी रोटियाँ खाकर उसने साँस ली। वह बहुत भूखा था।

उसने स्टेशन पर से आज का अखबार मँगवा लिया। वे दोनों रेल की पटरी के किनारे वाली बटिया पर चलने लगे। एक टीले पर बैठ कर वह अखबार पढ़ने लगा हड़ताल का साधारण सा जिक्र था मानो कि कोई खास बात न हुई हो। वही कुछ गुंडों की शरारत और पुलीस का गोली चलाना। सामने रेल की लइनें थीं। एक सरकारी टिप्पणी पढ़ कर वह अचरज में पड़ गया। किसी षड़यंत्र में उसका हवाला भी था और पुलीस ने उसे पकड़ने के लिए एक हजार रुपए के इनाम की घोषणा की थी। वह हँस पड़ा। तभी एक सवारी-गाड़ी खटर,-खटर,-खटर, करके निकल गई। उससे कई मुसाफिरों के चेहरे बाहर झाँक रहे थे। गाड़ी की खटर-खटर कुछ देर तक कानों में पड़ती रही। वह युरोप के समाचारों को पढ़ने लगा। जहाँ कि हिटलर और मुसोलिनी अपनी विजय-यात्रा करते जा रहे थे। दक्षिण-अमरीका में दो देश आपस में युद्ध कर रहे थे। चीन में भी आपसी संघर्ष चल रहा था। वह उन खबरों पर सोचने लगा। रोज सुबह को नई-नई खबरें समाचार पत्र जनता को देते हैं। उसमें विज्ञापन होतें हैं, खाली स्थान, नौकरियाँ, सिनेमा तथा कई व्यापारी कम्पनियों के अपने माल की तारीफ वाले प्रमाणपत्र! व्यापारिक-जगत में भाव-तोल का व्योरा होता है। कहीं किसी नेताजी का व्याख्यान छपा होता है, जो समाजवाद का प्रचार करना चाहते हैं। कहीं अखंड कीर्तन होता है। रेडियो का

कार्यक्रम, अदालती बातें खेल.......!

उसका साथी कुछ देर में आने का वादा करके गया था। नवीन ने अखबार रख दिया। चेहरे पर हाथ फेरा तो दाढ़ी काँटों की तरह चुभने लगी। वह तो अपने पूर्व का वनमानुष सा लग रहा होगा। आज वह सामाजिक जन्तु बन गया है और उससे अलग नहीं रह सकता है। फिर वह कुछ सोचने लगा। सूर्य डूबने लगा था। शाम हो आई थी। एकाएक कोई हृदय में बोला, आज सरला की शादी है। अखबार में उसकी थोड़ी चर्चा थी। शायद जो गाड़ी अभी स्टेशन पहुँची है, उसी से बारात आई होगी। उसका मन उमड़ आया। वह फिर एक गीत गुन-गुनाने लगा। वह गीत उसने 'लैला-मजनू' में सुना था। वह हँस पड़ा कि वह भी उस पुराने युग में होता तो.......! सरला की याद खो गई। सामने एक उलझा प्रश्न था। अब उसे क्या करना है। आज की स्थिति कल से सुधरी हुई नहीं थी। वे मजदूर उसके हाथ से निकलते जा रहे हैं।

अब उसने विपिन का दिया हुआ सुबह का पर्चा पढ़ा। केदार की आत्मा की शान्ति तथा उसकी कुर्बानी की बहादुरी की गई थी। जो बातें नवीन ने कही थीं, वे ही थीं। उसे विपिन को पुलीस पकड़ कर ले गई थी। वह किसी गहरे चिन्तन में पड़ गया था। नवीन खड़ा हुआ। उसने देखा कि सामने रास्ते पर एक पुलीस वाला मानो उसे देख कर साइकल से उतरा हो। अब वह अपनी साइकल को देखने लगा और जंजीर चढ़ा कर आगे बढ़ गया था।

सोचा नवीन ने कि सरला के पिता भी कम अपराधी नहीं हैं। क्यों वे पुलीस की सहायता लेने तुले हैं। किरण ने उनसे समझौते की चर्चा चलाई थी। फिर उसके बाद पुलीस को बुलाने का प्रश्न नहीं आता। उन्होंने ही पहले मिल बन्द कर देने की धमकी दी थी। हड़ताल तो बाद को शुरू हुई। वह सरला से यदि कहता कि तेरे पिता

कसूरवार हैं। इन हत्याओं की जिम्मेवारी मैं उन पर लगाता हूँ। उनको गोली से उड़ा देना चाहिए। वे नगर के बहुत प्रतीष्ठित व्यक्ति हैं। उनको समझ से काम लेना चाहिए था। लेकिन वे अपने मद में चूर हैं। उनको मजदूरों की फिक्र नहीं है। वे न जाने कितना अधिक मुनाफा नहीं करते हैं; पर मजदूरों का उसमें कोई हिस्सा नहीं होता है। मैं चाहता हूँ, तुम मुझे स्वीकृति दे दो। मैं कर्तव्य के आगे झुक जाता हूँ। सरला क्या कहेगी? वह अपने पिता के प्रति बहुत विश्वास करती है। नवीन एकाएक खिलखिला कर हस पड़ा। वह क्या नाटक खेल रहा है?

अब उसका साथी लौट आया था। वे कुलियों की बस्ती में पहुँच गए। एक जगह पहुँच कर उस युवक ने ताला खोला। नवीन से बोला कि आप यहाँ बैठें। रात तक सब आ जावेंगे। आश्चर्य से नवीन ने देखा कि वहाँ उसकी चीजें पहले ही पहुँच गई थीं। उसके चले जाने पर उसने कुंडी भीतर से चढ़ाला। अपना हॉल-डोल खोल लिया। वह अपनी पिस्तौल को देख रहा था, जिसको आज उसे अब कोई जरूरत नहीं है। आज स्टेशन पर कुलियों ने पहले-पहल उसकी उम्मीद पूरी की थी कि अब एक नया युग आ गया है। उसका स्टील गरम सा था। उसकी एक गोली से प्राण आसानी से निकल जाते हैं। मानव, गुड्डे की तरह एक गोली में निर्जीव हो जाता है। केदार को गोलियां लगी थीं। वे गोलियां आज फिर चली हैं। उनको आज गोलियां चलाने में हिचक नहीं होती है। वे इस नए आन्दोलन को हर तरह से कुचल डालना चाहते हैं।

उसने एक बार फिर अखबार पर सरसरी नजर डाली। क्रिकेट की मैच का हाल पढ़ने लगा। फिर एक षणयंत्र के मुखबिर का बयान पढ़ा। उसने नवीन को दोषी साबित किया था। यद्यपि नवीन का

उससे कोई खास सम्पर्क नहीं था। वह सरला की चिट्ठी को फिर एक बार पढ़ना चाहता था। वह पछताने लगा कि उसने इस पत्र को उस तरह क्यों फाड़ डाला था। वह किरण सरला को व्यर्थ दोषी ठहराती है। सरला ने कभी उसके लिए बेड़ियां नहीं बनाई थीं। वह चाहती, नवीन……; नहीं नवीन ने सोचा, सरला ने एक महान त्याग किया है कि उसे स्वतंत्र कर दिया। वह बहुत उदार है। फिर भी वह अपने हृदय को नहीं मना सकती है। वही भावुकता का उफान फूट निकाला और वह पत्र लिखने के लिए बाध्य हो गई। क्या वह नवीन से उसके उत्तर की आशा करती होगी। नवीन को कुछ नहीं लिखना है। वह सरला से दूर सा है। वह उसे अपने समीप नहीं पाना चाहता है। वह सरला को देखना चाहता है कि किस तरह वह गृहस्थी की धरती पर पनपती है। कभी वह उसके यहाँ भविष्य में जावेगा। तब वह इतनी भावुक नहीं होगी। नवीन हॉल-डॉल अच्छी तरह फैला कर लेट गया। उसने एक किताब निकाली। पढ़ने लगा। आखें मुँद गई थीं। वह सो गया।

—संध्या बीत चुकी थी। कोई दरवाजा खटखटा रहा था। नवीन की नींद टूट गई। उसने घड़े पर से पानी लेकर मुँह धो लिया। फिर एक गिलास पानी पिया और सांकल खोल दी। कुछ लोग भीतर चले आए। रात पड़ चुकी थी। एक ने लालटेन जलाई। उसकी धुँधली मैली रोशनी कमरे के चारों ओर फैल गई। नवीन ने एक से बीड़ी लेली और फूँकने लगा। उसके माथे पर भीनी-भीनी पीड़ा हो रही थी। कभी वह कनपट्टी के पास तेज हो जाती थी।

एक ने टाट बिछा दिया। सब लोग उस पर बैठ गए। अब नवीन सारी बातें सुन लेना चाहता था। कुछ सोच कर उसने दिन वाले युवक से पूछा, "पाँच ही आप लोग आए हैं।"

"हाँ, केवल विश्वसनीय लोगों को ही लाया हूँ।"

"आज क्या हुआ ....?"

"चार मरे, तेइस घायल और बयालीस गिरफ्तार..... ...।"

नवीन चुपचाप कुछ सोच कर बोला, "सब बातों पर गम्भीरता से विचार करना होगा। आप लोगों को क्या कहना है। आप लोगों के सुझाव सुनना चाहूँगा।"

एक नवयुवक उत्तेजित होकर बोला, "कल और आज मिला कर नौ मरे, सत्तर घायल हूए और साठ पकड़े गए हैं। पुलीस ने मजदूरों की बस्तियों में तक जाकर आतंक जमाया है। कई औरतों तक को वे घर से बाहर घसीट कर लाए। उनकी छातियों पर बन्दूक के कुन्दे मार कर कहने लगे—तुम उन मर्दों को क्यों नहीं रोकती हो। बहुत अश्लील गालियाँ दी हैं। हम सब लोग तमाशा ही देखते रह गए।"

नवीन ने दूसरे से पूछा, 'आज गोलियाँ क्यों चली हैं? क्या बात हुई थी? हमने तो शान्ति पूर्वक धरना देने की ठहराई थी।"

"पहले तो शान्ति रही। लेकिन भीड़ बढ़ती चली गई। कुछ गुँडों ने पुलीस पर ईंटें फेंकनी शुरू कर दीं। पुलीस ने फिर तो.........!"

तभी दूसरा बोला, "पुलीस तो सुबह से बैठी-बैठी ऊब गई थी। उन्होंने वह अपने आदमियों से शरारत कराई थी।"

तीसरा बोला, "हमारी बस्तियों-बस्तियों में पुलीस वाले जा-जा कर कहते हैं कि और हड़ताल की जायगी तो अभी और खून-खराबी होगी। सुना है कि मशीनगनें आ रही हैं। फौजें बुलवाई गई हैं। शाम को ऐसा ही कुछ ऐलान भी हो रहा था।"

नवीन ने दोपहर वाले साथी को पास बुला कर कहा, "तुम सरला के पास चले जाओ। वह एक फाइल देगी। उसे ले आना। उसने साढ़े-आठ बजे पिछले पश्चिम वाले फाटक पर मिलने का वादा किया

है मेरा नाम ले लेना।"

"सरला के यहाँ?" एक आश्चर्य से बोला।

"हाँ, वहाँ से कुछ जरूरी कागजों के मिलने की आशा है। वे लोग क्या समझौता करना चाहते हैं, वह फाइल हमें मिल सके तो हमें अपनी माँगे रखने में सहूलियत होगी। इस समय हम अधिक तैयार नहीं थे, फिर यह हमला एकाएक हुआ है।"

तभी दूसरा बोला, "मैं आज भी सोचता हूँ कि हमें सरला के पिता की हत्या कर देनी चाहिये। आज वह अवसर आसानी से मिल जायगा। वहाँ सैकड़ों भद्रजन उपस्थित होंगे। उनको भी सबक मिलेगा कि गरीबों को दबाने का नतीजा क्या होता है?"

"यह तो आप लोगों की इच्छा पर है।" नवीन ने कहा। "मैं आज भी उससे सहमत नहीं हूँ। सुना है कि कल से रेलवे के कुली, बिजुली तथा पानी के कल के मजदूर आप लोगों के साथ सहानुभूति पूर्ण हड़ताल करेंगे। बाजार के दूकानदारों ने भी यही तय किया है। कलेज के विद्यार्थी आप लोगों के लिए घर-घर जाकर रुपया इकट्ठा क रहे हैं। यदि एक भी हत्या हो गई तो हमारे हाथ में जन-शक्ति इतनी नहीं रहेगी। पुलीस उन मजदूरों पर भी हमला करके आन्दोलन को तोड़ देगी।"

"आप किरण को बुलावा दें।" कोई बोला।

"वह तो मैं भी सोच रहा हूँ। कल किसी को भेज दूँगा।"

नवीन ने सोचा कि किरण को आना ही चाहिए। वह युवक अभी तक खड़ा ही था। अब वह बोला, "वे लोग समझौता चाहते हैं। हड़ताल के दिनों का आधा वेतन देंगे। सब निकाले हुए साथियों को रख लेंगे। पुलीस मुकदमा उठा देने को कहती है। बीमारी की छुट्टियाँ तथा और बातों पर वे हमारे नुमायन्दों से मिल कर बातें कर लेंगे।"

नवीन ने उससे जल्दी चले जाने को कहा। वह चला गया।

उसके चले जाने पर नवीन उठा और उसने कोने की मेज के ऊपर अपनी किताबें और पिस्तौल रख दी। कुछ देर खड़ा-खड़ा कमरे में टहलता रहा। धीमे स्वर में सब से बोला, "ऐसी परिस्थितियों में सारी घटनाओं पर विचार करके तब कुछ आगे के लिए सोचना पड़ता है। यदि हम उतावलेपन में कोई गलती कर बैठेंगे तो फिर स्थिति हाथ से बाहर निकल सकती है। यह हड़ताल ज्यादा दिन नहीं चल सकती है। पहले इसकी कोई सामूहिक तैयारी आप लोगों ने नहीं की। मैंने आज दिन को कुछ लोगों से बातचीत की वे घबराकर काम पर जनेक। तैयार हैं। हर तरह के लोग हमारे साथ हैं। हाँ आज के लिए यह एक नया अनुभव है। कोई कदम उठाने से पहले उस पर हर पहलू से सोचना होगा।"

यह कह कर नवीन ने एक से बीड़ी ली और सुलगा कर फूँकने लगा। फिर उसने सब काम एक कमिटी को सौंप दिया स्वयं उनको पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया। उसने यह भी कहा कि आवश्यकता पड़ने पर वह मजदूरों की सभा में बोलेगा। वह बहुत पीछे हटने का पक्षपाती नहीं है।

दरवाजे पर खटका हुआ था। उसे खोला और एकाएक नवीन ने देखा कि सरला और उसका साथी चले आ रहे हैं। वह अवाक रह गया। आगे बढ़ कर बोला, "तेरे आने की जरूरत नहीं थी, सरला।"

सरला ने भारी सन्देह के साथ चारों ओर नजर डाली। फिर नवीन को वह 'फाइल' निकाल कर देते हुए कहा, "मुझे किसी पर विश्वास नहीं हुआ।"

"क्यों?"

"मैं जानती हूँ कि आप लोग यहाँ पर मेरे पिताजी की हत्या करने की मंत्रणा कर रहे होंगे। आज सुबह उनको फिर छै ऐसे पत्र मिले हैं। किसी गुप्त क्रान्तिकारी दल के मंत्री की ओर से वे पत्र भेजे

गए हैं।"

"यह झूठ है।"

"मैं जानती हूँ कि किरण आप लोगों के आगे इस कसौटी को रख कर स्वयं भाग गई है। वह जान कर यहाँ से चली गई है।"

सब लोग बाहर चले गए थे।

नवीन ने सरला को देखा। वह दुलहिन वाले सब कपड़ों से सजी हुई थी। वह उर्वशी से भी सुन्दर दीख पड़ती थी। वह उसे निहार कर बोला, "तुमने यह क्या किया है, सरला! वहाँ लोग तुम्हें ढूँढ़ रहे होंगे।"

"मुझे न!" वह मेज के पास वाले स्टूल पर बैठ गई। वहाँ धुधंला प्रकाश फैला हुआ था। कुछ देर तक मानो वह अपने से झगड़ती रही। कहा फिर, "वे लोग सच ही परेशान होंगे। लग्न का वक्त आने वाला है।" कह कर उसने सुन्दर छपा हुआ निमंत्रण-पत्र एक बारपढ़ डाला। कहती रही, "मुझे आशा थी कि तुम खुद वहाँ आओगे। मैं आपसे वह बात पूछ लूँगी। आपने आने का कष्ट नहीं उठाया तो मुझे आना पड़ा है। क्या आप लोग सचमुच पिताजी की हत्या करेंगे?"

कमरे में सन्नाटा छा गया नवीन चकित था। सरला की एकाएक घिग्घी बँध गई। वह रोने लगी। फिर तेज़ी से बोली, "कुछ कह क्यों नहीं रहे हो नवीनजी। मैं जानती हूँ कि आप उस हत्या को करने के लिए उतारू हो गए हैं। लेकिन पिताजी निर्दोष हैं। उस हत्या से आप लोगों को कुछ नहीं मिलेगी। आप चुप क्यों हैं?"

सरला ने मेज पर से वह पिस्तौल उठाई और उस से खेलती रही। बड़ी देर तक न जाने क्या सोचती रही। कहा फिर, "नवीन जी तुमने कभी मुझे समझने की कोशिश नहीं की। किरण ने बार-बार आपको अपने प्रभाव से ढक लिया। एक हत्या करके उस दिन वह मेरे

पास आई थी। उस हत्यारिन का चेहरा मैंने देखा था। ओ' आप इन लोगों को छोड़ दें नवीनजी! मैं तुमको इन लोगों से चंगुल से छुड़ाये आई हूँ। मैं अपने पिता की भीख आप लोगों से माँगने नहीं आई हूँ।''

सरला ने पिस्तौल वहीं मेज पर रख दी। वह उठ कर और आगे आई। वह सरला यहाँ क्यों चली आई है। नवीन बात का समाधान नहीं कर सका। वह दुलहिन है, जिसके विवाह के अवसर पर सारा शहर सजाया गया है। वहाँ सब लोग चिन्तित होंगे। वह उसके पास आकर बोला, ''सरला अब तुम चली जाओ। तेरे पिता की हत्या नहीं होगी। मैं पहले भी तुझे समझा चुका हूँ। लगता है कि तेरी तबीयत ठीक नहीं है। किसी आदमी को साथ किए देता हूँ। विवेक से सदा काम लेना चाहिये। अब तू इतनी बड़ी हो गई है। मैं मूक आशीर्वाद तुझे कभी दे चुका हूं।''

सरला मेज के पास गई। कुछ देर वहाँ खड़ी रह, अब नवीन के आगे खड़ी होकर बोली, ''मैं तुमको लौटाने आई हूँ, नवीन। तारा ने जो उत्तरदाइत्व मुझे सौंपा था, उसे पूरा कहाँ निभा पाई हूँ?''

नवीन तो हँस पड़ा। वह हँसी सारे कमरे के भीतर गूँज उठी। सरला ने यह लौट चलने की बात आज बहुत देर से कही है। पहले कहती तो वह जरूर ही विचार करता। तारा ने चतुरता से इस नाते को गुंथ लेने की चेष्टा की थी। अपनी गृहस्थी जहाँ कि सरला होगी, वह संभव बात नहीं थी। वह लौट जाना असंभव है। क्या सरला नहीं जानती है? सरला ने सदा उसे अपने को समझ लेने का अवसर दिया। वह इसीलिए उससे दूर रहना चाहता था। किन्तु परिस्थितियों पर किसी का अधिकार नहीं होता है। उसने किशोर को भीतर बुलाया और कहा, ''किशोर एक तांगा ले आओ। मैं इनको घर छोड़ आऊँ।''

''ताँगा! ये तो 'कार' लाई हैं। मैंने वहीं पर मना किया था।

हठ करने लगीं। आपका जाना संभव नहीं है। पुलीस का कड़ा पहरा है। सुना कि आपके नाम कई जगह से 'वारंट' कटे हुए हैं। अभी-अभी पुलीस के दफ़्तर में षड्यंत्र के फरार व्यक्तियों में आपका फोटो टँगा हुआ था। आप उसमें बिल्कुल नहीं पहचाने जाते हैं। लगता था कि किसी खेल वाले ग्रुप का फोटो है।"

"लेकिन किशोर मंगल-कार्य तो होना ही चाहिए। मैं इसे पहुँचा कर लौट आऊंगा। इसका मन ठीक नहीं है। यह मेरी बहन की सहेली है। मैं अपने उत्तरादायित्व को निभा लूँगा। तुम्हारी बीबी का क्या हाल है? तुम यहीं रहना और लोगों को जाने दो। सुबह सात बजे फिर सब यहीं मिलेंगे। मैं रात को मजदूरों की सारी माँगों को लिख लूँगा। परचे के लिए मजमून ठीक कर दूँगा। तुमसे कई बातें करनी हैं।

किशोर बाहर चला गया। सब लोग चले गये थे। सरला तो गदगद स्वर से बोली, "मैं वहाँ लौटकर नहीं जाऊँगी।"

"क्या?" नवीन ने पूछा।

"वहाँ से यहाँ आना जितना आसान था; लौट जाना उतना ही कठिन है। पहली मेरी भूल कही जाय तो, दूसरी और भी भयंकर भूल होगी।"

"मेरा अनुरोध है कि तुम चली जाओ।"

"आपका!" सरला की आँखों से आँसू की बूंदें टप-टप-टप कर टपक पड़ीं। जब पहले उसने तारा को देखा था, वह भोंदू-भूत! आज वह सरला कितनी बदल गई थी। वह पहचान नहीं पाता है। वह तो भाग कर चली आई है। यह एक कठोर सत्य है। पर सरला को लौटना पड़ेगा।

नवीन सदा समस्याएँ गढ़ने से दूर रहा है। आज यह सरला एक भेद की भाँति जीवन के मध्य में खड़ी हो गई थी। वह बोला, "तुम

इतनी भावुक होगी सरला, मुझे यह विश्वास नहीं था। अब तुम बहुत लड़कपन कर चुकी हो। मैं तुमको पहचान कर ही. तुमसे कभी कोई झगड़ा मोल नहीं लेता हूँ। तुझे अपनी शक्ति पर विश्वास होना चाहिए। जीवन सदा से सत्य पर अवलंबित रहा है जिसने उसे छोड़ा वह अपने 'व्यक्तित्व' की महानता में उलझ गया। झूठे जीवन-सपनों को देखने से कभी हित नहीं हुआ है। जीवन केवल कुछ घटनाओं का समूह है, जो मनुष्य को याद रहती है। तू सामर्थवान है। मुझे तुझ से बड़ी आशाएँ हैं।

नवीन ने किशोर को बुला कर समझाया कि वह सरला को छोड़ कर अभी आवेगा। किशोर तो पहले चुप रहा। फिर कुछ सोच कर बोला, "मैं आपको वहाँ नहीं जाने दूंगा नवीनजी। यदि आप पकड़ लिये गये तो हमारा भावी कार्यक्रम रुक जायगा। शहर की हालत अच्छी नहीं है। मैं इनको छोड़ आऊंगा। मुझे विश्वास है कि सरलाजी हठ नहीं करेंगी। आप स्वयं सोचिए।"

बात सच थी। नवीन ने स्वीकार करली। सरला तो अनमनी सी बैठी की बैठी हुई थी। एक बार उसने नवीन की ओर देखा और आँखें झुकालीं। नवीन अब उसके लिए कैसा सहारा था। उसके मन में एक विद्रोह उठ रहा था। किरण ने बार-बार उसका अपमान किया है। किरण ने कहा था कि वह प्रेम की कच्ची कागजी नाव चलाना खूब सीख गई है। वह नवीन का जीवन नष्ट करना चाहती है। यह झूठी बात है। किरण फिर भी बार बार व्यंग करती थी कि वह शक्ति-शाली है और यह सरला निर्बल! वह तो इस समय भरी सभा में अपने अपराधों के लिए क्षमा माँगने आई थी। वह किरण से लड़ने आई थी। वह आवेश में भूल गई थी कि वह कल चली गई है।

सरला पिछले दिनों बहुत परेशान रही। वह नवीन से कई बातें पूछ लेना चाहती थी। जितनी उसकी समीपता की भूखी थी, नवीन

तो उतना ही दूर रहता चला गया। कभी समीप नहीं आया। उसने उसके अनुरोधों को मिट्टी के खिलौनों की तरह चकनाचूर किया। वह नवीन को जानती है कि वह बहुत कठोर है। लेकिन उसे वह क्यों कोमल बना गया था। अब वह वहाँ लौट कर नहीं जा सकती है। काफी अरसा बीत चुका है। वह उसके जीवन की एक बहुत बड़ी हार थी। यह नवीन स्थिति क्यों नहीं सुलझा देता है। उसका मन संकुचित हो रहा था। किरण तो बार-बार चुपके कान में कहती हुई लगी—मैंने झूठ बात नहीं कही थी, मेरी गुड़िया! तू अमीर की बेटी है। नवीन को जहाँ है, वहीं रहने दे। यह शुभ नहीं है। वह तेरा आकर्षण और प्रेम थोथा है। तुम लोगों के पास और कुछ काम नहीं है। नवीन को बहुत कुछ करना है। उसका जीवन अमूल्य है!

उस किरण की धमकियाँ चेतन और अचेतन सरला ने सही हैं। सरला का मन किरण के उस दावे से बार-बार टकराता था। वह क्यों सुझाती थी कि वह बहुत बड़ी है। नवीन को सही रास्ते ले जाने की क्षमता रखती है। नवीन को जितना ही किरण ने खींच लेना चाहा, सरला का मन उतना ही उद्विग्न होता चला गया। वह किरण से बहुत गुस्सा है। नवीन को भी आज क्षमा नहीं कर सकती!

वह एकाएक उठी और उसके पास आकर बोली, "आप से एक बात पूछना चाहती हूँ नवीनजी। आशा है कि आप सत्य बात बतलावेंगे।"

"क्या?" नवीन ने सरला की अबूझी आँखों की ओर देखा।

"क्या तुम पिताजी की हत्या वाले प्रस्ताव से सहमत हो?"

"नहीं।"

"तब वह बात किसने उठाई थी?"

"सरला सबकी यही राय थी।"

"जानती हूँ, यह सब किरण की करतूत होगी।"

"सरला, शहर की सब मिलों पर तेरे पिताजी का प्रभाव है। यह गोली-काँड हुआ है। कई मजदूर मर गए। कुछ घायल पड़े हुए हैं। अभी न जाने कितनों का और खून होगा। जब कि आपसी समझौते की बातचीत चल रही थी तो तेरे पिताजी ने सच ही बहुत बड़ा विश्वासघात किया है।"

"पिताजी का विश्वासघात ! क्या कहा आपने ?"

"सब लोगों का एक मत था। किरण भी विवश हो गई। मैंने उसका अब विरोध किया है। लेकिन अब तुम चली जाओ। एक घन्टा हो गया है। यह कैसी अवहेलना तू अपने परिवार वालों के प्रति बरत रही है। यह तेरा अपेक्षित अधिकार नहीं है। तुझे जल्दी लौटकर चला जाना चाहिए। चल अब !"

"एक भीख माँगना चाहती हूँ मैं।"

"क्या सरला ?"

"पिताजी की रक्षा का भार आपको सौंपती हूं। यही मेरा अनुरोध है। मैं एक साधारण स्त्री हूं। आशा है कि आप फिर भी मेरी बात की अवज्ञा नहीं करेंगे। यह मेरे लिए जरूरी नहीं है। पिताजी की हत्या मुझ से अधिक तारा के लिए दुःखदाई होगी।"

"सरला !" नवीन धीमें स्वर से बोला।

"तुमको अब क्या कहना है ?"

"जहाँ तक सम्भव होगा मैं रक्षा का वचन देता हूं। लेकिन अब तुम चली जाओ।"

"नवीनजी यह पिस्तोल हत्या करती है। जीवन का मूल्य इसके लिए एक आवाज के अतिरिक्त कुछ नहीं है। मैं यहाँ आई हूं। अब लौट कर जाना सभव नहीं है। अपनी इस सरला को माफ कर देना।

यही आखरी साधन था।"

सरला ने पिस्तोल उठा ली और एक आवाज हुई। नवीन के मुंह से हठात् छूट पड़ा, "यह क्या किया सरला!"

सरला भूमि पर गिर पड़ी थी। उसकी आँखें खुली थीं। वह पीड़ा से तड़प रही थी। केदार की तरह वह बड़ी देर तक छटपटाती रही। नवीन जोर से बोला, "किशोर डाक्टर को बुला ला।"

किशोर चला गया था। नवीन फर्श पर बैठा ही रहा। उसकी गोदी पर सरला का सिर था। उसकी छाती से खून बह रहा था। वह दम तोड़ रही थी। सरला ने एकाएक आँखें खोल कर उसे देखा और सर्वदा के लिए सो गई। उसके होठों पर स्वर्गीय मुस्कान खेल रही थी। नवीन इस घटना के लिए तैयार नहीं था। उसकी आँखो से टप-टप कर के आँसू टपक पड़े। वह कब जानता था कि सरला इस दृढ़ निश्चय के साथ आई थी कि लौट कर नहीं जावेगी। वह असमर्थ था। उसके हाथ की कोई बात नहीं थी। सरला की भावुकता पर वह दंग रह गया। उसने अपने जीवन को आसानी से क्यों मिटा डाला!

वह उसी तरह बड़ी-देर तक बैठा रहा। कई बार चाहा कि उन मुंदी पलकों को खोल कर सरला से कह दे कि उसे प्यार करता है। वह नहीं चाहती है तो लौट कर न जाय। वह वहाँ रह सकती है। पर वह अब एक लोथड़ा भर थी, निर्जीव। सरला का शरीर भारी पड़ रहा था। वह जमने सा लगा। वह बिल्कुल ठंडी हो गई। वह अपनी दुलहिन की पूरी पोषाक में थी। सारा शहर उसकी शादी के लिए सजाया गया था। कल उन ही दरवाजों से उसकी अर्थी निकलेगी। क्या सरला के भाग्य में यही लिखा हुआ था! वह यहाँ क्यों चली आई। यह कैसा होनहार था। नवीन ने उसे आश्रय देने का आश्वासन क्यों नहीं दे दिया। आज अब वह सरला उसे धोखा देकर उसके

सूचित करवा है कि वह अब कहाँ जा रहा है।

अब वह अन्धकार में बढ़ गया था। दूर सड़क पर सरला की मोटर खड़ी थी। आगे मोटरों की रोशनियाँ चमक रही थीं शायद वे पुलीस वाले कुलियों के मोहल्ले पर छापा मारने आ रहे थे। उसका दिल खूब रोना चाहता था। इतना दुःख पहले कभी नहीं हुआ था। वह घास के खेतों की ओर बढ़ गया। वह आगे-आगे बढ़ता रहा। सरला ने यह क्या ठहराई थी। नवीन जानकर भी न सोच सका कि वह दुःख में यह अनर्थ कर सकती है। पहिली बार जब सरला ने पिस्तौल उठा कर तोली थी तो उसे कुछ संदेह सा हुआ था। लेकिन फिर वह वहाँ से हट गई थी और!

जो सरला नवीन के जीवन की केन्द्र अब तक थी, आज वह उससे अलग हो गई। सरला का शिष्ट व्यवहार, उसका अनुरोध, उससे पहली जान-पहचान, उसके घर मेहमान बन कर रहना...। नहीं, वह सरला मर गई थी। अब पुलीस ने उसकी लाश ले ली होगी। उसके बंगले पर एक भारी विषाद छाया हुआ होगा। वह तो रेल की पटरी-पटरी अगले स्टेशन की ओर बढ़ रहा है। यहाँ से वह गाड़ी पर नहीं चढ़ेगा। वह शहर छोड़ कर भाग रहा है। वह डरपोक नहीं है। शहर छूट गया। वह निपट अकेला था। उसने वह पिस्तौल टटोली जिससे अभी एक लड़की की मृत्यु हुई थी। वह सरला क्यों आज उसे सदा के लिए विछोह का सदमा लगा कर चली गई है। वह मौत से नहीं डरता है। वह मन को बार-बार समझाता है कि सरला को उसने प्यार किया है। आज तक तो वह उसके लिए भी भेद सा था। सरला उसके आगे एक नारी की हैसियत से आई थी। वह उसे पहचानता है।

पहुँच गया था। सिगनल बड़ी दूर पीछे छूट गए थे। चारों ओर अंधेरा छाया हुआ था उसे डर लगने लगा। सोचा कि आदमी मर कर भूत बन जाता है! वह सरला अब क्या बनेगी। केदार, सरला……! वह तेजी से कदम बढ़ाता हुआ आगे बढ़ रहा था। वह बहुत थक गया है फिर भी लाचार है। सरला का सिर उसकी गोदी पर था उसने आँखें खोल कर मूँद ली थीं और उसके होठों की मुस्कान से लगता था कि वह बहुत सुखी है। वह अपने उत्तरदाइत्व को निभाने के लिए चला आया है। सरला के शहर में आगे भी शायद कभी वह जावे। सरला वहाँ नहीं मिलेगी।

वह तारा को पत्र लिखेगा। लिखेगा ही कि तारा सरला मर गई है। अब सरला दुनिया में नहीं है। सरला ने एक गोली से अपने प्राणों का सौदा तय कर लिया है। वह मर गई। वह उसे समझा देगा कि उसके भाई की स्थिति क्या है। कल वह उस पर कोई भरोसा नहीं कर सकती है। तारा को वह सब कुछ समझा देगा। तारा से कुछ छुपावेगा नहीं। तारा आज न सही कल उस दुःख को मोल ले ही लेगी। सरला की सब बातें वह लिखेगा। सरला ने अपने प्राण उसे दान कर दिए थे। यह लिखना भी वह नहीं भूलेगा। वह सरला तो उसके जीवन की गति के आगे खड़ी नहीं रही। उसने उस को मुक्त कर देने की ठान करके ही वह सब किया था। सरला सबल निकली। वह उसको सराहना करता है। वह आजीवन उसकी प्रतिमा को हृदय से भुलावेगा नहीं। लेकिन तारा की सेहत भली नहीं है। वह कहीं इस दुःख को न सह सके तो; ओ! एक-एक करके सब नवीन को छोड़ देना, जैसे कि चाहते हैं। कोई उसके मोह का जैसे कि भूखा नहीं है।

वह अकेला रास्ता तय कर रहा था। सरला जीवन में बहुत पीछे छूट गई थी। जो कि एक दिन उनके गाँव आई थी। वह फिर

दुलहिन बनकर उसके पास आई। उसे जीवित रहना चाहिए था। 'यह हितकर होता। सरला से वह कोई बात छुपा कर नहीं रख सका था। वह जानती थी कि नवीन का अपना जीवन नहीं है। वह भी एक बुद्धिजीवी है। वह चील की भाँति आकाश से उड़कर जमीन को देखता है वह अपने को बन्धनों से मुक्त समझ कर भी, उनमें फँसता जाता है वह मानव के पुराने इतिहास को पढ़ता है। वहां से आज की दूरी की कुछ घटनाओं पर विचार करता है। वह एक अच्छा विद्यार्थी सदा से रहा है। और पुस्तकों के ज्ञान से ऊपर जो यह दुनिया का आज का ज्ञान है। विचार बदलते रहे हैं। क्रान्तियां हुई हैं। नई मान्याताएं आईं। यह तो परिवर्तन सा था।

वह पिस्तौल छुपा करके ले आया है। अब उसका 'स्टील' बहुत ठंडा था यह अपनी रक्षा के साधन के लिए नहीं बनाई गई थी। इसका उद्देश्य था, शत्रु पर विजय पाना। ये बुद्धिजीवी अपने को नष्ट करने के लिए साधन भी ढूँढ़ निकालते हैं। हर एक का स्वार्थ फैल रहा है और आज फिर युद्ध हो रहे हैं। वह आपसी स्वार्थों की किसी तृष्णा को कब पूरा करते हैं। संसार में साधारण लोगों की हालत ठीक नहीं है। एक दूसरे को धोखा देने तुला हुआ है। हर एक देश की जनता में विद्रोह का चिंगारी फूट रही है और कुछ लोग स्वामी बन कर अपने अधिकारों को बाँटने के लिए कदापि तैयार नहीं हैं। वह मजदूरों का विद्रोह अपनी कुछ सही मांगों के लिए था कि उसके श्रम का सही मूल्य चुकाया जाय। वह सच्ची भावना थी, किन्तु दूसरा पक्ष अपने लाभ का थोड़ा भी हिस्सा बाँट लेने के लिए तैयार नहीं था। एक मानव आज दूसरे से सम्बन्ध नहीं रखना चाहता है। अपने सुख के आगे दूसरे के दुःख की चिन्ता उसे नहीं है। लेकिन सरला ने जिस कसौटी पर अपना जीवन परखा था, वह सही नहीं थी। उसे कुछ तो सोचना चाहिए था। यह अपनी अज्ञानता कभी-कभी क्या कर देगी, इसका ज्ञान

उसे पहले पहल हुआ था। नवीन का हृदय सरला के लिये उदार बन गया। वह सरला सही बात दांव पर रख कर कहती कि नवीन मैं तुमको अपना जीवन देने आई हूँ, तो नवीन उस स्थिति से उसे बचा लेता। वह दुलहिन के पूरे लिबास में आई थी। नारी का वैसा सौन्दर्य नवीन ने पहले कभी नहीं देखा था। नारी के उस रूप के आगे उसका माथा झुक जाता है।......अब सरला को किसी गृहस्थ में नहीं जाना है। उसके दिल में अकुलाहट उठी। उसका सारा शरीर चूर-चूर हो रहा था वह बहुत थक गया था। वह चाहता था कि कहीं विश्राम कर कुछ स्वस्थ हो जाय। वह एक भारी इम्तहान में हार कर आया था। केदार और सरला को खो देना बहुत बड़ी हार थी। उसका उत्तरदाइत्व सही नहीं निकला। वह अवसर चूक गया था। आज उस जन आन्दोलन में वह अपने दो प्रिय पात्रों को खो आया है।

कभी वह पहाड़ो की बात सोचता। वह उसका गाँव वह बहती हुई नदी, तारा और वह किस तरह रहते थे? उनको किसी बात की फिक्र नहीं रहती थी। मां की मौत हुई। नवीन आज अब मारा-मारा फिर रहा है। माँ की लालसा कि बहू आवेगी। माँ शायद इसी लिए मर गई कि वह स्वतंत्र हो जाय। लेकिन वह एक झूठी मृगतृष्णा का शिकार हो रहा था। वह क्यों साधारण व्यक्तियों पर टिक जाता है? वह फिर-फिर उन साधारण घटनाओं को बहुत महत्व दे देता है। अपना दायरा बेकार बहुत बढ़ाया करता है। वह चुपचाप अब आगे बढ़ रहा था। अब वह अधिक घटनाओं को फैला कर उन पर विचार करना नहीं चाहता था।

वह चौंक उठा। सामने हिरनों की एक कतार चौकड़ी भरती हुई लाइनों को पार करके निकल गई। वह उन पशुओं को देखता रहा जो इस स्वतंत्रता से रहते हैं। वे पशु हैं और उनको इन्सान की तरह व्यर्थ की झंझटों में नहीं फँसना पड़ता है। कहीं पास किसी झाड़ी से

एक लोमड़ी भाग रही थी। वह जंगल अब छूट सा रहा था। सामने रेल की पटरियों का लोहा आगे-आगे-आगे बढ़ता हुआ दीख पड़ता था। अब वह एक छोटी नदी के किनारे पहुँच गया था। वह नीचे उतरा और रेत पार कर पानी को हाथ से छू लिया। वह बहुत शीतल था। ऊपर पुल की ओर उसने देखा, जिस पर सिन्दुरी रंग पुता हुआ था। सामने उस पार कोई जानवर पानी पी रहा था। वह अब उसकी आहट पाकर भाग गया। नवीन उस पशु को पहचान नहीं सका। उसने अब अपने कपड़ों की ओर देखा। खून के दाग उन पर पड़े हुए थे। वह उनको छुड़ाने लगा। उसने अपने झोले से मैली पतलून और कमीज निकाली और उसे पहन लिया। वह उन भीगे कपड़ों को वहीं फेंक कर उठा। वे कपड़े कुछ देर तक बहते रहे। ऊपर पुल पर कोई मालगाड़ी खटर-खटर-खटर बढ़ गई। वह उठा और पुल पार करके आगे बढ़ गया। वह और आगे बढ़ा। दूर उसे सिंगनल की लाल रोशनी दिखलाई पड़ी। वह उस आशा को पाकर खिल उठा और तेजी से उधर बढ़ गया।

अब वह स्टेशन पर पहुँच गया था। वह छोटा सा स्टेशन था। वह बाहर एक दूकान पर खड़ा हुआ। वहाँ उसने दूध पिया। फिर एक सिगरेट की डिबिया ली 'और सिगरेट फूँकने लगा। पूरब जाने वाली गाड़ी आने वाली थी। उसने टिकट ले लिया। गाड़ी जब स्टेशन पर पहुँची तो वह एक तीसरे दरजे के डिब्बे में खिड़की से घुस गया। भीतर वह खचाखच भरा हुआ था। नवीन चुपचाप एक ओर बैठ गया। जब गाड़ी खुली तो उसे कुछ खुशी हुई। लगा कि वह अब तक केवल दो व्यक्तियों के लिए चिन्तित था। दुनिया बहुत बड़ी है। सारा डिब्बा मुसाफिरों से भरा हुआ था। वह भीड़ उसे बहुत पसन्द आई। लगा कि वह भी उनकी ही तरह है। अब वह ऊँघने लगा। उसे नींद आ गई थी।

गाड़ी तेजी से बढ़ रही थी। नवीन चुपचाप सोया हुआ था। वह सोया ही रहा। कभी-कभी जब गाड़ी स्टेशनों पर रुकती थी तो धक्का लगता था। अब वह एक जंकशन पर उतर कर 'एक्सप्रेस' गाड़ी की प्रतीक्षा करने लगा। वह उस स्टेशन की सजावट देख रहा था। मध्य-रात्रि को भी वहाँ काफी रौनक थी। वह टहलता-टहलता रहा। फिर चाय वाले की दूकान पर खड़ा हो गया और चाय पीने लगा। उसने कुछ पेस्ट्री बिस्कुट भी ले लिए। वह बड़ी देर तक चाय पीता ही रहा। फिर वह टहलने लगा। वह कमरों के बाहर लगी तख्तियों को पढ़ता रहा। फिर उसने कई रेलवे के टंगे हुए टाइम-टेबुल वाले तख्तों को पढ़ना शुरू किया। वह एक कुली से उसके घर और गांव के बारे में बातचीत करने लगा। जब गाड़ी आई तो वह चुपचाप उसमें चढ़ गया। ऊपर बर्थ का सामा हटा कर वहां लेट गया।

—तीन बजे दिन को नवीन इन्द्रा के शहर में पहुँच गया था। वह बिना कुछ सोचे-समझे सीधे उसके घर की ओर तांगे से रवाना हो गया। वह जानता था कि वह तीन बजे तक कालेज से लौट आती है। रमेश के यहाँ जाना उचित नहीं लगा। कौन जाने उसका आफिस का समय हो? वह इन्द्रा पर जिम्मेदारी को डालना चाहता था। क्योंकि वह जानता है कि वह उसे पहचानती है फिर वह थक गया था। वह विश्राम चाहता था तांगा गलियां पार करता हुआ जब वहां पहुँचा तो वह बहुत खुश हुआ। उसे तो विश्वास नहीं था कि वह इतना बड़ा सफर इस आसानी के साथ तय कर लेगा।

अब वह कुंडी खटखटाने लगा। ऊपर से कोई बोला, कौन है?"

नवीन की समझ में नहीं आया कि क्या कहे। वह फिर कुँडी खट-खटा रहा था। फिर सोच कर बोला, "रमेश तो नहीं होगा।"

वह युवती सीढ़ियाँ उतर रही थी। नवीन उस आहट को पहचानता है। अब सांकल खुल गई थी। वह युवती अचरज में बोली, "आप!"

नवीन चुपचाप सीढ़ियां चढ़ कर ऊपर पहुँचा। वह बिना किसी खास परहेज के भीतर कमरे में पहुँचा। वहां सुन्दर पलंग बिछा हुआ था। वह उस पर उसी तरह लेट गया। उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो रहे थे। उसका माथा पीड़ा से झनझना रहा था। उसके कानों में तेज सीटियों की आवाज सुनाई पड़ रही थी। वह पड़ा-पड़ा रहा। बड़ी देर तक उसी तरह पड़ा ही रहा। जब उसने आंखें खोलीं, तो पाया कि वह युवती अवाक् खड़ी-खड़ी पंखा झल रही थी। नवीन एक बीमार बच्चे की तरह उसी भांति पड़ा रहा।

"आपकी आँखें तो सुर्ख हो रही हैं?"

"सिर में बहुत दर्द है।"

"मैं बाम ले आती हूं।" कह कर वह चली गई। नवीन के लाख मना करने पर भी उसके माथे पर मलने लगी। पहले तो माथे पर अजीब चिरचिराहट हुई, फिर ठंड पड़ गई। नवीन को नींद आ गई थी।

पाँच बज गए थे। नवीन की नींद टूटी। उस लड़की की माँ लौट आई थी। आकर बोली "तबीयत खराब है क्या?"

"नहीं तो! इन्द्रा कहाँ है?"

"क्या काम है?"

"नल आ गया होगा?"

"हाँ।"

"तो मैं नहा लूँगा।" कह कर वह उठा और बाहर चला गया गोसलखाने में वह बड़ी देर तक नहाता रहा। अभी तक उसके बदन से सरला के खून की महक आ रही थी। उसके कान में कोई कह रहा था कि वह खूनी है। वह नल के नीचे बैठ गया। पानी तेज बह रहा था। उसका मन खाली था। कल उसे आशा नहीं थी कि वह इस तरह आगे बढ़ सकेगा। आज अब वह स्वस्थ था।

वह बाहर आया। इन्द्रा खड़ी थी। वह चुपचाप भीतर चला गया। वह कैसा अतिथि था! वह इस घर में आकर टिक गया है। वह आराम-कुर्सी पर लेट गया। इन्द्रा सन्तरे छील कर ले आई थी। दूसरे हाथ पर शरबत का गिलास था। वह भारी कुतूहल के साथ उसे देख रही थी।

"मैं इस प्रकार यहाँ चला आया इन्द्रा, क्षमा करना। इस परिवार में टिक जाना मुझे सुविधा-जनक लगा है। रात तक किसी होटल में चला जाऊँगा।"

"आप क्या कह रहे हैं। क्या आप गैर हैं!"

"रमेश के पास सन्देश भेजना था।"

"मैंने उनको फोन कर दिया है। वे आने ही वाले होंगे।"

नवीन चुप हो गया। तो पूछा इन्द्रा ने, "आपकी तबीयत अब कैसी है? मैं तो दिन में घबरा गई थी।"

"ठीक है।"

इन्द्रा बाहर चली गई। दूसरी तश्तरी पर अनार के दाने बीन कर लाई थी। वह उसके व्यवहार पर मुग्ध हो गया।

पूछा इन्द्रा ने, "कब आए थे?"

"गाड़ी पर से सीधा यहीं आया हूं।"

"यह तो मुझे मालूम हो गया था, कि आप भाग गए हैं।"

"क्या?"

"सुबह के अखबार में छपा था। मैं स्वयं चिन्तित थी। वे भी वहाँ की हड़ताल की बातों पर कहते थे।"

"हड़ताल का क्या हुआ है?"

"समझौता हो गया है। मजदूरों की सब बातें मान ली गई हैं।"

नवीन जानता है कि यह समझौता उसे बहुत मंहगा पड़ा है। उसके दो प्रिय व्यक्ति उसमें मिट गए हैं। फिर भी मजदूरों की एक

बड़ी विजय थी। जनता की जागृति की सुबह थी। उसे भविष्य आशावादी लगा।

लेकिन रमेश ने नवीन को चौंका दिया। वह दिन के समाचार की बातें सुना रहा था। उसने तो सरला का एक फोटो भी उसे दिया जो वहाँ के उनके संवाददाता ने शादी के समाचार के साथ पहले ही भेजा था। वह फोटो शाम के पत्रों में छपा है। नवीन सरला के उस फोटो को देखने लगा।

"तुम तो वहीं थे नवीन ?"

"कहाँ ?"

"जिस जगह सरला ने आत्महत्या की; ऐसा सा समाचार में लिखा हुआ है। लोगों का ख्याल है कि तुम शहर में मौजूद थे। यद्यपि सरला के पिता का बयान है कि वह झूठ है।"

"मैं वहीं से आ रहा हूँ रमेश।" कह कर नवीन ने सारी बातें सुनादीं। इन्द्रा वह सुनकर काँप उठी।

इन्द्रा ने सरला का फोटो ले लिया। बड़ी देर तक उसे देखती रही और फिर रमेश के हाथ पर दे दिया। नवीन तो उस समाचार को पढ़ रहा था। रात को आठ बजे एकाएक सरला बंगले से गायब हो गई। वह लिख कर छोड़ गई थी कि एक घंटे में लौट कर आ जावेगी। जब नौ बजे वह नहीं आई तो सब परिचितों के यहाँ आदमी भेजे गए। ग्यारह बजे उसकी लाश मिली। मोटर में रखे हुए बटुए में एक चिट मिली। जिसमें लिखा हुआ था कि वह अपने जीवन से बहुत परेशान है। अतएव वह आत्महत्या कर रही है। उसके पिताजी ने पुलिस से अनुरोध किया है कि वे इस मामले की छानबीन अधिक न करें। कई बातें रहस्यपूर्ण हैं। सरला क्या वहाँ उस मजदूर के घर पर गई थी। वह कोठरी डेढ़ मास से बन्द थी। उसका किरायेदार डेढ़ मास से छुट्टी पर घर गया हुआ है, कुछ लोगों का कहना है कि

उसका हड़ताल से संबन्ध है।

रमेश और बातें सुना रहा था। इन्द्रा ने पूछा, "आप क्या खावेंगे?"

"सिर्फ दूध पीऊँगा।"

"टिमाटर का सूप बनादूँ?"

"नहीं"

कुछ तो खाना चाहिए।"

नवीन कुछ नहीं बोला और वह बाहर चली गई।

रमेश षड्यन्त्रकारियों के बारे में कह रहा था। बड़ी देर तक वह उन सब के बारे में कहता रहा। सारी कार्यवाही एक मजाक थी। वह बार-बार सुरेश का हाल कहता था। उसने अपने बयान में कहा था कि वह इस अदालत का कोई फैसला मानने के लिए तैयार नहीं है। उनका ध्येय देश को आजाद करना था। किसी को उनके देश को गुलाम रखने का अधिकार नहीं है। अदालत ने जब उसे फाँसी की सजा सुनाई थी तो उसने हँस कर कहा था—बस, थैंक्यू!

रमेश ने बताया था कि हाईकोर्ट में भी सजा बहाल रही और ऊपर के अधिकारियों तथा बादशाह द्वारा भी उसे 'कालापानी' में बदलने की सारी चेष्टाएं असफल हुई है। शायद आठ तारीख को फाँसी होगी? मैंने मिलने के लिए लिखा है। यदि दरख्वास्त मंजूर हो गई तो दोनों साथ चलेंगे।

नवीन चुप रहा। कहा रमेश ने, "अब मुझे तुम्हारी बातें याद आ रही हैं। व्यक्तिवादी सशस्त्र-क्रान्ति सच ही असफल हुई है। उसका जनता से कोई जीवित सम्पर्क नहीं रहा है। हम उसे जनता की क्रान्ति नहीं बना सके हैं। और यह जो नई चिनगारी सुलग रही है, उस पर मेरा पूरा-पूरा विश्वास है।।"

नवीन कुछ नहीं बोला। इन्द्रा टिमाटर का सूप ले आई थी।

नवीन चुपचाप चिम्मच से पीने लगा। जब पी चुका तो एक बार उसने संध्या का अखबार देखा। वह कुछ सोच नहीं पाया। रमेश बाहर रसोई में चला गया था। इन्द्रा और वे दोनों न जाने किस बात पर हँस रहे थे। कोई शर्त बदी जा रही थी। हार जाने पर रमेश मुरशिदाबादी साड़ी लाने का वादा कर रहा था। वह हँसी बड़ी देर तक नवीन के हृदय में खेलती रही। उसे लगा कि वह स्वस्थ हो गया है। अब इन्द्रा दूध ले आई थी। इन्द्रा उसमें 'ओवल टीन' मिला रही थी। नवीन तो हँस पड़ा। बोला, मैं बीमार नहीं हूँ इन्द्रा।"

इन्द्रा चिम्मच चलाती-चलाती रही। फिर दूध का गिलास उसे सौंप कर बाहर चली गई थी। नवीन घूँट-घूँट कर दूध पी रहा था। वह उसी भाँति दूध पीता रहा।

एकाएक रमेश आकर बोला, "मैं अब जा रहा हूँ।"

"मैं भी वहीं चलूँगा।" कह कर नवीन उठने को हुआ कि इन्द्रा बोली, "वहाँ तो मकान-मालिक ने ताला लगा रक्खा है।"

"क्यों?"

'पाँच महीने का किराया बाकी है न!" कह कर वह मुसकरा उठी। रमेश इस भेद के प्रकट होने पर चुप था।

अम्मा ठीक तो कहती थी कि............।"

रमेश ने बात काटी, "यह झूठ बात है। आज सब चुका दिया है।"

"मुझे विश्वास नहीं आता। चार दिन से वे ही कपड़े पहने हो।"

नवीन ने अपना निश्चय बदल लिया। वह यहीं रहेगा। इन्द्रा की माँ आ गई थी। पूछा, "अब जी कैसा है?"

"ठीक है।"

"बहुत मारे मारे फिरना ठीक नहीं है। दो चार दिन यहीं आराम

कर। तन्दुरुस्ती रहेगी तो सब ठीक होगा।"

रमेश चला गया था। इन्द्रा बड़ी रात तक नवीन के पास बैठी रही। जब वह सो गया तो रोशनी बुझा कर चली गई। इस नवीन के बारे में रमेश न जाने क्या-क्या कहता है। वह सरला पर सोच रही थी। कभी तो वह सोचती कि नवीन हृदयहीन है। फिर उसका कर्तव्य आगे आता। वह जानती है कि नवीन को सरला की मृत्यु का बहुत दुःख है। नवीन तो लाचर था।

आधी रात गुजर चुकी थी। नवीन की नींद टूटी। चाँदनी खिड़की से झाँक रही थी। उसने सिरहाने के नीचे से सरला का फोटो निकाला। फिर वह बड़ी देर तक उसे देखता रहा। उसका दिल भर आया। आँखों से आँसू बहने लगे। वह उसे देख रहा था। वह सरला का 'बस्ट' बहुत साफ था उसकी आँखों के नीचे वाला तिल तक साफ-साफ दीख रहा था। वे आँखें लगत थीं कुछ पूछ रही हों। ये ओंठ मानो अब खुले! अब खुले.......!!

फिर वह सभल गया। उसने आँसू पोंछ लिए। फिर चुपके उसके कई टुकड़े किए और बाहर फेंक दिए। वह उस हत्या के बाद अब व्यर्थ यह सब मोह बटोर रहा था। उसके हाथों से अभी तक सरला के खून की ताजी महक आ रही थी। उसे अभी तक सरला का वह रूप याद था। वह सुन्दर साड़ी वह रंगीन जंपर और वह गुड़िया-सी सजी हुई थी। उतना सौन्दर्य सरला में होगा, कब उसे विश्वास था!

फिर उसे बड़ी देर तक नींद नहीं आई। उसका माथा दुःख रहा था। एक हल्की आह उसके मुँह से निकली मानों, कि उसका कलेजा फट गया है। फिर वह करवटें बदलता रहा और रात को देर से सोया।

—आज नवीन सुरेश से मिलने के लिए जा रहा था। रमेश और नवीन जेल के फाटक पर पहुँचे थे। काफी चक्करदार रास्ते से वे उन

कैदियों के वारिकों में लाए गए थे, जिनको फाँसी की सजा होने को थी। जेल के अपने कायदे-कानून होते हैं। नवीन को वे सब मानने पड़े थे। नवीन सुरेश के कमरे के बाहर था दोनों के बीच सीकचे और काफी फासला था। सुरेश को देख कर नवीन का मन भर आया था। वह एकाएक पूछ बैठा! "तुम आत्मा को मानते हो सुरेश?"

सुरेश तो हँस पड़ा। बोला फिर, "नहीं। तू क्या पूछ रहा है?"

नवीन चुप रहा तो कहा सुरेश ने, 'नवीन वह क्रान्ति सफल होगी। हमारा काम आगे बढ़ेगा।"

नवीन तो देख रहा था। वह सामने खिले हुए फूल मुरझा गए थे। सामने जो तरकारी की क्यारियाँ थी वे सूखी हुई थी। वह बावला बन गया पूछने लगा, "तुम पुर्नजन्म पर विश्वास करते हो सुरेश?"

वह सुरेश तो हँस पड़ा। कहा फिर, "सिविल-सार्जन आए थे कहा कि तुम खूब तगड़े हो। मुझे तगड़े लोगों को फाँसी पर लटकते हुए देखते खुशी होती है। मुर्दों को फाँसी देने से कोई लाभ नहीं होता है।"

"सुरेश......!"

"क्या है नवीन, तू तो बहुत आतुर हो रहा है।"

"अच्छा, तुमको किसी की याद तो आती होगी।"

"किसकी याद रे!" कह फिर खिलखिला कर हँस पड़ा। "सारी मोह-ममता छोड़ कर ही तो यह सन्यास लिया था। जेलर साहब का पूजा-पाठ से अधिक सम्बन्ध है। वे गीता-वेदान्त और न जाने क्या-क्या ग्रन्थ पढ़ने को नहीं दे जाते हैं। लेकिन नवीन यह जगत परिवर्तन-शील है। यह विज्ञान का युग है। हमें विज्ञान को कसौटी पर सारी बातों को तोलना है। आज जो यह परिवर्तन हो रहा है उस सब का

सुरेश ने और न जाने क्या-क्या कहा था। लेकिन समय हो गया था सुरेश ने अपना हाथ उन सीकचों से बाहर करके उससे मिलाया था। वह कितना कड़ा था। सुरेश तो फिर खिलखिला कर हँसता हुआ बोला था, "अच्छा दोस्तों अलविदा।"

वह जेल का रास्ता ......वह खिले हुए फूल .... वह फाँसी वाले कैदियों की बारिकें और सुरेश ....! नवीन उस सुरेश की शक्ति को देख कर दंग रह गया था। उसने किरण के बारे में कुछ कहा तो वह बोला था कि किरण समझदार है। उसने कहा था कि वे अपने समय में भावी जन-क्रान्ति की बात देर से समझे थे। अब वह मौका नहीं मिलेगा। लेकिन आशा है कि उस रास्ते क्रान्ति सफल होगी। सुरेश बार-बार कहता था कि नवीन की जिन बातों को सुन-कर वह हँसता था, उसी पर एक दिन उसका अटल विश्वास हो गया था।

—अगली सुबह को नवीन के हाथ पर सुबह का दैनिक पत्र था। लिखा था ......षड्यन्त्र के कैदियों को सुबह छै बजे फाँसी लग गई थी। सारी रात जेल में बड़ी देर तक नारे लगते रहे। शहर में हड़ताल थी।

शाम की गाड़ी से किरण आई थी। नवीन किरण से कुछ भी नहीं बोल सका। वह चुपचाप बैठी की बैठी थी। नवीन पास जाकर कहा, "किरण!"

किरण जैसे चौंक उठी। बोली, "मैं कभी नहीं चाहती थी, कि सरला की मृत्यु हो जाय।"

"किरण, सुरेश ने कहा है कि........।"

"नवीनजी उनका पत्र मुझे घर पर मिला था। उन्होंने लिखा है कि आगे अब वह व्यक्तिवादी क्रान्ति सफल नहीं होगी। आपकी बात पर मुझे सन्देह था। इसीलिए मैंने सरला के पिता की हत्या करने वाला प्रस्ताव स्वीकार किया था। मानती हूँ कि वह मेरी भूल थी।"

"किरण वह बात तो ....।"

"मुझे अपने पाप का फल मिल गया है।"

नवीन किरण को क्या समझाता। वह बोला, "सुरेश का जीवन महान था। आज सारा देश उसके लिए आँसू बहा रहा है। और तू ......।"

इन्द्रा आ गई थी। नवीन चुप हो गया। रमेश ने आकर सुनाया था कि इतनी बड़ी सभा आज तक नहीं हुई। पुलीस ने एक सौ चौवालीस लगादी थी। फिर एक लाख से अधिक लोग सभा में आए थे।

नवीन किरण की ओर देख रहा था। इन्द्रा भी चुप थी। रमेश नवीन की ओर देख कर कुछ सोच रहा था। आखिर किरण इन्द्रा के साथ बाहर चली गई। और इन्द्रा कुछ देर के बाद भीतर आकर बोली, "किरण कल सुबह की गाड़ी से जाने की बात कह रही है।"

"कहाँ?"

"गाँव को।"

"अभी वह यहीं रहेगी।" कह कर बाहर जाकर बोला, "तुम अभी कुछ दिन यहीं रहो किरण।"

"वहाँ भाभी अकेली है।"

"किसी और को चिट्ठी लिख देंगे।"

—रात को नवीन चुपचाप किताब पढ़ रहा था। किरण कब आई वह न समझ सका। वह तो पास कुरसी पर बैठ गई थी। नवीन ने अब आहट पाई। किरण तो बोली, "भैय्या की चिट्ठी है।"

नवीन ने एक बार पूरी चिट्ठी पढ़ डाली। नवीन को सुरेश किरण का भार सौंप गया था। दुबारा उसने पत्र पढ़ा। सुरेश की यह आज्ञा थी। लिखा था—किरण, मैं सब बातें जान गया हूँ। मृत्यु कुछ नहीं

है। फिर मैं नवीन के हाथ में तुझे सौंप कर निश्चित हो रहा हूँ। नवीन पर मेरा पूरा-पूरा विश्वास है।

नवीन ने चिट्ठी किरण को देदी। पूछा किरण ने, "मेरे लिये क्या आज्ञा है नवीन जी।"

"सुरेश की बात मुझे मान्य है किरण......।" वह न समझ सका कि यह सब क्या हो रहा है।

किरण चली गई थी।

—आधी रात को किसी ने दरवाजा खटखटाया। इन्द्रा दौड़ी-दौड़ी आकर बोली, "पुलीस आई है।"

किरण यह सुन कर तेजी से भीतर आई और उसने नवीन के सिरहाने से पिस्तौल निकाल ली।

पुलीस के अधिकारी ऊपर आए थे। वे नवीन को पकड़ कर ले गए।

कुछ देर बाद चारों ओर सन्नाटा छा गया।

किरण लुटी सी चुपचाप बैठी थी।

इन्द्रा बोली, किरण !"

किरण की आँखों में आँसू भर आए।